मुराकामी

स्पुतनिक स्वीटहार्ट

SPUTNIK SWEETHEART

A NOVEL BY

HARUKI MURAKAMI

TRANSLATED FROM THE JAPANESE BY PHILIP GABRIEL

ALFRED A. KNOPF • NEW YORK • 2001

यह अल्फ्रेड ए. नोपफ द्वारा प्रकाशित एक बोर्ज़ोई पुस्तक है।

कॉपीराइट © 2001 हारुकी मुराकामी द्वारा
अंतर्राष्ट्रीय और पैन-अमेरिकन कॉपीराइट समझौतों के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं।
संयुक्त राज्य अमेरिका में अल्फ्रेड ए. नोपफ द्वारा प्रकाशित, रैंडम हाउस, इंक., न्यूयॉर्क का एक प्रभाग। रैंडम हाउस, इंक., न्यूयॉर्क द्वारा वितरित।
www.aaknopf.com
मूल रूप से जापान में 1999 में कोडनशा, टोक्यो द्वारा सुपुटोनिकु नो कोइबिटो के रूप में प्रकाशित। कॉपीराइट ©1999 हारुकी मुराकामी द्वारा
Knopf, Borzoi Books और colophon, Random House, Inc. के पंजीकृत ट्रेडमार्क हैं।
पुश्किन का यह उद्धरण यूजीन ओनेगिन: ए नॉवेल इन वर्स से लिया गया है, जिसका अनुवाद बैबेट ड्यूश ने किया है (मिनियोला, एन.वाई.: डोवर पब्लिकेशन्स, 1999)।
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा
मुरकामी, हारुकी, [तिथि]
सुपुउतोनिकु नो कोइबितो। अंग्रेज़ी]
स्पुतनिक स्वीटहार्ट / हारुकी मुरकामी; फिलिप गैब्रियल द्वारा जापानी से अनुवादित।
पृष्ठ सेमी।
I. गैब्रियल, जे. फिलिप। II. शीर्षक।
pl856.u673 s8713 2001
895.6’35—dc21 00-062004
यह अनुवाद मीका को समर्पित है। —पी.जी.
ईआईएसबीएन: 978-0-375-41346-9
v3.0

अंतर्वस्तु

कवर पृष्ठ
शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ

कृत्रिम उपग्रह
अध्याय 1
अध्याय दो

अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16

हारुकी मुराकामी द्वारा भी लिखित।

कृत्रिम उपग्रह

4 अक्टूबर 1957 को सोवियत संघ ने कजाकिस्तान गणराज्य के बैकानोर अंतरिक्ष केंद्र से दुनिया का पहला मानव निर्मित उपग्रह, स्पुतनिक प्रथम, प्रक्षेपण किया। स्पुतनिक का व्यास 58 सेंटीमीटर था, वजन 83.6 किलोग्राम था और इसने 96 मिनट और 12 सेकंड में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी की।
उसी वर्ष 3 नवंबर को, लइका नामक कुत्ते को लेकर स्पुतनिक द्वितीय का सफल प्रक्षेपण हुआ।

लइका पृथ्वी के वायुमंडल को छोड़ने वाला पहला जीवित प्राणी बना, लेकिन उपग्रह कभी वापस नहीं लाया जा सका, और लइका अंतरिक्ष में जैविक अनुसंधान के लिए बलिदान हो गया।

— विश्व इतिहास के संपूर्ण वृत्तांत से

अध्याय 1

अपने बाईसवें वर्ष की वसंत ऋतु में, सुमिरे को पहली बार प्रेम हुआ। एक तीव्र प्रेम, मानो मैदानों में बवंडर की तरह सब कुछ तहस-नहस कर देने वाला, हर चीज़ को हवा में उछालने वाला, टुकड़े-टुकड़े करने वाला, चूर-चूर करने वाला। बवंडर की तीव्रता एक पल के लिए भी कम नहीं हुई, जैसे ही वह समुद्र के ऊपर से गुजरा, अंगकोर वाट को तबाह कर दिया, एक भारतीय जंगल को बाघों समेत जलाकर राख कर दिया, खुद को एक फारसी रेगिस्तानी रेत के तूफान में बदल दिया, एक अनोखे किले को रेत के सागर में दबा दिया। संक्षेप में, एक ऐसा प्रेम जो सचमुच विशाल था। जिससे उसे प्रेम हुआ, वह सुमिरे से सत्रह वर्ष बड़ी थी। और विवाहित थी। और, मैं यह भी बता दूं, वह एक महिला थी। यहीं से सब कुछ शुरू हुआ, और यहीं पर सब कुछ समाप्त हुआ। लगभग।

उस समय, सुमिरे—जापानी में वायलेट—लेखिका बनने के लिए संघर्ष कर रही थी। जीवन में चाहे कितने भी विकल्प क्यों न आ जाएँ, उसके लिए उपन्यासकार बनना ही एकमात्र रास्ता था। उसका दृढ़ संकल्प चट्टान की तरह अटल था। साहित्य के प्रति उसके विश्वास को कोई भी चीज़ रोक नहीं सकती थी।

कानागावा प्रांत के एक सरकारी हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद, उन्होंने टोक्यो के एक छोटे से निजी कॉलेज के कला विभाग में दाखिला लिया। उन्हें वह कॉलेज

बिल्कुल बेजान, नीरस और उत्साहहीन लगा, और उन्हें उससे घृणा होने लगी। उन्हें अपने सहपाठी (जिनमें मैं भी शामिल हूँ) बेहद उबाऊ और घटिया लगे। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अपने तीसरे वर्ष से ठीक पहले उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया। उनका मानना था कि वहाँ और रहना समय की बर्बादी है। मुझे लगता है कि यह सही कदम था, लेकिन अगर मुझे एक सामान्य टिप्पणी करने की अनुमति हो, तो क्या इस अपूर्ण दुनिया में निरर्थक चीजों का भी कोई स्थान नहीं है? एक अपूर्ण जीवन से हर निरर्थक चीज को हटा दें, तो वह अपनी अपूर्णता भी खो देगा।

सुमिरे एक निराशावादी रोमांटिक थी, अपनी आदतों में पक्की—अगर अच्छे शब्दों में कहें तो थोड़ी भोली भी। अगर वह बोलना शुरू कर देती, तो बोलती ही रहती, लेकिन अगर वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ होती जिससे उसकी बनती नहीं थी—यानी दुनिया के ज्यादातर लोगों के साथ—तो वह मुश्किल से ही कुछ बोलती। वह बहुत ज्यादा सिगरेट पीती थी, और ट्रेन में सफर करते समय उसका टिकट हमेशा खो जाता था। कभी-कभी वह अपने विचारों में इतनी मग्न हो जाती कि खाना भी भूल जाती, और वह किसी पुरानी इतालवी फिल्म के युद्ध अनाथों की तरह दुबली-पतली थी—जैसे आँखों वाली एक पतली सी डंडी। मैं आपको उसकी तस्वीर दिखाना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पास कोई तस्वीर नहीं है। उसे अपनी तस्वीर खिंचवाना बिल्कुल पसंद नहीं था—वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक युवा कलाकार का चित्र नहीं छोड़ना चाहती थी। अगर उस समय सुमिरे की कोई तस्वीर होती, तो मुझे पता है कि वह इस बात का अनमोल प्रमाण होती कि कुछ लोग कितने खास होते हैं।

मुझे घटनाओं का क्रम थोड़ा गड़बड़ लग रहा है। सुमिरे को जिस महिला से प्यार हुआ था, उसका नाम मियू था। कम से कम सब लोग उसे इसी नाम से बुलाते थे। मुझे उसका असली नाम नहीं पता, जिसकी वजह से बाद में दिक्कतें आईं, लेकिन खैर, मैं कहानी से आगे बढ़ रहा हूँ। मियू कोरियाई नागरिक थी, लेकिन जब तक उसने अपनी उम्र के पच्चीसवें दशक में कोरियाई भाषा सीखने का फैसला नहीं किया, तब तक उसे इस भाषा का एक शब्द भी नहीं आता था। उसका जन्म और पालन-पोषण जापान में हुआ था और उसने फ्रांस के एक संगीत अकादमी में पढ़ाई की थी, इसलिए वह जापानी के अलावा फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में धाराप्रवाह थी। वह हमेशा अच्छे कपड़े पहनती थी, सुरुचिपूर्ण ढंग से, महंगे लेकिन सादे आभूषणों के साथ, और वह बारह सिलेंडर वाली गहरे नीले रंग की जगुआर कार चलाती थी।

सुमिरे जब पहली बार मियू से मिली, तो उसने उससे जैक केरोएक के उपन्यासों के बारे में बात की। सुमिरे केरोएक की दीवानी थी। उसका हर महीने कोई न कोई पसंदीदा साहित्यिक लेखक होता था, और उस समय वह कुछ समय के लिए लोकप्रिय न रहे केरोएक थे। वह अपनी कोट की जेब में 'ऑन द रोड' या 'लोनसम ट्रैवलर' की एक पुरानी प्रति रखती थी और जब भी मौका मिलता, उसे पलटती रहती थी। जब भी उसे कोई पंक्ति पसंद आती, वह उसे पेंसिल से चिह्नित कर लेती और पवित्र ग्रंथ की तरह याद कर लेती। उसकी सबसे पसंदीदा पंक्तियाँ 'लोनसम ट्रैवलर' के 'फायर लुकआउट' वाले भाग से थीं। केरोएक ने एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर एक झोपड़ी में तीन महीने अकेले बिताए थे, जहाँ उन्होंने फायर लुकआउट का काम किया था। सुमिरे को यह भाग विशेष रूप से पसंद था:

किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार जंगल में स्वस्थ, यहां तक कि उबाऊ एकांत का अनुभव किए बिना नहीं रहना चाहिए, जहां वह खुद पर पूरी तरह से निर्भर हो और इस प्रकार अपनी सच्ची और छिपी हुई ताकत को सीख सके।

“क्या आपको ये पसंद नहीं आता?” उसने कहा। “हर दिन आप पहाड़ की चोटी पर खड़े होते हैं, चारों ओर 360 डिग्री का चक्कर लगाते हैं, ये देखते हैं कि कहीं आग तो नहीं लगी है। बस, हो गया। दिन भर का काम खत्म। बाकी समय आप पढ़ सकते हैं, लिख सकते हैं, जो चाहें कर सकते हैं। रात में खूंखार भालू आपकी झोपड़ी के आसपास घूमते रहते हैं। यही तो असली ज़िंदगी है! इसकी तुलना में कॉलेज में साहित्य पढ़ना खीरे के कड़वे सिरे को चबाने जैसा है।”

“ठीक है,” मैंने कहा, “लेकिन एक दिन तुम्हें पहाड़ से नीचे उतरना ही पड़ेगा।” हमेशा की तरह, मेरी व्यावहारिक और नीरस राय से उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।

सुमिरे केरोएक के उपन्यास के किसी किरदार की तरह बनना चाहती थी—जंगली, बिंदास और मनमौजी। वह इधर-उधर खड़ी रहती, हाथ कोट की जेबों में डाले, बाल बिखरे हुए, काले प्लास्टिक फ्रेम वाले डिज़ी गिलेस्पी चश्मे से आसमान को घूरती रहती, जिसे वह अपनी कमज़ोर नज़र के बावजूद पहने रहती थी। वह हमेशा किसी सेकंड हैंड स्टोर से खरीदे हुए बड़े साइज़ के हेरिंगबोन कोट और खुरदुरे काम के बूट पहने रहती थी। अगर उसकी दाढ़ी बढ़ सकती, तो मुझे यकीन है कि वह ज़रूर बढ़ा लेती।

सुमिरे दिखने में बहुत खूबसूरत नहीं थी। उसके गाल पिचके हुए थे, होंठ थोड़े चौड़े थे।

नाक छोटी और ऊपर उठी हुई थी। उसका चेहरा भावपूर्ण था और उसमें हास्यबोध भी भरपूर था, हालांकि वह शायद ही कभी खुलकर हंसती थी। वह कद में छोटी थी और अच्छे मूड में भी उसकी बातें ऐसी लगती थीं मानो वह किसी से झगड़ा करने ही वाली हो। मैंने उसे कभी लिपस्टिक या आइब्रो पेंसिल लगाते नहीं देखा, और मुझे शक है कि उसे यह भी पता था कि ब्रा अलग-अलग साइज़ में आती हैं। फिर भी, सुमिरे में कुछ खास बात थी, कुछ ऐसा जो लोगों को उसकी ओर खींचता था। उस खास बात को शब्दों में बयां करना आसान नहीं है, लेकिन जब आप उसकी आंखों में देखते, तो वह हमेशा आपके भीतर गहराई में झलकती हुई नज़र आती थी।

मुझे सीधे-सीधे कह देना चाहिए। मैं सुमिरे से प्यार करता था। पहली बातचीत से ही मैं उसकी तरफ आकर्षित हो गया था, और जल्द ही सब कुछ बदल गया। लंबे समय तक मैं सिर्फ उसी के बारे में सोचता रहा। मैंने उसे अपने दिल की बात बताने की कोशिश की, लेकिन भावनाओं और सही शब्दों का तालमेल नहीं बैठ पाया। शायद यही अच्छा हुआ। अगर मैं उसे अपने दिल की बात बता भी देता, तो वह मुझ पर हंस देती।

सुमिरे और मैं दोस्त थे, लेकिन मैं दो-तीन और लड़कियों के साथ भी डेट पर जाता था। ऐसा नहीं है कि मुझे सही संख्या याद नहीं है। दो, तीन—गिनती अलग-अलग हो सकती है। इसमें उन लड़कियों को भी जोड़ दें जिनके साथ मैंने एक-दो बार शारीरिक संबंध बनाए, तो सूची थोड़ी लंबी हो जाएगी। खैर, जब मैं इन दूसरी लड़कियों के साथ शारीरिक संबंध बना रहा था, तब भी मैं सुमिरे के बारे में सोच रहा था। या कम से कम, उसके ख्याल मेरे मन के किसी कोने में ज़रूर आते थे। मैं कल्पना करता था कि मैं उसे गले लगा रहा हूँ। यह थोड़ा घटिया काम था, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाया।

चलिए, अब वापस उस बात पर आते हैं कि सुमिरे और मियू कैसे मिले।

मियू ने जैक केरोएक के बारे में सुना था और उसे हल्का-फुल्का अंदाजा था कि वह किसी तरह के उपन्यासकार थे। हालांकि, किस तरह के उपन्यासकार थे, यह उसे याद नहीं आ रहा था।

“केरोएक...हम्म...क्या वह स्पुतनिक नहीं था?”

सुमिरे को समझ नहीं आया कि वो क्या कहना चाह रही थी। चाकू और कांटा हवा में थामे हुए, उसने कुछ देर सोचा। “स्पुतनिक? तुम्हारा मतलब सोवियत संघ द्वारा पचास के दशक में भेजे गए पहले उपग्रह से है? जैक केरोएक एक अमेरिकी उपन्यासकार

थे। मुझे लगता है कि उनकी पीढ़ी में कुछ समानता है...”

“क्या उस ज़माने में लेखकों को यही कहा जाता था?” मियू ने पूछा। उसने अपनी उंगली से मेज पर एक गोला बनाया, मानो वह यादों से भरे किसी खास जार में से कुछ ढूंढ रही हो।

“स्पुतनिक...?”

“यह एक साहित्यिक आंदोलन का नाम है। आप जानते हैं—कि कैसे लेखकों को लेखन की विभिन्न शैलियों में वर्गीकृत किया जाता है। जैसे शिगा नाओया व्हाइट बर्च स्कूल में थे।”

अंततः सुमिरे को समझ आ गया। "बीटनिक!"

मियू ने नैपकिन से अपने होंठों के कोने को हल्के से पोंछा। “बीटनिक—स्पुतनिक। मुझे इस तरह के शब्द कभी याद नहीं रहते। ये तो केनमुन पुनर्स्थापना या रापालो संधि की तरह हैं। पुरानी बातें।”

उन पर एक सौम्य सन्नाटा छा गया, जो समय के प्रवाह का आभास करा रहा था।

“रापाल्लो की संधि?” सुमिरे ने पूछा।

मियू मुस्कुराई। एक पुरानी यादों से भरी, आत्मीय मुस्कान, मानो किसी दराज के पीछे से कोई अनमोल चीज़ निकाली गई हो। उसकी आँखें बेहद आकर्षक ढंग से सिकुड़ गईं। उसने हाथ बढ़ाया और अपनी लंबी, पतली उंगलियों से सुमिरे के पहले से ही बिखरे हुए बालों को धीरे से सहलाया। यह इतना अचानक और स्वाभाविक इशारा था कि सुमिरे भी बस मुस्कुराई।

उस दिन के बाद से, सुमिरे मियू को प्यार से स्पुतनिक स्वीटहार्ट कहकर पुकारती थी। सुमिरे को यह नाम बहुत अच्छा लगता था। इससे उसे लाइका नाम के कुत्ते की याद आती थी। अंतरिक्ष के अंधकार में खामोशी से आगे बढ़ता हुआ मानव निर्मित उपग्रह। छोटी सी खिड़की से बाहर झांकती हुई कुत्ते की गहरी, चमकदार आंखें। अंतरिक्ष के अनंत अकेलेपन में, आखिर कुत्ता क्या देख रहा होगा?

यह स्पुतनिक बातचीत अकासाका के एक आलीशान होटल में सुमिरे की चचेरी बहन की शादी के रिसेप्शन में हुई। सुमिरे अपनी चचेरी बहन के ज़्यादा करीब नहीं थी; असल में, उनके बीच बिल्कुल भी बनती नहीं थी। वह ऐसे किसी रिसेप्शन में जाने के बजाय यातना सहना ज़्यादा पसंद करती, लेकिन इस बार वह पीछे नहीं हट सकती थी। वह और मियू एक मेज पर अगल-बगल बैठी थीं। मियू ने सारी बातें तो नहीं

बताईं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसने सुमिरे की चचेरी बहन को पियानो सिखाया था—या कुछ इसी तरह का—जब वह विश्वविद्यालय के संगीत विभाग की प्रवेश परीक्षा दे रही थी। ज़ाहिर है, उनका रिश्ता न तो लंबा था और न ही बहुत करीबी, लेकिन मियू को वहाँ जाना ज़रूरी लगा।

जिस पल मियू ने उसके बालों को छुआ, सुमिरे को उससे प्यार हो गया, मानो वह किसी खेत को पार कर रही हो और अचानक बिजली का झटका उसके सिर पर लगा हो। यह किसी कलात्मक रहस्योद्घाटन जैसा था। इसीलिए उस समय सुमिरे को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि जिससे उसे प्यार हुआ वह एक महिला थी।

मुझे नहीं लगता कि सुमिरे का कभी कोई प्रेमी रहा होगा। हाई स्कूल में उसके कुछ बॉयफ्रेंड थे, जिनके साथ वह फिल्में देखने जाती थी, तैराकी करती थी। मुझे नहीं लगता कि उनमें से कोई भी रिश्ता गहरा हो पाया होगा। सुमिरे उपन्यासकार बनने पर इतनी केंद्रित थी कि उसे किसी से प्यार होने का समय ही नहीं मिला। अगर हाई स्कूल में उसने कभी यौन संबंध बनाए भी हों—या उसके करीब कुछ—तो मुझे यकीन है कि यह यौन इच्छा या प्रेम से ज़्यादा साहित्यिक जिज्ञासा के कारण ही हुआ होगा।

“सच कहूँ तो, यौन इच्छा मुझे समझ नहीं आती,” सुमिरे ने एक बार मुझसे कहा, गंभीर चेहरा बनाते हुए। मुझे लगता है कि यह कॉलेज छोड़ने से ठीक पहले की बात है; उसने पाँच बनाना डाइक्विरी पी ली थीं और काफी नशे में थी। “तुम्हें पता है—यह सब कैसे होता है। इस बारे में तुम्हारी क्या राय है?”

मैंने हमेशा की तरह बीच का रास्ता अपनाते हुए कहा, "यौन इच्छा कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे आप समझ सकें। यह बस मौजूद होती है।"

वह कुछ देर तक मुझे ऐसे घूरती रही, मानो मैं किसी अनसुने विद्युत स्रोत से चलने वाली मशीन हूँ। रुचि खोकर, उसने छत की ओर देखा और बातचीत धीरे-धीरे समाप्त हो गई। उसने शायद तय कर लिया होगा कि उससे इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है।

सुमिरे का जन्म चिगासाकी में हुआ था। उनका घर समुद्र तट के पास था और वे बचपन से ही खिड़कियों से टकराती रेत से भरी हवा की सूखी आवाज़ सुनती आ रही थीं। उनके पिता योकोहामा में एक दंत चिकित्सा क्लिनिक चलाते थे। वे बेहद आकर्षक थे, उनकी सुडौल नाक फिल्म 'स्पेलबाउंड' के ग्रेगरी पेक की याद दिलाती थी। सुमिरे को वह खूबसूरत नाक विरासत में नहीं मिली, और उनके अनुसार, उनके

भाई को भी नहीं। सुमिरे को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उस नाक को बनाने वाले जीन गायब हो गए थे। अगर वे सचमुच हमेशा के लिए जीन पूल की गहराई में दब गए हैं, तो दुनिया एक उदास जगह होगी। उनकी नाक इतनी अद्भुत थी।

सुमिरे के पिता योकोहामा क्षेत्र की उन महिलाओं के लिए लगभग एक पौराणिक व्यक्ति थे जिन्हें दंत चिकित्सा की आवश्यकता थी। जांच कक्ष में वे हमेशा सर्जिकल कैप और बड़ा मास्क पहनते थे, जिससे मरीज को केवल उनकी आंखें और कान ही दिखाई देते थे। फिर भी, यह स्पष्ट था कि वे कितने आकर्षक थे। मास्क के नीचे उनकी सुंदर, मर्दाना नाक आकर्षक ढंग से उभरी हुई थी, जिससे उनकी महिला मरीज शरमा जाती थीं। पल भर में—चाहे उनके दंत बीमा में खर्च शामिल हो या न हो—वे उनसे प्यार करने लगती थीं।

सुमिरे की माँ का निधन महज 31 वर्ष की आयु में जन्मजात हृदय दोष के कारण हो गया था। सुमिरे तब तक तीन वर्ष की भी नहीं हुई थी। उसकी माँ की बस एक धुंधली सी याद थी, उसकी त्वचा की महज़ खुशबू। उसकी कुछ ही तस्वीरें बची थीं—एक शादी की तस्वीर और एक सुमिरे के जन्म के तुरंत बाद की। सुमिरे अक्सर फोटो एल्बम निकालकर तस्वीरों को देखती रहती थी। सुमिरे की माँ—सीधे शब्दों में कहें तो —एक ऐसी शख्सियत थीं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता था। छोटे-छोटे, साधारण बाल, ऐसे कपड़े जिन्हें देखकर कोई भी सोच सकता था कि वह क्या सोच रही होंगी, एक असहज सी मुस्कान। अगर वह ज़रा भी पीछे हटतीं, तो मानो दीवार में समा जातीं। सुमिरे ने ठान लिया था कि वह अपनी माँ का चेहरा अपनी यादों में हमेशा के लिए बसा लेगी। फिर शायद किसी दिन वह उनसे अपने सपनों में मिलेगी। वे हाथ मिलाएँगी, अच्छी-अच्छी बातें करेंगी। लेकिन बात इतनी आसान नहीं थी। अपनी माँ का चेहरा याद रखने की लाख कोशिश करने के बावजूद, वह जल्द ही धुंधला पड़ जाता था। सपनों की बात छोड़ो—अगर सुमिरे अपनी मां को दिन दहाड़े सड़क पर देख लेती, तो भी वह उसे पहचान नहीं पाती।

सुमिरे के पिता अपनी दिवंगत पत्नी के बारे में शायद ही कभी बात करते थे। वैसे भी वे कम बोलने वाले इंसान थे, और जीवन के हर पहलू में—जैसे कि वे किसी मुंह के संक्रमण से बचना चाहते हों—वे कभी अपनी भावनाओं के बारे में बात नहीं करते थे। सुमिरे को याद नहीं था कि उसने कभी अपने पिता से अपनी मृत माँ के बारे में पूछा हो। सिवाय एक बार के, जब वह बहुत छोटी थी; किसी कारणवश उसने उनसे पूछा,

"मेरी माँ कैसी थीं?" उसे यह बातचीत बहुत स्पष्ट रूप से याद थी।
उसके पिता ने नज़रें फेर लीं और जवाब देने से पहले कुछ पल सोचा। उन्होंने कहा, "उसे चीज़ें याद रखने में महारत हासिल थी। और उसकी लिखावट भी अच्छी थी।"
किसी व्यक्ति का वर्णन करने का यह एक अजीब तरीका था। सुमिरे बड़ी उम्मीद से अपनी नोटबुक का बर्फ़ जैसा सफ़ेद पहला पन्ना खोले बैठी थी, उन स्नेह भरे शब्दों का इंतज़ार कर रही थी जो उसे गर्माहट और सुकून दे सकते थे—एक सहारा, एक धुरी, जो सूर्य से तीसरे ग्रह पर उसके अनिश्चित जीवन को बनाए रखने में मदद कर सकती थी। उसके पिता को कुछ ऐसा कहना चाहिए था जिसे उनकी नन्ही बेटी थाम सके। लेकिन सुमिरे के सुंदर पिता वे शब्द नहीं बोलने वाले थे, वही शब्द जिनकी उसे सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी।

सुमिरे के पिता ने उसके छह साल की उम्र में पुनर्विवाह कर लिया, और दो साल बाद उसके छोटे भाई का जन्म हुआ। उसकी नई माँ भी सुंदर नहीं थी। ऊपर से, उसकी याददाश्त भी कुछ खास अच्छी नहीं थी, और उसकी लिखावट भी कोई खास नहीं थी। फिर भी, वह दयालु और निष्पक्ष स्वभाव की थी। यह नन्ही सुमिरे के लिए सौभाग्य की बात थी, जो अब सौतेली बेटी बन चुकी थी। नहीं, सौभाग्य सही शब्द नहीं है। आखिर, उस स्त्री को उसके पिता ने ही चुना था। हो सकता है कि वह आदर्श पिता न रहे हों, लेकिन जीवनसाथी चुनने के मामले में उन्हें पूरी जानकारी थी।

किशोरावस्था के लंबे और कठिन वर्षों के दौरान उसकी सौतेली माँ का प्यार कभी कम नहीं हुआ, और जब सुमिरे ने कॉलेज छोड़कर उपन्यास लिखने की घोषणा की, तो उसकी सौतेली माँ ने—यद्यपि इस मामले पर उनकी अपनी राय थी—सुमिरे की इच्छा का सम्मान किया। उन्हें हमेशा से सुमिरे की पढ़ने की इतनी रुचि देखकर खुशी होती थी, और उन्होंने उसके साहित्यिक प्रयासों को प्रोत्साहित किया।
अंततः उसकी सौतेली माँ ने उसके पिता को मना लिया, और उन्होंने तय किया कि जब तक सुमिरे अट्ठाईस साल की नहीं हो जाती, तब तक वे उसे थोड़ी-सी आर्थिक सहायता देंगे। अगर तब तक वह लेखन से जीविका कमाने में सक्षम नहीं हुई, तो उसे खुद ही अपना गुजारा करना होगा। अगर उसकी सौतेली माँ ने उसका बचाव न किया होता, तो सुमिरे को शायद बेसहारा, बिना ज़रूरी सामाजिक कौशल के, एक नीरस वास्तविकता के वीरान जंगल में फेंक दिया जाता। जहाँ पृथ्वी सूर्य के चारों ओर गरजती-चिल्लाती सिर्फ इसलिए नहीं घूमती कि मनुष्य मौज-मस्ती कर सकें और हँस

सकें।

कॉलेज छोड़ने के दो साल से कुछ अधिक समय बाद सुमिरे की मुलाकात अपने स्पुतनिक प्रेमी से हुई।

सुमिरे किचिज़ोजी में एक कमरे के छोटे से अपार्टमेंट में रहती थी, जहाँ वह कम से कम फर्नीचर और ज़्यादा से ज़्यादा किताबों से अपना गुज़ारा करती थी। वह दोपहर में उठती और दोपहर बाद, जैसे कोई तीर्थयात्री पवित्र पहाड़ियों की यात्रा पर निकलता है, वैसे ही उत्साह से इनोगाशिरा पार्क में टहलने जाती। धूप वाले दिनों में वह पार्क की बेंच पर बैठकर रोटी चबाती, एक के बाद एक सिगरेट पीती और पढ़ती रहती। बारिश या सर्दी के दिनों में वह किसी पुराने ज़माने के कॉफ़ीहाउस में जाती जहाँ तेज़ आवाज़ में शास्त्रीय संगीत बजता रहता, किसी पुराने सोफे पर बैठ जाती और अपनी किताबें पढ़ती। शुबर्ट की सिम्फनी और बाख के कैंटाटा सुनते हुए उसके चेहरे पर हमेशा एक गंभीर भाव रहता। शाम को वह एक बियर पीती और रात के खाने के लिए सुपरमार्केट से कुछ रेडीमेड खाना खरीद लेती।

रात 11:00 बजे तक वह अपनी डेस्क पर बैठ जाती थी। वहाँ हमेशा गर्म कॉफी से भरा थर्मस, एक कॉफी मग (जो मैंने उसे उसके जन्मदिन पर दिया था, जिस पर स्नैफकिन की तस्वीर बनी थी), मार्लबोरो सिगरेट का एक पैकेट और एक कांच की ऐशट्रे होती थी। बेशक, उसके पास एक वर्ड प्रोसेसर भी था। हर कुंजी के लिए एक अलग अक्षर।

गहरी खामोशी छा गई। उसका मन शीत ऋतु की रात के आकाश की तरह निर्मल था, जैसे सप्तर्षि मंडल और ध्रुव तारा अपनी जगह पर चमक रहे हों। उसे बहुत कुछ लिखना था, बहुत सी कहानियाँ सुनानी थीं। अगर उसे सही माध्यम मिल जाता, तो उसके तीव्र विचार और कल्पनाएँ लावा की तरह उमड़ पड़तीं, और एक ऐसी नवीन रचनाओं की धारा में तब्दील हो जातीं, जैसी दुनिया ने पहले कभी नहीं देखी थीं। इस विलक्षण प्रतिभा वाली होनहार युवा लेखिका के अचानक आगमन पर लोगों की आँखें फटी रह जातीं। अखबार के कला अनुभाग में उसकी मुस्कुराती हुई तस्वीर छपती, और संपादक उसके दरवाजे पर लाइन लगा देते।

लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। सुमिरे ने कुछ ऐसी रचनाएँ लिखीं जिनका आरंभ था, और कुछ ऐसी जिनका अंत था। लेकिन उन्होंने कभी ऐसी रचना नहीं लिखी जिसका आरंभ और अंत दोनों हों।

ऐसा नहीं था कि उसे लेखन में कोई रुकावट आ रही थी। बिलकुल नहीं—वह लगातार लिखती रहती थी, जो भी उसके मन में आता, लिख डालती थी। समस्या यह थी कि वह ज़रूरत से ज़्यादा लिखती थी। आप सोचेंगे कि उसे बस फालतू हिस्से हटाने होंगे और सब ठीक हो जाएगा, लेकिन बात इतनी आसान नहीं थी। वह कभी भी पूरी तस्वीर तय नहीं कर पाती थी—क्या ज़रूरी है और क्या नहीं। अगले दिन जब वह छपे हुए पन्ने को दोबारा पढ़ती, तो हर पंक्ति उसे बेहद ज़रूरी लगती। वरना वह पूरी पांडुलिपि मिटा देती। कभी-कभी, निराशा में, वह अपनी पूरी पांडुलिपि फाड़कर कूड़ेदान में फेंक देती। अगर यह सर्दियों की रात होती और कमरे में एक अंगीठी होती, तो कमरे में एक अलग ही गर्माहट होती—ला बोहेम के किसी दृश्य की कल्पना कीजिए—लेकिन सुमिरे के अपार्टमेंट में न सिर्फ़ अंगीठी नहीं थी, बल्कि फ़ोन भी नहीं था। एक ठीक-ठाक शीशे की तो बात ही छोड़ दीजिए।

सप्ताहांत में, सुमिरे मेरे अपार्टमेंट में आती थी, उसकी बाहों से उसके उपन्यासों के मसौदे बिखरे होते थे— वे भाग्यशाली पांडुलिपियाँ जो नरसंहार से बच गई थीं। फिर भी, उनका अच्छा-खासा ढेर लग जाता था। सुमिरे अपनी पांडुलिपियाँ पूरी दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति को दिखाती थी। मुझे।

कॉलेज में मैं उससे दो साल आगे थी, और हमारे विषय भी अलग-अलग थे, इसलिए हमारे मिलने की संभावना न के बराबर थी। लेकिन हमारी मुलाकात महज़ इत्तेफ़ाक से हुई। मई के महीने में एक सोमवार का दिन था, छुट्टियों के बाद का दिन, और मैं कॉलेज के मुख्य द्वार के सामने बस स्टॉप पर खड़ी थी, एक पुरानी किताबों की दुकान से मिली पॉल निज़ान की एक उपन्यास पढ़ रही थी। मेरे बगल में खड़ी एक छोटी लड़की ने झुककर किताब पर नज़र डाली और मुझसे पूछा, "इतने सारे लेखकों में से निज़ान ही क्यों?" उसकी आवाज़ से लग रहा था जैसे वह मुझसे झगड़ा करना चाहती हो। जैसे वह कुछ कहना चाहती हो, लेकिन कुछ कहने को न मिलने पर उसने मेरी पढ़ने की पसंद पर हमला बोल दिया।

सुमिरे और मैं काफी हद तक एक जैसी थीं। किताबें पढ़ना हमारे लिए सांस लेने जितना ही स्वाभाविक था। जब भी हमें थोड़ा खाली समय मिलता, हम किसी शांत कोने में बैठ जातीं और लगातार पन्ने पलटती रहतीं। जापानी उपन्यास, विदेशी उपन्यास, नई रचनाएँ, क्लासिक्स, आधुनिक साहित्य से लेकर बेस्टसेलर तक—किताब में बौद्धिक रूप से कुछ भी दिलचस्प होता, हम उसे पढ़ लेतीं। हम पुस्तकालयों

में समय बितातीं, टोक्यो के प्रसिद्ध पुराने किताबों के भंडार कांडा में पूरा दिन किताबें ढूंढने में गुज़ारतीं। मैंने सुमिरे के अलावा किसी और को इतना लगन से, इतनी गहराई से, इतनी व्यापक रूप से पढ़ते हुए नहीं देखा था, और मुझे यकीन है कि वह भी ऐसा ही महसूस करती होगी।

मैंने लगभग उसी समय स्नातक की उपाधि प्राप्त की जब सुमिरे ने कॉलेज छोड़ दिया था, और उसके बाद वह महीने में दो-तीन बार मेरे घर आती थी। कभी-कभी मैं उसके अपार्टमेंट में भी जाता था, लेकिन वहाँ मुश्किल से दो लोग ही समा पाते थे, और ज़्यादातर समय वह मेरे घर ही आती थी। हम पढ़ी हुई उपन्यासों के बारे में बातें करते और किताबें एक-दूसरे को देते। मैं अक्सर खाना बनाता था। मुझे खाना बनाना बुरा नहीं लगता था, और सुमिरे तो ऐसी थी जो खुद खाना बनाने के बजाय भूखी रहना पसंद करती थी। वह मुझे धन्यवाद देने के लिए अपनी पार्ट-टाइम नौकरियों से उपहार लाती थी। एक बार उसने एक दवा कंपनी के गोदाम में पार्ट-टाइम नौकरी की और मेरे लिए छह दर्जन कंडोम लाई। वे शायद अभी भी किसी दराज में कहीं पड़े होंगे।

सुमिरे ने जो उपन्यास—या कहें उपन्यासों के अंश—लिखे, वे उतने बुरे नहीं थे जितना वह सोचती थी। यह सच है कि कभी-कभी उसकी लेखन शैली जिद्दी बूढ़ी महिलाओं के एक समूह द्वारा सिले गए पैचवर्क रजाई जैसी लगती थी, जिनमें से प्रत्येक की अपनी-अपनी पसंद और शिकायतें थीं, और वे गंभीर चुप्पी में काम कर रही थीं। इसमें सुमिरे के कभी-कभी उन्माद-अवसादग्रस्त स्वभाव को भी जोड़ दें, तो चीजें कभी-कभी नियंत्रण से बाहर हो जाती थीं। मानो इतना ही काफी नहीं था, सुमिरे उन्नीसवीं सदी की शैली का एक विशाल संपूर्ण उपन्यास लिखने पर तुली हुई थी, एक ऐसा मिश्रित उपन्यास जो आत्मा और मानवीय नियति को पकड़ने के लिए हर संभव घटना को समाहित कर ले।

इन सब बातों के बावजूद, सुमिरे की लेखन शैली में एक अद्भुत ताजगी थी, जो उनके लिए महत्वपूर्ण बातों को ईमानदारी से चित्रित करने का प्रयास था। अच्छी बात यह थी कि उन्होंने किसी और की शैली की नकल करने की कोशिश नहीं की, और न ही उन्होंने हर बात को कुछ अनमोल, चालाक छोटे-छोटे लेखों में समेटने का प्रयास किया। यही बात मुझे उनके लेखन में सबसे ज्यादा पसंद आई। उनके लेखन की सीधी शक्ति को कम करके उसे एक सुखद, आरामदायक रूप देना उचित नहीं होता। चीजों को जल्दबाजी में करने की कोई जरूरत नहीं थी। उनके पास अभी भी कई मोड़ लेने

का समय था। जैसा कि कहावत है, "धीरे-धीरे पोषित होने वाली चीज ही अच्छी तरह बढ़ती है।"

"मेरा दिमाग किसी बेतुके गोदाम की तरह है जो उन चीजों से भरा पड़ा है जिनके बारे में मैं लिखना चाहती हूं," सुमिरे ने कहा।

“छवियां, दृश्य, शब्दों के अंश... मेरे मन में सब चमक रहे हैं, सब जीवंत हैं। लिखो! वे मुझसे पुकार रहे हैं। एक महान नई कहानी जन्म लेने वाली है—मैं इसे महसूस कर सकता हूँ। यह मुझे किसी बिल्कुल नई जगह ले जाएगी। समस्या यह है कि जब मैं अपनी मेज पर बैठता हूँ और इन सबको कागज पर उतारता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि कुछ महत्वपूर्ण चीज गायब है। यह ठोस रूप नहीं ले पाती—कोई ठोस रूप नहीं, बस कंकड़। और मैं कहीं नहीं पहुँच पाता।”

माथे पर शिकन लिए सुमिरे ने अपना ढाई सौवां पत्थर उठाया और उसे तालाब में फेंक दिया।

"शायद मुझमें किसी चीज की कमी है। कोई ऐसी चीज जो उपन्यासकार बनने के लिए बिल्कुल जरूरी है।"

गहरी खामोशी छा गई। ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरी सामान्य राय जानना चाहती हो।

कुछ देर बाद मैंने बोलना शुरू किया। “बहुत समय पहले चीन में ऐसे शहर हुआ करते थे जिनके चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें थीं और विशाल, भव्य द्वार बने हुए थे। ये द्वार केवल लोगों के आने-जाने के लिए ही नहीं थे, बल्कि इनका कहीं अधिक महत्व था। लोग मानते थे कि शहर की आत्मा इन द्वारों में बसती है। या कम से कम ऐसा माना जाता था कि उसे वहीं बसना चाहिए। यह कुछ वैसा ही है जैसा मध्य युग में यूरोप में लोग मानते थे कि शहर का दिल उसके गिरजाघर और केंद्रीय चौक में बसता है। यही कारण है कि आज भी चीन में कई अद्भुत द्वार खड़े हैं। क्या आप जानते हैं कि चीनियों ने इन द्वारों का निर्माण कैसे किया था?”

“मुझे कोई जानकारी नहीं है,” सुमिरे ने उत्तर दिया।

लोग बैलगाड़ी लेकर पुराने युद्धक्षेत्रों में जाते और वहाँ दबी हुई या बिखरी हुई सूखी हड्डियों को इकट्ठा करते। चीन एक प्राचीन देश है—यहाँ बहुत सारे पुराने युद्धक्षेत्र हैं—इसलिए उन्हें ज़्यादा दूर तक खोजना नहीं पड़ता था। शहर के प्रवेश द्वार पर वे एक विशाल द्वार बनाते और हड्डियों को अंदर बंद कर देते। उनका मानना था कि इस तरह

से उन्हें याद करने से मृत सैनिक उनके शहर की रक्षा करते रहेंगे। और भी बहुत कुछ है। जब द्वार बनकर तैयार हो जाता, तो वे कई कुत्तों को वहाँ लाते, उनके गले काटते और उनका खून द्वार पर छिड़क देते। उनका मानना था कि ताज़ा खून को सूखी हड्डियों के साथ मिलाने से ही मृतकों की प्राचीन आत्माएँ जादुई रूप से पुनर्जीवित हो जाती थीं। कम से कम यही धारणा थी।

सुमिरे चुपचाप मेरे बोलने का इंतजार करती रही।

“उपन्यास लिखना भी कुछ ऐसा ही है। आप हड्डियों को इकट्ठा करते हैं और अपना द्वार बनाते हैं, लेकिन द्वार चाहे कितना भी शानदार क्यों न हो, केवल उसी से वह एक जीवंत उपन्यास नहीं बन जाता। कहानी इस दुनिया की चीज नहीं है। एक सच्ची कहानी को एक तरह के जादुई बंधन की आवश्यकता होती है जो इस दुनिया को दूसरी दुनिया से जोड़ता है।”

तो आपका मतलब यह है कि मैं खुद जाकर अपना कुत्ता ढूंढूं?

मेंने सिर हिलाया।

और ताजा खून बहाया जाए?

सुमिरे ने अपने होंठ दबाए और इस बारे में सोचने लगी। उसने एक और बेचारा पत्थर तालाब में फेंक दिया। "अगर हो सके तो मैं किसी जानवर को मारना नहीं चाहती।"

मैंने कहा, "यह एक रूपक है। आपको वास्तव में किसी चीज को मारने की जरूरत नहीं है।"

हम हमेशा की तरह इनोगाशिरा पार्क में उसकी पसंदीदा बेंच पर साथ-साथ बैठे थे। तालाब हमारे सामने फैला हुआ था। हवा बिल्कुल शांत थी। गिरे हुए पत्ते पानी की सतह पर चिपके हुए थे। मुझे दूर कहीं अलाव की गंध आ रही थी। हवा में पतझड़ के अंत की महक फैली हुई थी, और दूर से आती आवाजें बहुत साफ सुनाई दे रही थीं।

मैंने कहा, "आपको समय और अनुभव की जरूरत है।"

“समय और अनुभव,” सुमिरे ने सोचते हुए आकाश की ओर देखा। “समय के बारे में आप कुछ नहीं कर सकते—यह तो बस बीतता ही रहता है। लेकिन अनुभव? मुझे यह मत बताओ। मुझे इस पर गर्व नहीं है, लेकिन मुझमें कोई यौन इच्छा नहीं है। और एक लेखिका को कैसा अनुभव हो सकता है अगर उसमें जुनून ही न हो? यह तो भूख के बिना रसोइए जैसा होगा।”

मैंने कहा, “मुझे नहीं पता तुम्हारी यौन इच्छा कहाँ चली गई है। शायद वो कहीं छिप

गई हो। या कहीं घूमने चली गई हो और घर लौटना भूल गई हो। लेकिन प्यार में पड़ना हमेशा ही एक अजीब अनुभव होता है। ये अचानक से प्रकट हो सकता है और तुम्हें अपनी गिरफ्त में ले सकता है। कौन जाने—शायद कल ही।"

सुमिरे ने अपनी नज़र आसमान से हटाकर मेरे चेहरे पर डाली। "क्या ये बवंडर जैसा है?"

"आप कह सकते हैं कि।"

उसने इस बारे में सोचा। "क्या तुमने कभी सचमुच बवंडर देखा है?"

"नहीं," मैंने जवाब दिया। शुक्र है, टोक्यो कोई तूफ़ानी इलाका नहीं था।

लगभग छह महीने बाद, जैसा कि मैंने भविष्यवाणी की थी, अचानक, अप्रत्याशित रूप से, सुमिरे को एक बवंडर जैसा प्यार हो गया। एक ऐसी महिला के साथ जो उससे सत्रह साल बड़ी थी। उसकी अपनी स्पुतनिक प्रेमिका।

शादी के रिसेप्शन में जब सुमिरे और मियू एक साथ मेज पर बैठी थीं, तो उन्होंने वही किया जो दुनिया में हर कोई ऐसी स्थिति में करता है, यानी एक-दूसरे का परिचय देना। सुमिरे को अपना नाम बिल्कुल पसंद नहीं था और वह जब भी हो सके उसे छिपाने की कोशिश करती थी। लेकिन जब कोई आपसे आपका नाम पूछे, तो शिष्टाचार के नाम पर अपना नाम बता देना ही सबसे अच्छा तरीका है।

उसके पिता के अनुसार, उसकी माँ ने उसका नाम सुमिरे रखा था। उन्हें मोजार्ट का उसी नाम का गीत बहुत पसंद था और उन्होंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि अगर उनकी बेटी होगी तो उसका नाम यही होगा। उनके बैठक कक्ष में एक शेल्फ पर मोजार्ट के गीतों का एक रिकॉर्ड रखा था, निस्संदेह वही जिसे उसकी माँ सुनती थीं, और जब सुमिरे बच्ची थी, तो वह उस भारी एलपी को बड़े ध्यान से टर्नटेबल पर रखती और उस गीत को बार-बार सुनती थी। एलिज़ाबेथ श्वार्ज़कोफ़ सोप्रानो थीं और वाल्टर गिसेकिंग पियानो बजाते थे। सुमिरे को गीत के बोल समझ नहीं आते थे, लेकिन मधुर धुन से उसे यकीन हो गया था कि यह गीत खेत में खिलते खूबसूरत वायलेट फूलों की प्रशंसा में लिखा गया है। सुमिरे को यह छवि बहुत प्यारी लगती थी। जूनियर हाई स्कूल में पढ़ते समय, सुमिरे को अपने स्कूल की लाइब्रेरी में उस गीत का जापानी अनुवाद मिला और वह दंग रह गई। गीत के बोल एक निर्दयी चरवाहे की बेटी के बारे में थे जो खेत में एक बेचारे छोटे से वायलेट फूल को कुचल देती है। लड़की को पता भी नहीं चलता कि उसने फूल को कुचल दिया है। यह गोएथे की एक कविता पर

आधारित था, और सुमिरे को इसमें कुछ भी अच्छा नहीं लगा, कोई सीख नहीं मिली।

"मेरी माँ मुझे इतने घटिया गाने का नाम कैसे दे सकती है?" सुमिरे ने गुस्से से कहा।

मियू ने नैपकिन के कोनों को अपनी गोद में समेटा, एक भावहीन मुस्कान बिखेरी और सुमिरे की ओर देखा। मियू की आँखें काफी गहरी थीं। कई रंग आपस में मिले हुए थे, लेकिन फिर भी स्पष्ट और निर्मल थीं।

“क्या आपको लगता है कि यह गाना सुंदर है?”

"हां, गाना वाकई खूबसूरत है।"

“अगर संगीत मधुर है, तो मुझे लगता है कि इतना ही काफी है। आखिर, इस दुनिया में हर चीज खूबसूरत तो नहीं हो सकती, है ना? तुम्हारी माँ को वह गाना इतना पसंद आया होगा कि उन्हें उसके बोल से कोई फर्क नहीं पड़ा होगा। और वैसे भी, अगर तुम इसी तरह का चेहरा बनाते रहोगे तो तुम्हारे चेहरे पर हमेशा के लिए झुर्रियाँ पड़ जाएँगी।”

सुमिरे ने अपने चेहरे पर मौजूद गुस्से के भाव को कुछ देर के लिए कम होने दिया।

"हो सकता है आप सही हों, लेकिन मुझे बहुत निराशा हुई। मेरा मतलब है, मेरी माँ ने मेरे लिए जो एकमात्र मूर्त चीज़ छोड़ी है, वह उनका नाम है। मेरे अलावा, ज़ाहिर है।"

“अच्छा, मुझे लगता है सुमिरे एक प्यारा नाम है। मुझे यह बहुत पसंद है,” मियू ने कहा और अपना सिर थोड़ा झुकाया, मानो चीजों को एक नए नजरिए से देख रही हो। “वैसे, क्या आपके पिताजी रिसेप्शन में आए हैं?”

सुमिरे ने चारों ओर देखा। स्वागत कक्ष बड़ा था, लेकिन उसके पिता लंबे थे और उसने उन्हें आसानी से पहचान लिया। वे दो मेजों की दूरी पर बैठे थे, उनका चेहरा एक तरफ मुड़ा हुआ था, और वे एक छोटे कद के, बुजुर्ग व्यक्ति से बात कर रहे थे, जिन्होंने मॉर्निंग कोट पहना हुआ था। उनकी मुस्कान इतनी विश्वासपूर्ण और गर्मजोशी भरी थी कि किसी बर्फीले को भी पिघला सकती थी। झूमरों की रोशनी में, उनकी सुंदर नाक एक रोकोको शैली की कलाकृति की तरह कोमल रूप से ऊपर उठी हुई थी, और सुमिरे भी, जो उन्हें देखने की आदी थी, उसकी सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गई। उसके पिता सचमुच इस तरह के औपचारिक समारोह के लिए उपयुक्त थे। उनकी उपस्थिति मात्र से ही उस स्थान में एक भव्य वातावरण बन गया था। मानो किसी बड़े फूलदान में सजे ताज़े फूल हों या कोई जेट-ब्लैक रंग की लंबी लिमोसिन कार हो।

सुमिरे के पिता को देखते ही मियू अवाक रह गई। सुमिरे को उनकी गहरी साँसें सुनाई

दीं। जैसे किसी शांत सुबह मखमली पर्दे को हटाकर सूरज की रोशनी अंदर आने दी जाती है, ताकि कोई खास इंसान जाग सके। सुमिरे ने सोचा, शायद मुझे चश्मा लाना चाहिए था। लेकिन वह अपने पिता के रूप-रंग पर लोगों, खासकर अधेड़ उम्र की महिलाओं की नाटकीय प्रतिक्रिया की आदी थी। सुंदरता क्या है? इसका क्या महत्व है? सुमिरे को यह हमेशा अजीब लगता था। लेकिन किसी ने कभी उसका जवाब नहीं दिया। बस वही अटल असर होता था।

“इतने सुंदर पिता का होना कैसा लगता है?” मियू ने पूछा। “बस जिज्ञासावश पूछ रही हूँ।”

सुमिरे ने आह भरी—लोग कितने अनुमान लगाने योग्य हो सकते हैं। “मैं यह नहीं कह सकती कि मुझे यह पसंद है। हर कोई एक ही बात सोचता है: कितना सुंदर आदमी है। एकदम असाधारण। लेकिन उसकी बेटी, खैर—वह देखने में कुछ खास नहीं है, है ना? शायद इसी को वे पूर्वजवाद कहते हैं।”

मियू सुमिरे की ओर मुड़ी, अपनी ठुड्डी को थोड़ा सा अंदर की ओर खींचा और उसके चेहरे को निहारने लगी। मानो वह किसी आर्ट गैलरी में किसी पेंटिंग की प्रशंसा कर रही हो।

“अगर तुम अब तक यही सोचती आई हो, तो तुम गलत थी,” मियू ने कहा। “तुम बहुत प्यारी हो। बिलकुल अपने पिता की तरह।” उसने हाथ बढ़ाया और बड़ी सहजता से मेज पर रखे सुमिरे के हाथ को हल्के से छुआ। “तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि तुम कितनी खूबसूरत हो।”

सुमिरे का चेहरा लाल हो गया। उसका दिल लकड़ी के पुल पर पागल घोड़े की तरह ज़ोर से धड़कने लगा।

इसके बाद सुमिरे और मियू अपनी निजी बातचीत में मग्न हो गईं। स्वागत समारोह काफी जीवंत था, जिसमें भोजन के बाद के भाषणों की सामान्य श्रृंखला थी (जिसमें सुमिरे के पिता का भाषण भी शामिल था), और भोजन भी बुरा नहीं था। लेकिन सुमिरे को इनमें से कुछ भी याद नहीं रहा। क्या मुख्य व्यंजन मांस था? या मछली? क्या उसने चाकू और कांटे का इस्तेमाल किया और शिष्टाचार का ध्यान रखा? या हाथों से खाया और प्लेट चाटी? सुमिरे को कुछ भी पता नहीं था।

दोनों ने संगीत के बारे में बातें कीं। सुमिरे शास्त्रीय संगीत की बहुत बड़ी प्रशंसक थी और बचपन से ही अपने पिता के रिकॉर्ड संग्रह को खंगालने का शौक रखती थी। पता

चला कि सुमिरे और मियू की संगीत पसंद काफी मिलती-जुलती थी। दोनों को पियानो संगीत बहुत पसंद था और वे इस बात से पूरी तरह आश्वस्त थीं कि बीथोवेन का सोनाटा नंबर 32 संगीत के इतिहास में सर्वोच्च शिखर है। और विल्हेम बैकहॉस द्वारा डेका के लिए सोनाटा का अद्वितीय प्रदर्शन व्याख्या का मानक स्थापित करता है। यह कितना आनंददायक, जीवंत और खुशी भरा अनुभव था!

व्लादिमीर होरोविट्ज़ की चोपिन की मोनोऑरल रिकॉर्डिंग, खासकर स्केर्ज़ो, बेहद रोमांचक हैं, है ना? फ्रेडरिक गुल्डा द्वारा डेबुसी के प्रील्यूड्स की प्रस्तुति हास्यपूर्ण और मनमोहक है; गीसेकिंग का ग्रीग शुरू से अंत तक मधुर है। स्वियातोस्लाव रिक्टर का प्रोकोफ़िएव बार-बार सुनने लायक है—उनकी प्रस्तुति भावों के बदलते स्वरूप को बखूबी पकड़ लेती है। और वांडा लैंडोव्स्का के मोजार्ट सोनाटा—इतने स्नेह और कोमलता से भरे हैं कि यह समझना मुश्किल है कि उन्हें इतनी सराहना क्यों नहीं मिली।

संगीत पर चर्चा समाप्त होने के बाद मियू ने पूछा, "आप क्या करते हैं?"

सुमिरे ने बताया, "मैंने कॉलेज छोड़ दिया है और उपन्यास लिखने के साथ-साथ पार्ट-टाइम नौकरियां भी कर रही हूं।" मियू ने पूछा, "किस तरह के उपन्यास?" सुमिरे ने जवाब दिया, "समझाना मुश्किल है।" मियू ने कहा, "तो फिर आपको किस तरह के उपन्यास पढ़ना पसंद है?" सुमिरे ने कहा, "अगर मैं सब बताऊंगी तो हम यहीं बैठे-बैठे ही समय बिता देंगे। आजकल मैं जैक केरोएक के उपन्यास पढ़ रही हूं।"

और यहीं से उनकी बातचीत में स्पुतनिक का जिक्र आया।

समय बिताने के लिए कुछ हल्की-फुल्की कहानियाँ पढ़ने के अलावा, मियू ने उपन्यासों को शायद ही कभी छुआ हो। उन्होंने समझाया, "मेरे मन से यह बात कभी नहीं निकलती कि ये सब काल्पनिक हैं, इसलिए मैं किरदारों के प्रति कोई सहानुभूति महसूस नहीं कर पाती। मैं हमेशा से ऐसी ही रही हूँ।" यही कारण था कि उनका पढ़ना उन किताबों तक ही सीमित था जो वास्तविकता को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती थीं। ज़्यादातर ये किताबें उनके काम में मददगार साबित होती थीं।

आप किस तरह का काम करते हैं? सुमिरे ने पूछा।

“ज़्यादातर इसका संबंध विदेशी देशों से है,” मियू ने कहा। “तेरह साल पहले, अपने पिता की ट्रेडिंग कंपनी का ज़िम्मा मैंने संभाल लिया, क्योंकि मैं सबसे बड़ी संतान थी। मैं पियानोवादक बनने की पढ़ाई कर रही थी, लेकिन मेरे पिता का कैंसर से निधन हो

गया; मेरी माँ शारीरिक रूप से कमज़ोर थीं और उन्हें जापानी भाषा भी ठीक से नहीं आती थी। मेरा भाई अभी हाई स्कूल में पढ़ रहा था, इसलिए हमने फिलहाल कंपनी की ज़िम्मेदारी लेने का फ़ैसला किया। कई रिश्तेदार कंपनी पर निर्भर थे, इसलिए मैं इसे यूँ ही बर्बाद नहीं होने दे सकती थी।"

उसने अपनी बात खत्म करते हुए एक आह भरी।

"मेरे पिता की कंपनी पहले कोरिया से सूखे खाद्य पदार्थ और औषधीय जड़ी-बूटियाँ आयात करती थी, लेकिन अब यह कई तरह की चीजों का कारोबार करती है। यहाँ तक कि कंप्यूटर के पुर्जे भी। कंपनी के प्रमुख के रूप में मेरा नाम अभी भी आधिकारिक तौर पर दर्ज है, लेकिन मेरे पति और छोटे भाई ने कारोबार संभाल लिया है, इसलिए मुझे अक्सर दफ्तर नहीं जाना पड़ता। इसके बजाय मैंने अपना खुद का निजी व्यवसाय शुरू कर दिया है।"

"क्या करें?"

"मुख्य रूप से वाइन आयात करती हूँ। कभी-कभी कॉन्सर्ट भी आयोजित करती हूँ। यूरोप की यात्रा काफी करती हूँ, क्योंकि इस तरह का व्यवसाय व्यक्तिगत संपर्कों पर निर्भर करता है। यही कारण है कि मैं अकेले ही कुछ शीर्ष कंपनियों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हूँ। लेकिन इस नेटवर्किंग में बहुत समय और ऊर्जा लगती है। यह तो स्वाभाविक ही है, मुझे लगता है..." उसने ऊपर देखा, मानो उसे कुछ याद आ गया हो। "वैसे, क्या आप अंग्रेजी बोलती हैं?"

अंग्रेजी बोलना मेरी खासियत नहीं है, लेकिन ठीक-ठाक है। हालांकि, मुझे अंग्रेजी पढ़ना बहुत पसंद है।

क्या आपको कंप्यूटर चलाना आता है?

"सच में नहीं, लेकिन मैं वर्ड प्रोसेसर का इस्तेमाल कर रहा हूं, और मुझे यकीन है कि मैं इसे सीख सकता हूं।"

"गाड़ी चलाने के बारे में क्या ख्याल है?"

सुमिरे ने सिर हिलाया। जिस साल उसने कॉलेज जाना शुरू किया, उसी साल उसने अपने पिता की वॉल्वो स्टेशन वैगन को गैरेज में पीछे की ओर ले जाने की कोशिश की और एक खंभे से टकराकर दरवाजा तोड़ दिया। तब से उसने मुश्किल से ही गाड़ी चलाई थी।

"ठीक है—क्या आप दो सौ शब्दों या उससे कम में, चिह्न और प्रतीक के बीच का

अंतर समझा सकते हैं?"
सुमिरे ने अपनी गोद से नैपकिन उठाया, हल्के से अपने मुंह को पोंछा और वापस रख दिया। वह महिला क्या कहना चाह रही थी? "एक संकेत और एक प्रतीक?"
“इसका कोई विशेष महत्व नहीं है। यह सिर्फ एक उदाहरण है।”
सुमिरे ने फिर से अपना सिर हिलाया। "मुझे कुछ पता नहीं है।"
मियू मुस्कुराई। "अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं चाहूंगी कि आप मुझे बताएं कि आपके पास किस तरह के व्यावहारिक कौशल हैं। आप किस चीज़ में विशेष रूप से अच्छे हैं। उपन्यास पढ़ने और संगीत सुनने के अलावा।"
सुमिरे ने चुपचाप अपना चाकू और कांटा अपनी प्लेट पर रखा, मेज के ऊपर लटके हुए अज्ञात स्थान को घूरकर देखा और उस प्रश्न पर विचार करने लगी।
"जिन चीजों में मैं अच्छी हूँ, उनकी सूची बनाने के बजाय, शायद उन चीजों की सूची बनाना ज़्यादा आसान होगा जो मैं नहीं कर सकती। मैं खाना नहीं बना सकती और न ही घर की सफाई कर सकती हूँ। मेरा कमरा हमेशा अस्त-व्यस्त रहता है और मैं हमेशा चीजें खो देती हूँ। मुझे संगीत पसंद है, लेकिन मैं एक सुर भी नहीं गा सकती। मैं अनाड़ी हूँ और मुश्किल से एक सिलाई कर पाती हूँ। मेरी दिशा की समझ बिल्कुल बेकार है और आधे समय तो मुझे बाएँ-दाएँ का भी पता नहीं चलता। जब मुझे गुस्सा आता है, तो मैं चीजें तोड़ देती हूँ। प्लेटें, पेंसिलें, अलार्म घड़ियाँ। बाद में मुझे पछतावा होता है, लेकिन उस समय मैं खुद को रोक नहीं पाती। मेरे बैंक में एक पैसा भी नहीं है। मैं बिना किसी कारण के शर्मिली हूँ और मेरे नाममात्र के ही दोस्त हैं।"
सुमिरे ने गहरी सांस ली और आगे बढ़ गई।
“वैसे, मैं बहुत तेज़ी से टाइप कर सकती हूँ। मैं उतनी फुर्तीली नहीं हूँ, लेकिन गलसुआ के अलावा, मैं अपनी ज़िंदगी में कभी बीमार नहीं पड़ी। मैं हमेशा समय की पाबंद हूँ, कभी भी अपॉइंटमेंट के लिए देर नहीं करती। मैं लगभग सब कुछ खा सकती हूँ। मैं कभी टीवी नहीं देखती। और थोड़ी-बहुत शेखी बघारने के अलावा, मैं शायद ही कभी कोई बहाना बनाती हूँ। महीने में एक बार मेरे कंधे इतने अकड़ जाते हैं कि मैं सो नहीं पाती, लेकिन बाकी समय मैं गहरी नींद सोती हूँ। मेरे मासिक धर्म हल्के होते हैं। मेरे दाँतों में एक भी कैविटी नहीं है। और मेरी स्पैनिश ठीक-ठाक है।”
मियू ने ऊपर देखा। "क्या आप स्पैनिश बोलते हैं?"
जब सुमिरे हाई स्कूल में थी, तब उसने एक महीना अपने चाचा के घर बिताया, जो

एक व्यवसायी थे और मैक्सिको सिटी में तैनात थे। इस अवसर का भरपूर लाभ उठाते हुए, उसने स्पेनिश भाषा का गहन अध्ययन किया। उसने कॉलेज में भी स्पेनिश भाषा का अध्ययन किया था।

मियू ने अपनी वाइन के गिलास के डंठल को दो उंगलियों के बीच पकड़ा और उसे हल्के से घुमाया, मानो किसी मशीन का पेंच घुमा रही हो। "क्या आप मेरे यहाँ कुछ समय के लिए काम करना चाहेंगे?"

“काम कर रही हो?” इस स्थिति के लिए सबसे उपयुक्त भाव क्या होगा, यह समझ न आने पर सुमिरे ने अपना वही गंभीर चेहरा बना लिया। “मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी कोई नौकरी नहीं की, और मुझे तो फ़ोन उठाना भी ठीक से नहीं आता। मैं सुबह दस बजे से पहले ट्रेन में सफ़र करने से बचती हूँ, और जैसा कि आप मुझसे बात करके समझ ही जाएँगे, मैं विनम्रता से बात नहीं करती।”

“इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता,” मियू ने सीधे-सादे अंदाज़ में कहा। “वैसे, क्या आप कल दोपहर करीब फ्री हैं?”

सुमिरे ने सहज भाव से सिर हिलाया। उसे इसके बारे में सोचने की भी जरूरत नहीं थी। आखिरकार, खाली समय ही तो उसकी सबसे बड़ी संपत्ति थी।

“तो फिर, क्यों न हम साथ में दोपहर का भोजन करें? मैं पास के ही किसी रेस्टोरेंट में एक शांत टेबल बुक करवा दूँगी,” मियू ने कहा। उसने वेटर द्वारा परोसी गई ताज़ी लाल वाइन का गिलास आगे बढ़ाया, उसे ध्यान से देखा, उसकी सुगंध को महसूस किया और फिर पहला घूंट लिया। उसकी पूरी प्रस्तुति में एक पियानोवादक द्वारा वर्षों के अनुभव से निखारी गई एक छोटी सी कैडेंज़ा जैसी सहज सुंदरता थी।

"हम बाद में बाकी बातों पर चर्चा करेंगे। आज तो मैं बस मजे करना चाहता हूँ। वैसे, मुझे पता नहीं यह कहाँ से है, लेकिन यह बोर्डो वाइन वाकई अच्छी है।"

सुमिरे ने अपना गंभीर चेहरा थोड़ा नरम किया और मियू से सीधे पूछा: "लेकिन तुम मुझसे अभी-अभी मिली हो, और तुम मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानती हो।"

“यह सच है। शायद मैं ऐसा नहीं करती,” मियू ने स्वीकार किया।

"तो आपको क्यों लगता है कि मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?"

मियू ने अपने गिलास में वाइन को घुमाया। उसने कहा, "मैं हमेशा लोगों को उनके चेहरे से परखती हूँ। मतलब, मुझे आपका चेहरा, आपका रूप-रंग पसंद है।"

सुमिरे को अचानक अपने आसपास की हवा पतली होती महसूस हुई। उसके कपड़े के

नीचे उसके निपल्स कस गए। उसने अनायास ही पानी का गिलास उठाया और गटक लिया। एक तेज नजर वाला वेटर तेजी से उसके पीछे आया और उसके खाली गिलास में बर्फ का पानी भर दिया। सुमिरे के उलझे हुए मन में बर्फ के टुकड़ों की खड़खड़ाहट खोखली सी गूंजी, मानो किसी गुफा में छिपे लुटेरे की कराहें हों।

सुमिरे को अचानक एहसास हुआ, "मुझे इस औरत से प्यार हो गया है। इसमें कोई शक नहीं। बर्फ ठंडी होती है; गुलाब लाल होते हैं; मुझे प्यार हो गया है। और यह प्यार मुझे कहीं दूर ले जाने वाला है। लहरें इतनी तेज़ हैं कि मेरे पास कोई चारा नहीं है। हो सकता है वह कोई खास जगह हो, कोई ऐसी जगह जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा हो। वहाँ कोई खतरा मंडरा रहा हो, कोई ऐसी चीज़ जो मुझे बुरी तरह घायल कर दे, जानलेवा साबित हो। हो सकता है मैं सब कुछ खो दूं। लेकिन अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है। मैं बस इस बहाव के साथ बह सकती हूँ। चाहे इसका मतलब हो कि मैं जलकर राख हो जाऊं, हमेशा के लिए खत्म हो जाऊं।"

अब, बाद में मुझे पता चला कि उसका अनुमान बिल्कुल सही निकला। एक सौ बीस प्रतिशत सटीक।

अध्याय दो

शादी के रिसेप्शन के लगभग दो हफ्ते बाद, एक रविवार की सुबह, भोर होने से ठीक पहले, सुमिरे ने मुझे फोन किया। ज़ाहिर है, मैं सो रहा था। गहरी नींद में, जैसे कोई पुराना लोहा। पिछले हफ्ते, मुझे एक मीटिंग का आयोजन करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी और ज़रूरी (यानी बेकार) दस्तावेज़ इकट्ठा करने में मुझे बस कुछ ही घंटे की नींद मिली थी। वीकेंड आते-आते, मैं जी भर के सोना चाहता था। और ज़ाहिर है, उसी समय फोन की घंटी बजी।

“क्या तुम सो रही थी?” सुमिरे ने उत्सुकता से पूछा।

“उम,” मैंने कराहते हुए कहा और सहज ही अपने बिस्तर के बगल में रखी अलार्म

घड़ी पर नज़र डाली। घड़ी की सुइयाँ बड़ी-बड़ी चमकीली थीं, लेकिन मैं समय नहीं पढ़ पा रही थी। मेरी आँखों के सामने जो छवि उभर रही थी और मेरे दिमाग का जो हिस्सा उसे समझ रहा था, वे दोनों तालमेल से बाहर थे, ठीक वैसे ही जैसे कोई बूढ़ी औरत सुई में धागा डालने की नाकाम कोशिश कर रही हो। मैं बस इतना समझ पा रही थी कि चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था और फ़िट्ज़गेराल्ड की कविता "आत्मा की अँधेरी रात" जैसा माहौल था।

"जल्द ही सुबह हो जाएगी।"

"उम," मैंने धीरे से कहा।

"मेरे घर के बिल्कुल पास एक आदमी मुर्गे पालता है। लगता है वो उन्हें सालों से पाल रहा है। आधे घंटे में वो ज़ोर-ज़ोर से बांग देने लगेंगे। दिन का ये मेरा सबसे पसंदीदा समय है। पूरब में अंधेरा आसमान धीरे-धीरे चमकने लगता है, और मुर्गे ऐसे बांग देते हैं मानो किसी से बदला ले रहे हों। क्या आपके आस-पास कहीं मुर्गे हैं?"

फोन के दूसरी तरफ से मैंने अपना सिर थोड़ा सा हिलाया।

मैं पार्क के पास वाले फोन बूथ से फोन कर रहा हूँ।

"हम्म," मैंने कहा। उसके अपार्टमेंट से लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक फोन बूथ था। चूंकि सुमिरे के पास फोन नहीं था, इसलिए उसे फोन करने के लिए हमेशा पैदल ही वहां जाना पड़ता था। बस एक आम सा फोन बूथ।

मुझे पता है मुझे इतनी सुबह आपको फोन नहीं करना चाहिए था। मुझे सच में बहुत अफ़सोस है। दिन का वो समय जब मुर्गे बांग भी नहीं देते। जब ये बेचारा चाँद पूरब के आकाश के एक कोने में किसी बेकार गुर्दे की तरह लटका हुआ है। लेकिन मेरे बारे में सोचो—मुझे घुप अंधेरे में इतनी दूर तक पैदल चलकर यहाँ आना पड़ा। मेरे हाथ में वो टेलीफोन कार्ड था जो मुझे मेरे चचेरे भाई की शादी में उपहार में मिला था। उस पर हाथ पकड़े हुए खुशहाल जोड़े की तस्वीर थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि ये कितना निराशाजनक है? हे भगवान, मेरे मोज़े भी एक जैसे नहीं हैं। एक पर मिकी माउस की तस्वीर है; दूसरा सादा ऊनी है। मेरा कमरा पूरी तरह से अस्त-व्यस्त है; मुझे कुछ भी नहीं मिल रहा है। मैं ये बात ज़ोर से नहीं कहना चाहती, लेकिन आप यकीन नहीं करेंगे कि मेरी अंडरवियर कितनी गंदी है। मुझे शक है कि कोई भी पैंटी चोर उन्हें छुएगा भी। अगर कोई दरिंदा मुझे मार डाले, तो मैं कभी इस बात को भुला नहीं पाऊँगी। मैं सहानुभूति नहीं माँग रही हूँ, लेकिन अगर आप मेरी थोड़ी सी भी मदद कर

दें तो अच्छा होगा। थोड़ा और जवाब दीजिए। आपके उन ठंडे-ठंडे शब्दों—ओह और उम—के अलावा। एक संयोजक शब्द कैसा रहेगा? एक संयोजक शब्द अच्छा रहेगा। एक 'फिर भी' या 'लेकिन'।

“लेकिन,” मैंने कहा। मैं बहुत थकी हुई थी और ऐसा लग रहा था जैसे मैं अभी भी किसी सपने के बीच में हूँ।

“ ‘हालाँकि,’ ” उसने दोहराया। “ठीक है, मैं इसे स्वीकार कर सकती हूँ। इंसान की तरफ से एक छोटा सा कदम। हालाँकि, यह बहुत ही छोटा कदम है।”

तो, क्या आपको कुछ चाहिए था?

“हाँ, मैं आपसे कुछ जानना चाहती थी। इसीलिए मैंने फोन किया था,” सुमिरे ने कहा। उसने हल्के से अपना गला साफ किया। “मैं यह जानना चाहती हूँ कि चिह्न और प्रतीक में क्या अंतर है?”

मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई, जैसे कोई चीज़ चुपचाप मेरे दिमाग में घूम रही हो। "क्या आप सवाल दोहरा सकते हैं?"

उसने पूछा, “चिह्न और प्रतीक में क्या अंतर है?”

मैं बिस्तर पर उठ बैठा, रिसीवर को अपने बाएं हाथ से दाएं हाथ में लिया। "मुझे यह बात साफ-साफ समझ लेने दीजिए—आप मुझे इसलिए फोन कर रहे हैं क्योंकि आप संकेत और प्रतीक के बीच का अंतर जानना चाहते हैं। रविवार की सुबह, भोर होने से ठीक पहले। उम..."

“ठीक चार बजकर पंद्रह मिनट पर,” उसने कहा। “यह बात मुझे परेशान कर रही थी। संकेत और प्रतीक में क्या अंतर हो सकता है? किसी ने मुझसे कुछ हफ़्ते पहले यही सवाल पूछा था, और यह मेरे दिमाग से निकल ही नहीं रहा। मैं सोने के लिए कपड़े उतार रही थी, और अचानक मुझे याद आ गया। जब तक मुझे इसका जवाब नहीं मिल जाता, मुझे नींद नहीं आ रही। क्या आप समझा सकते हैं? संकेत और प्रतीक में क्या अंतर है?”

“मुझे सोचने दो,” मैंने कहा और छत की ओर देखने लगा। पूरी तरह होश में होने पर भी, सुमिरे को तार्किक रूप से बातें समझाना कभी आसान नहीं होता था। “सम्राट जापान का प्रतीक हैं। क्या तुम यह समझ रही हो?”

“कुछ हद तक,” उसने जवाब दिया।

“‘लगभग’ कहना काफी नहीं होगा। जापान के संविधान में यही लिखा है,” मैंने

यथासंभव शांत भाव से कहा। “इसमें किसी भी तरह की बहस या संदेह की गुंजाइश नहीं है। आपको इसे स्वीकार करना ही होगा, वरना हम कहीं नहीं पहुंच पाएंगे।”
“समझ गया। मैं इसे स्वीकार करता हूँ।”
“धन्यवाद। तो—सम्राट जापान का प्रतीक है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सम्राट और जापान एक समान हैं। क्या आप समझ रहे हैं?”
मुझे समझ नहीं आया।
“ठीक है, इसे ऐसे समझिए—तीर एक दिशा में इंगित करता है। सम्राट जापान का प्रतीक है, लेकिन जापान सम्राट का प्रतीक नहीं है। आप यह बात समझते हैं, है ना?”
"मेरे ख़याल से।"
उदाहरण के लिए, मान लीजिए आप लिखते हैं, 'सम्राट जापान का प्रतीक है।' इससे दोनों शब्द समतुल्य हो जाते हैं। इसलिए जब हम 'जापान' कहते हैं, तो इसका अर्थ 'सम्राट' भी होता है, और जब हम सम्राट के बारे में बात करते हैं, तो इसका अर्थ भी 'जापान' होता है। दूसरे शब्दों में, दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कहना, 'A बराबर B है, इसलिए B बराबर A है।' यही प्रतीक का अर्थ है।
"तो आप कह रहे हैं कि आप सम्राट और जापान की अदला-बदली कर सकते हैं? क्या आप ऐसा कर सकते हैं?"
“मेरा मतलब वो नहीं है,” मैंने फोन पर ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा। “मैं बस अपनी तरफ से समझाने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरा इरादा सम्राट और जापान को आपस में बदलने का नहीं है। ये तो बस समझाने का एक तरीका है।”
“हम्म,” सुमिरे ने कहा। “मुझे लगता है मैं समझ गई। एक छवि के रूप में। यह एकतरफा सड़क और दोतरफा सड़क के बीच का अंतर है।”
"हमारे उद्देश्यों के लिए, यह काफी हद तक ठीक है।"
"आप चीजों को कितनी अच्छी तरह समझाते हैं, यह देखकर मैं हमेशा हैरान रह जाता हूं।"
“यही तो मेरा काम है,” मैंने कहा। मेरे शब्द कुछ बेजान और नीरस से लग रहे थे। “कभी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका बनकर देखना। तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं होगा कि मुझे किस तरह के सवाल मिलते हैं। ‘दुनिया चौकोर क्यों नहीं है?’ ‘स्क्विड के दस हाथ क्यों होते हैं, आठ क्यों नहीं?’ मैंने लगभग हर सवाल का जवाब देना सीख लिया

है।”
आप एक बेहतरीन शिक्षक होंगे।
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य हो रहा है।" मुझे सचमुच आश्चर्य हो रहा था।
“वैसे, स्क्विड के दस हाथ क्यों होते हैं, आठ क्यों नहीं?”
“क्या अब मैं वापस सो सकता हूँ? मैं बहुत थक गया हूँ। इस फोन को पकड़े हुए मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी ढहती हुई पत्थर की दीवार को थामे हुए हूँ।”
“तुम्हें पता है...,” सुमिरे ने थोड़ी देर रुककर कहा—जैसे कोई बूढ़ा चौकीदार सेंट पीटर्सबर्ग जाने वाली ट्रेन के गुजरने से ठीक पहले रेल क्रॉसिंग का गेट खड़खड़ाहट के साथ बंद कर रहा हो। “यह कहना वाकई बेवकूफी है, लेकिन मैं प्यार में हूँ।”
“उम,” मैंने कहा और रिसीवर को वापस अपने बाएं हाथ में ले लिया। फोन पर मुझे उसकी सांसें सुनाई दे रही थीं। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या जवाब दूं। और जैसा कि अक्सर होता है जब मुझे समझ नहीं आता कि क्या कहूं, मेरे मुंह से कुछ अटपटा सा निकल जाता है। “मेरे साथ नहीं, मेरा अनुमान है?”
“तुम्हारे साथ नहीं,” सुमिरे ने जवाब दिया। मुझे एक सस्ते लाइटर से सिगरेट जलाने की आवाज़ सुनाई दी। “क्या तुम आज खाली हो? मैं और बात करना चाहूँगी।”
"तुम्हारा मतलब है, मेरे अलावा किसी और से तुम्हारा प्यार हो जाना?"
“हाँ,” उसने कहा। “तुम्हारे अलावा किसी और से मुझे बेइंतहा प्यार हो जाने की बात।”
मैंने फोन को अपने सिर और कंधे के बीच दबाया और अंगड़ाई ली। "मैं शाम को खाली हूँ।"
“मैं पाँच बजे आ जाऊँगी,” सुमिरे ने कहा। और फिर जैसे बाद में याद आया हो, वैसे ही जोड़ा: “धन्यवाद।”
"किस लिए?"
"आधी रात को मेरे सवाल का जवाब देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"
मैंने अस्पष्ट जवाब दिया, फोन काट दिया और लाइट बंद कर दी। बाहर अभी भी घना अंधेरा था। सोने से ठीक पहले, मैंने उसके आखिरी धन्यवाद के बारे में सोचा और यह भी कि क्या मैंने उससे पहले कभी ये शब्द सुने थे। शायद एक बार सुने हों, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था।
सुमिरे सुबह पांच बजे से कुछ पहले मेरे अपार्टमेंट में आई। मैं उसे पहचान नहीं पाई।

उसका पहनावा पूरी तरह बदल गया था। उसके बाल छोटे और स्टाइलिश तरीके से कटे हुए थे, उसकी लटों पर कैंची के निशान अभी भी दिख रहे थे। उसने नेवी ब्लू रंग की छोटी आस्तीन वाली ड्रेस के ऊपर एक हल्का कार्डिगन पहना था और काले रंग की मध्यम-ऊँची हील वाली सैंडल पहनी थी। उसने मोज़े भी पहने थे। मोज़े? महिलाओं के कपड़ों के बारे में मुझे ज़्यादा जानकारी नहीं थी, लेकिन यह साफ़ था कि उसने जो कुछ भी पहना था, वह काफ़ी महंगा था। इस तरह सजी-धजी सुमिरे बेहद सजी-धजी और प्यारी लग रही थी। सच कहूँ तो, यह उस पर बहुत जँच रहा था। हालाँकि मुझे पुरानी, बिंदास सुमिरे ज़्यादा पसंद थी। सबकी अपनी-अपनी पसंद होती है।

मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा, "बुरा नहीं है। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि जैक केरोएक इस बारे में क्या कहेंगे।"

सुमिरे मुस्कुराई, उसकी मुस्कान हमेशा की तुलना में थोड़ी अधिक परिष्कृत थी। "चलिए टहलने चलते हैं?"

हम यूनिवर्सिटी बुलेवार्ड पर स्टेशन की ओर साथ-साथ टहलते हुए अपने पसंदीदा कॉफी शॉप पर रुके। सुमिरे ने अपनी कॉफी के साथ केक का अपना पसंदीदा टुकड़ा मंगवाया। अप्रैल के अंत के करीब एक सुहावनी रविवार शाम थी। फूलों की दुकानें क्रोकस और ट्यूलिप से भरी हुई थीं। हल्की हवा चल रही थी, जो लड़कियों की स्कर्ट के किनारों को धीरे से हिला रही थी और अपने साथ युवा पेड़ों की मनमोहक खुशबू ला रही थी।

मैंने अपने हाथ सिर के पीछे बांध लिए और सुमिरे को धीरे-धीरे लेकिन बड़े चाव से अपना केक खाते हुए देखा। कॉफी शॉप की छत पर लगे छोटे स्पीकरों से एस्ट्रुड गिलबर्टो एक पुराना बोसा नोवा गाना गा रही थीं। "मुझे अरुआंडा ले चलो," उन्होंने गाया। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, और प्यालों और तश्तरियों की खड़खड़ाहट दूर समुद्र की गर्जना जैसी लग रही थी। अरुआंडा—वहाँ कैसा होगा? मैंने सोचा।

"अभी भी नींद में?"

मैंने आंखें खोलते हुए जवाब दिया, "अब और नहीं।"

"क्या आप ठीक महसूस कर रहे हैं?"

मैं बिल्कुल ठीक हूँ। वसंत ऋतु में मोल्डाऊ नदी की तरह बिल्कुल ठीक हूँ।

सुमिरे ने कुछ देर तक उस खाली प्लेट को देखा जिसमें उसका केक का टुकड़ा रखा

था। उसने मेरी तरफ देखा।
"क्या आपको नहीं लगता कि मैंने ये कपड़े पहने हैं, ये अजीब है?"
"मेरे ख़याल से।"
“मैंने इन्हें नहीं खरीदा। मेरे पास उतने पैसे नहीं हैं। इनके पीछे एक कहानी है।”
"क्या मैं कहानी का अनुमान लगाने की कोशिश कर सकता हूँ?"
“आगे बढ़ो,” उसने कहा।
“आप हमेशा की तरह जैक केरोएक के फटेहाल कपड़ों में, होंठों से सिगरेट लटकती हुई, किसी सार्वजनिक शौचालय में हाथ धो रहे थे, तभी पांच फुट एक इंच की एक महिला हांफती हुई, सजी-धजी अंदर आई और बोली, ‘कृपया, मेरी मदद कीजिए! समझाने का समय नहीं है, लेकिन कुछ बुरे लोग मेरा पीछा कर रहे हैं। क्या मैं आपसे कपड़े बदल सकती हूँ? अगर हम कपड़े बदल लें तो मैं उनसे बचकर निकल जाऊंगी। शुक्र है कि हम दोनों का कद एक जैसा है।’ बिलकुल किसी हांगकांग की एक्शन फिल्म की तरह।”
सुमिरे हंस पड़ी। "और संयोग से उस दूसरी महिला ने साढ़े छह नंबर का जूता और सात नंबर की ड्रेस पहनी हुई थी।"
और ठीक उसी समय तुमने अपने कपड़े बदल लिए, यहाँ तक कि मिकी माउस वाली अंडरपैंट भी पहन ली।
"मिकी माउस मेरे मोजों पर है, मेरी पैंटी पर नहीं।"
मैंने कहा, "जो भी हो।"
“हम्म,” सुमिरे ने सोचा। “दरअसल, तुम बहुत ज्यादा गलत नहीं हो।”
"कितनी दूर?"
वह मेज के उस पार झुक गई। “यह एक लंबी कहानी है। क्या आप इसे सुनना चाहेंगे?”
"चूंकि आप मुझे बताने के लिए इतनी दूर तक आए हैं, तो मुझे स्पष्ट रूप से लगता है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं ऐसा करूं या न करूं। खैर, आप आगे बढ़िए। अगर आप चाहें तो एक प्रस्तावना भी जोड़ सकते हैं। और 'पवित्र आत्माओं का नृत्य' भी। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"
उसने बोलना शुरू किया। अपनी चचेरी बहन की शादी के रिसेप्शन के बारे में, और आओयामा में मियू के साथ किए गए दोपहर के भोजन के बारे में। और यह एक लंबी

कहानी थी।

अध्याय 3

शादी के अगले दिन, सोमवार को, बारिश हो रही थी। आधी रात के ठीक बाद बारिश शुरू हुई और भोर तक लगातार बरसती रही। हल्की, धीमी बारिश जिसने वसंत की धरती को धीरे से तर कर दिया और उसमें रहने वाले अज्ञात जीवों को चुपचाप जगा दिया।

मियू से दोबारा मिलने के ख्याल से सुमिरे रोमांचित हो गई और उसे ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह किसी पहाड़ी की चोटी पर अकेली खड़ी हो और हवा उसके चारों ओर घूम रही हो। वह हमेशा की तरह अपनी डेस्क पर बैठ गई, सिगरेट जलाई और वर्ड प्रोसेसर चालू किया, लेकिन स्क्रीन को घूरने के बावजूद उसके दिमाग में एक भी वाक्य नहीं आया। सुमिरे के लिए यह लगभग नामुमकिन था। उसने हार मान ली, वर्ड प्रोसेसर बंद किया, अपने छोटे से कमरे में लेट गई और होठों से लटकती हुई बिना जली सिगरेट के साथ, अर्थहीन विचारों में खो गई।

अगर मियू को देखने मात्र से ही मैं इतनी उत्तेजित हो जाती हूँ, तो सोचो अगर पार्टी में हमारी विदाई हो जाती और हम फिर कभी न मिलते तो कितना दर्द होता। क्या मैं बस उसकी तरह बनना चाहती हूँ—एक खूबसूरत, सभ्य बड़ी उम्र की महिला? नहीं, उसने फैसला किया, ऐसा नहीं हो सकता। जब मैं उसके पास होती हूँ, तो मैं उसे छूना चाहती हूँ। यह चाहत से थोड़ा अलग है।

सुमिरे ने आह भरी, कुछ देर छत को देखती रही और सिगरेट जला ली। उसने सोचा, "सोचो तो ये बहुत अजीब बात है। मैं यहाँ हूँ, अपनी ज़िंदगी में पहली बार प्यार में पड़ी हूँ, बाईस साल की उम्र में। और संयोग से वो दूसरी इंसान एक औरत है।"

मियू ने जिस रेस्टोरेंट में रिजर्वेशन कराया था, वह ओमोते सैंडो सबवे स्टेशन से दस

मिनट की पैदल दूरी पर था। यह उस तरह का रेस्टोरेंट था जिसे पहली बार आने वालों के लिए ढूंढना मुश्किल होता है, निश्चित रूप से यह ऐसी जगह नहीं थी जहाँ आप यूँ ही खाना खाने चले जाएँ। रेस्टोरेंट का नाम भी कुछ बार सुने बिना याद रखना मुश्किल था। प्रवेश द्वार पर सुमिरे ने उन्हें मियू का नाम बताया और उन्हें दूसरी मंजिल पर बने एक छोटे से निजी भोजन कक्ष में ले जाया गया। मियू पहले से ही वहाँ मौजूद थीं, ठंडी पेरियर की चुस्कियाँ लेते हुए वेटर से मेनू के बारे में बातचीत कर रही थीं।

नेवी ब्लू पोलो शर्ट के ऊपर मियू ने उसी रंग का सूती स्वेटर पहना हुआ था और एक पतली, सादी चांदी की हेयरपिन लगाई हुई थी। उसकी पैंट सफेद स्लिम-फिट जींस थी। मेज के एक कोने पर चमकीले नीले रंग का धूप का चश्मा रखा था और उसके बगल वाली कुर्सी पर स्क्वैश रैकेट और मिसोनी डिज़ाइनर का स्पोर्ट्स बैग रखा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह दोपहर में स्क्वैश के कुछ मैच खेलने के बाद घर लौट रही हो। मियू के गाल अभी भी हल्के गुलाबी थे। सुमिरे ने कल्पना की कि वह जिम में शॉवर में किसी मनमोहक खुशबू वाले साबुन से अपने शरीर को रगड़ रही होगी।

सुमिरे अपनी हमेशा की तरह हेरिंगबोन जैकेट और खाकी पैंट पहने, बिखरे बालों के साथ कमरे में दाखिल हुई। उसके बाल किसी अनाथ बच्चे की तरह उलझे हुए थे। मियू ने मेनू से नज़रें उठाकर उसे एक प्यारी सी मुस्कान दी। "तुमने मुझे उस दिन कहा था कि तुम सब कुछ खा सकती हो, है ना? मुझे उम्मीद है कि अगर मैं हम दोनों के लिए ऑर्डर कर दूं तो तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।"

बिल्कुल नहीं, सुमिरे ने जवाब दिया।

मियू ने दोनों के लिए एक ही चीज़ ऑर्डर की। स्टार्टर में मशरूम के साथ हल्की ग्रिल्ड मछली थी, जिस पर हरी चटनी का हल्का सा स्वाद था। मछली के टुकड़े एकदम सही पके थे—लगभग कलात्मक तरीके से भूरे हुए, जो देखकर ही पता चल जाता था कि स्वाद कितना बढ़िया है। कद्दू के ग्नोची और एक स्वादिष्ट एंडाइव सलाद ने भोजन को पूरा किया। मिठाई में उन्होंने क्रेम ब्रूली ली, जिसे केवल सुमिरे ने खाया। मियू ने उसे छुआ तक नहीं। आखिर में उन्होंने एस्प्रेसो पी। सुमिरे ने गौर किया कि मियू अपने खान-पान का बहुत ध्यान रखती थी। मियू की गर्दन पौधे के तने की तरह पतली थी, उसके शरीर पर जरा भी चर्बी नहीं थी। ऐसा लगता था कि उसे डाइट करने की ज़रूरत नहीं है। फिर भी, ऐसा लगता था कि वह खाने-पीने को लेकर बहुत सख्त थी। मानो कोई पर्वतीय किले में रहने वाला तपस्वी हो।

खाना खाते हुए वे यूं ही बातें करती रहीं। मियू सुमिरे के बारे में और जानना चाहती थी, और सुमिरे ने भी पूरी ईमानदारी से उसके सवालों के जवाब दिए। उसने मियू को अपने पिता, अपनी माँ, अपने स्कूलों (जिनसे उसे नफरत थी), एक रचना प्रतियोगिता में जीते पुरस्कार—एक साइकिल और विश्वकोशों का एक सेट—कॉलेज छोड़ने के कारण और अब वह अपना जीवन कैसे बिताती है, सब कुछ बताया। कोई बहुत रोमांचक जीवन नहीं था। फिर भी, मियू मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही, मानो किसी दूर देश के मनमोहक रीति-रिवाजों को सुन रही हो।

सुमिरे मियू के बारे में और भी बहुत कुछ जानना चाहती थी। लेकिन मियू अपने बारे में बात करने में हिचकिचा रही थी। "यह ज़रूरी नहीं है," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं तुम्हारे बारे में सुनना ज़्यादा पसंद करूंगी।"

खाना खत्म होने तक सुमिरे को ज्यादा कुछ पता नहीं चला था। उसे बस इतना ही पता चला था कि मियू के पिता ने उत्तरी कोरिया के उस छोटे से कस्बे में, जहाँ उनका जन्म हुआ था, बहुत सारा पैसा दान किया था और कस्बे के लोगों के लिए कई सार्वजनिक इमारतें बनवाई थीं - जिसके जवाब में कस्बे के चौक में उनकी एक कांस्य प्रतिमा स्थापित की गई थी।

“यह पहाड़ों के बीच बसा एक छोटा सा कस्बा है,” मियू ने बताया। “सर्दियाँ बहुत भयानक होती हैं, और उस जगह को देखकर ही कंपकंपी छूट जाती है। पहाड़ ऊबड़-खाबड़ और लाल रंग के हैं, झुके हुए पेड़ों से भरे हुए। एक बार जब मैं छोटी थी, मेरे पिताजी मुझे वहाँ ले गए थे। जब मूर्ति का अनावरण हुआ था। मेरे सारे रिश्तेदार रोते हुए आए और मुझे गले लगाया। मुझे उनकी एक भी बात समझ नहीं आई; मुझे याद है कि मैं बहुत डर गई थी। मेरे लिए वह एक ऐसे अनजान देश का कस्बा था जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।”

सुमिरे ने पूछा, "यह किस तरह की मूर्ति थी?" उसने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा था जिसकी मूर्ति बनवाई गई हो। "बस एक आम सी मूर्ति। वैसी ही जैसी कहीं भी मिल जाती हैं। लेकिन अपने पिता की मूर्ति बनवाना अजीब लगता है। सोचो अगर चिगासाकी स्टेशन के सामने वाले चौक में तुम्हारे पिता की मूर्ति लग जाए। तुम्हें कितना अजीब लगेगा, है ना? मेरे पिता असल में कद में छोटे थे, लेकिन मूर्ति में वे किसी विशालकाय व्यक्ति की तरह दिख रहे थे। मैं उस समय सिर्फ पाँच साल की थी, लेकिन मुझे यह बात बहुत प्रभावित कर गई कि जो चीजें हम देखते हैं वे हमेशा

असलियत से मेल नहीं खातीं।"

सुमिरे ने सोचा, अगर मेरे पिता की मूर्ति बनाई जाए, तो वह मूर्ति सबसे कम आकर्षक होगी। क्योंकि असल जिंदगी में उसके पिता कुछ ज्यादा ही सुंदर थे।

“मैं वहीं से शुरू करना चाहूंगी जहां हमने कल छोड़ा था,” मियू ने एस्प्रेसो का दूसरा कप शुरू करने के बाद कहा। “तो, क्या आप मेरे लिए काम करना चाहेंगे?”

सुमिरे को सिगरेट पीने की बहुत तीव्र इच्छा हो रही थी, लेकिन वहाँ कोई ऐशट्रे नहीं थी। उसने ठंडी पेरियर की एक घूंट से ही काम चलाया।

सुमिरे ने ईमानदारी से जवाब दिया, “अच्छा, आखिर किस तरह का काम होगा? जैसा कि मैंने कल कहा था, कुछ साधारण शारीरिक श्रम वाले कामों को छोड़कर, मैंने कभी भी कोई ठीक-ठाक नौकरी नहीं की है। साथ ही, मेरे पास पहनने के लिए कुछ भी ऐसा नहीं है जो ठीक हो। रिसेप्शन में मैंने जो कपड़े पहने थे, वो मैंने उधार लिए थे।”

मियू ने सिर हिलाया, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। उसने शायद इसी तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद की होगी।

“मुझे लगता है कि मैं आपको अच्छी तरह समझती हूँ,” मियू ने कहा, “और जो काम मैं आपके लिए सोच रही हूँ, उससे आपको कोई परेशानी नहीं होगी। मुझे पूरा यकीन है कि आप हर चुनौती का सामना कर लेंगे। असल बात तो यह है कि आप मेरे साथ काम करना चाहते हैं या नहीं। बस सीधे-सीधे हाँ या ना में जवाब दीजिए।”

सुमिरे ने सोच-समझकर अपने शब्द चुने। “यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई, लेकिन अभी मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास लिखना है। मतलब, इसीलिए तो मैंने कॉलेज छोड़ दिया।”

मियू ने मेज के उस पार सुमिरे की ओर सीधे देखा। सुमिरे ने उसके चेहरे पर उस शांत भाव को महसूस किया और उसका चेहरा गर्म हो गया।

"अगर मैं अपने मन की बात साफ-साफ कह दूं तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?" मियू ने पूछा।

“बिल्कुल नहीं। आप बेझिझक आगे बढ़ सकते हैं।”

इससे आपको बुरा लग सकता है।

यह दिखाने के लिए कि वह इसे संभाल सकती है, सुमिरे ने अपने होंठ सिकोड़े और मियू की आंखों में देखा।

“जीवन के इस पड़ाव पर मुझे नहीं लगता कि तुम कुछ सार्थक लिख पाओगे, चाहे तुम

अपने उपन्यासों पर कितना भी समय लगा दो," मियू ने शांत और निडर भाव से कहा। "तुम्हारे पास प्रतिभा है। मुझे यकीन है कि एक दिन तुम असाधारण लेखक बनोगे। मैं यह सिर्फ़ कह नहीं रही, मुझे सचमुच विश्वास है। तुम्हारे अंदर वह स्वाभाविक क्षमता है। लेकिन अभी समय नहीं है। उस द्वार को खोलने के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता है, वह अभी तुम्हारे पास नहीं है। क्या तुमने कभी ऐसा महसूस नहीं किया?"

सुमिरे ने संक्षेप में कहा, "समय और अनुभव।"

मियू मुस्कुराई। "खैर, मेरे यहाँ काम करने आ जाओ। यही तुम्हारे लिए सबसे अच्छा विकल्प है। और जब तुम्हें लगे कि सही समय आ गया है, तो सब कुछ छोड़कर जी भर कर उपन्यास लिखने में संकोच मत करना। उस मुकाम तक पहुँचने के लिए तुम्हें आम आदमी से ज़्यादा समय चाहिए। इसलिए, भले ही तुम अट्ठाईस साल की उम्र तक बिना किसी सफलता के पहुँच जाओ, और तुम्हारे माता-पिता तुम्हारा खर्चा बंद कर दें और तुम्हारे पास एक पैसा भी न बचे, तो क्या फर्क पड़ता है? हो सकता है तुम्हें थोड़ा भूखा रहना पड़े, लेकिन एक लेखक के लिए यह एक अच्छा अनुभव साबित हो सकता है।"

सुमिरे ने जवाब देने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन कुछ नहीं निकला। उसने बस सिर हिलाया।

मियू ने अपना दाहिना हाथ मेज के बीचोंबीच बढ़ाया। "मुझे अपना हाथ दिखाओ," उसने कहा।

सुमिरे ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया और मियू ने उसे ऐसे थाम लिया मानो उसे अपने आलिंगन में ले रही हो। उसकी हथेली गर्म और मुलायम थी। "तुम्हें इस बारे में इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। उदास मत दिखो। हम अच्छे से घुल-मिल जाएँगे।"

सुमिरे ने घबराकर किसी तरह खुद को शांत किया। मियू की इस तरह घूरती निगाहों से उसे ऐसा लग रहा था मानो वह धीरे-धीरे सिकुड़ रही हो। धूप में रखे बर्फ के टुकड़े की तरह, वह मानो गायब ही हो जाएगी।

अगले हफ्ते से मैं चाहूंगा कि आप हफ्ते में तीन दिन मेरे ऑफिस आएं। सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को। आप सुबह दस बजे शुरू कर सकते हैं और शाम चार बजे तक जा सकते हैं। इससे आप भीड़भाड़ से बच जाएंगे। मैं आपको ज्यादा पैसे नहीं दे

सकता, लेकिन काम आसान है और जब कुछ करने को न हो तो आप पढ़ सकते हैं। एक शर्त यह है कि आप हफ्ते में दो बार इटैलियन भाषा की निजी कक्षाएं लें। आपको स्पैनिश तो आती ही है, इसलिए यह ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए। और मैं चाहूंगा कि जब भी आपको समय मिले, आप अंग्रेजी में बातचीत और ड्राइविंग का अभ्यास करें। क्या आपको लगता है कि आप यह कर सकते हैं?

“मुझे भी ऐसा ही लगता है,” सुमिरे ने जवाब दिया। उसकी आवाज़ किसी और की लग रही थी, मानो किसी दूसरे कमरे से आ रही हो। उसे एहसास हुआ कि मुझसे जो भी करने को कहा जाए, जो भी आदेश दिया जाए, मैं बस हाँ ही कह सकती हूँ। मियू सुमिरे का हाथ पकड़े हुए उसे टकटकी लगाए देख रही थी। सुमिरे को मियू की गहरी आँखों में अपनी ही छवि साफ़ दिखाई दे रही थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आत्मा किसी दर्पण के दूसरी ओर खिंची जा रही हो। सुमिरे को यह नज़ारा अच्छा भी लग रहा था और साथ ही साथ डर भी रहा था।

मियू मुस्कुराई, उसकी आँखों के कोनों पर मनमोहक लकीरें उभर आईं। "चलो मेरे घर चलते हैं। मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है।"

अध्याय 4

कॉलेज में अपने पहले साल की गर्मियों की छुट्टियों में, मैं होकुरिकु क्षेत्र में अकेले घूमने निकला, वहाँ मेरी मुलाकात मुझसे आठ साल बड़ी एक महिला से हुई जो अकेले ही यात्रा कर रही थी, और हमने एक रात साथ बिताई। उस समय मुझे यह घटना सोसेकी के उपन्यास 'सानशिरो' की शुरुआत जैसी लगी।

वह महिला टोक्यो के एक बैंक के विदेशी मुद्रा विभाग में काम करती थी। जब भी उसे थोड़ा समय मिलता, वह कुछ किताबें लेकर अकेले ही निकल जाती। उसने समझाया, "अकेले यात्रा करना बहुत कम थका देने वाला होता है।" उसमें एक खास आकर्षण था, जिसकी वजह से यह समझना मुश्किल था कि मुझ जैसे शांत, दुबले-पतले,

अठारह साल के कॉलेज के छात्र में उसकी दिलचस्पी क्यों होगी। फिर भी, ट्रेन में मेरे सामने बैठी वह हमारी हल्की-फुल्की बातचीत का आनंद ले रही थी। वह खूब ज़ोर से हंस रही थी। और - मेरी आदत के विपरीत - मैं भी लगातार बातें कर रहा था। हम दोनों संयोग से एक ही स्टेशन, कनाज़ावा में उतरे। उसने मुझसे पूछा, "क्या आपके पास रहने की जगह है?" मैंने जवाब दिया, "नहीं; मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी होटल में कमरा बुक नहीं कराया था।" उसने बताया, "मेरे पास होटल का कमरा है। अगर आप चाहें तो रुक सकते हैं।" उसने आगे कहा, "चिंता मत कीजिए, चाहे एक हो या दो, किराया एक ही होता है।"

जब हमने पहली बार शारीरिक संबंध बनाए तो मैं घबराया हुआ था, जिसकी वजह से माहौल थोड़ा अजीब हो गया। मैंने उससे माफी मांगी।

“हम कितने शिष्ट हैं!” उसने कहा। “हर छोटी बात के लिए माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है।”

नहाने के बाद उसने बाथरोब पहना, फ्रिज से दो ठंडी बीयर निकालीं और उनमें से एक मुझे दे दी।

“क्या आप अच्छे ड्राइवर हैं?” उसने पूछा।

“मुझे अभी-अभी ड्राइविंग लाइसेंस मिला है, इसलिए मैं ऐसा नहीं कह सकता। बस औसत दर्जे का हूं।”

वह मुस्कुराई। “मेरे साथ भी ऐसा ही है। मुझे लगता है कि मैं काफी अच्छी ड्राइवर हूँ, लेकिन मेरे दोस्त इससे सहमत नहीं हैं। शायद इसी वजह से मैं भी औसत दर्जे की ड्राइवर हूँ। आप भी कुछ ऐसे लोगों को जानते होंगे जो खुद को बेहतरीन ड्राइवर समझते हैं, है ना?”

"हां, मुझे लगता है कि मैं करता हूं।"

और उनमें से कुछ ऐसे भी होंगे जो बहुत अच्छे नहीं होंगे।

मैंने सिर हिलाया। उसने चुपचाप बीयर का एक घूंट लिया और कुछ देर सोचने लगी।

“कुछ हद तक ये चीजें जन्मजात होती हैं। इसे प्रतिभा कह सकते हैं। कुछ लोग फुर्तीले होते हैं; कुछ लोग बिल्कुल अनाड़ी होते हैं... कुछ लोग काफी चौकस होते हैं, और कुछ नहीं। है ना?”

मैंने फिर सिर हिलाया।

“ठीक है, इस पर विचार करें। मान लीजिए कि आप किसी के साथ कार से लंबी

यात्रा पर जा रहे हैं। और आप दोनों बारी-बारी से गाड़ी चलाएंगे। आप किस तरह के व्यक्ति को चुनेंगे? एक ऐसा व्यक्ति जो अच्छा ड्राइवर हो लेकिन लापरवाह हो, या एक ऐसा व्यक्ति जो चौकस हो लेकिन उतना अच्छा ड्राइवर न हो?"

मैंने कहा, "शायद दूसरा वाला।"

"मैं भी," उसने जवाब दिया। "हमारे यहाँ जो स्थिति है, वह काफी मिलती-जुलती है। अच्छा हो या बुरा, फुर्तीला हो या अनाड़ी—ये बातें मायने नहीं रखतीं। महत्वपूर्ण है चौकस रहना। शांत रहना, अपने आसपास की चीजों के प्रति सजग रहना।"

"क्या कोई अलर्ट है?" मैंने पूछा।

वह बस मुस्कुराई और कुछ नहीं बोली।

कुछ देर बाद हमने दूसरी बार प्रेम किया, और इस बार यह एक सहज और सुखद अनुभव था। सतर्क रहना—मुझे लगता है कि मैं धीरे-धीरे इसे समझने लगा था। पहली बार मैंने देखा कि एक स्त्री जुनून की चरम सीमा पर कैसी प्रतिक्रिया देती है।

अगली सुबह नाश्ता करने के बाद हम अलग-अलग रास्तों पर चल दिए। उसने अपनी यात्रा जारी रखी और मैंने अपनी। जाते समय उसने मुझे बताया कि दो महीने बाद उसकी शादी मेरे सहकर्मी से होने वाली है। उसने खुशी से कहा, "वह बहुत अच्छा इंसान है। हम पांच साल से एक-दूसरे को जानते हैं और आखिरकार अब हम शादी करने जा रहे हैं। इसका मतलब है कि अब मैं शायद अकेले कोई यात्रा नहीं कर पाऊंगी। बस अब यही आखिरी यात्रा है।"

मैं तब जवान था और मुझे पूरा यकीन था कि इस तरह की रोमांचक घटनाएँ अक्सर होती रहती हैं। बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैं कितना गलत था।

मैंने सुमिरे को यह कहानी बहुत पहले सुनाई थी। मुझे याद नहीं कि यह बात कब उठी। शायद हम यौन इच्छा के बारे में बात कर रहे थे तब यह बात उठी थी।

"तो तुम्हारी कहानी का मकसद क्या है?" सुमिरे ने मुझसे पूछा।

मैंने जवाब दिया, "सतर्क रहने वाली बात। चीजों के बारे में पहले से कोई राय न बनाना, आसपास की बातों को सुनना, अपने कान, दिल और दिमाग को खुला रखना।"

"हम्म," सुमिरे ने जवाब दिया। वह मेरे मामूली यौन संबंध के बारे में सोच रही थी, शायद यह सोच रही थी कि क्या वह इसे अपने किसी उपन्यास में शामिल कर सकती है।

खैर, आपके पास तो वाकई बहुत सारे अनुभव हैं, है ना?
मैंने धीरे से विरोध करते हुए कहा, "मैं कुछ नहीं कहूंगा। चीजें तो बस हो जाती हैं।"
वह सोच में डूबी हुई अपने नाखून को हल्के से चबा रही थी। “लेकिन आप सचेत कैसे हो सकते हैं? जब अहम पल आता है, तो आप कहते हैं, ‘ठीक है, मैं सतर्क रहूंगी और ध्यान से सुनूंगी,’ लेकिन आप ये सब चीजें पल भर में तो नहीं सीख सकते, है ना? क्या आप थोड़ा और विस्तार से बता सकती हैं? मुझे एक उदाहरण दीजिए?”
"अच्छा, पहले आपको आराम करना होगा। जैसे... गिनती गिनकर।"
"और क्या?"
"गर्मी की दोपहर में फ्रिज में रखे खीरे के बारे में सोचिए। यह सिर्फ एक उदाहरण है।"
“एक मिनट रुको,” उसने कहा, फिर कुछ देर रुककर बोली। “क्या तुम्हारा मतलब यह है कि जब तुम किसी लड़की के साथ सेक्स करते हो, तो तुम गर्मियों की दोपहर में फ्रिज में रखे खीरे की कल्पना करते हो?”
मैंने कहा, "ऐसा हमेशा नहीं होता।"
"लेकिन कभी कभी।"
"मेरे ख़याल से।"
सुमिरे ने भौंहें चढ़ाकर दो-तीन बार सिर हिलाया। "तुम दिखने में जितने अजीब लगते हो, उससे कहीं ज़्यादा अजीब हो।"
मैंने कहा, "हर किसी में कुछ न कुछ अजीब बात होती है।"
“रेस्तरां में, जब मियू ने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी आँखों में गहराई से देखा, तो मुझे खीरे याद आ गए,” सुमिरे ने मुझसे कहा। “शांत रहना होगा, ध्यान से सुनना होगा,” मैंने खुद से कहा।
“खीरे?”
"क्या तुम्हें याद नहीं कि तुमने मुझे क्या बताया था—गर्मी की दोपहर में फ्रिज में रखे खीरे के बारे में?"
“ओह, हाँ, मुझे लगता है मैंने किया था,” मुझे याद आया। “तो क्या इससे मदद मिली?”
“थोड़ा सा,” सुमिरे ने कहा।
“यह सुनकर खुशी हुई,” मैंने जवाब दिया।
सुमिरे ने बातचीत को वापस सही विषय पर लाते हुए कहा, “मियू का अपार्टमेंट

रेस्टोरेंट से बस थोड़ी ही दूर है। बहुत बड़ा तो नहीं है, लेकिन बेहद प्यारा है। धूप से भरा बरामदा, गमले वाले पौधे, इटैलियन चमड़े का सोफा, बोस स्पीकर, कुछ प्रिंट्स, पार्किंग में एक जगुआर कार। वह वहाँ अकेली रहती है। उसका और उसके पति का घर सेतागाया में कहीं है। वह सप्ताहांत में वहाँ जाती है। ज़्यादातर समय वह आओयामा में अपने अपार्टमेंट में रहती है। आपको क्या लगता है उसने मुझे वहाँ क्या दिखाया होगा?"

"मार्क बोलन की पसंदीदा सांप की खाल की सैंडल एक कांच के डिब्बे में रखी हैं," मैंने हिम्मत करके कहा। "ये उन अनमोल धरोहरों में से एक हैं जिनके बिना रॉक एंड रोल का इतिहास अधूरा है। एक भी स्केल गायब नहीं है, मेहराब पर उनके हस्ताक्षर हैं। प्रशंसक दीवाने हो जाते हैं।"

सुमिरे ने माथे पर शिकन डालकर आह भरी। "अगर वे बेवकूफी भरे चुटकुलों से चलने वाली कार का आविष्कार कर लें, तो तुम बहुत आगे जा सकते हो।"

मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, "इसे मेरी बुद्धि की कमी का नतीजा मान लीजिए।"

ठीक है, मज़ाक छोड़ो, मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर गंभीरता से विचार करो। तुम्हें क्या लगता है उसने मुझे वहाँ क्या दिखाया? अगर तुम्हारा जवाब सही रहा, तो मैं बिल चुका दूँगा।

मैंने गला साफ किया। "उसने तुम्हें तुम्हारे पहने हुए खूबसूरत कपड़े दिखाए और कहा कि इन्हें पहनकर काम पर जाओ।"

"तुम जीत गई," उसने कहा। "उसकी एक अमीर दोस्त है जिसके पास ढेर सारे कपड़े हैं और उसका साइज़ लगभग मेरे जैसा ही है। ज़िंदगी कितनी अजीब है, है ना? कुछ लोगों के पास इतने ज़्यादा कपड़े होते हैं कि वे उन्हें अपनी अलमारी में नहीं रख पाते। और फिर मेरे जैसे लोग भी हैं, जिनके मोज़े कभी मैच नहीं करते। खैर, मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वह अपनी दोस्त के घर गई और ढेर सारे बचे हुए कपड़े लेकर वापस आई। अगर ध्यान से देखो तो ये थोड़े पुराने ज़माने के हैं, लेकिन ज़्यादातर लोगों को पता भी नहीं चलेगा।"

मैंने उससे कहा, मैं चाहे कितनी भी बारीकी से देख लूं, मुझे पता नहीं चलेगा।

सुमिरे ने संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ कहा, "कपड़े मुझ पर एकदम फिट बैठ रहे हैं। ड्रेस, ब्लाउज, स्कर्ट—सब कुछ। कमर थोड़ी कसवानी पड़ेगी, लेकिन बेल्ट लगा लो तो पता ही नहीं चलेगा। सौभाग्य से, मेरे जूतों का साइज़ लगभग मियू के साइज़ से

मिलता है, इसलिए उसने मुझे कुछ जोड़ी जूते दे दिए जो उसे ज़रूरत नहीं थे। ऊँची एड़ी के जूते, नीची एड़ी के जूते, गर्मियों के सैंडल। सब पर इटैलियन नाम लिखे हैं। हैंडबैग भी। और थोड़ा सा मेकअप भी।"

मैंने कहा, "बिल्कुल जेन आयर जैसी।"

इन सब बातों से समझ में आता है कि सुमिरे ने मियू के दफ्तर में हफ्ते में तीन दिन काम करना कैसे शुरू किया। सूट जैकेट और ड्रेस, ऊँची एड़ी के जूते और हल्का मेकअप लगाकर, किचिज़ोजी से हाराजुकु जाने वाली सुबह की ट्रेन में सफर करना। किसी तरह मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर पा रही थी।

अकासाका स्थित अपनी कंपनी के कार्यालय के अलावा, मियू का जिंगुमाए में अपना एक छोटा सा कार्यालय भी था। वहाँ उनका अपना डेस्क और उनकी सहायक (यानी सुमिरे का) का डेस्क था, साथ ही एक फाइलिंग कैबिनेट, एक फैक्स मशीन, एक फोन और एक पावरबुक भी। बस इतना ही। यह एक अपार्टमेंट बिल्डिंग का सिर्फ एक कमरा था, जिसमें एक छोटी सी रसोई और बाथरूम भी थे। वहाँ एक सीडी प्लेयर, मिनी स्पीकर और एक दर्जन क्लासिकल सीडी थीं। कमरा तीसरी मंजिल पर था, और पूर्व की ओर वाली खिड़की से एक छोटा सा पार्क दिखाई देता था। इमारत की पहली मंजिल पर उत्तरी यूरोपीय फर्नीचर बेचने वाला एक शोरूम था। पूरी इमारत मुख्य सड़क से कुछ दूरी पर बनी थी, जिससे यातायात का शोर बहुत कम रहता था।

ऑफिस पहुंचते ही सुमिरे पौधों में पानी डालती और कॉफी मशीन चालू करती। फिर वो अपने पावरबुक पर फोन मैसेज और ईमेल चेक करती। वो सारे मैसेज प्रिंट करके मियू की डेस्क पर रख देती। इनमें से ज़्यादातर मैसेज विदेशी एजेंटों के होते थे, अंग्रेज़ी या फ्रेंच में। जो भी सामान्य डाक आती, वो उसे खोलकर फेंक देती, जो भी साफ तौर पर बेकार होती। रोज़ाना कुछ कॉल आते, कुछ विदेश से। सुमिरे उस व्यक्ति का नाम, नंबर और मैसेज लिख लेती और मियू को उसके मोबाइल फोन पर भेज देती।

मियू आमतौर पर दोपहर एक या दो बजे आती थी। वह लगभग एक घंटे रुकती, सुमिरे को तरह-तरह के निर्देश देती, कॉफी पीती और कुछ फोन करती। जिन पत्रों का जवाब देना होता, वह सुमिरे को लिखवाती, जिसे सुमिरे वर्ड प्रोसेसर पर टाइप करके डाक या फैक्स कर देती थी। ये आमतौर पर संक्षिप्त व्यावसायिक पत्र होते थे। सुमिरे मियू के लिए हेयरड्रेसर, रेस्टोरेंट और स्क्वैश कोर्ट में भी बुकिंग करवा देती थी। काम

खत्म होने के बाद, मियू और सुमिरे थोड़ी देर बातें करतीं और फिर मियू चली जाती। इसलिए सुमिरे अक्सर दफ्तर में अकेली रहती थी, घंटों किसी से बात नहीं करती थी, लेकिन उसे कभी ऊब या अकेलापन महसूस नहीं हुआ। वह हफ्ते में दो बार होने वाले अपने इतालवी पाठों की समीक्षा करती, अनियमित क्रियाओं को याद करती और टेप रिकॉर्डर से अपने उच्चारण की जाँच करती। उसने कुछ कंप्यूटर कक्षाएं लीं और इतनी कुशल हो गई कि वह अधिकांश साधारण तकनीकी समस्याओं को हल कर सकती थी। उसने हार्ड ड्राइव में मौजूद जानकारी खोली और मियू की चल रही परियोजनाओं की सामान्य रूपरेखा को समझा।

मियू का मुख्य काम वही था जो उन्होंने शादी के रिसेप्शन में बताया था। वह मुख्य रूप से फ्रांस में स्थित छोटे शराब उत्पादकों के साथ अनुबंध करती थीं और टोक्यो के रेस्तरां और विशेष दुकानों को उनकी शराब थोक में बेचती थीं। कभी-कभी वह संगीतकारों के लिए जापान में संगीत कार्यक्रमों का आयोजन भी करती थीं। बड़ी कंपनियों के एजेंट जटिल व्यावसायिक पहलुओं को संभालते थे, जबकि मियू समग्र योजना और कुछ प्रारंभिक तैयारियों का ध्यान रखती थीं। मियू की खासियत अज्ञात, प्रतिभाशाली युवा कलाकारों को खोजकर उन्हें जापान लाना था।

मियू ने अपने निजी व्यवसाय से कितना मुनाफा कमाया, सुमिरे को इसका कोई अंदाजा नहीं था। लेखा-जोखा अलग डिस्क में रखे जाते थे और पासवर्ड के बिना उन तक पहुंचना असंभव था। फिर भी, मियू से मिलने और उससे बात करने की खुशी से सुमिरे का दिल खुशी से झूम रहा था। उसने सोचा, यही वो डेस्क है जहां मियू बैठती है। यही वो बॉलपॉइंट पेन है जिसे वो इस्तेमाल करती है, यही वो मग है जिसमें वो कॉफी पीती है। काम चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, सुमिरे उसे पूरी लगन से करती थी।

मियू अक्सर सुमिरे को डिनर पर बुलाती थी। चूंकि उसका व्यवसाय वाइन से जुड़ा था, इसलिए मियू को जाने-माने रेस्तरांओं में जाकर वहां की ताज़ा जानकारी रखना ज़रूरी लगता था। मियू हमेशा हल्की मछली का व्यंजन मंगवाती थी, या कभी-कभी चिकन, हालांकि वह आधा छोड़ देती थी और मिठाई नहीं लेती थी। वह वाइन की सूची की हर छोटी-बड़ी बात को ध्यान से पढ़ती थी, फिर भी एक गिलास से ज़्यादा नहीं पीती थी। मियू सुमिरे से कहती थी, "जितना मन करे पी लो," लेकिन सुमिरे के लिए इतनी वाइन खत्म करना नामुमकिन था। इसलिए आखिर में हमेशा एक महंगी वाइन की

बोतल का आधा हिस्सा बच जाता था, पर मियू को कोई आपत्ति नहीं होती थी।

एक बार सुमिरे ने मियू से कहा, "सिर्फ हम दोनों के लिए शराब की पूरी बोतल मंगवाना सरासर फिजूलखर्ची है। हम तो मुश्किल से आधी ही खत्म कर पाते हैं।"

“चिंता मत करो,” मियू हंस पड़ी। “हम जितना ज़्यादा वाइन छोड़ेंगे, रेस्टोरेंट में उतने ही ज़्यादा लोग इसे चख सकेंगे। सोमेलियर से लेकर हेड वेटर और पानी के गिलास भरने वाले वेटर तक, सभी को इसका स्वाद मिलेगा। इस तरह बहुत से लोगों को अच्छी वाइन का स्वाद समझ आने लगेगा। इसीलिए महंगी वाइन छोड़ना कभी व्यर्थ नहीं जाता।”

मियू ने 1986 मेडोक वाइन के रंग की जांच की और फिर, मानो किसी सुंदर गद्य का आनंद लेते हुए, सावधानीपूर्वक उसका स्वाद चखा।

"हर चीज के साथ ऐसा ही होता है—आपको अपने अनुभव से, अपने खर्च पर सीखना पड़ता है। आप इसे किसी किताब से नहीं सीख सकते।"

मियू से प्रेरणा लेकर सुमिरे ने अपना गिलास उठाया और बड़े ध्यान से एक घूंट लिया, उसे मुंह में थोड़ी देर रखा और फिर निगल लिया। एक पल के लिए मुंह में एक सुखद स्वाद रह गया, लेकिन कुछ सेकंड बाद वह गायब हो गया, जैसे गर्मी के पत्ते पर सुबह की ओस। इन सबने उसके स्वाद को अगले निवाले के लिए तैयार कर दिया। हर बार जब वह मियू के साथ खाना खाती और बातें करती, सुमिरे कुछ नया सीखती। सुमिरे इस बात से हैरान थी कि उसे अभी कितनी सारी चीजें सीखनी बाकी थीं।

“जानती हो, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कोई और बनना चाहती हूँ,” सुमिरे ने अचानक कहा, शायद ज़रूरत से ज़्यादा शराब पीने के कारण। “लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि तुम्हारे जैसा होना कितना अच्छा होगा।”

मियू ने एक पल के लिए अपनी सांस रोक ली। फिर उसने अपना वाइन ग्लास उठाया और एक घूंट पिया। एक क्षण के लिए, प्रकाश ने उसकी आँखों को वाइन के लाल रंग में रंग दिया। उसके चेहरे से हमेशा की तरह सौम्य भाव गायब हो गए।

“मुझे यकीन है कि आपको यह पता नहीं होगा,” उसने शांत भाव से कहा और अपना गिलास मेज पर रख दिया। “अभी जो मैं यहाँ हूँ, वह मैं नहीं हूँ। चौदह साल पहले मैं अपनी आधी-अधूरी पहचान खो बैठी थी। काश, मैं आपसे तब मिली होती जब मैं पूरी तरह स्वस्थ थी—यह कितना अच्छा होता। लेकिन अब इसके बारे में सोचना व्यर्थ है।”

सुमिरे इतनी हैरान रह गई कि उसकी बोलती बंद हो गई। और वह ज़रूरी सवाल पूछने

का मौका चूक गई। चौदह साल पहले मियू के साथ क्या हुआ था? वह अपनी असलियत से आधी क्यों हो गई थी? और आधे से उसका मतलब क्या था? अंत में, इस रहस्यमयी घोषणा ने सुमिरे को मियू के प्रति और भी आकर्षित कर दिया। सुमिरे ने सोचा, कितनी अद्भुत इंसान है!

बातचीत के कुछ अंशों से सुमिरे मियू के बारे में कुछ तथ्य जुटाने में कामयाब रही। मियू के पति जापानी थे, उनसे पाँच साल बड़े थे और कोरियाई भाषा में धाराप्रवाह थे, जो सियोल विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में दो साल के एक्सचेंज छात्र के रूप में बिताए समय का परिणाम था। वे एक मिलनसार व्यक्ति थे, अपने काम में माहिर थे और वास्तव में मियू की कंपनी के मार्गदर्शक थे। हालाँकि यह मूल रूप से एक पारिवारिक व्यवसाय था, लेकिन किसी ने भी उनके बारे में कभी कोई बुरी बात नहीं कही।

मियू बचपन से ही पियानो बजाने की प्रतिभा रखती थी। किशोरावस्था में ही उसने युवाओं के लिए आयोजित कई प्रतियोगिताओं में शीर्ष पुरस्कार जीते। उसने संगीत विद्यालय में दाखिला लिया, एक प्रसिद्ध पियानोवादक से शिक्षा प्राप्त की और अपने शिक्षक की सिफ़ारिशों के कारण फ्रांस की एक संगीत अकादमी में अध्ययन करने का अवसर मिला। उसका मुख्य वादन शुमान और मेंडेलसन जैसे उत्तरकालीन रोमांटिक संगीतकारों से लेकर पौलेंक, रावेल, बार्टोक और प्रोकोफ़िएव तक था। उसकी वादन शैली में एक गहन भावुक स्वर के साथ-साथ एक जीवंत और त्रुटिहीन तकनीक का अद्भुत संगम था। अपने छात्र जीवन में उसने कई संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिन्हें खूब सराहा गया। एक संगीत पियानोवादक के रूप में उसका उज्ज्वल भविष्य प्रतीत हो रहा था। लेकिन विदेश में रहने के दौरान उसके पिता बीमार पड़ गए और मियू ने पियानो का ढक्कन बंद कर दिया और जापान लौट आई। फिर कभी पियानो को हाथ नहीं लगाया।

“तुमने पियानो इतनी आसानी से कैसे छोड़ दिया?” सुमिरे ने हिचकिचाते हुए पूछा। “अगर तुम इस बारे में बात नहीं करना चाहतीं, तो कोई बात नहीं। मुझे बस यह—पता नहीं—थोड़ा अजीब लगता है। मेरा मतलब है, पियानोवादक बनने के लिए तुम्हें बहुत सी चीजों का त्याग करना पड़ा था, है ना?”

“मैंने पियानो के लिए बहुत सी चीजों का त्याग नहीं किया,” मियू ने धीमी आवाज़ में कहा। “मैंने सब कुछ त्याग दिया। पियानो ने मेरे शरीर का हर एक अंश, मेरा खून का

हर एक कतरा मांगा, और मैं मना नहीं कर सकी। एक बार भी नहीं।”
“क्या आपको इसे छोड़ने का अफसोस नहीं हुआ? आप लगभग सफल हो ही गए थे।”
मियू ने सुमिरे की आँखों में गहरी, स्थिर निगाहों से देखा। मियू की आँखों की गहराई में, मानो किसी शांत तालाब में बहती धारा में, बिना शब्दों की धाराएँ आपस में टकरा रही हों। धीरे-धीरे ही ये टकराती धाराएँ शांत हुईं।
“मुझे माफ कर दीजिए। मैं अपने काम से काम रखूंगी,” सुमिरे ने माफी मांगी।
कोई बात नहीं। मैं इसे ठीक से समझा नहीं पा रहा हूँ।
उन्होंने इसके बारे में फिर कभी बात नहीं की।

मियू अपने दफ्तर में धूम्रपान की अनुमति नहीं देती थी और अपने सामने किसी को धूम्रपान करते देखना उसे बिलकुल पसंद नहीं था, इसलिए नौकरी शुरू करने के बाद सुमिरे ने सोचा कि धूम्रपान छोड़ने का यह अच्छा मौका है। लेकिन दिन में दो पैकेट मार्लबोरो सिगरेट पीने की आदी होने के कारण सुमिरे के लिए यह सब इतना आसान नहीं रहा। एक महीने बाद, जैसे किसी जानवर की पूंछ काट दी गई हो, वैसे ही उसका भावनात्मक संतुलन बिगड़ गया—वैसे भी उसका संतुलन पहले से इतना मज़बूत नहीं था। और जैसा कि आप समझ सकते हैं, वह आधी रात को मुझे बार-बार फोन करने लगी।

मुझे बस सिगरेट पीने का ही ख्याल आता है। मुझे मुश्किल से नींद आती है, और जब नींद आती है तो बुरे सपने आते हैं। मुझे कब्ज है। मैं पढ़ नहीं सकता, एक लाइन भी लिख नहीं सकता।

मैंने कहा, "जब कोई छोड़ने की कोशिश करता है तो हर कोई इस दौर से गुजरता है। कम से कम शुरुआत में तो ऐसा ही होता है।"
“तुम्हें दूसरों के बारे में राय देना आसान लगता है, है ना?” सुमिरे ने चिढ़कर कहा। “तुमने तो अपनी जिंदगी में कभी सिगरेट भी नहीं पी।”
"अरे, अगर आप दूसरों के बारे में अपनी राय नहीं दे सकते, तो दुनिया एक बहुत ही डरावनी जगह बन जाएगी, है ना? अगर आपको ऐसा नहीं लगता, तो बस देख लीजिए कि जोसेफ स्टालिन ने क्या किया था।"
फोन के दूसरी तरफ सुमिरे काफी देर तक चुप रही। एक गहरी चुप्पी, मानो पूर्वी मोर्चे पर मृत आत्माएं हों।

मैंने पूछा, "हेलो?"
सुमिरे ने आखिरकार बोलना शुरू किया। “सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि सिगरेट छोड़ने की वजह से मैं लिख नहीं पा रही हूँ। यह एक कारण हो सकता है, लेकिन सिर्फ़ यही नहीं। मेरा मतलब है, सिगरेट छोड़ना तो बस एक बहाना है। जैसे: ‘मैंने सिगरेट छोड़ दी है; इसलिए मैं लिख नहीं पा रही हूँ। मैं कुछ नहीं कर सकती।’”
"तो इसी वजह से आप इतने परेशान हैं?"
“शायद,” उसने अचानक नम्रता से कहा। “बात सिर्फ इतनी नहीं है कि मैं लिख नहीं सकती। असल में मुझे इस बात से बहुत दुख होता है कि मुझे लिखने की कला पर ही भरोसा नहीं रहा। मैंने कुछ समय पहले जो लिखा था, उसे पढ़ा तो वह उबाऊ लगा। मैं क्या सोच रही थी? ऐसा लगता है जैसे कमरे के दूसरी तरफ फर्श पर पड़े कुछ गंदे मोजों को देख रही हूँ। मुझे बहुत बुरा लग रहा है, यह सोचकर कि मैंने कितना समय और ऊर्जा बर्बाद कर दी।”
"जब ऐसा हो तो आपको सुबह तीन बजे किसी को फोन करके उसे जगा देना चाहिए - प्रतीकात्मक रूप से, निश्चित रूप से - उसकी शांतिपूर्ण सांकेतिक नींद से।"
सुमिरे ने कहा, "मुझे बताओ, क्या तुम्हें कभी इस बात को लेकर उलझन महसूस हुई है कि तुम क्या कर रही हो, जैसे कि यह सही नहीं है?"
मैंने जवाब दिया, "मैं ज़्यादातर समय उलझन में ही रहता हूँ।"
"क्या आप गंभीर हैं?"
“हाँ।”
सुमिरे ने सोचते समय अपनी कई आदतों में से एक यह भी की, कि वह अपने सामने के दांतों पर नाखून थपथपा रही थी। “मुझे पहले कभी इस तरह की उलझन महसूस नहीं हुई। ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा आत्मविश्वास से भरी रहती हूँ, अपनी प्रतिभा को लेकर आश्वस्त रहती हूँ। मैं इतनी घबराई हुई भी नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं एक लापरवाह, स्वार्थी किस्म की इंसान हूँ। लेकिन मैं कभी उलझन में नहीं पड़ी। हो सकता है मैंने रास्ते में कुछ गलतियाँ की हों, लेकिन मुझे हमेशा लगा कि मैं सही रास्ते पर हूँ।”
मैंने जवाब दिया, "तुम भाग्यशाली रहे हो। जैसे धान बोने के ठीक बाद लंबे समय तक बारिश होना।"
"हो सकता है आप ठीक कह रहे हैं।"

लेकिन फिलहाल, चीजें ठीक नहीं चल रही हैं।
“हाँ, बिल्कुल। ऐसा नहीं है। कभी-कभी मुझे इतना डर लगता है, जैसे मैंने अब तक जो कुछ भी किया है, सब गलत हो गया हो। मुझे ऐसे सपने आते हैं जो बिल्कुल असली लगते हैं और मैं आधी रात को अचानक जाग जाती हूँ। और कुछ देर तक मुझे समझ नहीं आता कि क्या सच है और क्या नहीं... ऐसा ही कुछ। क्या आपको मेरी बात समझ आ रही है?”
मैंने जवाब दिया, "मुझे ऐसा ही लगता है।"
“इन दिनों मुझे अक्सर ये ख्याल आता है कि शायद उपन्यास लिखने के मेरे दिन खत्म हो गए हैं। दुनिया भोली-भाली, नासमझ लड़कियों से भरी पड़ी है, और मैं भी उन्हीं में से एक हूँ, जो झिझकते हुए ऐसे सपनों के पीछे भाग रही है जो कभी पूरे नहीं होंगे। मुझे अब इस दुनिया से चले जाना चाहिए। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।”
“पियानो का ढक्कन बंद कर दें?”
“एक रूपक।”
मैंने रिसीवर को अपने बाएं हाथ से दाएं हाथ में ले लिया। “मुझे एक बात का पूरा यकीन है। शायद आपको न हो, लेकिन मुझे है। एक दिन आप एक शानदार लेखक बनेंगे। मैंने आपकी रचनाएँ पढ़ी हैं, और मुझे पता है।”
"तुम सच में ऐसा लगता है?"
मैंने कहा, “दिल से कह रहा हूँ, मैं तुमसे ऐसी बातों पर झूठ नहीं बोलूँगा। तुमने अब तक जो लिखा है, उसमें कुछ बेहद अद्भुत दृश्य हैं। मान लो, तुम मई के महीने में समुद्र तट के बारे में लिख रहे हो। हवा की सरसराहट कानों में सुनाई देगी और नमकीन हवा की महक महसूस होगी। सूरज की हल्की गर्मी बांहों पर महसूस होगी। अगर तुम तंबाकू के धुएँ से भरे एक छोटे से कमरे के बारे में लिखो, तो यकीन मानो पाठक को साँस लेने में तकलीफ होने लगेगी। और उसकी आँखों में जलन होगी। ऐसी गद्य शैली अधिकांश लेखकों के बस की बात नहीं है। तुम्हारे लेखन में प्रकृति की जीवंत शक्ति बहती है। अभी वह सब कुछ पूरी तरह से सामने नहीं आया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अब पियानो का ढक्कन बंद करने का समय आ गया है।”
सुमिरे करीब दस-पंद्रह सेकंड तक चुप रही। "तुम मुझे तसल्ली देने या मेरा मूड ठीक करने के लिए तो ऐसा नहीं कह रही हो?"
“नहीं, मैं नहीं हूँ। यह एक निर्विवाद तथ्य है, बिल्कुल स्पष्ट।”

"मोल्डाऊ नदी की तरह?"
“बिल्कुल सही। मोल्डाऊ नदी की तरह।”
“धन्यवाद,” सुमिरे ने कहा।
मैंने जवाब दिया, "स्वागत है।"
"कभी-कभी तुम सच में बहुत प्यारी होती हो। जैसे क्रिसमस, गर्मियों की छुट्टियां और एक नया पिल्ला, सब एक साथ।"
जब भी कोई मेरी तारीफ करता है, तो मैं हमेशा की तरह कुछ अस्पष्ट जवाब बुदबुदाता हूँ।
“पर एक बात मुझे परेशान करती है,” सुमिरे ने कहा। “एक दिन तुम किसी अच्छी लड़की से शादी कर लोगे और मुझे पूरी तरह भूल जाओगे। और तब मैं आधी रात को जब चाहूँ तुम्हें फोन नहीं कर पाऊँगी। है ना?”
आप दिन के किसी भी समय फोन कर सकते हैं।
दिन का समय ठीक नहीं है। तुम्हें कुछ समझ नहीं आता, है ना?
“तुम भी नहीं,” मैंने विरोध किया। “ज़्यादातर लोग सूरज उगते ही काम शुरू कर देते हैं और रात को बत्ती बंद करके सो जाते हैं।” लेकिन ऐसा लग रहा था मानो मैं कद्दू के खेत के बीचोंबीच बैठकर मन ही मन देहाती कविताएँ सुना रहा हूँ।
“पिछले दिनों अखबार में एक लेख छपा था,” सुमिरे ने बेखबर होकर कहा। “उसमें लिखा था कि समलैंगिक महिलाएं जन्म से ही समलैंगिक होती हैं; उनके कान के अंदर एक छोटी सी हड्डी होती है जो बाकी महिलाओं की हड्डियों से बिल्कुल अलग होती है और उसी से सारा फर्क पड़ता है। एक छोटी सी हड्डी जिसका नाम थोड़ा जटिल है। तो समलैंगिक होना जन्मजात नहीं होता; यह आनुवंशिक होता है। एक अमेरिकी डॉक्टर ने इसकी खोज की थी। मुझे नहीं पता कि वह इस तरह का शोध क्यों कर रहे थे, लेकिन जब से मैंने इसके बारे में पढ़ा है, तब से मेरे दिमाग से उस छोटी सी बेकार सी हड्डी का ख्याल नहीं निकल रहा है जो मेरे कान के अंदर है। मैं सोचती रहती हूं कि मेरी अपनी उस छोटी सी हड्डी का आकार कैसा होगा।”
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। एकदम सन्नाटा छा गया, ठीक वैसे ही जैसे किसी बड़े फ्राइंग पैन में अचानक से ताजा तेल डाल दिया जाए।
"तो आपको यकीन है कि मियू के लिए आपके मन में जो भावना है वह यौन इच्छा है?" मैंने पूछा।

“पक्का यकीन है,” सुमिरे ने कहा। “जब मैं उसके साथ होती हूँ, तो मेरे कान की वो हड्डी बजने लगती है। जैसे नाज़ुक सीपियों की घंटियाँ बज रही हों। और मैं चाहती हूँ कि वो मुझे गले लगाए, सब कुछ अपने आप होने दे। अगर ये कामुक इच्छा नहीं है, तो मेरी नसों में ज़रूर टमाटर का रस बह रहा होगा।”

“हम्म,” मैंने कहा। भला मैं इसके जवाब में क्या कह सकता था?

“इससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। मैं किसी भी लड़के के साथ यौन संबंध क्यों नहीं बनाना चाहती। मुझे कुछ भी महसूस क्यों नहीं होता। मैंने हमेशा क्यों सोचा है कि मैं अन्य लोगों से अलग हूं।”

मैंने पूछा, "क्या मैं भी अपनी राय दे सकता हूँ?"

"ठीक है।"

“कोई भी स्पष्टीकरण या तर्क जो हर चीज़ को इतनी आसानी से समझा देता है, उसमें एक छिपा हुआ जाल होता है। मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ। किसी ने एक बार कहा था कि अगर कोई चीज़ एक किताब में समझाई जा सकती है, तो उसे समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरा मतलब है कि किसी भी निष्कर्ष पर जल्दी मत पहुँचिए।”

“मैं इसे याद रखूंगी,” सुमिरे ने कहा। और कॉल अचानक ही समाप्त हो गई।

मैंने कल्पना की कि वह फोन का रिसीवर रखकर टेलीफोन बूथ से बाहर निकल रही है। मेरी घड़ी में साढ़े तीन बज रहे थे। मैं रसोई में गई, एक गिलास पानी पिया, बिस्तर पर वापस लेट गई और आँखें बंद कर लीं। लेकिन नींद नहीं आई। मैंने पर्दा हटाया, और देखा कि चाँद आसमान में किसी फीके, चालाक अनाथ बच्चे की तरह तैर रहा है। मुझे पता था कि अब नींद नहीं आएगी। मैंने एक बर्तन में ताज़ी कॉफ़ी बनाई, खिड़की के पास एक कुर्सी खींची और वहाँ बैठकर पनीर और बिस्कुट खाने लगी। मैं बैठी-बैठी पढ़ती रही, भोर का इंतज़ार करती रही।

अध्याय 5

अब समय आ गया है कि मैं अपने बारे में कुछ बताऊं।

बेशक, यह कहानी सुमिरे के बारे में है, मेरे बारे में नहीं। फिर भी, कहानी मेरे नज़रिए से ही सुनाई जाती है—सुमिरे कौन थी और उसने क्या किया—और मुझे कथावाचक के बारे में थोड़ा बताना चाहिए। दूसरे शब्दों में, मैं खुद।

मुझे अपने बारे में बात करना मुश्किल लगता है। मैं हमेशा इस चिरस्थायी सवाल में उलझ जाता हूँ कि मैं कौन हूँ? बेशक, मेरे बारे में मुझसे ज़्यादा सटीक जानकारी किसी और को नहीं है। लेकिन जब मैं अपने बारे में बात करता हूँ, तो कई अन्य कारक—मूल्य, मानदंड, एक प्रेक्षक के रूप में मेरी अपनी सीमाएँ—मुझे, यानी कथावाचक को, अपने बारे में, यानी श्रोता के बारे में, कुछ बातें चुनने और कुछ को नकारने पर मजबूर कर देते हैं। मुझे हमेशा इस बात से परेशानी होती है कि मैं अपनी छवि को पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ रूप से प्रस्तुत नहीं कर पा रहा हूँ।

इस तरह की बातें ज़्यादातर लोगों को परेशान नहीं करतीं। मौका मिलने पर लोग अपने बारे में खुलकर बात करते हैं। वे कहते हैं, "मैं हद से ज़्यादा ईमानदार और खुला दिल का हूँ," या "मैं बहुत जल्दी आहत हो जाता हूँ और दुनिया में आसानी से घुलमिल नहीं पाता।" या "मैं दूसरों की सच्ची भावनाओं को समझने में माहिर हूँ।" लेकिन मैंने कई बार ऐसे लोगों को देखा है जो कहते हैं कि उन्हें आसानी से ठेस पहुँचती है, फिर भी वे बिना किसी वजह के दूसरों को दुख पहुँचाते हैं। खुद को ईमानदार और खुला दिल का कहने वाले लोग, अनजाने में ही, अपनी स्वार्थपरक बातों को मनवाने के लिए बेधड़क कोई बहाना बना लेते हैं। और जो लोग "दूसरों की सच्ची भावनाओं को समझने में माहिर" होते हैं, वे भी चापलूसी में आसानी से बहक जाते हैं। यह सब देखकर मन में यह सवाल उठता है: हम खुद को कितना जानते हैं?

जितना ज़्यादा मैं इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही मुझे लगता है कि इस विषय पर बाद में बात करना ठीक नहीं होगा। मैं अपने से बाहर की दुनिया की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता के बारे में और अधिक जानना चाहता हूँ। मेरे लिए बाहरी दुनिया कितनी महत्वपूर्ण है, मैं इसके साथ तालमेल बिठाकर संतुलन कैसे बनाए रखता हूँ। इसी तरह मैं अपने आप को बेहतर ढंग से समझ पाऊँगा।

किशोरावस्था में मेरे मन में इसी तरह के विचार आते थे। जैसे कोई कुशल कारीगर रस्सी को कसकर खींचकर एक-एक ईंट लगाता है, वैसे ही मैंने इस दृष्टिकोण—या कहें जीवन दर्शन—का निर्माण किया। इस दृष्टिकोण को गढ़ने में तर्क और अटकलों

का भी योगदान था, लेकिन अधिकतर यह मेरे अपने अनुभवों पर आधारित था। और अनुभवों की बात करें तो, कई दर्दनाक घटनाओं ने मुझे सिखाया कि अपने इस दृष्टिकोण को दूसरों तक पहुंचाना इतना आसान नहीं था।

इन सब बातों का नतीजा यह हुआ कि बचपन में ही मैंने अपने और दूसरों के बीच एक अदृश्य सीमा बना ली। मैं जिससे भी बात कर रहा होता, एक निश्चित दूरी बनाए रखता, और सामने वाले के हाव-भाव पर बारीकी से नज़र रखता ताकि वो मेरे ज़्यादा करीब न आ जाए। दूसरों की बातों पर मैं आसानी से विश्वास नहीं करता था। मेरी एकमात्र रुचि किताबें और संगीत में थी। जैसा कि आप समझ सकते हैं, मैंने एकाकी जीवन व्यतीत किया।

मेरा परिवार कोई खास नहीं है। इतना साधारण है कि समझ नहीं आता कहाँ से शुरू करूँ। मेरे पिताजी ने स्थानीय विश्वविद्यालय से विज्ञान में डिग्री प्राप्त की और एक बड़े खाद्य निर्माता की अनुसंधान प्रयोगशाला में काम किया। उन्हें गोल्फ बहुत पसंद था और हर रविवार को वे गोल्फ खेलने जाते थे। मेरी माँ को टैंका कविता का बहुत शौक था और वे अक्सर कविता पाठ में जाती थीं। जब भी अखबार के कविता अनुभाग में उनका नाम आता था, वे कई दिनों तक बहुत खुश रहती थीं। उन्हें सफाई करना पसंद था लेकिन खाना बनाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। मेरी बहन, जो मुझसे पाँच साल बड़ी है, उसे सफाई और खाना बनाना दोनों से ही नफरत थी। उसका मानना था कि ये काम तो दूसरे लोग करते हैं, वो नहीं। इसका मतलब यह था कि जब से मैं रसोई में जाने लायक हुई, मैंने अपना सारा खाना खुद बनाया। मैंने कुछ खाना पकाने की किताबें खरीदीं और लगभग सब कुछ बनाना सीख लिया। मैं इकलौती ऐसी बच्ची थी जिसे मैं जानती थी जो इस तरह रहती थी।

मेरा जन्म सुगिनामी में हुआ था, लेकिन जब मैं छोटी थी तो हम चिबा प्रांत के त्सुदानुमा में चले गए और वहीं पली-बढ़ी। हमारा इलाका हमारे जैसे ही उच्चवर्गीय परिवारों से भरा हुआ था। मेरी बहन हमेशा अपनी कक्षा में सबसे आगे रहती थी; उसे सबसे अच्छा न होना बिल्कुल बर्दाश्त नहीं था और वह अपनी रुचि के दायरे से बाहर एक इंच भी कदम नहीं रखती थी। उसने कभी भी, एक बार भी, हमारे कुत्ते को सैर पर नहीं ले गई। उसने टोक्यो विश्वविद्यालय के विधि संकाय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और अगले ही वर्ष बार परीक्षा उत्तीर्ण कर ली, जो कोई मामूली उपलब्धि नहीं थी। उसके पति एक सफल प्रबंधन सलाहकार हैं। वे योयोगी पार्क के पास एक

आलीशान इमारत में खरीदे गए चार कमरों के अपार्टमेंट में रहते हैं। हालांकि, अंदर से वह जगह बेहद गंदी है।

मैं अपनी बहन से बिलकुल अलग थी, मुझे पढ़ाई या क्लास रैंक की ज़्यादा परवाह नहीं थी। मैं अपने माता-पिता से कोई शिकायत नहीं चाहती थी, इसलिए मैं बस खानापूर्ति के लिए क्लास जाती थी, बस जैसे-तैसे पढ़ाई और रिवीजन करती थी। बाकी समय मैं फुटबॉल खेलती थी और घर आकर बिस्तर पर लेटकर एक के बाद एक उपन्यास पढ़ती रहती थी। न तो मैंने क्लास के बाद कोई ट्यूशन ली, न ही कोई ट्यूटर। फिर भी, मेरे नंबर बुरे नहीं थे। मुझे लगा कि इस रफ्तार से तो मैं एंट्रेंस एग्जाम की तैयारी में जी-तोड़ मेहनत किए बिना ही किसी अच्छे कॉलेज में दाखिला ले सकती हूँ। और ठीक वैसा ही हुआ।

मैंने कॉलेज जाना शुरू किया और एक छोटे से अपार्टमेंट में अकेले रहने लगी। त्सुदानुमा में अपने घर पर रहते हुए भी, मैंने अपने परिवार से शायद ही कभी खुलकर बात की हो। हम एक ही छत के नीचे रहते थे, लेकिन मेरे माता-पिता और बहन मेरे लिए अजनबी जैसे थे, और मुझे पता नहीं था कि वे जीवन से क्या चाहते हैं। और यही बात उनके लिए भी सच थी—उन्हें भी नहीं पता था कि मैं किस तरह की इंसान हूँ या मेरी क्या आकांक्षाएँ हैं। ऐसा नहीं था कि मुझे पता था कि मैं जीवन में क्या खोज रही हूँ—सच कहूँ तो मुझे पता ही नहीं था। मुझे उपन्यास पढ़ना बहुत पसंद था, लेकिन मैं इतनी अच्छी तरह से लिख नहीं पाती थी कि उपन्यासकार बन सकूँ; संपादक या आलोचक बनना भी मेरे लिए संभव नहीं था, क्योंकि मेरी पसंद बहुत अलग-अलग थी। मैंने सोचा कि उपन्यास केवल व्यक्तिगत आनंद के लिए होने चाहिए, न कि काम या पढ़ाई का हिस्सा। इसीलिए मैंने साहित्य के बजाय इतिहास में स्नातक की उपाधि ली। मुझे इतिहास में कोई विशेष रुचि नहीं थी, लेकिन एक बार जब मैंने इसका अध्ययन शुरू किया तो मुझे यह एक आकर्षक विषय लगा। हालाँकि मेरे सलाहकार ने ऐसा सुझाव दिया था, फिर भी मैंने स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने और अपना जीवन इतिहास को समर्पित करने की योजना नहीं बनाई थी। मुझे पढ़ना और सोचना अच्छा लगता था, लेकिन मैं अकादमिक किस्म का व्यक्ति नहीं था। जैसा कि पुश्किन ने कहा था:

> उन्हें यश प्राप्त करने की कोई लालसा नहीं थी।
> समय की मार से जमी हुई मिट्टी की गहराई में।

इन सब बातों का यह मतलब नहीं था कि मुझे किसी सामान्य कंपनी में नौकरी मिल जाएगी, मैं गलाकाट प्रतिस्पर्धा में अपना रास्ता बना लूंगा और पूंजीवादी पिरामिड की फिसलन भरी ढलान पर कदम-दर-कदम आगे बढ़ता जाऊंगा।

तो, विकल्पों की छंटनी करते-करते, मैं एक शिक्षक बन गया। स्कूल ट्रेन से कुछ ही स्टेशनों की दूरी पर था। संयोग से मेरे चाचा उस शहर के शिक्षा बोर्ड में थे और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं शिक्षक बनना चाहता हूँ। मैंने सभी आवश्यक शिक्षण पाठ्यक्रम नहीं लिए थे, इसलिए मुझे सहायक के रूप में नियुक्त किया गया; लेकिन थोड़े समय की जांच के बाद मैं नियमित शिक्षक के रूप में योग्य हो गया। मैंने शिक्षक बनने की योजना नहीं बनाई थी, लेकिन वास्तव में शिक्षक बनने के बाद मुझे इस पेशे के प्रति एक ऐसा गहरा सम्मान और स्नेह मिला जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वास्तव में, मुझे कहना चाहिए कि मैंने संयोग से स्वयं को खोज लिया।

मैं कक्षा के आगे खड़ा होकर अपने प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को भाषा, जीवन और दुनिया के बारे में बुनियादी बातें सिखाता था, और मुझे लगता था कि साथ ही साथ मैं खुद भी इन बुनियादी बातों को इन बच्चों की नज़रों और सोच के ज़रिए दोबारा सीख रहा हूँ। सही तरीके से करने पर यह एक ताजगी भरा अनुभव होता था। यहाँ तक कि गहरा भी। मेरे अपने विद्यार्थियों, उनकी माताओं और साथी शिक्षकों के साथ अच्छे संबंध थे।

फिर भी बुनियादी सवाल मुझे परेशान करते रहे: मैं कौन हूँ? मैं क्या खोज रहा हूँ? मैं कहाँ जा रहा हूँ?

इन सवालों के जवाब के सबसे करीब मैं तब पहुंचा जब मैंने सुमिरे से बात की। हालांकि, मैंने अपने बारे में बात करने से ज़्यादा ध्यान से उसकी बातें सुनीं। उसने मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछे, और अगर मैं जवाब नहीं दे पाता या मेरा जवाब समझ में नहीं आता, तो यकीन मानिए वह मुझे बता देती थी। दूसरे लोगों के विपरीत, वह सचमुच, दिल से मेरी बात सुनना चाहती थी। मैंने उसे जवाब देने की पूरी कोशिश की, और हमारी बातचीत ने मुझे उसके सामने और साथ ही खुद के सामने भी खुलकर बोलने में मदद की।

हम घंटों बातें करते थे। हम कभी बातें करते-करते नहीं थकते थे, हमारे पास चर्चा के लिए विषयों की कमी कभी नहीं होती थी—उपन्यास, दुनिया, प्राकृतिक दृश्य, भाषा। हमारी बातचीत किसी प्रेमी जोड़े की बातचीत से कहीं अधिक खुली और अंतरंग होती

थी।

मैंने कल्पना की कि अगर हम प्रेमी बन पाते तो कितना अच्छा होता। मैं अपनी त्वचा पर उसकी गर्माहट महसूस करने के लिए तरसता था। मैंने हम दोनों को शादीशुदा, साथ रहते हुए देखा। लेकिन मुझे इस सच्चाई का सामना करना पड़ा कि सुमिरे के मन में मेरे लिए कोई रोमांटिक भावना नहीं थी, यौन रुचि तो दूर की बात है। कभी-कभी देर रात तक बातें करने के बाद वह मेरे अपार्टमेंट में रुक जाती थी, लेकिन रोमांस का कोई नामोनिशान नहीं होता था। रात के 2 या 3 बजे वह जम्हाई लेती, बिस्तर पर लेट जाती, अपना चेहरा मेरे तकिए में दबा लेती और गहरी नींद में सो जाती। मैं फर्श पर चादर बिछाकर लेट जाता, लेकिन मुझे नींद नहीं आती, मेरा दिमाग कल्पनाओं, उलझे विचारों और खुद से नफरत से भरा रहता। कभी-कभी शारीरिक प्रतिक्रियाएँ मुझे पीड़ा देतीं और मैं सुबह तक दुख में जागता रहता।

यह बात स्वीकार करना मुश्किल था कि एक पुरुष होने के नाते उसके मन में मेरे लिए लगभग कोई भावना नहीं थी, शायद बिलकुल भी नहीं। कभी-कभी यह बात इतनी तकलीफदेह होती थी कि ऐसा लगता था जैसे कोई चाकू से मेरी आंतें चीर रहा हो। फिर भी, उसके साथ बिताया हर पल मेरे लिए अनमोल था। उसने मुझे अपने जीवन में बसे अकेलेपन को भुलाने में मदद की। उसने मेरी दुनिया को विस्तृत किया, मुझे गहरी, सुकून भरी सांस लेने में मदद की। ऐसा सिर्फ सुमिरे ही कर सकती थी।

दर्द कम करने और सुमिरे के साथ यौन तनाव को खत्म करने की उम्मीद में, मैंने दूसरी महिलाओं के साथ सोना शुरू कर दिया। मैं यह नहीं कह रहा कि मैं महिलाओं के बीच बहुत लोकप्रिय था; ऐसा नहीं था। मैं कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसे आप 'औरतों का चहेता' कह सकें और न ही मुझमें कोई खास आकर्षण था। फिर भी, किसी न किसी कारण से, कुछ महिलाएं मेरी ओर आकर्षित हुईं, और मैंने पाया कि अगर मैं चीजों को स्वाभाविक रूप से होने देता, तो उन्हें मेरे साथ सोने के लिए राजी करना इतना मुश्किल नहीं था। इन छोटे-मोटे संबंधों ने मुझमें कभी कोई जुनून पैदा नहीं किया, बस एक तरह का सुकून दिया।

मैंने सुमिरे से अपने प्रेम प्रसंग नहीं छिपाए। उसे हर छोटी-मोटी बात तो नहीं पता थी, बस मुख्य बातें पता थीं। उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। अगर मेरे प्रेम प्रसंगों में कोई बात उसे परेशान करती थी, तो वो ये थी कि सारी औरतें मुझसे बड़ी थीं और या तो शादीशुदा थीं या उनके मंगेतर या पक्के प्रेमी थे। मेरी सबसे हालिया साथी मेरी

एक छात्रा की माँ थी। हम महीने में लगभग दो बार मिलते थे।

सुमिरे ने एक बार मुझे चेतावनी दी थी, "यह तुम्हारी मौत का कारण बन सकता है।" और मैं उससे सहमत थी। लेकिन मैं इसके बारे में कुछ कर भी नहीं सकती थी।

जुलाई की शुरुआत में एक शनिवार को मेरी कक्षा का एक भ्रमण था। मैं अपने सभी पैंतीस विद्यार्थियों को ओकुटामा के एक पहाड़ पर चढ़ाई के लिए ले गया। दिन की शुरुआत तो उत्साह और उमंग से हुई, लेकिन अंत में सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। जब हम शिखर पर पहुँचे, तो दो बच्चों को पता चला कि वे अपने बैग में लंच रखना भूल गए हैं। आसपास कोई दुकान नहीं थी, इसलिए मुझे स्कूल द्वारा दिए गए अपने नोरी-माकी लंच को बाँटना पड़ा। जिससे मेरे पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा। किसी ने मुझे कुछ चॉकलेट दीं, लेकिन पूरे दिन मेरे पास बस वही थीं। इसके अलावा, एक लड़की ने कहा कि वह अब और नहीं चल सकती, इसलिए मुझे उसे पीठ पर बिठाकर पहाड़ से नीचे लाना पड़ा। दो लड़के आपस में मज़ाक में ही सही, हाथापाई करने लगे और उनमें से एक गिर गया और उसका सिर एक चट्टान से टकरा गया। उसे हल्की चोट आई और नाक से खून बहने लगा। कुछ गंभीर नहीं था, लेकिन उसकी कमीज़ खून से लथपथ थी, मानो वह किसी नरसंहार में शामिल रहा हो। जैसा कि मैंने कहा, पूरी तरह से अफरा-तफरी मची हुई थी।

जब मैं घर पहुँचा तो बुरी तरह थका हुआ था। मैंने नहाया, एक ठंडा पेय पिया, बिस्तर पर लेट गया, इतना थका हुआ था कि कुछ सोच भी नहीं पा रहा था, लाइट बंद की और चैन की नींद सो गया। तभी फोन की घंटी बजी, सुमिरे का फोन था। मैंने अपने बिस्तर के पास रखी घड़ी देखी; मैं सिर्फ़ एक घंटे सोया था। लेकिन मैंने कोई शिकायत नहीं की। मैं इतना थका हुआ था कि शिकायत करने की भी हिम्मत नहीं थी। कुछ दिन ऐसे ही होते हैं।

“क्या मैं आपसे कल दोपहर मिल सकती हूँ?” उसने पूछा।

मेरी सहेली शाम 6:00 बजे मेरे घर आ रही थी। उसे अपनी लाल टोयोटा सेलिका थोड़ी दूर सड़क पर पार्क करनी थी। मैंने बस इतना कहा, "मैं चार बजे तक खाली हूँ।"

सुमिरे ने बिना आस्तीन का सफेद ब्लाउज, गहरे नीले रंग की मिनीस्कर्ट और छोटा सा धूप का चश्मा पहना हुआ था। उसके पास सिर्फ एक छोटी सी प्लास्टिक की हेयर क्लिप थी। कुल मिलाकर, उसका पहनावा बिल्कुल साधारण था। उसने लगभग कोई मेकअप नहीं किया था, मानो वह जैसी थी वैसी ही दुनिया के सामने हो। फिर भी,

पहली नज़र में मैं उसे पहचान नहीं पाई। हमारी मुलाकात को सिर्फ तीन हफ्ते ही हुए थे, लेकिन मेज पर मेरे सामने बैठी लड़की मुझे उस सुमिरे से बिलकुल अलग दुनिया की लग रही थी जिसे मैं जानती थी। सीधे शब्दों में कहें तो, वह बेहद खूबसूरत थी। उसके भीतर कुछ खिल रहा था।

मैंने ड्राफ्ट बियर का एक छोटा गिलास मंगवाया, और उसने अंगूर का रस मांगा।

मैंने कहा, "आजकल तो मैं तुम्हें पहचान ही नहीं पाता।"

"यही तो वो मौसम है," उसने उदासीनता से कहा और स्ट्रॉ से अपना पेय पिया।

मैंने पूछा, "कौन सा मौसम?"

"शायद मेरी किशोरावस्था देर से शुरू हुई है। जब मैं सुबह उठकर आईने में अपना चेहरा देखता हूँ, तो वह किसी और के चेहरे जैसा लगता है। अगर मैंने सावधानी नहीं बरती, तो कहीं मैं पीछे न छूट जाऊँ।"

“तो फिर इसे जाने देना ही बेहतर होगा?” मैंने कहा।

लेकिन अगर मैं खुद को खो दूं, तो मैं कहाँ जाऊँगा?

"अगर कुछ दिनों के लिए ही सही, तो आप मेरे घर पर रुक सकते हैं। आपका हमेशा स्वागत रहेगा—वही आप जिसने खुद को खो दिया है।"

सुमिरे हंस पड़ी।

“मजाक छोड़ो,” उसने कहा। “आखिर मैं दुनिया में कहाँ जा रही हूँ?”

“मुझे नहीं पता। सकारात्मक पक्ष के बारे में सोचो। तुमने सिगरेट पीना छोड़ दिया है, तुम साफ-सुथरे कपड़े पहन रहे हो—अब तो तुम्हारे मोजे भी आपस में मेल खाते हैं—और तुम इतालवी बोल सकते हो। तुमने शराब को परखना सीख लिया है, कंप्यूटर चलाना सीख लिया है, और कम से कम अभी के लिए तुम रात को सो पाते हो और सुबह उठ पाते हो। तुम जरूर किसी मंजिल की ओर बढ़ रहे हो।”

लेकिन मैं अब भी एक पंक्ति भी नहीं लिख सकता।

हर चीज में उतार-चढ़ाव होते हैं।

सुमिरे ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। "क्या आप मेरी इस हालत को देशद्रोह कहेंगे?"

“दल-बदल?” एक पल के लिए मैं समझ ही नहीं पाई कि उसका क्या मतलब था।

“दल-बदल। अपने विश्वासों और मान्यताओं के साथ विश्वासघात करना।”

"तुम्हारा मतलब है नौकरी पाना, अच्छे कपड़े पहनना और उपन्यास लिखना छोड़ देना?"

"सही।"
मैंने सिर हिलाया। “तुम हमेशा से अपनी इच्छा से ही लिखते आए हो। अगर अब तुम्हारा मन नहीं है, तो क्यों लिखो? क्या तुम्हें लगता है कि लिखने का काम छोड़ने से कोई गाँव जलकर राख हो जाएगा? कोई जहाज़ डूब जाएगा? ज्वार-भाटे बिगड़ जाएँगे? या क्रांति पाँच साल पीछे चली जाएगी? बिलकुल नहीं। मुझे नहीं लगता कि कोई इसे दलबदल कहेगा।”
तो मुझे इसे क्या नाम देना चाहिए?
मैंने फिर से अपना सिर हिलाया। “दल-बदल शब्द बहुत पुराना हो गया है। अब कोई इसका इस्तेमाल नहीं करता। शायद किसी बचे-खुचे कम्यून में जाओ, वहाँ लोग इस शब्द का इस्तेमाल करते हों। मुझे इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन अगर तुम अब और लिखना नहीं चाहते, तो यह तुम्हारी मर्ज़ी है।”
“कम्यून? क्या आपका मतलब उन जगहों से है जिन्हें लेनिन ने बनाया था?”
“इन्हें कोलखोज कहते हैं। हालांकि, अब इनमें से कोई भी बचा नहीं है।”
“ऐसा नहीं है कि मैं लिखना छोड़ना चाहती हूँ,” सुमिरे ने कहा। उसने कुछ देर सोचा। “बात बस इतनी है कि जब मैं लिखने की कोशिश करती हूँ, तो लिख नहीं पाती। मैं अपनी डेस्क पर बैठती हूँ और कुछ भी नहीं सूझता—न कोई विचार, न कोई शब्द, न कोई दृश्य। सन्नाटा। कुछ समय पहले तक मेरे पास लिखने के लिए लाखों विषय थे। आखिर मुझे क्या हो रहा है?”
“आप मुझसे पूछ रहे हैं?”
सुमिरे ने सिर हिलाया।
मैंने अपनी ठंडी बीयर का एक घूंट लिया और अपने विचारों को इकट्ठा किया। “मुझे लगता है कि इस समय आप खुद को एक नए काल्पनिक ढांचे में ढाल रहे हैं। आप उसी में उलझे हुए हैं, इसलिए अपनी भावनाओं को लिखकर व्यक्त करने की कोई जरूरत नहीं है। वैसे भी, आप इतने व्यस्त हैं कि लिख नहीं सकते।”
“क्या आप ऐसा करते हैं? क्या आप खुद को एक काल्पनिक ढांचे में रखते हैं?”
“मुझे लगता है कि ज्यादातर लोग एक काल्पनिक दुनिया में जीते हैं। मैं भी अपवाद नहीं हूँ। इसे कार के ट्रांसमिशन के संदर्भ में सोचिए। यह एक ट्रांसमिशन की तरह है जो आपको जीवन की कठोर वास्तविकताओं से अलग करता है। आप बाहर से आने वाली शक्ति को लेते हैं और गियर का उपयोग करके उसे इस तरह समायोजित करते

हैं कि सब कुछ ठीक से तालमेल में रहे। इसी तरह आप अपने नाजुक शरीर को सुरक्षित रखते हैं। क्या यह बात समझ में आई?"

सुमिरे ने हल्के से सिर हिलाया। "और मैं अभी भी उस नए ढांचे में पूरी तरह से ढल नहीं पाई हूँ। आपका यही मतलब है?"

"अभी सबसे बड़ी समस्या यह है कि आपको पता नहीं है कि आप किस तरह के काल्पनिक उपन्यास से निपट रहे हैं। आपको कथानक का पता नहीं है; शैली अभी तय नहीं हुई है। आपको बस मुख्य पात्र का नाम पता है। फिर भी, यह नया उपन्यास आपके अस्तित्व को नए सिरे से गढ़ रहा है। इसे समय दीजिए, यह आपको अपने संरक्षण में ले लेगा, और हो सकता है कि आपको एक बिल्कुल नई दुनिया की झलक मिल जाए। लेकिन आप अभी वहाँ नहीं पहुँचे हैं। यही कारण है कि आप एक नाजुक स्थिति में हैं।"

"आपका मतलब है कि मैंने पुराना ट्रांसमिशन तो निकाल लिया है, लेकिन नया वाला अभी पूरी तरह से फिट नहीं किया है। और इंजन अभी भी चल रहा है। है ना?"

आप इसे इस तरह कह सकते हैं।

सुमिरे ने हमेशा की तरह उदास चेहरा बनाया और अपने ड्रिंक में पड़ी बेचारी बर्फ पर स्ट्रॉ से टैप किया। आखिरकार उसने ऊपर देखा।

मैं समझती हूँ कि आप अनिश्चितता से क्या कहना चाहती हैं। कभी-कभी मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है। ऐसा लगता है जैसे सब कुछ छिन गया हो, जिससे मैं बेबस हो गई हूँ। जैसे अब कोई गुरुत्वाकर्षण नहीं बचा है, और मैं अंतरिक्ष में भटक रही हूँ। मुझे पता नहीं कि मैं कहाँ जा रही हूँ।

"जैसे कोई छोटा खोया हुआ स्पुतनिक?"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"लेकिन आपके पास मियू तो है," मैंने कहा।

"कम से कम अभी के लिए।"

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।

मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि मियू भी यही चाह रही है?"

सुमिरे ने सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि वह है। शायद उतनी ही जितनी मैं हूँ।"

"क्या इसमें भौतिक पहलू भी शामिल हैं?"

"यह एक मुश्किल फैसला है। मैं अभी तक इसे समझ नहीं पा रहा हूँ। मेरा मतलब है,

उसकी भावनाएँ क्या हैं। जिसकी वजह से मैं खुद को खोया हुआ और भ्रमित महसूस कर रहा हूँ।”

मैंने कहा, "यह एक क्लासिक पहेली है।"

जवाब देने के बजाय, सुमिरे ने एक बार फिर अपने होंठ सिकोड़ लिए।

मैंने कहा, "लेकिन जहाँ तक आपकी बात है, आप जाने के लिए तैयार हैं।"

सुमिरे ने एक बार स्पष्ट रूप से सिर हिलाया। वह बेहद गंभीर थी। मैं अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर धंस गया और अपने हाथों को सिर के पीछे रख लिया।

“इन सब के बाद, मुझसे नफरत करना शुरू मत कर देना, ठीक है?” सुमिरे ने कहा। उसकी आवाज़ किसी पुरानी ब्लैक एंड व्हाइट जीन-ल्यूक गोडार्ड फिल्म के डायलॉग जैसी थी, जो मेरी चेतना के दायरे से थोड़ा बाहर से आती हुई सुनाई दे रही थी।

“इन सब के बाद भी, मैं तुमसे नफरत करना शुरू नहीं करूंगा,” मैंने जवाब दिया।

सुमिरे से मेरी अगली मुलाकात दो हफ्ते बाद, एक रविवार को हुई, जब मैंने उसे सामान शिफ्ट करने में मदद की। उसने अचानक ही सामान शिफ्ट करने का फैसला किया था, और मैं ही अकेली थी जो उसकी मदद करने आई थी। किताबों के अलावा उसके पास बहुत कम सामान था, और देखते ही देखते सारा काम खत्म हो गया। कम से कम गरीब होने का यही एक फायदा था।

मैंने एक दोस्त की टोयोटा मिनीवैन उधार ली और मियू का सामान योयोगी-उएहारा में उसके नए घर तक पहुँचाया। अपार्टमेंट बहुत नया या देखने में आकर्षक नहीं था, लेकिन किचिज़ोजी में उसकी पुरानी लकड़ी की इमारत की तुलना में—जो कि ऐतिहासिक स्थलों की सूची में शामिल होनी चाहिए—यह निश्चित रूप से बेहतर था। मियू के एक रियल एस्टेट एजेंट दोस्त ने उसके लिए यह जगह ढूंढी थी; सुविधाजनक स्थान होने के साथ-साथ किराया भी उचित था और यहाँ से नज़ारा भी बहुत अच्छा दिखता था। यह पुराने घर से दोगुना बड़ा भी था। वाकई, यह बदलाव फायदेमंद रहा। योयोगी पार्क पास ही था, और मन करे तो वह पैदल चलकर काम पर जा सकती थी।

“अगले महीने से मैं हफ्ते में पांच दिन काम करूंगी,” सुमिरे ने कहा। “हफ्ते में तीन दिन काम करना कोई खास फर्क नहीं पड़ता, और हर दिन आने-जाने में ज्यादा परेशानी नहीं होती। अब मुझे किराया ज्यादा देना पड़ रहा है, और मियू ने मुझसे कहा कि अगर मैं फुल-टाइम कर्मचारी बन जाऊं तो सब कुछ ठीक रहेगा। मतलब, अगर मैं घर पर बैठी रहूंगी तो भी लिख नहीं पाऊंगी।”

मैंने टिप्पणी की, "यह एक अच्छा विचार लगता है।"
"अगर मैं हर दिन काम करूं तो मेरी जिंदगी ज्यादा व्यवस्थित हो जाएगी, और शायद मुझे सुबह साढ़े तीन बजे आपको फोन नहीं करना पड़ेगा। यही तो इसका एक अच्छा पहलू है।"
मैंने कहा, "आपने बहुत अच्छी बात कही। लेकिन यह सोचकर दुख होता है कि आप मुझसे इतनी दूर रहेंगे।"
"क्या आप सचमुच ऐसा महसूस करते हैं?"
“बेशक। क्या मैं अपना पवित्र हृदय निकालकर तुम्हें दिखाऊं?”
मैं नए अपार्टमेंट के नंगे फर्श पर दीवार से टेक लगाकर बैठा था। सुमिरे के पास घरेलू सामान इतना कम था कि नया घर वीरान लग रहा था। खिड़कियों पर पर्दे नहीं थे, और जो किताबें बुकशेल्फ़ में नहीं समा रही थीं, वे फर्श पर बौद्धिक शरणार्थियों के ढेर की तरह पड़ी थीं। दीवार पर लगा पूरा लंबा दर्पण, जो मियू का दिया हुआ एक प्यारा सा उपहार था, वही एक चीज़ थी जो अलग दिख रही थी। शाम की हल्की हवा में पार्क से कौवों की कांव-कांव सुनाई दे रही थी। सुमिरे मेरे बगल में बैठ गई। "जानती हो क्या?" उसने कहा।
"क्या?"
"अगर मैं कोई निकम्मी समलैंगिक महिला होती, तो क्या तुम तब भी मेरी दोस्त रहती?"
“चाहे तुम निकम्मी लेस्बियन हो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। बॉबी डारिन के सबसे बेहतरीन गानों में से ‘मैक द नाइफ’ को हटा दो, तो मेरी जिंदगी तुम्हारे बिना कुछ ऐसी ही होगी।”
सुमिरे ने अपनी आँखें सिकोड़कर मेरी ओर देखा। "मुझे आपकी उपमा समझ में नहीं आई, लेकिन आपका मतलब यह है कि आपको बहुत अकेलापन महसूस होगा?"
मैंने कहा, "लगभग यही बात है।"
सुमिरे ने अपना सिर मेरे कंधे पर टिका दिया। उसके बाल क्लिप से बंधे हुए थे, और मैं उसके छोटे, सुंदर कान देख पा रहा था। इतने प्यारे कान कि मानो अभी-अभी बने हों। कोमल, आसानी से चोट लगने वाले कान। मैं उसकी साँसें अपनी त्वचा पर महसूस कर सकता था। उसने गुलाबी रंग की छोटी पैंट और एक फीकी, सादी गहरे नीले रंग की टी-शर्ट पहनी हुई थी। टी-शर्ट से उसके छोटे निपल्स की आकृति झलक

रही थी। पसीने की हल्की सी गंध आ रही थी। उसका और मेरा पसीना, दोनों की गंध आपस में मिली हुई थी।

मैं उसे गले लगाना चाहता था। मुझे उसे वहीं ज़मीन पर पटकने की तीव्र इच्छा हुई। लेकिन मुझे पता था कि यह व्यर्थ प्रयास होगा। अचानक मेरी सांसें रुकने लगीं और दृष्टि सीमित हो गई। समय थम सा गया, मानो पहिए घूम रहे हों। मेरी इच्छाएं चट्टान की तरह सख्त हो गईं। मैं असमंजस में था, व्याकुल था। मैंने खुद को संभालने की कोशिश की। मैंने गहरी सांस ली, आंखें बंद कीं और उस गूढ़ अंधेरे में धीरे-धीरे गिनती करने लगा। मेरी इच्छाएं इतनी प्रबल थीं कि मेरी आंखों में आंसू आ गए।

“मुझे भी तुम पसंद हो,” सुमिरे ने कहा। “इस पूरी दुनिया में, सबसे ज्यादा तुम मुझे पसंद हो।”

"मियू के बाद, तुम्हारा मतलब है?" मैंने कहा।

"मियू थोड़ी अलग है।"

“ऐसा कैसे?”

“उसके लिए मेरे मन में जो भावनाएँ हैं, वे तुम्हारे लिए मेरे मन में मौजूद भावनाओं से अलग हैं। मेरा मतलब है... हम्म... मैं इसे कैसे कहूँ?”

मैंने कहा, "हम निकम्मे सीधे-सादे लोगों के पास इसके लिए एक शब्द है। हम कहते हैं कि तुम्हें इरेक्शन हो जाता है।"

सुमिरे हंस पड़ी। “उपन्यासकार बनने की चाहत के अलावा, मैंने कभी किसी चीज़ को इतना ज़्यादा नहीं चाहा। मैं हमेशा अपने पास जो कुछ भी था, उससे संतुष्ट रही हूँ। लेकिन अब, ठीक इसी क्षण, मैं मियू को चाहती हूँ। बहुत-बहुत ज़्यादा। मैं उसे पाना चाहती हूँ। उसे अपना बनाना चाहती हूँ। मुझे बस यही करना है। कोई और विकल्प नहीं है। एक भी नहीं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि चीज़ें इस तरह क्यों हुईं। क्या यह... समझ में आता है?”

मैंने सिर हिलाया। मेरा लिंग अभी भी पहले की तरह ही कड़ा था, और मैंने प्रार्थना की कि सुमिरे को इसका पता न चले।

मैंने कहा, “ग्रूचो मार्क्स की एक शानदार पंक्ति है। ‘वह मुझसे इतना प्यार करती है कि उसे कुछ पता ही नहीं। इसीलिए वह मुझसे प्यार करती है।’”

सुमिरे हंस पड़ी।

मैंने कहा, "मुझे उम्मीद है कि सब ठीक हो जाएगा। लेकिन सतर्क रहने की पूरी

कोशिश करो। तुम अभी भी असुरक्षित हो। यह बात याद रखना।"

बिना कुछ कहे, सुमिरे ने मेरा हाथ पकड़ा और धीरे से दबाया। उसके छोटे, कोमल हाथों पर पसीने की हल्की सी चमक थी। मैंने कल्पना की कि उसका हाथ मेरे सख्त लिंग को सहला रहा है। मैंने यह न सोचने की कोशिश की, पर रोक नहीं पाया। जैसा कि सुमिरे ने कहा था, कोई और विकल्प नहीं था। मैंने उसकी टी-शर्ट, शॉर्ट्स, पैंटी उतारने की कल्पना की। उसकी कसी हुई, उभरी हुई निप्पल्स को अपनी जीभ से महसूस करने की। उसकी टांगों को चौड़ा करके, उस गीलेपन में प्रवेश करने की। धीरे-धीरे, भीतर के गहरे अंधेरे में। इसने मुझे अंदर खींचा, मुझे जकड़ लिया, फिर मुझे बाहर धकेल दिया... भ्रम ने मुझे जकड़ लिया और जाने नहीं दिया। मैंने अपनी आँखें फिर से कसकर बंद कर लीं और समय के एक सघन गुच्छे को अपने ऊपर से गुजरने दिया। मेरा चेहरा नीचे की ओर झुका हुआ था, मैं धैर्यपूर्वक गर्म हवा के मेरे ऊपर से बह जाने और दूर चले जाने का इंतजार कर रहा था।

सुमिरे ने पूछा, "क्यों न हम साथ में रात का खाना खा लें?" लेकिन मुझे उधार ली हुई मिनीवैन को दिन के अंत तक हिनो वापस ले जाना था। सबसे ज़रूरी बात यह थी कि मुझे अपनी हिंसक इच्छाओं के साथ अकेले रहना था। मैं नहीं चाहता था कि सुमिरे इसमें और ज़्यादा दखल दे, जितना वह पहले से ही दे चुकी थी। मुझे नहीं पता था कि अगर वह मेरे साथ होती तो मैं खुद को कितना नियंत्रित कर पाता। अगर हालात बेकाबू हो जाते, तो शायद मैं पूरी तरह से अपना आपा खो देता।

“अच्छा, तो चलो मैं तुम्हें जल्द ही एक बढ़िया डिनर पर ले चलती हूँ। मेज़पोश, वाइन, सब कुछ बढ़िया। शायद अगले हफ्ते,” सुमिरे ने विदा लेते हुए वादा किया। “अगले हफ्ते अपना शेड्यूल मेरे लिए खाली रखना।”

“ठीक है,” मैंने कहा।

गुजरते समय मैंने शीशे में अपना चेहरा देखा। मेरे चेहरे पर एक अजीब सा भाव था। यह मेरा ही चेहरा था, पर यह भाव कहाँ से आया? मुझे वापस जाकर और जाँच-पड़ताल करने का मन नहीं हुआ।

सुमिरे मुझे विदा करने के लिए अपने नए घर के प्रवेश द्वार पर खड़ी थी। उसने हाथ हिलाकर अलविदा कहा, जो वह बहुत कम ही करती थी।

अंत में, हमारे जीवन के कई खूबसूरत वादों की तरह, वह डिनर डेट कभी पूरी नहीं हो पाई। अगस्त की शुरुआत में मुझे उससे एक लंबा पत्र मिला।

अध्याय 6

लिफाफे पर एक बड़ा, रंगीन इतालवी डाक टिकट लगा हुआ था और उस पर रोम की मुहर लगी थी, हालांकि मैं यह पता नहीं लगा सका कि इसे कब भेजा गया था।

जिस दिन चिट्ठी आई, मैं काफी समय बाद शिंजुकु गया था, किनोकुनिया बुकस्टोर से कुछ नई किताबें खरीदीं और ल्यूक बेसन की एक फिल्म देखी। उसके बाद मैं एक बार में रुका और एंकोवी पिज्जा और एक मग डार्क बियर का आनंद लिया। भीड़भाड़ से बाल-बाल बचते हुए, मैं चोउ लाइन में चढ़ा और कुनिताची में अपने घर पहुँचने तक अपनी नई किताबों में से एक पढ़ता रहा। मैंने साधारण खाना बनाने और टीवी पर फुटबॉल मैच देखने की योजना बनाई थी। गर्मी की छुट्टियाँ बिताने का यही आदर्श तरीका था। गर्म, अकेला और आज़ाद, किसी को परेशान नहीं करना और कोई मुझे परेशान नहीं करना।

जब मैं घर लौटा, तो मेलबॉक्स में एक पत्र था। लिफाफे पर भेजने वाले का नाम नहीं था, लेकिन लिखावट पर एक नज़र डालते ही मैं समझ गया कि यह सुमिरे का पत्र है। चित्रलिपि जैसी लिखावट, घनी, कठोर, बेबाक। ऐसी लिखावट जो मुझे मिस्र के पिरामिडों के अंदर पाए जाने वाले भृंगों की याद दिलाती है। मानो यह रेंगना शुरू कर दे और इतिहास के अंधकार में गायब हो जाए।

रोम?

मैंने सुपरमार्केट से खरीदा हुआ खाना फ्रिज में रख दिया और अपने लिए एक लंबा गिलास ठंडी चाय डाली। मैं रसोई में एक कुर्सी पर बैठ गई, एक छोटे चाकू से लिफाफा खोला और चिट्ठी पढ़ी। रोम एक्सेल्सियर होटल से आई पांच पन्नों की स्टेशनरी, नीली स्याही से छोटे-छोटे अक्षरों में लिखी हुई थी। इतना लिखने में काफी समय लगा होगा। आखिरी पन्ने के एक कोने में किसी तरह का दाग था—शायद कॉफी का।

आप कैसे हैं?

मैं समझ सकती हूँ कि रोम से अचानक मेरा पत्र पाकर आपको कितनी हैरानी हुई होगी। वैसे आप इतने शानदार हैं कि रोम से आपको शायद ही कोई और जगह हैरान कर पाएगी। रोम थोड़ा ज़्यादा ही पर्यटकों से भरा रहता है। आपको तो ग्रीनलैंड, टिम्बकटू या मैगलन जलडमरूमध्य जैसी कोई जगह ज़्यादा पसंद आएगी, है ना? वैसे मैं आपको बता दूँ कि मुझे भी यकीन नहीं हो रहा कि मैं रोम में हूँ।

खैर, मुझे खेद है कि मैं योजना के अनुसार आपको डिनर पर नहीं ले जा सकी। यूरोप की यह यात्रा अचानक ही तय हुई, मेरे नए घर में आने के तुरंत बाद। उसके बाद कुछ दिनों तक तो बिल्कुल अफरा-तफरी मची रही—पासपोर्ट के लिए आवेदन करना, सूटकेस खरीदना, और शुरू किए गए कुछ काम पूरे करना। मुझे चीजें याद रखने में दिक्कत होती है—आपको बताने की ज़रूरत नहीं है, है ना?—लेकिन मैं अपने वादे निभाने की पूरी कोशिश करती हूँ। मतलब, जो वादे मुझे याद रहते हैं। इसीलिए मैं आपसे डिनर पर न जा पाने के लिए माफी मांगना चाहती हूँ।

मुझे अपना नया अपार्टमेंट बहुत पसंद आ रहा है। शिफ्टिंग करना वाकई झंझट भरा काम है (मुझे पता है कि आपने ज़्यादातर काम किया है, जिसके लिए मैं आभारी हूँ; फिर भी, यह झंझट भरा तो है ही), लेकिन एक बार सब कुछ व्यवस्थित हो जाए तो सब कुछ बढ़िया हो जाता है। मेरे नए घर में किचिज़ोजी की तरह मुर्गे बांग नहीं देते, बल्कि कौवों का झुंड किसी बूढ़ी औरत के विलाप की तरह शोर मचाता है। सुबह-सुबह कौवों के झुंड योयोगी पार्क में इकट्ठा हो जाते हैं और इतना शोर करते हैं कि लगता है दुनिया खत्म होने वाली है। अलार्म घड़ी की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, क्योंकि शोरगुल से मैं हमेशा जाग जाता हूँ। इसी वजह से अब मैं भी आपकी तरह जल्दी सोने और जल्दी उठने वाले किसान की तरह जीवन जी रहा हूँ। मुझे अब समझ आने लगा है कि सुबह साढ़े तीन बजे किसी का फ़ोन आना कैसा लगता है। बस अब समझ आने लगा है।

मैं रोम की एक गली में स्थित एक खुले कैफे में बैठकर ये चिट्ठी लिख रहा हूँ, शैतान के पसीने जितनी गाढ़ी एस्प्रेसो की चुस्कियाँ लेते हुए, और मुझे एक अजीब सा एहसास हो रहा है कि मैं अब पहले जैसा नहीं रहा। इसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है, लेकिन शायद ऐसा लग रहा है जैसे मैं गहरी नींद में सो रहा था, और कोई आया, मुझे खोलकर फिर से जल्दी से जोड़ दिया। कुछ ऐसा ही एहसास। क्या आप समझ

पा रहे हैं कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ?
मेरी आँखें कहती हैं कि मैं पहले जैसी ही हूँ, लेकिन कुछ तो अलग है। वैसे मुझे ठीक से याद नहीं कि "पहले" क्या होता था। जब से मैं विमान से उतरी हूँ, तब से यह गहरा भ्रम मेरे मन में घर कर गया है। भ्रम? शायद यही सही शब्द है...
यहां बैठे-बैठे, मैं खुद से पूछ रहा हूँ, "मैं रोम में ही क्यों हूँ?" मेरे आस-पास सब कुछ अवास्तविक सा लगने लगता है। बेशक, अगर मैं यहाँ आने के कारणों का पता लगाऊँ तो शायद कोई स्पष्टीकरण मिल जाए, लेकिन भीतर से मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा। जो मैं यहाँ बैठा हूँ और जो मेरी छवि है, वो मेल नहीं खाती। दूसरे शब्दों में कहूँ तो, मुझे यहाँ होने की कोई खास ज़रूरत नहीं है, फिर भी मैं यहाँ हूँ। मुझे पता है मैं अस्पष्ट बातें कर रहा हूँ, लेकिन आप समझ रहे हैं ना?
एक बात मैं पूरे यकीन से कह सकती हूँ: काश तुम यहाँ होते। मियू मेरे साथ है, फिर भी तुमसे इतनी दूर रहकर मुझे अकेलापन महसूस हो रहा है। अगर हम और भी दूर होते, तो मुझे और भी ज़्यादा अकेलापन लगता। मुझे उम्मीद है कि तुम भी ऐसा ही महसूस करते होगे।

खैर, मियू और मैं यूरोप घूम रहे हैं। उसे कुछ काम था और उसने पहले दो हफ़्ते अकेले इटली और फ्रांस घूमने का प्लान बनाया था, लेकिन उसने मुझे अपनी निजी सचिव के तौर पर साथ चलने को कहा। उसने अचानक एक सुबह ये बात कह दी, जिससे मैं पूरी तरह हैरान रह गई। मेरा पद भले ही "निजी सचिव" हो, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं उसके किसी काम की हूँ; फिर भी, ये अनुभव मेरे लिए अच्छा रहेगा, और मियू कहती है कि ये ट्रिप सिगरेट छोड़ने के लिए उसकी तरफ से तोहफ़ा है। तो आखिर में मेरी सारी मेहनत रंग लाई।
हम सबसे पहले मिलान पहुँचे, वहाँ घूमने गए, फिर एक नीली अल्फ़ा रोमियो किराए पर ली और ऑटोस्ट्राडा पर दक्षिण की ओर चल पड़े। हमने टस्कनी में कुछ वाइनरी देखीं, और काम निपटाने के बाद एक प्यारे से छोटे होटल में कुछ रातें बिताईं, और फिर रोम पहुँच गए। यहाँ व्यापार हमेशा अंग्रेज़ी या फ्रेंच में होता है, इसलिए मेरी ज़्यादा भूमिका नहीं होती, हालाँकि यात्रा के दौरान रोज़मर्रा के कामों में मेरी इतालवी भाषा काम आती है। अगर हम स्पेन जाते (जो दुर्भाग्य से इस यात्रा में संभव नहीं है), तो शायद मैं मियू के लिए ज़्यादा उपयोगी साबित होता।

हमने जो अल्फ़ा रोमियो किराए पर ली थी, वो मैनुअल थी, इसलिए मैं उसकी बिल्कुल भी मदद नहीं कर पाया। सारी ड्राइविंग मियू ने ही की। वो घंटों तक गाड़ी चला सकती है और उसे कभी कोई परेशानी नहीं होती। टस्कनी में हर तरफ पहाड़ियाँ और घुमावदार सड़कें हैं, और ये देखकर मैं दंग रह गया कि वो कितनी आसानी से गियर बदल रही थी; उसे देखकर मुझे (सच में) कंपकंपी छूट गई। जापान से दूर, बस उसके साथ रहना ही मेरे लिए काफी है। काश हम हमेशा ऐसे ही रह पाते।
अगली बार मैं इटली में खाए गए सभी शानदार भोजन और वाइन के बारे में लिखूँगी; अभी लिखने में बहुत समय लग जाएगा। मिलान में हम एक दुकान से दूसरी दुकान तक घूमते हुए खरीदारी करते रहे। कपड़े, जूते, अंडरवियर। कुछ पजामा के अलावा (मैं अपना लाना भूल गई थी), मैंने कुछ नहीं खरीदा। मेरे पास ज़्यादा पैसे नहीं थे, और वैसे भी वहाँ इतनी खूबसूरत चीज़ें थीं कि मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करूँ। यही वो स्थिति है जहाँ मेरा विवेक काम करना बंद कर देता है। मियू के साथ खरीदारी करना ही काफी था। वह खरीदारी की माहिर है, सिर्फ़ सबसे बेहतरीन चीज़ें चुनती है, और उनमें से कुछ ही खरीदती है। जैसे किसी व्यंजन के सबसे स्वादिष्ट हिस्से का एक टुकड़ा चखना। बहुत ही समझदार और आकर्षक। जब मैंने उसे कुछ महंगे रेशमी मोज़े और अंडरवियर चुनते देखा तो मेरी साँसें थम गईं। मेरे माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं। वैसे, सोचने पर यह थोड़ा अजीब लगता है। आख़िरकार, मैं एक लड़की हूँ। मुझे लगता है खरीदारी के बारे में इतना ही काफ़ी है—उसके बारे में भी लिखने से यह बहुत लंबा हो जाएगा।

होटलों में हम अलग-अलग कमरों में ठहरते हैं। मियू इस बात पर बहुत ज़ोर देती है। एक बार फ्लोरेंस में, किसी तरह हमारी बुकिंग में गड़बड़ हो गई और हमें एक ही कमरा शेयर करना पड़ा। कमरे में दो सिंगल बेड थे, लेकिन उसके साथ एक ही कमरे में सोने का मौका मिलते ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मैंने उसे नहाने के बाद तौलिया लपेटे हुए और कपड़े बदलते हुए देखा। ज़ाहिर है, मैंने अनदेखा करने का नाटक किया और अपनी किताब पढ़ने लगा, लेकिन एक नज़र ज़रूर पड़ गई। मियू का फिगर वाकई बहुत खूबसूरत है। वह पूरी तरह नग्न नहीं थी, बस उसने छोटी सी अंडरवियर पहनी हुई थी; फिर भी उसका शरीर मुझे मंत्रमुग्ध करने के लिए काफी था। एकदम पतली, सुडौल कमर, एक बेहद आकर्षक महिला। काश तुम भी उसे देख पाते

—हालाँकि यह कहना थोड़ा अजीब लग रहा है।
मैंने कल्पना की कि उस सुडौल, पतले शरीर की बाहों में मैं हूँ। बिस्तर पर लेटे हुए, उसी कमरे में उसके साथ, मेरे मन में तरह-तरह की अश्लील छवियाँ उमड़ रही थीं, और मुझे लग रहा था कि ये विचार धीरे-धीरे मुझे कहीं और खींच रहे हैं। मुझे लगता है कि मैं कुछ ज़्यादा ही उत्तेजित हो गई थी—उसी रात मेरा मासिक धर्म समय से बहुत पहले शुरू हो गया। कितना कष्टदायक था! हम्म। मुझे पता है कि यह सब बताने से मुझे कोई फायदा नहीं होगा। लेकिन फिर भी मैं बता रही हूँ—बस तथ्यों को कागज़ पर उतारना चाहती हूँ।

कल रात हम रोम में एक संगीत कार्यक्रम में गए। सीज़न न होने के कारण मुझे ज़्यादा उम्मीद नहीं थी, लेकिन फिर भी हमने एक शानदार प्रस्तुति का आनंद लिया। मार्था अर्गेरिच ने लिस्ज़्ट का पियानो कॉन्सर्टो नंबर 1 बजाया। मुझे यह रचना बेहद पसंद है। कंडक्टर ग्यूसेप्पे सिनोपोली थे। क्या ही प्रस्तुति थी! इस तरह का संगीत सुनते समय सुस्ती नहीं बरती जा सकती—यह अब तक का सबसे विस्तृत और शानदार संगीत था जो मैंने सुना है। अब सोचता हूँ तो लगता है कि शायद यह मेरे स्वाद के हिसाब से थोड़ा ज़्यादा ही परिपूर्ण था। लिस्ज़्ट की रचना को थोड़ा रहस्यमय और रहस्यमय होना चाहिए—जैसे किसी गाँव के उत्सव का संगीत। मुश्किल हिस्सों को हटाकर मुझे रोमांच का अनुभव करने दो—यही मुझे पसंद है। मियू और मैं इस बात पर सहमत थे। वेनिस में एक विवाली महोत्सव है, और हम वहाँ जाने की सोच रहे हैं। जैसे हम दोनों साहित्य पर बात करते हैं, वैसे ही मियू और मैं संगीत पर घंटों बातें कर सकते हैं।

ये चिट्ठी तो काफी लंबी होती जा रही है, है ना? लगता है एक बार कलम हाथ में लेकर लिखना शुरू कर दूं तो बीच में रुक ही नहीं पाती। मैं हमेशा से ऐसी ही रही हूं। कहते हैं अच्छे संस्कार वाली लड़कियां ज्यादा देर तक नहीं रुकतीं, लेकिन लिखने की बात आती है (शायद सिर्फ लिखने की ही नहीं?) तो मेरे शिष्टाचार बिल्कुल ही बेबस हैं। सफेद जैकेट पहने वेटर कभी-कभी मुझे घृणा भरी नजरों से देखता है। लेकिन मैं मानती हूं कि मेरा हाथ भी थक जाता है। वैसे भी, कागज भी खत्म हो गया है।

मियू रोम में अपने एक पुराने दोस्त से मिलने गई है, और मैं होटल के पास की गलियों में घूम रही थी, रास्ते में मिले एक कैफे में थोड़ी देर आराम करने का सोचा, और अब मैं यहाँ बैठकर आपको पत्र लिख रही हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी सुनसान द्वीप पर हूँ और किसी को संदेश भेज रही हूँ। अजीब बात है, जब मैं मियू के साथ नहीं होती तो मुझे कहीं जाने का मन नहीं करता। मैं रोम तक इतनी दूर आई हूँ (और शायद फिर कभी वापस नहीं आऊँगी), लेकिन मेरा मन उठकर उन खंडहरों को देखने का नहीं करता—उन्हें क्या कहते हैं?—या उन मशहूर फव्वारों को देखने का। या फिर खरीदारी करने का भी नहीं। बस यहाँ कैफे में बैठना, शहर की खुशबू को सूंघना, जैसे कोई कुत्ता सूंघता है, आवाज़ें और शोर सुनना, और आते-जाते लोगों के चेहरों को निहारना ही काफी है।

और अचानक, आपको यह पत्र लिखते समय, मुझे यह एहसास हुआ कि मैंने शुरुआत में जिस बात का वर्णन किया था—खुद को बिखरा हुआ महसूस करने का वह अजीब सा एहसास—धीरे-धीरे कम हो रहा है। अब यह मुझे उतना परेशान नहीं करता। यह वैसा ही है जैसे आधी रात को आपको फोन करने के बाद, फोन खत्म करके बाहर निकलते ही मुझे महसूस होता है। शायद आप भी मुझ पर कुछ ऐसा ही असर डालते हैं?

आपको क्या लगता है? खैर, कृपया मेरी खुशी और सौभाग्य के लिए प्रार्थना करें। मुझे आपकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है।

अभी के लिए बाय।

पुनश्च: मैं शायद 15 अगस्त के आसपास घर वापस आ जाऊँगी। तब हम साथ में डिनर कर सकते हैं—मैं वादा करती हूँ!—गर्मी का मौसम खत्म होने से पहले।

पांच दिन बाद एक दूसरा पत्र आया, जो किसी अनजान फ्रांसीसी गाँव से भेजा गया था। पहले पत्र से छोटा था। मियू और सुमिरे ने रोम में अपनी किराए की कार लौटा दी थी और ट्रेन से वेनिस चली गई थीं। वहाँ उन्होंने दो पूरे दिन विवाली का संगीत सुना। अधिकांश संगीत कार्यक्रम उसी चर्च में आयोजित किए गए थे जहाँ विवाली ने पादरी के रूप में सेवा की थी। सुमिरे ने लिखा, "अगर मैं छह महीने तक विवाली का संगीत न सुनूँ तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" वेनिस में कागज़ में लिपटे स्वादिष्ट ग्रिल्ड

सीफूड का उनका वर्णन इतना सजीव था कि मेरा मन भी वहाँ जाकर उसे चखने का हुआ।
वेनिस से लौटने के बाद, मियू और सुमिरे मिलान वापस आईं और फिर पेरिस के लिए उड़ान भरी। पेरिस में उन्होंने कुछ समय आराम किया, खरीदारी की और फिर बरगंडी के लिए ट्रेन पकड़ी। मियू के एक अच्छे दोस्त का एक बहुत बड़ा घर था, वास्तव में एक हवेली, जहाँ वे ठहरीं। इटली की तरह, मियू ने व्यापारिक सिलसिले में कई छोटी वाइनरी का दौरा किया। खाली दोपहरों में वे पिकनिक बास्केट में दोपहर का भोजन लेकर पास के जंगलों में घूमने जाती थीं। भोजन के साथ कुछ बोतलें वाइन भी ज़रूर रखती थीं। सुमिरे ने लिखा, "यहाँ की वाइन सचमुच लाजवाब है।"

लेकिन लगता है कि 15 अगस्त को जापान लौटने की हमारी मूल योजना बदलने वाली है। फ्रांस में काम खत्म होने के बाद हम ग्रीस के एक द्वीप पर छोटी छुट्टी मनाने जा सकते हैं। यहाँ हमारी मुलाक़ात एक अंग्रेज़ सज्जन से हुई - वाकई एक सज्जन व्यक्ति - जिनका उस द्वीप पर एक विला है और उन्होंने हमें अपनी मर्ज़ी से जितने दिन चाहें उतने दिन उसका इस्तेमाल करने का न्योता दिया है। बहुत अच्छी खबर! मियू को भी यह विचार पसंद आया। हमें काम से छुट्टी चाहिए, कुछ समय आराम करने और सुकून पाने के लिए। हम दोनों एजियन सागर के सफ़ेद रेतीले किनारों पर लेटे हुए, सूरज की ओर मुंह किए, चीड़ की राल की खुशबू वाली शराब पीते हुए, बादलों को बहते हुए देख रहे होंगे। क्या यह शानदार नहीं लगता?

मैंने सोचा, बिल्कुल ऐसा ही है।
उस दोपहर मैं पब्लिक पूल गया और खूब तैरा, घर लौटते समय रास्ते में एक बढ़िया एयर-कंडीशन्ड कॉफी शॉप पर रुका और एक घंटा पढ़ा। घर वापस आकर मैंने तीन शर्ट इस्त्री करते हुए टेन इयर्स आफ्टर के पुराने एलपी के दोनों साइड सुने। इस्त्री करने के बाद, मैंने सेल में खरीदी हुई सस्ती शराब पी, जिसमें पेरिएर मिलाया था, और एक फुटबॉल मैच देखा जिसे मैंने वीडियो पर रिकॉर्ड किया था। जब भी मुझे कोई ऐसा पास दिखता जो मैं खुद नहीं कर पाता, तो मैं अपना सिर हिलाकर आह भरता। अजनबियों की गलतियों पर टिप्पणी करना आसान है—और इससे अच्छा भी लगता है।

फ़ुटबॉल मैच के बाद मैं अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया, छत को घूरता रहा और फ्रांस के अपने गाँव में सुमिरे की कल्पना करने लगा। अब तक वह उस ग्रीक द्वीप पर पहुँच चुकी होगी। समुद्र तट पर लेटी हुई, गुज़रते बादलों को निहार रही होगी। चाहे कुछ भी हो, वह मुझसे बहुत दूर थी। रोम, ग्रीस, टिम्बकटू, अरुआंडा—कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वह बहुत दूर थी। और शायद यही भविष्य था, सुमिरे मुझसे और भी दूर होती जा रही थी। इससे मुझे उदासी छा गई। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक अर्थहीन कीड़ा हूँ जो बिना किसी योजना, बिना किसी विश्वास के, एक तूफ़ानी रात में एक ऊँची पत्थर की दीवार से चिपका हुआ है। सुमिरे ने कहा कि वह मुझे याद करती है। लेकिन उसके पास मियू थी। मेरे पास कोई नहीं था। मेरे पास बस मैं ही था। हमेशा की तरह।

सुमिरे 15 अगस्त को वापस नहीं लौटी। उसके फोन पर अभी भी बस एक संक्षिप्त "मैं यात्रा पर हूँ" की रिकॉर्डिंग थी। नए घर में आने के बाद उसने सबसे पहले जो चीज़ें खरीदीं, उनमें से एक था 'आंसरिंग मशीन' वाला फोन। ताकि बारिश की रातों में उसे छाता लेकर फोन बूथ तक न जाना पड़े। हर तरह से एक बेहतरीन विचार। मैंने कोई संदेश नहीं छोड़ा।

मैंने अठारह तारीख को उसे फिर फोन किया, लेकिन वही रिकॉर्डिंग सुनाई दी। उस नीरस बीप के बाद मैंने अपना नाम और एक छोटा सा संदेश छोड़ दिया कि वापस आने पर वह मुझे कॉल करे। शायद उसे और मियू को ग्रीक द्वीप इतना पसंद आया कि वे उसे छोड़ना ही नहीं चाहते थे।

मेरी दो कॉल के बीच के अंतराल में मैंने अपने स्कूल में एक फुटबॉल अभ्यास कराया और अपनी प्रेमिका के साथ एक बार सोया। वह काफी टैन थी, क्योंकि वह अपने पति और दो बच्चों के साथ बाली में छुट्टियां मनाकर लौटी थी। जब मैंने उसे गले लगाया तो मुझे ग्रीस के उस द्वीप पर सुमिरे की याद आ गई। उसके भीतर, मैं सुमिरे के शरीर की कल्पना करने से खुद को रोक नहीं पाया।

अगर मैं सुमिरे को न जानता होता, तो शायद मैं आसानी से इस महिला के प्यार में पड़ जाता, जो मुझसे सात साल बड़ी थी (और जिसका बेटा मेरा छात्र था)। वह खूबसूरत, ऊर्जावान और दयालु महिला थी। मुझे उसकी मेकअप थोड़ी ज़्यादा लगती थी, लेकिन कपड़े अच्छे से पहनती थी। उसे अपने थोड़े ज़्यादा वज़न की चिंता थी, पर ज़रूरत नहीं थी। मैं उसकी आकर्षक काया के बारे में शिकायत करने वाला नहीं था। वह मेरी सारी इच्छाओं को जानती थी, मेरी हर चाहत को जानती थी। उसे पता था कि

बिस्तर पर और बाहर, कब रुकना है और कब नहीं। उसके साथ मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं फर्स्ट क्लास में सफर कर रहा हूँ।

"लगभग एक साल से मैंने अपने पति के साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाए हैं," उसने मेरी बाहों में लेटे हुए मुझसे कहा। "तुम ही एकमात्र हो।"

लेकिन मैं उससे प्यार नहीं कर सका। पता नहीं क्यों, सुमिरे और मेरे बीच जो निःस्वार्थ, स्वाभाविक आत्मीयता थी, वह अब नहीं रही। हमारे बीच हमेशा एक पतली, पारदर्शी दीवार खड़ी रहती थी। चाहे वह दिखाई दे या न दे, एक अवरोध बना रहता था। हम दोनों के बीच अक्सर अजीब सी खामोशी छा जाती थी—खासकर जब हम अलविदा कहते थे। सुमिरे के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ था। इस महिला के साथ रहने से एक बात पक्की हो गई: मुझे सुमिरे की पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत थी।

उस औरत के जाने के बाद, मैं अकेले टहलने निकल गया, थोड़ी देर इधर-उधर भटकता रहा, फिर स्टेशन के पास एक बार में जाकर कैनेडियन क्लब बियर पी ली। हमेशा की तरह ऐसे समय में, मुझे लगा कि मैं दुनिया का सबसे दुखी इंसान हूँ। मैंने जल्दी से अपना पहला ड्रिंक खत्म किया और दूसरा ऑर्डर किया। आँखें बंद करके सुमिरे के बारे में सोचने लगा। सुमिरे, बिना कपड़ों के, ग्रीस के किसी द्वीप की सफेद रेत पर धूप सेंक रही थी। मेरे बगल वाली टेबल पर चार कॉलेज के लड़के-लड़कियाँ बियर पी रहे थे, हँस रहे थे और खूब मजे कर रहे थे। ह्यूई लुईस एंड द न्यूज़ का एक पुराना गाना बज रहा था। मुझे पिज्जा पकने की खुशबू आ रही थी।

मेरी जवानी कब मुझसे छिन गई? अचानक मेरे मन में ख्याल आया। सब खत्म हो गया, है ना? ऐसा लग रहा था जैसे कल ही की बात हो जब मैं अभी आधी जवान ही थी। ह्यूई लुईस एंड द न्यूज़ के कुछ हिट गाने थे। ज़्यादा साल नहीं बीते। और अब मैं यहाँ एक बंद घेरे में फंसी हुई थी, बस इधर-उधर घूम रही थी। जानती थी कि कहीं नहीं पहुँच रही, फिर भी घूम रही थी। मुझे घूमना ही था। मुझे इसे जारी रखना ही था, वरना मैं जी नहीं पाती।

उस रात मुझे ग्रीस से फोन आया। रात के 2:00 बजे।

लेकिन वह सुमिरे नहीं थी। वह मियू थी।

अध्याय 7

सबसे पहले मैंने एक आदमी की गहरी आवाज़ सुनी, भारी उच्चारण वाली अंग्रेज़ी में, मेरा नाम पुकारते हुए और फिर चिल्लाते हुए, "मैंने सही व्यक्ति से संपर्क किया है, है ना?" मैं गहरी नींद में सो रही थी। मेरा दिमाग बिल्कुल खाली था, जैसे बारिश के बीच धान का खेत, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। चादरों पर दोपहर के प्रेम प्रसंग की धुंधली सी याद बाकी थी, और वास्तविकता एक कदम दूर थी, जैसे कोई कार्डिगन जिसके बटन गलत तरीके से लगे हों। उस आदमी ने मेरा नाम फिर से लिया। "मैंने सही व्यक्ति से संपर्क किया है, है ना?"

“हाँ, तुमने सुना है,” मैंने जवाब दिया। आवाज़ मेरे नाम जैसी नहीं लग रही थी, पर वही थी। थोड़ी देर के लिए घर में हल्की सी खरखराहट हुई, मानो दो अलग-अलग हवाएँ आपस में टकरा गई हों। मैंने सोचा, ज़रूर सुमिरे ग्रीस से फ़ोन कर रही होगी। मैंने रिसीवर को कान से थोड़ा दूर रखा, उसकी आवाज़ आने का इंतज़ार करने लगा। लेकिन अगली आवाज़ सुमिरे की नहीं, बल्कि मियू की थी। “मुझे यकीन है तुमने सुमिरे से मेरे बारे में सुना होगा?”

“हां, मैंने किया है,” मैंने उत्तर दिया।

फोन पर उसकी आवाज़ किसी दूर से आती हुई, अकार्बनिक चीज़ से विकृत हो गई थी, लेकिन फिर भी मैं उसमें तनाव महसूस कर सकता था। कोई कठोर और सख्त चीज़ सूखी बर्फ के बादलों की तरह फोन से होकर मेरे कमरे में आई और मुझे एकदम से जगा दिया। मैं बिस्तर पर सीधा बैठ गया और रिसीवर पर अपनी पकड़ मजबूत की।

“मुझे जल्दी बात करनी होगी,” मियू ने हांफते हुए कहा। “मैं ग्रीस के एक द्वीप से फोन कर रही हूँ, और टोक्यो से संपर्क करना लगभग नामुमकिन है—संपर्क होने पर भी कॉल कट जाती है। मैंने कई बार कोशिश की, और आखिरकार कॉल लग गई। इसलिए मैं औपचारिकताएं छोड़कर सीधे मुद्दे पर आती हूँ, अगर आपको कोई आपत्ति न हो?”

मैंने कहा, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

"आप यहां आ सकते हैं?"
“यहाँ से आपका मतलब ग्रीस है?”
“जी हां। जितनी जल्दी हो सके।”
मेरे मन में जो पहला विचार आया, मैंने झट से वही कह दिया। "क्या सुमिरे के साथ कुछ हुआ है?"
मियू ने गहरी सांस लेते हुए कुछ देर रुककर कहा, "मुझे अभी भी नहीं पता। लेकिन मुझे लगता है कि वह चाहती होगी कि तुम यहाँ आओ। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।"
"क्या आपको लगता है कि वह ऐसा करेगी?"
“फोन पर बात करना ठीक नहीं है। पता नहीं कब फोन कट जाए, और वैसे भी, यह एक नाजुक मामला है, इसलिए मैं आपसे आमने-सामने बात करना ज़्यादा पसंद करूंगा। आने-जाने का किराया मैं दे दूंगा। बस आ जाइए। जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा। बस टिकट खरीद लीजिए। फर्स्ट क्लास, जो भी आपको पसंद हो।”
स्कूल का नया सत्र दस दिन में शुरू होने वाला था। मुझे उससे पहले वापस आना होगा, लेकिन अगर मैं चाहूँ तो ग्रीस की एक राउंड ट्रिप संभव है। छुट्टियों के दौरान मुझे कुछ काम निपटाने के लिए दो बार स्कूल जाना था, लेकिन मेरी जगह कोई और आ जाएगा।
मैंने कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि मैं जा सकता हूँ। हाँ, मुझे लगता है कि मैं जा सकता हूँ। लेकिन मुझे ठीक कहाँ जाना है?"
उसने मुझे द्वीप का नाम बताया। मैंने उसके कहे हुए शब्द अपने बिस्तर के पास रखी एक किताब के अंदरूनी पन्ने पर लिख लिए। नाम कुछ जाना-पहचाना सा लगा।
“आप एथेंस से रोड्स के लिए हवाई जहाज लें, फिर फेरी लें। द्वीप के लिए दिन में दो फेरी चलती हैं, एक सुबह और एक शाम को। मैं फेरी के आने पर बंदरगाह पर पहुँच जाऊँगा। क्या आप भी आएँगे?”
“मुझे लगता है मैं किसी तरह पहुँच जाऊँगी। बस बात ये है कि—,” मैंने कहना शुरू किया ही था कि लाइन कट गई। अचानक, ज़ोर से, जैसे कोई रस्सी पर कुल्हाड़ी चला रहा हो। और फिर वही भयानक कर्कश आवाज़। ये सोचकर कि शायद कनेक्शन फिर से जुड़ गया हो, मैं एक मिनट तक वहीं बैठी रही, फ़ोन कान से लगाए, इंतज़ार करती रही, लेकिन मुझे बस वही कर्कश आवाज़ सुनाई दी। मैंने फ़ोन रख दिया और बिस्तर

से उठ गई। रसोई में मैंने एक गिलास ठंडी जौ की चाय पी और फ्रिज से टेक लगाकर बैठ गई, अपने विचारों को इकट्ठा करने की कोशिश कर रही थी।
क्या मैं सचमुच विमान में बैठकर ग्रीस तक की यात्रा करने वाला था?
जवाब हां था। मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था।

मियू ने जिस द्वीप के बारे में बताया था, उसे ढूंढने के लिए मैंने अपनी किताबों की अलमारी से एक बड़ा सा विश्व एटलस निकाला। उसने कहा था कि वह रोड्स के पास है, लेकिन एजियन सागर में बिखरे अनगिनत द्वीपों के बीच उसे ढूंढना आसान नहीं था। आखिरकार, मुझे छोटे अक्षरों में उस जगह का नाम दिख गया जिसकी मुझे तलाश थी। तुर्की सीमा के पास एक छोटा सा द्वीप। इतना छोटा कि उसकी आकृति का ठीक से पता ही नहीं चलता था।

मैंने दराज से अपना पासपोर्ट निकाला और जाँच की कि वह अभी भी वैध है या नहीं। फिर मैंने घर में मौजूद सारे पैसे इकट्ठा किए और अपने बटुए में भर लिए। ये ज़्यादा तो नहीं थे, लेकिन मैं सुबह बैंक से और पैसे निकाल सकता था। मेरे बचत खाते में कुछ पैसे थे और मैंने गर्मियों के बोनस को भी मुश्किल से ही इस्तेमाल किया था। इन पैसों और क्रेडिट कार्ड से ग्रीस की आने-जाने की टिकट के लिए काफ़ी पैसे हो जाने चाहिए। मैंने विनाइल जिम बैग में कुछ कपड़े पैक किए और एक टॉयलेट किट भी डाल दी। साथ ही जोसेफ कॉनराड के दो उपन्यास भी, जिन्हें मैं दोबारा पढ़ना चाहता था। स्विमसूट पैक करने को लेकर मैं थोड़ा हिचकिचाया, लेकिन आखिर में उसे ले ही लिया। शायद वहाँ पहुँचते-पहुँचते जो भी समस्या हो, वो हल हो जाए, सब लोग स्वस्थ और खुश हों, सूरज आसमान में शांति से चमक रहा हो, और घर लौटने से पहले मैं आराम से एक-दो बार तैरने का मज़ा ले सकूँ। जो कि ज़ाहिर है, सभी के लिए सबसे अच्छा नतीजा होगा।
उन सब कामों को निपटाने के बाद, मैंने लाइट बंद कर दी, अपना सिर तकिए पर टिकाया और दोबारा सोने की कोशिश की। तीन बज चुके थे और सुबह होने से पहले थोड़ी देर झपकी ले सकता था। लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। उस कर्कश आवाज़ की यादें मेरे खून में बस गई थीं। मेरे दिमाग के अंदर उस आदमी की आवाज़ गूंज रही थी, जो मेरा नाम पुकार रहा था। मैंने लाइट जलाई, बिस्तर से उठी, रसोई में गई, ठंडी चाय बनाई और पी ली। और मैंने मियू के साथ हुई पूरी बातचीत को एक-एक शब्द करके दोहराया। उसके शब्द अस्पष्ट, अमूर्त और अनिश्चितताओं से भरे थे। लेकिन

उसने जो कुछ कहा, उसमें दो बातें साफ थीं। मैंने उन दोनों को एक नोटपैड पर लिख लिया।

1. सुमिरे के साथ कुछ हुआ है। लेकिन क्या हुआ है, यह मियू को नहीं पता।

2. मुझे वहां जल्द से जल्द पहुंचना होगा। मियू को लगता है कि सुमिरे भी यही चाहती है।

मैंने मेमो पैड को घूरकर देखा। और मैंने दो वाक्यों को रेखांकित किया।

1. सुमिरे के साथ कुछ हुआ है। लेकिन क्या हुआ है, यह मियू को नहीं पता।

2. मुझे वहां जल्द से जल्द पहुंचना होगा। मियू को लगता है कि सुमिरे भी यही चाहती है।

मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि उस छोटे से ग्रीक द्वीप पर सुमिरे के साथ क्या हुआ होगा। लेकिन मुझे यकीन था कि कुछ बुरा ही हुआ होगा। सवाल यह था कि कितना बुरा? सुबह होने तक मैं कुछ नहीं कर सकती थी। मैं अपनी कुर्सी पर बैठी, पैर मेज पर रखे, किताब पढ़ रही थी और सुबह की पहली किरण दिखने का इंतजार कर रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे सूरज निकलने में कभी समय ही न लगे।

भोर होते ही मैंने चोउ लाइन से शिंजुकु के लिए ट्रेन पकड़ी, फिर नरिता एक्सप्रेस में सवार होकर हवाई अड्डे पर पहुँच गया। नौ बजे मैंने एयरलाइन टिकट काउंटरों के चक्कर लगाए, लेकिन पता चला कि नरिता और एथेंस के बीच कोई सीधी उड़ान नहीं थी। कुछ खोजबीन के बाद मैंने एम्स्टर्डम जाने वाली केएलएम की फ्लाइट में बिजनेस क्लास की सीट बुक कर ली। वहाँ से मैं एथेंस के लिए दूसरी फ्लाइट ले सकता था। फिर एथेंस से मैं ओलंपिक एयरवेज की घरेलू फ्लाइट से रोड्स जा सकता था। केएलएम के कर्मचारियों ने सारी व्यवस्था कर दी थी। अगर कोई समस्या नहीं हुई, तो मुझे दोनों कनेक्टिंग फ्लाइट्स आसानी से मिल जानी चाहिए थीं। वहाँ पहुँचने का यही सबसे तेज़ तरीका था। मेरे पास वापसी की फ्लाइट का ओपन टिकट था, और मैं अगले तीन महीनों में कभी भी वापस आ सकता था। मैंने क्रेडिट कार्ड से भुगतान किया। क्या कोई बैग चेक करवाना है? उन्होंने मुझसे पूछा। नहीं, मैंने जवाब दिया।

मेरी फ्लाइट से पहले समय था, इसलिए मैंने एयरपोर्ट के रेस्टोरेंट में नाश्ता किया। मैंने एटीएम से कुछ पैसे निकाले और अमेरिकी डॉलर में ट्रैवलर चेक खरीदे। फिर मैंने किताबों की दुकान से ग्रीस की एक गाइडबुक खरीदी। मियू ने मुझे बताया था कि द्वीप का नाम उस छोटी सी किताब में नहीं था, लेकिन मुझे उस देश के बारे में कुछ

जानकारी तो चाहिए ही थी—मुद्रा, जलवायु, बुनियादी बातें। प्राचीन ग्रीस के इतिहास और शास्त्रीय नाटक के अलावा, मुझे उस जगह के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं पता था। उतना ही जितना मुझे बृहस्पति ग्रह के भूगोल या फरारी के कूलिंग सिस्टम की कार्यप्रणाली के बारे में पता था। मैंने अपने जीवन में कभी ग्रीस जाने के बारे में सोचा भी नहीं था। कम से कम उस दिन सुबह 2:00 बजे तक तो बिल्कुल नहीं।

दोपहर से ठीक पहले मैंने अपनी एक सह-शिक्षिका को फोन किया। मैंने उन्हें बताया कि मेरे एक रिश्तेदार के साथ कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटना घट गई है, इसलिए मैं लगभग एक सप्ताह के लिए टोक्यो से बाहर रहूँगी, और क्या आप मेरे लौटने तक स्कूल का काम संभाल लेंगी? उन्होंने जवाब दिया, "कोई बात नहीं।" हम पहले भी कई बार एक-दूसरे की इस तरह मदद कर चुके थे, यह कोई बड़ी बात नहीं थी। उन्होंने मुझसे पूछा, "आप कहाँ जा रही हैं?" मैंने जवाब दिया, "शिकोकू।" मैं उन्हें यह नहीं बता सकती थी कि मैं ग्रीस जा रही हूँ।

“यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ,” उसने कहा। “खैर, नए सत्र की शुरुआत से पहले समय पर वापस आ जाना। और अगर हो सके तो मेरे लिए एक यादगार चीज़ ले आना, ठीक है?”

“बिल्कुल,” मैंने कहा। मैं इसका हल बाद में निकाल लूंगा।

मैं बिजनेस क्लास लाउंज में गया, सोफे पर बैठ गया और थोड़ी देर के लिए झपकी ली, एक बेचैन नींद। दुनिया ने वास्तविकता का बोध खो दिया था। रंग अस्वाभाविक थे, विवरण भद्दे। पृष्ठभूमि पेपर-मैशे की थी, तारे एल्युमिनियम फॉयल से बने थे। गोंद और उन कीलों के सिरे साफ दिख रहे थे जिनसे सब कुछ जुड़ा हुआ था। हवाई अड्डे की घोषणाएँ मेरे दिमाग में बार-बार गूंज रही थीं। "एयर फ्रांस की फ्लाइट 275 के सभी यात्री, पेरिस जा रहे हैं..." इस अतार्किक सपने—या अनिश्चित जागृति—के बीच मैंने सुमिरे के बारे में सोचा। जैसे किसी पुराने जमाने की डॉक्यूमेंट्री हो, हमारे साझा समय और स्थानों के टुकड़े मेरे दिमाग में कौंध गए। हवाई अड्डे की भागदौड़ में, इधर-उधर भागते यात्रियों के बीच, सुमिरे के साथ साझा की गई दुनिया जर्जर, असहाय और अनिश्चित लग रही थी। हम दोनों में से किसी को भी कुछ भी ऐसा नहीं पता था जो वास्तव में मायने रखता हो, न ही हमारे पास इसे सुधारने की क्षमता थी। ऐसा कुछ भी ठोस नहीं था जिस पर हम भरोसा कर सकें। हम लगभग असीम शून्य थे, बस दयनीय छोटे प्राणी थे जो एक प्रकार की विस्मृति से दूसरी प्रकार की विस्मृति में बहते

जा रहे थे।

मैं पसीने से तरबतर होकर उठा, मेरी कमीज़ सीने से चिपकी हुई थी। मेरा शरीर बेजान था, टांगें सूजी हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे मैंने पूरा आसमान ही निगल लिया हो। मैं पीला-सा दिख रहा था। लाउंज के एक कर्मचारी ने चिंता से पूछा कि क्या मैं ठीक हूँ। मैंने जवाब दिया, "मैं ठीक हूँ, बस गर्मी लग रही है।" उसने पूछा, "क्या आप कुछ ठंडा पीना चाहेंगे?" मैंने एक पल सोचा और बीयर माँगी। वह मेरे लिए एक ठंडा वॉशक्लॉथ, एक हेनेकेन और नमकीन मूंगफली का एक पैकेट ले आई। पसीने से भीगा चेहरा पोंछने और आधी बीयर पीने के बाद मुझे अच्छा लगा। और मैं थोड़ी देर सो भी सका।

विमान नारिता से लगभग समय पर रवाना हुआ और एम्स्टर्डम के लिए ध्रुवीय मार्ग से गया। मुझे थोड़ी देर और सोना था, इसलिए मैंने दो-चार गिलास व्हिस्की पी ली और जब उठा तो थोड़ा सा खाना खा लिया। मुझे भूख नहीं थी, इसलिए मैंने नाश्ता नहीं किया। मैं अपने दिमाग को खाली रखना चाहता था, इसलिए जागने के बाद मैंने कॉनरैड को पढ़ने पर ध्यान केंद्रित किया।

एम्स्टर्डम में मैंने विमान बदला, एथेंस पहुँचा, घरेलू उड़ान टर्मिनल पर गया और बड़ी मुश्किल से एक पल बचा था कि मैं रोड्स जाने वाले 727 विमान में सवार हो गया। विमान हर संभव देश के जोशीले युवाओं से खचाखच भरा हुआ था। सभी का रंग सांवला था, उन्होंने टी-शर्ट या टैंक टॉप और कटी हुई जींस पहनी हुई थी। अधिकांश युवकों ने दाढ़ी बढ़ा रखी थी (या शायद वे शेव करना भूल गए थे) और उनके बिखरे हुए बाल पोनीटेल में बंधे हुए थे। बेज रंग की पैंट, सफेद आधी बाजू की पोलो शर्ट और गहरे नीले रंग की सूती जैकेट पहने हुए मैं वहाँ बिल्कुल अलग दिख रहा था। मैं धूप का चश्मा लाना भी भूल गया था। लेकिन भला मुझे कौन दोष दे सकता है? कुछ ही घंटे पहले, मैं कुनिताची स्थित अपने अपार्टमेंट में बैठा कचरे के बारे में सोच रहा था कि उसका क्या करूँ।

रोड्स हवाई अड्डे पर मैंने सूचना केंद्र पर पूछा कि द्वीप जाने वाली फेरी कहाँ से मिलेगी। फेरी पास के ही एक बंदरगाह पर थी। अगर मैं जल्दी करूँ तो शायद शाम वाली फेरी मिल जाए। "क्या कभी-कभी सारी सीटें बुक नहीं हो जातीं?" मैंने बस यह सुनिश्चित करने के लिए पूछा। सूचना केंद्र पर बैठी नुकीली नाक वाली, उम्र का अंदाज़ा न लगा पाने वाली महिला ने भौंहें चढ़ाकर हाथ हिलाकर बात टाल दी। "एक

और के लिए जगह तो बन ही जाती है," उसने जवाब दिया। "यह कोई लिफ्ट तो नहीं है।"

मैंने एक टैक्सी रोकी और बंदरगाह की ओर चल पड़ा। मैंने ड्राइवर से कहा कि मुझे जल्दी है, लेकिन उसे मेरी बात समझ नहीं आई। टैक्सी में एयर कंडीशनिंग नहीं थी और खुली खिड़की से गर्म, धूल भरी हवा अंदर आ रही थी। लगातार, टैक्सी ड्राइवर टूटी-फूटी, बदबूदार अंग्रेज़ी में यूरोडॉलर के बारे में कुछ निराशाजनक बातें बकता रहा। मैंने शिष्टाचारवश कुछ शब्द बोलकर यह जताने की कोशिश की कि मैं उसकी बात समझ रहा हूँ, लेकिन मैं सच में सुन नहीं रहा था। इसके बजाय, मैं बाहर से गुजरते रोड्स के खूबसूरत नज़ारों को निहार रहा था। आसमान बिल्कुल साफ था, बारिश का कोई नामोनिशान नहीं था। सूरज घरों की पत्थर की दीवारों को तपा रहा था। सड़क के किनारे टेढ़े-मेढ़े पेड़ों पर धूल की एक परत जमी हुई थी और लोग पेड़ों की छाँव में या खुले तंबुओं के नीचे बैठे दुनिया को लगभग चुपचाप निहार रहे थे। मुझे सोचने लगा कि क्या मैं सही जगह पर हूँ। हालांकि, हवाई अड्डे से शहर की ओर जाने वाली सड़क पर सिगरेट और ऊज़ो का विज्ञापन करने वाले ग्रीक अक्षरों में लिखे हुए भड़कीले साइनबोर्डों की भरमार ने मुझे यह बता दिया कि - निश्चित रूप से - यह ग्रीस ही था।

शाम की फेरी अभी भी बंदरगाह पर ही थी। जहाज मेरी कल्पना से कहीं बड़ा था। पिछले हिस्से में कारों को ले जाने की जगह थी, और खाने-पीने की चीजों से भरे दो मध्यम आकार के ट्रक और एक पुरानी प्यूजो सेडान पहले से ही जहाज पर सवार थे, बंदरगाह से निकलने का इंतजार कर रहे थे। मैंने टिकट खरीदा और जहाज पर चढ़ गया। डेक की कुर्सी पर बैठते ही था कि गोदी से बंधी रस्सी खुल गई और इंजन गरजने लगे। मैंने राहत की सांस ली और आसमान की ओर देखा। अब मेरे पास बस यही चारा था कि मैं जहाज का इंतजार करूं कि वह मुझे मेरी मंजिल तक ले जाए।

मैंने अपनी पसीने से भीगी, धूल से सनी सूती जैकेट उतारी, उसे मोड़ा और अपने बैग में रख लिया। शाम के 5 बज रहे थे, लेकिन सूरज अभी भी आसमान के बीचोंबीच था, उसकी चमक चकाचौंध कर देने वाली थी। कैनवस की छत के नीचे से आती ठंडी हवा मुझ पर बह रही थी, और धीरे-धीरे मुझे शांति का अनुभव होने लगा। नरिता हवाई अड्डे के लाउंज में जो उदासी छाई हुई थी, वह गायब हो गई थी। हालांकि, मन में अभी भी थोड़ी कड़वाहट बाकी थी।

जहाज पर कुछ ही पर्यटक सवार थे, जिससे मुझे अंदाजा हो गया कि जिस द्वीप की

ओर मैं जा रहा था, वह कोई लोकप्रिय पर्यटन स्थल नहीं था। अधिकांश यात्री स्थानीय लोग थे, जिनमें ज्यादातर बुजुर्ग थे जिन्होंने रोड्स में अपना काम निपटा लिया था और घर लौट रहे थे। उनकी खरीदी हुई चीजें उनके पैरों के पास नाजुक जानवरों की तरह करीने से रखी थीं। बुजुर्गों के चेहरे झुर्रियों से भरे हुए थे और भावहीन थे, मानो चिलचिलाती धूप और जीवन भर की मेहनत ने उनसे सारी भावनाएं छीन ली हों।

जहाज पर कुछ युवा सैनिक भी सवार थे। और दो हिप्पी यात्री, भारी-भारी बैग लिए डेक पर बैठे थे। दोनों दुबले-पतले पैरों वाले और गंभीर चेहरे वाले थे।

वहाँ एक किशोरी ग्रीक लड़की भी थी, जिसने लंबी स्कर्ट पहनी हुई थी। वह बेहद खूबसूरत थी, उसकी आँखें गहरी और काली थीं। जब वह अपनी एक सहेली से बातें कर रही थी, तो उसके लंबे बाल हवा में लहरा रहे थे। उसके होंठों के कोनों पर एक हल्की सी मुस्कान थी, मानो कोई अद्भुत घटना घटित होने वाली हो। उसके सोने के झुमके धूप में चमक रहे थे। युवा सैनिक डेक की रेलिंग से टिके हुए सिगरेट पी रहे थे, उनके चेहरे पर गंभीर भाव थे, और वे बीच-बीच में उस लड़की की ओर एक नज़र डाल रहे थे।

मैंने जहाज़ के स्टोर से खरीदी हुई लेमन सोडा की चुस्की ली और गहरे नीले समुद्र और तैरते हुए छोटे-छोटे द्वीपों को निहारा। इनमें से ज़्यादातर द्वीप कम और समुद्र में चट्टानें ज़्यादा लग रहे थे, बिलकुल निर्जन। सफ़ेद समुद्री पक्षी चट्टानों की चोटियों पर बैठे मछलियों की तलाश में समुद्र को देख रहे थे। पक्षियों ने हमारे जहाज़ को नज़रअंदाज़ कर दिया। लहरें चट्टानों के तल पर टूट रही थीं, जिससे एक चमकदार सफ़ेद किनारा बन रहा था। कभी-कभार मुझे कोई आबाद द्वीप भी दिख जाता था। चारों ओर मज़बूत दिखने वाले पेड़ उगे हुए थे, और ढलानों पर सफ़ेद दीवारों वाले घर बिखरे हुए थे। रंग-बिरंगी नावें खाड़ी में तैर रही थीं, उनके ऊँचे मस्तूल लहरों के साथ हिलते हुए चाप बना रहे थे।

मेरे बगल में बैठे एक झुर्रियों वाले बूढ़े व्यक्ति ने मुझे सिगरेट की पेशकश की। मैंने मुस्कुराते हुए हाथ हिलाकर धन्यवाद कहा, लेकिन मैं सिगरेट नहीं पीता। इसके बदले उन्होंने मुझे पुदीने की खुशबू वाली च्युइंग गम दी। मैंने कृतज्ञतापूर्वक उसे ले लिया और चबाते हुए समुद्र को निहारता रहा।

सात बज चुके थे जब नौका द्वीप पर पहुँची। चिलचिलाता सूरज अपने चरम पर पहुँच चुका था, लेकिन आकाश पहले की तरह ही उजाला था, बल्कि गर्मियों की रोशनी

और भी तेज हो गई थी। मानो किसी विशाल नामपट्टिका पर, बंदरगाह में एक इमारत की सफेद दीवारों पर द्वीप का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था। जहाज धीरे-धीरे घाट पर पहुँचा, और एक-एक करके यात्री अपने सामान के साथ तख्ते से नीचे उतरे। बंदरगाह के सामने एक खुला कैफे था, और जहाज का स्वागत करने आए लोग वहाँ तब तक इंतजार करते रहे जब तक कि वे अपने इच्छित लोगों को पहचान नहीं लेते।

जैसे ही मैं जहाज से उतरा, मैंने मियू को चारों ओर ढूँढा। लेकिन वहाँ कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो मियू हो सकती थी। कई सराय मालिकों ने आकर मुझसे पूछा कि क्या मैं रात बिताने के लिए कोई जगह ढूंढ रहा हूँ। मैंने हर बार सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं, मैं नहीं ढूंढ रहा हूँ।" फिर भी, हर एक ने जाने से पहले मुझे एक कार्ड थमा दिया।

मेरे साथ जहाज से उतरे लोग इधर-उधर बिखर गए। खरीदारी करने वाले अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े, यात्री होटलों और सराय में चले गए। अपने लौटते हुए दोस्तों का स्वागत करने आए लोगों ने जैसे ही उन्हें देखा, उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया या हाथ मिलाया और चले गए। दोनों ट्रक और प्यूजो कार भी उतारी गईं और तेज़ी से दूर निकल गईं। यहाँ तक कि उत्सुकतावश इकट्ठा हुए बिल्ली-कुत्ते भी कुछ ही देर में गायब हो गए। बस कुछ धूप से झुलसे हुए बूढ़े लोग बचे थे जिनके पास बहुत समय था। और मैं, हाथ में जिम बैग लिए, एकदम अलग-थलग।

मैं कैफे में बैठ गया और एक आइस्ड टी मंगवाई, सोचने लगा कि अब आगे क्या करूं। मेरे पास करने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं था। रात तेज़ी से नज़दीक आ रही थी, और मुझे द्वीप और ज़मीन की बनावट के बारे में कुछ भी पता नहीं था। अगर थोड़ी देर बाद भी कोई नहीं आया, तो मैं कहीं कमरा ले लूंगा और अगली सुबह बंदरगाह पर वापस आऊंगा, उम्मीद है कि मियू से मिल सकूंगा। सुमिरे के अनुसार, मियू एक व्यवस्थित महिला थी, इसलिए मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मुझे धोखा देगी। अगर वह बंदरगाह तक नहीं आ सकी, तो ज़रूर कोई बहुत बड़ा कारण होगा। शायद मियू ने सोचा ही नहीं था कि मैं इतनी जल्दी यहाँ पहुँच जाऊँगा।

मुझे बहुत भूख लगी थी। इतनी तेज़ भूख कि मुझे लगा जैसे आप मेरे आर-पार देख सकते हैं। समुद्र की ताज़ी हवा ने मेरे शरीर को यह एहसास दिला दिया होगा कि सुबह से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला है। फिर भी मैं मियू से मिलना नहीं छोड़ना चाहती थी, इसलिए मैंने कैफ़े में थोड़ी देर और रुकने का फ़ैसला किया। थोड़ी-थोड़ी देर में

कोई न कोई स्थानीय व्यक्ति वहाँ से गुज़रता और मुझे उत्सुकता भरी नज़रों से देखता।

कैफे के बगल वाले कियोस्क से मैंने द्वीप के इतिहास और भूगोल पर एक छोटा सा अंग्रेजी पैम्फलेट खरीदा। बेहद बेस्वाद आइस्ड टी की चुस्कियां लेते हुए मैंने उसे सरसरी तौर पर पढ़ा। द्वीप की आबादी मौसम के अनुसार तीन हजार से छह हजार के बीच रहती थी। गर्मियों में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से आबादी बढ़ जाती थी, जबकि सर्दियों में लोग काम की तलाश में दूसरी जगहों पर चले जाते थे, जिससे आबादी कम हो जाती थी। द्वीप पर कोई खास उद्योग नहीं था और कृषि भी काफी सीमित थी - जैतून और कुछ किस्म के फल। यहाँ मछली पकड़ने और स्पंज निकालने का काम होता था। यही कारण है कि बीसवीं सदी की शुरुआत से ही द्वीप के अधिकांश निवासी अमेरिका चले गए थे। उनमें से अधिकतर फ्लोरिडा चले गए, जहाँ वे मछली पकड़ने और स्पंज निकालने के अपने कौशल का अच्छा उपयोग कर सकते थे। फ्लोरिडा में एक शहर का नाम भी द्वीप के नाम पर ही रखा गया था।

पहाड़ियों की चोटी पर एक सैन्य रडार प्रतिष्ठान था। नागरिक बंदरगाह के पास एक दूसरा, छोटा बंदरगाह था जहाँ सैन्य गश्ती पोत आते थे। तुर्की सीमा निकट होने के कारण, यूनानी अवैध सीमा पारगमन और तस्करी को रोकना चाहते थे। यही कारण था कि शहर में सैनिक तैनात थे। जब भी तुर्की के साथ कोई विवाद होता था—वास्तव में छोटी-मोटी झड़पें अक्सर होती रहती थीं—बंदरगाह से आने-जाने वाले जहाजों की आवाजाही बढ़ जाती थी।

दो हज़ार साल से भी पहले, जब यूनानी सभ्यता अपने चरम पर थी, एशिया जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित यह द्वीप एक व्यापारिक केंद्र के रूप में फलता-फूलता था। उस समय पहाड़ियाँ हरे-भरे पेड़ों से ढकी रहती थीं, जिनका उपयोग जहाज़ निर्माण उद्योग में होता था। लेकिन जब यूनानी सभ्यता का पतन हुआ और सारे पेड़ काट दिए गए (वह भरपूर हरियाली फिर कभी नहीं लौटी), तो द्वीप की आर्थिक स्थिति तेज़ी से बिगड़ने लगी। अंततः तुर्कों का आगमन हुआ। पैम्फलेट के अनुसार, उनका शासन क्रूर था। अगर कोई बात उन्हें पसंद नहीं आती थी, तो वे लोगों के कान और नाक उसी आसानी से काट देते थे जैसे पेड़ों की छंटाई करते हैं। उन्नीसवीं सदी के अंत में, अनगिनत खूनी लड़ाइयों के बाद, द्वीप ने अंततः तुर्की से स्वतंत्रता प्राप्त की और बंदरगाह पर नीले-सफेद रंग का यूनानी झंडा लहराने लगा। इसके बाद हिटलर का

आगमन हुआ। जर्मनों ने पास के समुद्र की निगरानी के लिए पहाड़ियों की चोटी पर एक रडार और मौसम केंद्र बनाया, क्योंकि पहाड़ियों से सबसे अच्छा दृश्य दिखाई देता था। माल्टा से आए एक अंग्रेज़ बमबारी दल ने उस केंद्र पर बमबारी की। इस हमले में बंदरगाह के साथ-साथ पहाड़ी पर भी बमबारी की गई, जिसमें कई निर्दोष मछुआरे नावें डूब गईं और कुछ दुर्भाग्यशाली मछुआरे मारे गए। इस हमले में जर्मनों की तुलना में अधिक यूनानी मारे गए, और कुछ पुराने निवासी अभी भी इस घटना को लेकर द्वेष रखते थे।

अधिकांश ग्रीक द्वीपों की तरह, यहाँ समतल भूमि बहुत कम थी, अधिकतर खड़ी, दुर्गम पहाड़ियाँ थीं, और बंदरगाह के ठीक दक्षिण में तट के किनारे केवल एक ही कस्बा था। कस्बे से दूर एक सुंदर, शांत समुद्र तट था, लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए एक खड़ी पहाड़ी चढ़नी पड़ती थी। आसानी से पहुँचने योग्य स्थानों पर ऐसे सुंदर समुद्र तट नहीं थे, जो शायद पर्यटकों की संख्या में ठहराव का एक कारण हो सकता है। पहाड़ियों पर कुछ ग्रीक ऑर्थोडॉक्स मठ थे, लेकिन भिक्षु कड़ाई से धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे, और आम आगंतुकों को वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी।

पर्चे को पढ़कर मुझे यही समझ आया कि यह एक आम यूनानी द्वीप था। लेकिन किसी कारणवश, अंग्रेजों को यह द्वीप विशेष रूप से आकर्षक लगा (अंग्रेज थोड़े सनकी होते हैं) और इस जगह के प्रति अपने लगाव में उन्होंने बंदरगाह के पास एक पहाड़ी पर गर्मियों के लिए बने कॉटेज की एक बस्ती बसा ली। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में कई ब्रिटिश लेखक वहाँ रहे और नीले समुद्र और सफेद बादलों को निहारते हुए अपने उपन्यास लिखे। उनकी कई रचनाओं को समीक्षकों द्वारा खूब सराहा गया, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश साहित्यकारों के बीच इस द्वीप को एक रोमांटिक स्थान के रूप में ख्याति मिली। हालांकि, द्वीप की संस्कृति के इस उल्लेखनीय पहलू के बारे में स्थानीय यूनानी निवासियों को ज़रा भी परवाह नहीं थी।

भूख से ध्यान हटाने के लिए मैंने ये सब पढ़ा। मैंने पर्चा बंद किया और फिर चारों ओर देखा। कैफ़े में बैठे बूढ़े लोग, मानो किसी घूरने की प्रतियोगिता में भाग ले रहे हों, लगातार समुद्र को निहार रहे थे। आठ बज चुके थे और मेरी भूख असहनीय पीड़ा में तब्दील हो रही थी। कहीं से भुने हुए मांस और ग्रिल्ड मछली की खुशबू आई और मानो किसी दयालु यातना देने वाले ने मुझे जकड़ लिया। मैं इसे और सहन नहीं कर सका और खड़ा हो गया। जैसे ही मैंने अपना बैग उठाया और किसी रेस्टोरेंट की तलाश शुरू

करने वाला था, एक महिला चुपचाप मेरे सामने आ गई।

सूरज आखिरकार समुद्र में डूब रहा था और उसकी रोशनी सीधे उस महिला पर पड़ रही थी, जिसकी घुटनों तक लंबी सफेद स्कर्ट पत्थर की सीढ़ियों से उतरते समय हल्की-हल्की लहरा रही थी। उसने छोटे टेनिस शूज़ पहने थे और उसके पैर पतले थे। उसने बिना आस्तीन का हल्के हरे रंग का ब्लाउज़ और पतली किनारी वाली टोपी पहनी थी और कंधे पर एक छोटा सा कपड़े का थैला रखा था। उसके चलने का तरीका इतना सहज और साधारण था कि वह आसपास के नज़ारे में घुलमिल गई थी, और पहले तो मुझे लगा कि वह कोई स्थानीय महिला है। लेकिन वह सीधे मेरी तरफ आ रही थी, और जैसे ही वह पास आई, मैं उसके एशियाई चेहरे को पहचान सका। लगभग अनायास ही मैं बैठ गया, फिर उठ खड़ा हुआ। महिला ने अपना चश्मा उतारा और मेरा नाम पुकारा।

“मुझे देर होने के लिए माफ़ करना,” उसने कहा। “मुझे पुलिस स्टेशन जाना पड़ा, और सारे कागज़ात पूरे करने में बहुत समय लग गया। और मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप आज यहाँ होंगे। मैंने तो सोचा था कि कल दोपहर तक तो ज़रूर आ जाएँगे।”

मैंने कहा, "मैंने अपने सारे संपर्क बना लिए।" पुलिस स्टेशन?

मियू ने सीधे मेरी ओर देखा और हल्की सी मुस्कान दी। "अगर आपको ठीक लगे तो क्यों न हम कुछ खाने चलें और वहाँ बातें करें? मैंने तो आज सिर्फ़ नाश्ता किया है। आपका क्या हाल है? क्या आपको भूख लगी है?"

मैंने जवाब दिया, "बिल्कुल यही बात है।"

वह मुझे बंदरगाह के पास एक गली में स्थित एक भोजनालय में ले गई। प्रवेश द्वार के पास एक कोयले का ग्रिल लगा हुआ था, और लोहे की जाली पर तरह-तरह के ताज़े समुद्री भोजन पक रहे थे। उसने पूछा, "क्या आपको मछली पसंद है?" और मैंने हाँ कहा। मियू ने वेटर से टूटी-फूटी ग्रीक में ऑर्डर दिया। सबसे पहले वह सफेद वाइन का एक जग, ब्रेड और जैतून लेकर आया। बिना किसी टोस्ट या और कुछ कहे, हमने अपने लिए वाइन डाली और पीना शुरू कर दिया। मैंने भूख मिटाने के लिए कुछ मोटी ब्रेड और कुछ जैतून खाए।

मियू खूबसूरत थी। मेरी पहली धारणा यही थी, जो बिल्कुल स्पष्ट और सरल थी। नहीं, शायद यह इतनी स्पष्ट और सरल नहीं थी। शायद मैं किसी भयानक गलतफहमी में

था। शायद किसी कारण से मैं किसी और के अपरिवर्तनीय सपने में खो गया था। अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मैं इस संभावना को नकार नहीं सकता। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि उस क्षण मैंने उसे एक बेहद प्यारी महिला के रूप में देखा था।

मियू ने अपनी पतली उंगलियों में कई अंगूठियां पहन रखी थीं। उनमें से एक साधारण सोने की शादी की अंगूठी थी। जब मैं जल्दी से उसके बारे में अपनी पहली धारणाओं को व्यवस्थित करने की कोशिश कर रहा था, तब वह कोमल आँखों से मेरी ओर देख रही थी और बीच-बीच में शराब की घूंट ले रही थी।

“मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं आपसे पहले मिल चुकी हूँ,” उसने कहा। “शायद इसलिए क्योंकि मैं आपके बारे में हर समय सुनती रहती हूँ।”

मैंने कहा, "सुमिरे ने भी तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ बताया है।"

मियू के चेहरे पर मुस्कान आ गई। जब वह मुस्कुराती थी, और केवल तभी, उसकी आँखों के कोनों पर मनमोहक झुर्रियाँ उभर आती थीं। "तो लगता है हमें परिचय की ज़रूरत नहीं है।"

मेंने सिर हिलाया।

मियू के बारे में मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि उसने अपनी उम्र छिपाने की कोशिश नहीं की। सुमिरे के अनुसार, उसकी उम्र अड़तीस या उनतालीस साल होगी। और वाकई वह उतनी ही उम्र की दिखती थी। उसकी पतली, सुडौल काया और थोड़ा सा मेकअप उसे आसानी से तीस के आसपास की उम्र का बना देता था। लेकिन उसने ऐसा करने की कोशिश नहीं की। मियू ने उम्र को स्वाभाविक रूप से सामने आने दिया, उसे जैसी थी वैसी ही स्वीकार किया और उससे समझौता कर लिया।

मियू ने एक जैतून अपने मुंह में डाला, अपनी उंगलियों से उसकी गुठली पकड़ी और, जैसे कोई कवि विराम चिह्नों को ठीक से लगाता है, उसे बड़ी ही शालीनता से ऐशट्रे में फेंक दिया।

“मुझे माफ़ करना कि मैंने तुम्हें आधी रात को फ़ोन किया,” उसने कहा। “काश मैं तुम्हें बेहतर तरीके से समझा पाती, लेकिन मैं बहुत परेशान थी और समझ नहीं पा रही थी कि क्या कहूँ। मैं अभी भी पूरी तरह शांत नहीं हूँ, लेकिन मेरी शुरुआती उलझन थोड़ी कम हो गई है।”

मैंने पूछा, "आखिर हुआ क्या?"

मियू ने अपने हाथों को मेज पर एक साथ रखा, फिर उन्हें अलग किया और फिर से

एक साथ रखा।
“सुमिरे लापता हो गई है।”
"गायब हुआ?"
"धुएं की तरह," मियू ने कहा। उसने शराब का एक घूंट लिया।
उसने आगे कहा, “यह एक लंबी कहानी है, इसलिए मुझे लगता है कि शुरुआत से शुरू करना और इसे सही क्रम में बताना बेहतर होगा। नहीं तो कुछ बारीकियाँ समझ में नहीं आ पाएंगी। कहानी अपने आप में काफी पेचीदा है। लेकिन पहले खाना खा लेते हैं। अभी हर पल कीमती नहीं है, और भूख लगने पर ठीक से सोचना भी मुश्किल होता है। साथ ही, यहाँ बात करने के लिए थोड़ा शोर भी है।”
रेस्तरां में चारों ओर ग्रीक लोग इशारे करते और ज़ोर-ज़ोर से बातें करते नज़र आ रहे थे। ताकि हमें एक-दूसरे पर चिल्लाना न पड़े, मियू और मैं मेज़ पर आगे की ओर झुककर, सिर एक-दूसरे के करीब करके बातें करने लगे। थोड़ी देर में वेटर ग्रीक सलाद से भरी एक प्लेट और एक बड़ी ग्रिल्ड मछली लेकर आया। मियू ने मछली पर थोड़ा नमक छिड़का, आधा नींबू निचोड़ा और अपने हिस्से पर थोड़ा जैतून का तेल डाला। मैंने भी ऐसा ही किया। हम थोड़ी देर खाने पर ध्यान देते रहे। जैसा कि उसने कहा, पहले ज़रूरी काम। हमें अपनी भूख मिटानी थी।
मैं यहाँ कितने दिन रुक सकती हूँ? उसने पूछा। मैंने जवाब दिया, नया सत्र एक हफ्ते में शुरू हो रहा है, इसलिए मुझे तब तक वापस जाना होगा। नहीं तो हालात थोड़े मुश्किल हो जाएँगे। मियू ने बेपरवाही से सिर हिलाया। उसने अपने होंठ सिकोड़े और मानो कुछ सोच रही हो। उसने कुछ भी ऐसा नहीं कहा जो पहले से पता हो, जैसे "चिंता मत करो, तुम तब तक वापस आ जाओगी" या "मुझे आश्चर्य है कि क्या तब तक सब कुछ ठीक हो जाएगा।" उसने अपने मन में एक निष्कर्ष निकाला, जिसे उसने एक दराज में रख दिया, और चुपचाप अपना खाना खाने लगी।
रात के खाने के बाद, जब हम कॉफ़ी पी रहे थे, मियू ने हवाई किराए का मुद्दा उठाया। उसने पूछा, "क्या आप किराया ट्रैवलर चेक में लेना चाहेंगे? या फिर टोक्यो लौटने के बाद मैं आपके खाते में येन में पैसे ट्रांसफर करवा दूँगी। आपको क्या पसंद है?" मैंने जवाब दिया, "मुझे पैसों की कोई कमी नहीं है, मैं खुद भुगतान कर सकता हूँ।" लेकिन मियू ने भुगतान करने पर ज़ोर दिया। उसने कहा, "मैंने ही तो आपको आने के लिए कहा था।"

मैंने सिर हिलाया। “ऐसा नहीं है कि मैं शिष्टाचार निभा रहा हूँ। थोड़ी देर बाद आता तो शायद मैं अपनी मर्जी से ही यहाँ आ जाता। मेरा कहने का मतलब यही है।”
मियू ने कुछ देर सोचा और सिर हिलाया। “मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। यहाँ आने के लिए। मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं कितनी आभारी हूँ।”

जब हम रेस्टोरेंट से निकले, तो आसमान रंगों की एक शानदार छटा बिखेर रहा था। हवा इतनी उमस भरी थी कि मानो साँस लेते ही फेफड़े भी उसी नीले रंग में रंग जाएँ। छोटे-छोटे तारे टिमटिमाने लगे। गर्मी के लंबे दिन के खत्म होने का बेसब्री से इंतज़ार करते हुए, स्थानीय लोग रात के खाने के बाद बंदरगाह के आसपास टहलने निकले थे। परिवार, जोड़े, दोस्तों के समूह। दिन ढलते ही ज्वार की हल्की खुशबू गलियों में घुल गई थी। मियू और मैं कस्बे में घूमने निकले। सड़क के दाहिनी ओर दुकानें, छोटे होटल और फुटपाथ पर मेजें लगे रेस्टोरेंट थे। लकड़ी के छोटे-छोटे शटर वाली खिड़कियों में पीली रोशनी जगमगा रही थी और रेडियो से ग्रीक संगीत की मधुर धुनें आ रही थीं। बाईं ओर समुद्र फैला हुआ था, जिसकी गहरी लहरें शांति से घाटों से टकरा रही थीं।

“थोड़ी देर में सड़क चढ़ाई वाली हो जाती है,” मियू ने कहा। “हम या तो खड़ी सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं या हल्की ढलान वाली सड़क। सीढ़ियाँ जल्दी पहुँचने का रास्ता हैं। क्या आपको कोई आपत्ति है?”
“नहीं, मैं नहीं करता,” मैंने उत्तर दिया।
संकरी पत्थर की सीढ़ियाँ पहाड़ी की ढलान के समानांतर बनी हुई थीं। सीढ़ियाँ लंबी और खड़ी थीं, लेकिन मियू के स्नीकर पहने पैरों में थकान का कोई संकेत नहीं दिख रहा था और वह अपनी गति धीमी नहीं कर रही थी। मेरे ठीक सामने उसकी स्कर्ट का किनारा सुखद रूप से इधर-उधर लहरा रहा था, उसकी सुडौल, आकर्षक पिंडलियाँ लगभग पूर्णिमा के चाँद की रोशनी में चमक रही थीं। मैं पहले हाँफने लगी और मुझे गहरी साँसें लेने के लिए रुकना पड़ा। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, बंदरगाह की रोशनी छोटी और दूर होती गई। मेरे ठीक बगल में चल रहे लोगों की सारी गतिविधियाँ रोशनी की उस गुमनाम रेखा में समा गईं। यह एक अद्भुत दृश्य था, जिसे मैं कैंची से काटकर अपनी यादों की दीवार पर टांग देना चाहती थी।
मियू और सुमिरे जिस जगह ठहरी थीं, वह समुद्र की ओर मुख वाला एक छोटा सा बरामदा वाला कॉटेज था। सफेद दीवारें और लाल टाइलों वाली छत, और गहरा हरा रंग का दरवाज़ा। घर के चारों ओर बनी नीची पत्थर की दीवार पर लाल बोगनविलिया

के लच्छे फैले हुए थे। उसने बिना ताला लगा दरवाज़ा खोला और मुझे अंदर आने के लिए आमंत्रित किया।

कॉटेज में सुखद ठंडक थी। इसमें एक बैठक कक्ष, एक मध्यम आकार का भोजन कक्ष और रसोईघर था। दीवारें सफेद प्लास्टर की थीं, जिन पर कुछ अमूर्त चित्रकारी लगी हुई थीं। बैठक कक्ष में एक सोफा सेट, एक किताबों की अलमारी और एक छोटा स्टीरियो सिस्टम था। दो शयनकक्ष और एक छोटा लेकिन साफ-सुथरा टाइलों वाला बाथरूम था। कोई भी फर्नीचर बहुत आकर्षक नहीं था, बस आरामदायक और रहने लायक था।

मियू ने अपनी टोपी उतारी और अपना बैग रसोई के काउंटर पर रख दिया। "क्या आप कुछ पीना चाहेंगे?" उसने पूछा। "या पहले नहाना चाहेंगे?" "मुझे लगता है मैं पहले नहा लूँगा," मैंने कहा। मैंने अपने बाल धोए और दाढ़ी बनाई। बालों को ब्लो ड्रायर से सुखाया और एक नई टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहन ली। इससे मुझे कुछ हद तक तरोताज़ा महसूस हुआ। बाथरूम में शीशे के नीचे दो टूथब्रश रखे थे, एक नीला और दूसरा लाल। मैं सोच रहा था कि इनमें से सुमिरे का कौन सा है।

मैं वापस बैठक में गया और मियू को आरामकुर्सी पर ब्रांडी का गिलास हाथ में लिए बैठा पाया। उसने मुझे भी बैठने के लिए कहा, लेकिन मुझे सच में ठंडी बीयर चाहिए थी। मैंने फ्रिज से एमस्टेल निकाली और उसे एक लंबे गिलास में डाला। अपनी कुर्सी में धँसी हुई मियू काफी देर तक चुप रही। ऐसा नहीं लग रहा था कि वह सही शब्द ढूंढने की कोशिश कर रही है, बल्कि ऐसा लग रहा था कि वह किसी निजी याद में खोई हुई है, एक ऐसी याद जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत।

मैंने पूछा, "आप यहां कब से हैं?"

"आज आठवां दिन है," मियू ने कुछ देर सोचने के बाद कहा।

“और सुमिरे यहाँ से गायब हो गई?”

“बिल्कुल सही। जैसा मैंने पहले कहा था, बिल्कुल धुएं की तरह।”

"कब की बात है ये?"

“चार दिन पहले, एक रात को,” उसने कमरे में इधर-उधर देखते हुए कहा, मानो कोई सुराग ढूंढ रही हो। “मुझे नहीं पता कि कहां से शुरू करूं।”

मैंने कहा, “सुमिरे ने अपने पत्रों में मुझे मिलान से पेरिस जाने के बारे में बताया था। फिर बरगंडी जाने के लिए ट्रेन लेने के बारे में। तुम बरगंडी के एक गाँव में अपने दोस्त

के बड़े से घर में रुकी थीं।”
"ठीक है, तो मैं कहानी को वहीं से आगे बढ़ाऊँगी," मियू ने कहा।

अध्याय 8

मैं उस गाँव के आस-पास के शराब उत्पादकों को सदियों से जानता हूँ, और मैं उनकी शराब को ऐसे जानता हूँ जैसे अपने घर का लेआउट। किसी खास खेत में किसी खास ढलान पर उगने वाले अंगूर किस तरह की शराब पैदा करेंगे। उस साल का मौसम स्वाद को कैसे प्रभावित करता है; कौन से उत्पादक सबसे ज़्यादा मेहनत कर रहे हैं; किसका बेटा अपने पिता की मदद करने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा है। कुछ उत्पादकों ने कितना कर्ज़ लिया है, किसने नई सिट्रोएन खरीदी है। इस तरह की बातें। शराब का व्यापार करना बेहतरीन नस्ल के घोड़ों को पालने जैसा है—आपको उनकी वंशावली और ताज़ा जानकारी पता होनी चाहिए। आप सिर्फ़ इस आधार पर व्यापार नहीं कर सकते कि कौन सी शराब का स्वाद अच्छा है और कौन सी नहीं।

मियू ने सांस लेने के लिए एक पल के लिए रुक गई। वह तय नहीं कर पा रही थी कि उसे आगे बढ़ना चाहिए या नहीं। फिर भी वह आगे बढ़ती रही।

“यूरोप में कुछ जगहें हैं जहाँ से मैं सामान खरीदती हूँ, लेकिन बरगंडी का वह गाँव मेरा मुख्य आपूर्तिकर्ता है। इसलिए मैं साल में कम से कम एक बार वहाँ अच्छा-खासा समय बिताने की कोशिश करती हूँ, ताकि पुरानी दोस्ती को ताज़ा कर सकूँ और ताज़ा ख़बरें इकट्ठा कर सकूँ। मैं हमेशा अकेले जाती हूँ, लेकिन इस बार हम पहले इटली जा रहे थे, इसलिए मैंने सुमिरे को अपने साथ ले जाने का फैसला किया। इस तरह की यात्राओं में कभी-कभी किसी दूसरे व्यक्ति का साथ होना ज़्यादा सुविधाजनक होता है, और वैसे भी, मैंने उसे इतालवी भाषा सिखाई थी। अंत में मैंने अकेले जाने का फैसला किया और फ्रांस के लिए रवाना होने से पहले उसे घर वापस भेजने का कोई बहाना बनाने की योजना बनाई। मैं बचपन से ही अकेले यात्रा करने की आदी हूँ, और

आप किसी के कितने भी करीब क्यों न हों, हर दिन किसी दूसरे के साथ रहना इतना आसान नहीं होता।"

"सुमिरे मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा काबिल थी और उसने मेरे लिए कई काम संभाले। टिकट खरीदना, होटल बुक करना, कीमतों पर मोलभाव करना, खर्चों का हिसाब रखना, अच्छे स्थानीय रेस्टोरेंट खोजना। इस तरह के काम। उसकी इतालवी भाषा में काफ़ी सुधार हो गया था, और मुझे उसकी जिज्ञासा बहुत पसंद आई, जिसकी वजह से मुझे ऐसे अनुभव मिले जो अकेले होने पर मुझे कभी नहीं मिलते। मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि किसी के साथ रहना कितना आसान होता है। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए महसूस हुआ क्योंकि हमारे बीच कुछ खास था।"

मुझे अच्छी तरह याद है जब हम पहली बार मिले थे और हमने स्पुतनिक के बारे में बात की थी। वह बीटनिक लेखकों के बारे में बात कर रही थी, और मैंने गलती से 'स्पुतनिक' शब्द बोल दिया। हम दोनों हँसे, और इससे बातचीत शुरू हो गई। क्या आप जानते हैं कि रूसी में 'स्पुतनिक' का क्या मतलब है? 'यात्रा साथी'। मैंने कुछ समय पहले ही इसे एक शब्दकोश में देखा था। अगर आप इसके बारे में सोचें तो यह एक अजीब संयोग है। मुझे आश्चर्य होता है कि रूसियों ने अपने उपग्रह को यह अजीब नाम क्यों दिया। यह तो बस धातु का एक छोटा सा टुकड़ा है, जो पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है।

मियू एक पल के लिए चुप रही और फिर बोलने लगी।

खैर, मैं सुमिरे को अपने साथ बरगंडी ले गया। मैं पुराने परिचितों से मिल रहा था और अपने काम निपटा रहा था, वहीं सुमिरे, जिसे फ्रेंच बिल्कुल नहीं आती थी, ने कार उधार ली और आसपास घूमने निकल गई। एक कस्बे में उसकी मुलाकात एक धनी बूढ़ी स्पेनिश महिला से हुई, और दोनों ने स्पेनिश में बातचीत की और दोस्त बन गईं। उस महिला ने सुमिरे का परिचय एक अंग्रेज से कराया जो उनके होटल में ठहरा हुआ था। वह पचास से अधिक उम्र का था, किसी तरह का लेखक था, बहुत सभ्य और आकर्षक था। मुझे पूरा यकीन है कि वह समलैंगिक था। उसके साथ एक सचिव था जो उसका प्रेमी लगता था।

"उन्होंने हमें रात के खाने पर आमंत्रित किया। वे बहुत अच्छे लोग थे, और बातचीत के दौरान हमें एहसास हुआ कि हमारे कुछ परिचित एक जैसे हैं, और मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे कुछ हमसफ़र मिल गए हों।"

“उस अंग्रेज ने हमें बताया कि ग्रीस के एक द्वीप पर उसकी एक छोटी सी कुटिया है और अगर हम उसका इस्तेमाल करें तो उसे खुशी होगी। वह गर्मियों में हमेशा एक महीने के लिए उस कुटिया का इस्तेमाल करता था, लेकिन इस गर्मी में कुछ काम की वजह से वह नहीं जा सका। उसने कहा कि घर में रहना ही बेहतर है, नहीं तो रखवाले आलसी हो जाते हैं। इसलिए अगर आपको कोई परेशानी न हो, तो बेझिझक इसका इस्तेमाल करें। दूसरे शब्दों में, इस कुटिया का।”

मियू ने कमरे के चारों ओर नजर घुमाई।

कॉलेज के दिनों में मैंने ग्रीस की यात्रा की थी। वह एक बहुत ही संक्षिप्त और तेज़ दौरा था, जिसमें हम एक बंदरगाह से दूसरे बंदरगाह जाते रहते हैं, फिर भी मुझे वह देश बहुत पसंद आया। इसीलिए ग्रीस के एक द्वीप पर जब तक चाहें, मुफ्त में घर मिलने का प्रस्ताव मुझे बहुत अच्छा लगा। सुमिरे ने भी तुरंत हाँ कर दी। मैंने कॉटेज किराए पर लेने के लिए उचित किराया देने की पेशकश की, लेकिन उस अंग्रेज ने यह कहकर मना कर दिया कि वह किराए पर घर नहीं देते। हमने कुछ देर तक विचार-विमर्श किया और अंत में इस बात पर सहमत हुए कि मैं उन्हें धन्यवाद देने के लिए लंदन स्थित उनके घर पर रेड वाइन की एक बोतल भेजूंगा।

“द्वीप पर जीवन किसी सपने जैसा था। पता नहीं कितने समय बाद, पहली बार मैं बिना किसी तय कार्यक्रम की चिंता किए, एक असली छुट्टी का आनंद ले सका। यहाँ संचार व्यवस्था थोड़ी पिछड़ी हुई है—आपको पता ही होगा कि यहाँ फोन सेवा कितनी खराब है—और यहाँ फैक्स या इंटरनेट की सुविधा भी नहीं है। टोक्यो वापस जाने में तय समय से देरी होने से दूसरे लोगों को थोड़ी परेशानी हो सकती थी, लेकिन एक बार यहाँ पहुँचने के बाद मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ा।”

“सुमिरे और मैं हर सुबह जल्दी उठते, तौलिए, पानी और सनस्क्रीन से भरा बैग पैक करते और पहाड़ों के दूसरी तरफ समुद्र तट पर चले जाते। किनारा इतना खूबसूरत है कि सांसें थम जाती हैं। रेत एकदम सफेद है और लहरें न के बराबर हैं। हालांकि, यह थोड़ा एकांत में है और वहां बहुत कम लोग जाते हैं, खासकर सुबह के समय। सभी, पुरुष और महिलाएं, नग्न होकर तैरते हैं। हमने भी ऐसा ही किया। सुबह-सुबह एकदम नीले समुद्र में तैरना, बिल्कुल नग्न अवस्था में, जन्म के दिन की तरह, अद्भुत लगता है। ऐसा लगता है जैसे आप किसी दूसरी दुनिया में आ गए हों।”

“जब हम तैरते-तैरते थक जाते, तो सुमिरे और मैं समुद्र तट पर लेटकर धूप सेंकते।

शुरू में तो हमें एक-दूसरे के सामने नग्न होने में थोड़ी शर्म आती थी, लेकिन एक बार आदत पड़ जाने पर कोई बड़ी बात नहीं रही। मुझे लगता है कि उस जगह की ऊर्जा हम पर असर कर रही थी। हम एक-दूसरे की पीठ पर सनस्क्रीन लगाते, धूप में लेटते, पढ़ते, झपकी लेते और बस बातें करते। इससे मुझे सचमुच आज़ादी का एहसास होता था।"

हम पहाड़ों से होते हुए पैदल घर लौटते, नहाते और सादा खाना खाते, फिर सीढ़ियों से उतरकर कस्बे की ओर चल पड़ते। बंदरगाह के किसी कैफे में चाय पीते, अंग्रेज़ी अखबार पढ़ते। किसी दुकान से कुछ खाने का सामान खरीदते, घर लौटते, और फिर शाम तक अपनी मर्ज़ी से समय बिताते— बरामदे में बैठकर पढ़ते या संगीत सुनते। कभी-कभी सुमिरे अपने कमरे में होती, शायद कुछ लिख रही होती। मैं उसकी पावरबुक खोलकर कीबोर्ड पर टाइप करने की आवाज़ सुन सकता था। शाम को हम बंदरगाह पर फेरी को आते देखने जाते। हम एक ठंडा पेय पीते और जहाज़ से उतरते लोगों को देखते।

हम वहाँ, दुनिया के किनारे, चुपचाप बैठे थे, और हमें कोई नहीं देख सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे सुमिरे और मैं ही यहाँ अकेले हैं। सोचने के लिए और कुछ नहीं था। मैं हिलना नहीं चाहती थी, कहीं जाना नहीं चाहती थी। मैं बस हमेशा के लिए यहीं रहना चाहती थी। मुझे पता था कि यह असंभव है—यहाँ हमारा जीवन बस एक क्षणिक भ्रम था, और एक दिन वास्तविकता हमें वापस उस दुनिया में खींच ले जाएगी जहाँ से हम आए थे। लेकिन उस समय तक मैं बिना किसी चिंता के हर दिन का भरपूर आनंद लेना चाहती थी। हमें यहाँ का जीवन बहुत पसंद था। चार दिन पहले तक।

वहाँ पहुँचने के चौथे दिन सुबह, वे हमेशा की तरह समुद्र तट पर गए, नग्न होकर नहाए, घर लौटे और फिर बंदरगाह के लिए निकल पड़े। कैफ़े के वेटर को वे याद थे—मियू द्वारा हमेशा दी जाने वाली उदार टिप का भी इसमें योगदान था—और उसने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उसने विनम्रतापूर्वक उनकी सुंदरता की तारीफ़ की। सुमिरे एक कियोस्क पर गई और एथेंस में प्रकाशित अंग्रेज़ी अख़बार की एक प्रति खरीदी। यही बाहरी दुनिया से उनका एकमात्र संपर्क था। सुमिरे का काम अख़बार पढ़ना था। वह विनिमय दर देखती और मियू को किसी भी महत्वपूर्ण समाचार या रोचक लेख का अनुवाद करके पढ़कर सुनाती।

सुमिरे ने उस दिन जो लेख पढ़कर सुनाया, वह एथेंस के एक छोटे से उपनगर में हुई एक सत्तर वर्षीय महिला की कहानी थी, जिसे उसकी बिल्लियों ने खा लिया था। मृत महिला ने ग्यारह साल पहले अपने पति, जो एक व्यापारी थे, को खो दिया था और तब से वह दो कमरों के एक छोटे से अपार्टमेंट में कई बिल्लियों के साथ शांतिपूर्ण जीवन बिता रही थी। एक दिन महिला को दिल का दौरा पड़ा और वह सोफे पर औंधे मुंह गिर पड़ी और उसकी मृत्यु हो गई। दिल का दौरा पड़ने और मृत्यु के बीच कितना समय बीता, यह ज्ञात नहीं है। खैर, महिला की आत्मा ने अपने पुराने साथी, उस शरीर को अलविदा कहने के लिए सभी निर्धारित चरणों से गुजरी, जिसमें वह सत्तर वर्षों से रह रही थी। महिला के कोई रिश्तेदार या दोस्त नहीं थे जो उससे नियमित रूप से मिलने आते हों, और उसका शव एक सप्ताह बाद तक नहीं मिला। दरवाजे बंद थे, खिड़कियां बंद थीं, और अपनी मालकिन की मृत्यु के बाद बिल्लियां बाहर नहीं निकल पाईं। अपार्टमेंट में कोई खाना नहीं था। फ्रिज में कुछ तो रहा होगा, लेकिन बिल्लियां फ्रिज के दरवाजे खोलने में माहिर नहीं होतीं। भूख से व्याकुल होकर उन्होंने अपने मालिक का मांस चट कर लिया।

कॉफी की चुस्की लेते हुए सुमिरे धीरे-धीरे लेख का अनुवाद कर रही थी। कुछ मधुमक्खियाँ मेज के आसपास भिनभिना रही थीं और पिछले ग्राहक द्वारा गिराए गए जैम को चाटने के लिए बैठ गईं। मियू धूप के चश्मे से समुद्र को निहार रही थी और सुमिरे के पढ़ने को ध्यान से सुन रही थी।

“और फिर क्या हुआ?” मियू ने पूछा।

“बस इतना ही,” सुमिरे ने अखबार को बीच से मोड़कर मेज पर रखते हुए कहा। “अखबार में बस यही छपा है।”

"बिल्लियों का क्या हुआ होगा?"

“मुझे नहीं पता...,” सुमिरे ने अपने होंठ एक तरफ सिकोड़ते हुए और कुछ देर सोचते हुए कहा। “अखबार सब एक जैसे होते हैं। वे कभी भी आपको वो नहीं बताते जो आप सच में जानना चाहते हैं।”

जैसे ही मधुमक्खियों को कुछ महसूस हुआ, वे हवा में उड़ गईं और एक औपचारिक भिनभिनाहट के साथ कुछ देर तक चक्कर लगाती रहीं, फिर मेज पर वापस बैठ गईं। वे फिर से जैम चाटने लगीं।

“और बिल्लियों का क्या हुआ होगा, ये तो सोचने वाली बात है,” सुमिरे ने अपनी बड़ी

टी-शर्ट का कॉलर खींचते हुए और सिलवटें ठीक करते हुए कहा। टी-शर्ट के साथ उसने शॉर्ट्स पहने थे, लेकिन मियू को पता था कि उसने अंदर अंडरवियर नहीं पहना था। “जो बिल्लियाँ इंसानी मांस खाने की आदी हो जाती हैं, वे आदमखोर बिल्लियाँ बन सकती हैं, तो शायद उन्हें मार दिया गया हो। या शायद पुलिस ने कहा हो, ‘अरे, तुम लोगों ने बहुत कुछ सह लिया है,’ और उन्हें बरी कर दिया गया हो।”

"अगर आप उस शहर के मेयर या पुलिस प्रमुख होते, तो आप क्या करते?"

सुमिरे ने इस बारे में सोचा। "क्यों न इन्हें किसी संस्था में रखकर सुधारा जाए? इन्हें शाकाहारी बना दिया जाए?"

“बुरा विचार नहीं है।” मियू हंस पड़ी। उसने अपने धूप के चश्मे उतारे और सुमिरे की ओर मुड़ी। “यह कहानी मुझे कैथोलिक जूनियर हाई स्कूल में दाखिले के समय दिए गए पहले व्याख्यान की याद दिलाती है। क्या मैंने तुम्हें कभी बताया है कि मैं छह साल तक एक बहुत ही सख्त कैथोलिक लड़कियों के स्कूल में पढ़ी थी? मैंने एक सामान्य प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई की, लेकिन जूनियर हाई में मैंने उस स्कूल में दाखिला लिया। प्रवेश समारोह के ठीक बाद, एक बूढ़ी नन हम सभी नए छात्रों को सभागार में ले गईं और कैथोलिक नैतिकता पर भाषण दिया। वह एक फ्रांसीसी नन थीं, लेकिन उनकी जापानी भाषा बहुत अच्छी थी। उन्होंने कई विषयों पर बात की, लेकिन मुझे बिल्लियों और सुनसान द्वीप की कहानी याद है।”

"यह दिलचस्प लग रहा है," सुमिरे ने कहा।

“आपका जहाज डूब गया और आप एक सुनसान द्वीप पर बहकर आ गए। सिर्फ आप और एक बिल्ली ही लाइफबोट तक पहुँच पाए। आप कुछ देर तक बहते रहे और अंत में एक सुनसान द्वीप पर पहुँच गए, जो सिर्फ एक पथरीला द्वीप था, जहाँ खाने-पीने का कुछ भी नहीं था। पानी भी नहीं था। आपकी लाइफबोट में सिर्फ दस दिन के बिस्कुट और एक व्यक्ति के लिए पानी था, बस इतना ही। कहानी कुछ इस तरह थी।”

“नन ने सभागार में चारों ओर देखा और एक मजबूत, स्पष्ट स्वर में कहा, ‘अपनी आँखें बंद करो और इस दृश्य की कल्पना करो। तुम एक बिल्ली के साथ एक सुनसान द्वीप पर पहुँच गए हो। यह एक ऐसा द्वीप है जो बिल्कुल वीरान है। दस दिनों के भीतर किसी का तुम्हें बचाना लगभग असंभव है। जब तुम्हारा खाना और पानी खत्म हो जाएगा, तो तुम्हारी मृत्यु भी हो सकती है। ऐसे में तुम क्या करोगे? चूंकि बिल्ली भी

तुम्हारी तरह कष्ट झेल रही है, तो क्या तुम्हें अपना थोड़ा सा भोजन उसके साथ बाँटना चाहिए?' नन फिर चुप हो गईं और हम सबके चेहरों की ओर देखा। 'नहीं। यह एक गलती होगी,' उन्होंने आगे कहा। 'मैं चाहती हूँ कि तुम समझो कि बिल्ली के साथ अपना भोजन बाँटना गलत होगा। इसका कारण यह है कि तुम अनमोल प्राणी हो, ईश्वर द्वारा चुने गए हो, और बिल्ली नहीं। इसलिए तुम्हें सारा भोजन स्वयं खाना चाहिए।' नन के चेहरे पर एक अत्यंत गंभीर भाव था।

"पहले तो मुझे लगा कि ये कोई मज़ाक है। मैं मज़ाक के अंत का इंतज़ार कर रही थी। पर कुछ नहीं था। उसने अपनी बात इंसानी गरिमा और अहमियत के विषय पर मोड़ दी, और मुझे कुछ समझ ही नहीं आया। मेरा मतलब है, स्कूल में अभी-अभी दाखिल हुए बच्चों को इस तरह की कहानी सुनाने का क्या मतलब था? मुझे समझ नहीं आया —और अब भी नहीं आता।"

सुमिरे ने इस बारे में सोचा। "क्या तुम्हारा मतलब यह है कि अंत में बिल्ली को खाना ठीक रहेगा?"

"खैर, मुझे नहीं पता। उसने बात को इतना आगे नहीं बढ़ाया।"

क्या आप कैथोलिक हैं?

मियू ने सिर हिलाया। "वह स्कूल संयोगवश मेरे घर के पास था, इसलिए मैं वहाँ चली गई। मुझे उनकी यूनिफॉर्म भी पसंद आई। मैं उस स्कूल में इकलौती गैर-जापानी नागरिक थी।"

क्या आपको कोई बुरा अनुभव हुआ है?

"क्योंकि मैं कोरियाई था?"

"हाँ।"

मियू ने फिर से सिर हिलाया। "स्कूल काफी उदार था। नियम काफी सख्त थे, और कुछ बहनें थोड़ी सनकी थीं, लेकिन कुल मिलाकर माहौल प्रगतिशील था, और नहीं, मुझे कभी किसी तरह के भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा। मैंने कुछ अच्छे दोस्त बनाए, और कुल मिलाकर मैं कहूंगी कि मुझे स्कूल में मज़ा आया। मुझे कुछ अप्रिय अनुभव हुए, लेकिन वो सब तब हुआ जब मैं असल दुनिया में कदम रख चुकी थी। लेकिन ये कोई असामान्य बात नहीं है—ऐसा ज्यादातर लोगों के साथ होता है।"

मैंने सुना है कि कोरिया में लोग बिल्लियाँ खाते हैं। क्या यह सच है?

मैंने भी यही बात सुनी है। लेकिन मेरे जानने वालों में से किसी ने नहीं सुनी।

दिन का सबसे गर्म समय था, और दोपहर के समय शहर का चौक लगभग सुनसान था। शहर के लगभग सभी लोग अपने ठंडे घरों में आराम कर रहे थे। केवल जिज्ञासु विदेशी ही उस समय बाहर निकले थे।

चौक में एक वीर की प्रतिमा थी। उन्होंने ग्रीस की मुख्य भूमि में विद्रोह का नेतृत्व किया था और द्वीप पर कब्ज़ा करने वाले तुर्कों से लड़ाई लड़ी थी, लेकिन उन्हें पकड़ लिया गया और भाले से छेदकर मार डाला गया। तुर्कों ने चौक में एक नुकीला खंभा गाड़ दिया और उस बेचारे वीर को नग्न अवस्था में उस पर नीचे उतार दिया। धीरे-धीरे, खंभा उनके गुदा से होते हुए उनके मुंह तक पहुँच गया; उन्हें मरने में घंटों लग गए। माना जाता है कि प्रतिमा उसी स्थान पर स्थापित की गई थी जहाँ यह घटना घटी थी। जब यह प्रतिमा स्थापित की गई थी, तब वह भव्य कांस्य प्रतिमा देखने में बहुत ही आकर्षक रही होगी, लेकिन बीते वर्षों में, समुद्री हवा, धूल और सीगल की बीट के कारण, अब प्रतिमा के चेहरे के हाव-भाव मुश्किल से ही दिखाई देते हैं। द्वीप के लोग उस जर्जर प्रतिमा पर मुश्किल से ही नज़र डालते थे, और प्रतिमा स्वयं ऐसी प्रतीत होती थी मानो उसने दुनिया से मुंह मोड़ लिया हो।

“बिल्लियों की बात करें तो,” सुमिरे ने अचानक कहा, “मुझे एक बहुत ही अजीब सी घटना याद है। जब मैं दूसरी कक्षा में थी, हमारे पास एक प्यारी सी छह महीने की छोटी सी बिल्ली थी। एक शाम मैं बरामदे में बैठकर किताब पढ़ रही थी, तभी बिल्ली बगीचे में लगे एक बड़े चीड़ के पेड़ के नीचे पागलों की तरह दौड़ने लगी। बिल्लियाँ ऐसा ही करती हैं। वहाँ कुछ नहीं होता, लेकिन अचानक वे फुफकारती हैं, अपनी पीठ झुकाती हैं, पीछे की ओर उछलती हैं, उनके बाल खड़े हो जाते हैं और पूंछ ऊपर उठ जाती है, मानो वे हमला करने के मूड में हों।”

“बिल्ली इतनी उत्तेजित थी कि उसने मुझे बरामदे से देखते हुए देखा ही नहीं। यह इतना अजीब नजारा था कि मैंने अपनी किताब नीचे रख दी और बिल्ली को देखने लगा। बिल्ली अपने अकेलेपन के खेल से जरा भी नहीं थकी। बल्कि, समय बीतने के साथ-साथ वह और भी दृढ़ हो गई। मानो उस पर किसी भूत का साया हो।”

सुमिरे ने पानी पिया और हल्के से अपना कान खुजलाया।

“जैसे-जैसे मैं उसे देखता गया, मेरा डर बढ़ता गया। बिल्ली ने कुछ ऐसा देखा जो मैं नहीं देख सका, और जो भी था उसने उसे बेकाबू कर दिया। आखिरकार, बिल्ली पेड़ के तने के चारों ओर बहुत तेज़ी से दौड़ने लगी, ठीक उस बच्चों की कहानी के बाघ की

तरह जो मक्खन में बदल जाता है। अंत में, बहुत देर तक दौड़ने के बाद, बिल्ली पेड़ के तने पर चढ़ गई। मैं उसकी छोटी सी शक्ल को ऊपर टहनियों के बीच से झांकते हुए देख सका। बरामदे से मैंने ज़ोर से उसका नाम पुकारा, लेकिन उसने मुझे नहीं सुना।"
आखिरकार सूरज डूब गया और पतझड़ की ठंडी हवा चलने लगी। मैं बरामदे में बैठकर बिल्ली के आने का इंतज़ार करने लगा। वह एक मिलनसार बिल्ली थी, और मुझे लगा कि अगर मैं थोड़ी देर वहाँ बैठा रहूँ, तो वह नीचे आ जाएगी। लेकिन वह नहीं आई। मुझे उसकी म्याऊँ की आवाज़ भी सुनाई नहीं दी। अंधेरा बढ़ता ही गया। मैं डर गया और अपने परिवार को बताया। उन्होंने कहा, 'चिंता मत करो, उसे अकेला छोड़ दो, वह थोड़ी देर में नीचे आ जाएगी।' लेकिन बिल्ली कभी वापस नहीं आई।
"तुम्हारा मतलब क्या है—'कभी वापस नहीं आया'?" मियू ने पूछा।
"वो अचानक गायब हो गई। जैसे धुआँ। सबने कहा कि बिल्ली रात में पेड़ से नीचे उतरकर कहीं चली गई होगी। बिल्लियाँ उत्तेजित होकर ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाती हैं, फिर ऊँचाई का एहसास होने पर डर जाती हैं और नीचे नहीं आतीं। ऐसा अक्सर होता है। उन्होंने कहा कि अगर बिल्ली अभी भी वहीं होती, तो ज़ोर-ज़ोर से म्याऊँ करके सबको बता देती। लेकिन मुझे उनकी बात पर यकीन नहीं हुआ। मुझे लगा कि बिल्ली किसी डाल से चिपकी होगी, डर के मारे दम घुट रहा होगा, आवाज़ भी नहीं निकाल पा रही होगी। स्कूल से लौटने के बाद मैं बरामदे में बैठ गई, चीड़ के पेड़ को देखती रही और बीच-बीच में बिल्ली का नाम पुकारती रही। कोई जवाब नहीं। एक हफ़्ते बाद मैंने उम्मीद छोड़ दी। मुझे वो छोटी सी बिल्ली बहुत प्यारी थी, और ये देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। जब भी मेरी नज़र चीड़ के पेड़ पर पड़ती, मुझे उस बेचारी छोटी बिल्ली की तस्वीर याद आ जाती, जो मरी हुई, किसी डाल से चिपकी हुई। वो बिल्ली कहीं नहीं जा पा रही, भूख से मर रही होगी और वहीं सूखकर मुरझा रही होगी।"
सुमिरे ने मियू की ओर देखा।
"मैंने फिर कभी बिल्ली नहीं पाली। मुझे बिल्लियाँ अब भी पसंद हैं, हालाँकि मैंने उस समय तय कर लिया था कि पेड़ पर चढ़कर वापस न लौटने वाली वह बेचारी छोटी बिल्ली ही मेरी पहली और आखिरी बिल्ली होगी। मैं उस छोटी बिल्ली को भुलाकर किसी और से प्यार नहीं कर सकती थी।"
"उस दोपहर कैफे में हमने इसी बारे में बात की थी," मियू ने कहा। "मुझे लगा कि ये बस कुछ हानिरहित यादें हैं, लेकिन अब सब कुछ महत्वपूर्ण लगता है। शायद यह

सिर्फ मेरी कल्पना है।”

मियू ने मुड़कर खिड़की से बाहर देखा। समुद्र से आती हवा से पर्दों में सरसराहट होने लगी। जैसे ही वह अंधेरे में बाहर देखने लगी, कमरे में और भी गहरी शांति छा गई।

“क्या मैं एक सवाल पूछ सकता हूँ? अगर यह विषय से हटकर लगे तो माफ़ करना, लेकिन यह बात मुझे परेशान कर रही है,” मैंने कहा। “आपने कहा था कि सुमिरे गायब हो गई, जैसे आपने कहा था, ‘धुएँ की तरह’। चार दिन पहले। और आप पुलिस के पास गए थे। है ना?”

मियू ने सिर हिलाया।

"सुमिरे के परिवार से संपर्क करने के बजाय आपने मुझे आने के लिए क्यों कहा?"

“मुझे इस बात का कोई सुराग नहीं था कि उसके साथ क्या हुआ। और ठोस सबूतों के अभाव में, मुझे यह भी नहीं पता था कि मुझे उसके माता-पिता को परेशान करना चाहिए या नहीं। मैंने कुछ समय तक इस बारे में बहुत सोचा और अंत में इंतजार करने और देखने का फैसला किया।”

मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि सुमिरे के सुंदर पिता नौका से इस द्वीप पर आ रहे हैं। क्या उसकी सौतेली माँ, जो स्वाभाविक रूप से घटनाक्रम से आहत है, उनके साथ जाएगी? यह तो एक बड़ा झंझट होगा। वैसे, मेरे लिए तो हालात पहले से ही उलझे हुए थे। एक विदेशी इतने छोटे से द्वीप पर चार दिनों के लिए कैसे गायब हो सकता है?

"लेकिन आपने मुझे क्यों फोन किया?"

मियू ने अपने नंगे पैरों को फिर से एक साथ लाया, अपनी स्कर्ट के किनारे को अपनी उंगलियों के बीच पकड़ा और उसे नीचे की ओर खींच लिया।

"तुम ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन पर मैं भरोसा कर सकता था।"

लेकिन आप मुझसे कभी मिले ही नहीं थे।

“सुमिरे को आप पर सबसे ज्यादा भरोसा था। उसने कहा कि आप किसी भी विषय पर गहराई से सोचते हैं, चाहे वह कोई भी विषय हो।”

"मुझे डर है कि यह निश्चित रूप से एक अल्पसंख्यक राय है।"

मियू ने अपनी आंखें सिकोड़ीं और मुस्कुराई, उसकी आंखों के आसपास की झुर्रियां उभर आईं।

मैं खड़ी हुई और उसके सामने जाकर उसका खाली गिलास ले लिया। मैं रसोई में गई,

गिलास में थोड़ी सी कॉर्वोइसियर डाली और फिर बैठक में लौट आई। उसने मुझे धन्यवाद दिया और ब्रांडी ले ली। समय बीतता गया, पर्दा धीरे-धीरे लहराता रहा। हवा में किसी और जगह की महक थी।

"क्या तुम सचमुच सच जानना चाहते हो?" मियू ने मुझसे पूछा। उसकी आवाज़ थकी हुई लग रही थी, मानो उसने कोई कठिन निर्णय लिया हो।

मैंने ऊपर देखा और उसके चेहरे को निहारने लगा। मैंने कहा, "एक बात मैं पूरे यकीन से कह सकता हूँ, कि अगर मैं सच जानना नहीं चाहता, तो मैं यहाँ नहीं होता।"

मियू ने पर्दों की ओर तिरछी नज़र से देखा। और अंत में धीमी आवाज़ में बोली, "यह उस रात हुआ था, जब हम कैफे में बिल्लियों के बारे में बात कर रहे थे।"

अध्याय 9

बंदरगाह के कैफे में बिल्लियों के बारे में बातचीत के बाद, मियू और सुमिरे किराने का सामान खरीदने गईं और कॉटेज लौट आईं। हमेशा की तरह, वे रात के खाने तक आराम करती रहीं। सुमिरे अपने कमरे में लैपटॉप पर कुछ लिख रही थी। मियू बैठक कक्ष में सोफे पर लेटी हुई थी, हाथ सिर के पीछे रखे, आँखें बंद किए, और जूलियस कैचेन द्वारा रिकॉर्ड की गई ब्रह्म्स की गाथाएँ सुन रही थी। यह एक पुरानी एलपी थी, लेकिन प्रस्तुति मनमोहक, भावपूर्ण और बेहद यादगार थी। ज़रा भी दिखावटी नहीं, बल्कि पूरी तरह अभिव्यंजक।

“क्या संगीत तुम्हें परेशान कर रहा है?” मियू ने एक बार सुमिरे के कमरे के दरवाजे की ओर देखते हुए पूछा। दरवाजा पूरी तरह खुला हुआ था।

"ब्रह्म्स मुझे कभी परेशान नहीं करते," सुमिरे ने पीछे मुड़ते हुए कहा।

मियू ने सुमिरे को पहली बार इतनी तल्लीनता से लिखते देखा था। उसका मुंह किसी शिकार की तलाश में निकले जानवर की तरह कसा हुआ था, और उसकी आंखें सामान्य से अधिक गहरी थीं।

“तुम क्या लिख रही हो?” मियू ने पूछा। “एक नया स्पुतनिक उपन्यास?”
सुमिरे के होंठों के आसपास का तनाव कुछ हद तक कम हो गया। "कुछ खास नहीं। बस कुछ बातें जो मेरे दिमाग में आईं और शायद कभी काम आ जाएं।"
मियू अपने सोफे पर लौट आई और दोपहर की धूप में संगीत द्वारा रची गई उस छोटी सी दुनिया में फिर से खो गई; उसने सोचा, कितना अद्भुत होगा अगर मैं भी ब्रह्म्स को इतनी खूबसूरती से बजा सकूँ। उसने सोचा, पहले मुझे ब्रह्म्स की छोटी रचनाओं, खासकर गाथागीतों में हमेशा दिक्कत होती थी। मैं कभी भी उस चंचल, क्षणभंगुर बारीकियों और आहों की दुनिया में खुद को पूरी तरह से नहीं खो पाती थी। लेकिन अब, मैं ब्रह्म्स को पहले से कहीं अधिक खूबसूरती से बजा पाऊँगी। लेकिन मियू अच्छी तरह जानती थी: मैं कुछ भी नहीं बजा सकती। कभी नहीं।
साढ़े छह बजे दोनों ने रसोई में रात का खाना तैयार किया और बरामदे में बैठकर खाया। खाने में सी ब्रीम मछली और सुगंधित जड़ी-बूटियों का सूप, सलाद और रोटी थी। उन्होंने थोड़ी सी सफेद शराब पी और बाद में गर्म कॉफी। उन्होंने देखा कि द्वीप के किनारे एक मछली पकड़ने वाली नाव दिखाई दी और बंदरगाह में प्रवेश करते हुए उसने एक छोटा सा सफेद चाप बनाया। इसमें कोई संदेह नहीं था कि मछुआरों के घरों में गरमागरम भोजन उनका इंतजार कर रहा था।
“वैसे, हम यहाँ से कब निकलेंगे?” सुमिरे ने बर्तन धोते हुए पूछा।
दीवार पर लगे कैलेंडर को देखते हुए मियू ने जवाब दिया, "मैं एक और हफ्ता रुकना चाहूंगी, लेकिन इससे ज़्यादा मैं नहीं रुक सकती। अगर मेरा बस चलता, तो मैं हमेशा के लिए यहीं रह जाती।"
“अगर मेरी चलती तो मैं भी ऐसा ही करती,” सुमिरे ने मुस्कुराते हुए कहा। “लेकिन क्या कर सकते हैं? अच्छी चीजें तो हमेशा खत्म हो जाती हैं।”
अपनी रोज़ाना की दिनचर्या के अनुसार, वे दस बजे से पहले अपने कमरों में चले गए। मियू ने लंबी आस्तीन वाली सफेद सूती पजामा पहनी और तकिए पर सिर रखते ही सो गई। लेकिन जल्द ही वह जाग उठी, मानो अपने ही दिल की धड़कन से हिल गई हो। उसने बगल में रखी अलार्म घड़ी पर नज़र डाली; साढ़े बारह बज चुके थे। कमरा घोर अंधेरा था, सन्नाटा छाया हुआ था। उसे महसूस हुआ कि कोई पास में ही है, साँस रोककर छिपा हुआ है। मियू ने कंबल को गर्दन तक खींच लिया और कान खड़े कर लिए। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मानो बाकी सब कुछ दबा रहा हो। यह सिर्फ़

एक बुरा सपना नहीं था जो नींद में जागने पर आ गया था—कमरे में उसके साथ कोई ज़रूर था। बिना आवाज़ किए, मियू ने हाथ बढ़ाकर खिड़की का पर्दा एक-दो इंच हटाया। हल्की, पानी जैसी चाँदनी कमरे में आ गई। एकदम स्थिर रहते हुए, उसने अपनी आँखों से कमरे का जायज़ा लिया।

जैसे-जैसे उसकी आँखें अंधेरे में अभ्यस्त होती गईं, उसे कमरे के एक कोने में धीरे-धीरे कुछ उभरता हुआ दिखाई देने लगा। दरवाजे के बगल में अलमारी की छाया में, जहाँ सबसे घना अंधेरा था। जो भी था, वह छोटा था, किसी बड़े, लंबे समय से भूले हुए डाक बैग की तरह एक मोटी गेंद की तरह गोल-गोल लिपटा हुआ था। कोई जानवर? कोई बड़ा कुत्ता? लेकिन सामने का दरवाजा बंद था, उसके कमरे का दरवाजा भी बंद था। कोई कुत्ता अंदर नहीं आ सकता था।

मियू चुपचाप सांस लेती रही और टकटकी लगाए देखती रही। उसका मुंह सूख रहा था और उसे सोने से पहले पी गई ब्रांडी की हल्की सी महक आ रही थी। उसने हाथ बढ़ाकर पर्दा थोड़ा और हटाया ताकि चांदनी अंदर आ सके। धीरे-धीरे, जैसे कोई उलझा हुआ धागा सुलझा रही हो, उसे फर्श पर पड़े काले ढेर का आकार दिखाई देने लगा। वह किसी इंसान के शरीर जैसा लग रहा था। बाल सामने लटके हुए थे, दो पतली टांगें एक कोण पर मुड़ी हुई थीं। कोई फर्श पर सिकुड़कर बैठा था, सिर टांगों के बीच, मानो आसमान से गिरने वाली किसी चीज से खुद को बचा रहा हो।

यह सुमिरे थी। अपने रोज़ाना वाले नीले पजामे में, वह दरवाजे और अलमारी के बीच एक कीड़े की तरह दुबकी हुई थी। हिल नहीं रही थी। मियू को तो ऐसा लग रहा था जैसे वह सांस भी नहीं ले रही हो।

मियू ने राहत की सांस ली। लेकिन सुमिरे यहाँ क्या कर रही थी? मियू चुपचाप उठी और लैंप जला दिया। पीली रोशनी से पूरा कमरा जगमगा उठा, लेकिन सुमिरे टस से मस नहीं हुई। उसे तो मानो पता ही नहीं चला कि लैंप जल गया है।

“क्या बात है?” मियू ने पुकारा। पहले धीमी आवाज़ में, फिर तेज़ आवाज़ में।

कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। मियू की आवाज़ सुमिरे तक नहीं पहुँची। मियू बिस्तर से उठी और उसके पास गई। नंगे पैरों से कालीन का स्पर्श उसे खुरदुरा लगा।

"क्या तुम बीमार हो?" मियू ने सुमिरे के बगल में बैठते हुए पूछा।

अब भी कोई उत्तर नहीं।

मियू ने देखा कि सुमिरे ने अपने मुँह में कुछ दबा रखा था। एक गुलाबी रंग का कपड़ा

जो हमेशा बाथरूम में टंगा रहता था। मियू ने उसे निकालने की कोशिश की, लेकिन सुमिरे ने अपना मुँह कसकर बंद कर रखा था। उसकी आँखें खुली थीं, पर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मियू ने हार मान ली और सुमिरे के कंधे पर हाथ रख दिया। सुमिरे का पजामा पूरी तरह भीगा हुआ था।

मियू ने कहा, "बेहतर होगा कि तुम अपने पजामा उतार दो। तुम्हें इतना पसीना आ रहा है कि तुम्हें सर्दी लग जाएगी।"

सुमिरे स्तब्ध सी लग रही थी, न कुछ सुन पा रही थी, न कुछ देख पा रही थी। मियू ने सुमिरे का पजामा उतारने का फैसला किया; वरना उसका शरीर जम जाता। अगस्त का महीना था, लेकिन द्वीप पर कभी-कभी रातें ठंडी होती थीं। वे दोनों हर दिन नग्न होकर तैरती थीं और एक-दूसरे के शरीर को देखने की आदी थीं, इसलिए मियू को लगा कि अगर वह सुमिरे के कपड़े उतार दे तो उसे कोई आपत्ति नहीं होगी।

सुमिरे के शरीर को सहारा देते हुए, मियू ने पजामा के बटन खोले और कुछ देर बाद उसका ऊपरी हिस्सा उतार दिया। फिर नीचे का हिस्सा भी। सुमिरे का अकड़ा हुआ शरीर धीरे-धीरे ढीला पड़ गया और अंत में बेजान हो गया। मियू ने उसके मुंह से गीला कपड़ा निकाला। वह उसकी लार से भीगा हुआ था। उस पर दांतों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे।

सुमिरे ने पजामे के नीचे अंडरवियर नहीं पहना था। मियू ने पास पड़ा तौलिया उठाया और उसके शरीर से पसीना पोंछा। पहले उसकी पीठ, फिर बगलें, फिर छाती। उसने उसका पेट पोंछा, और फिर जल्दी से कमर से जांघों तक का हिस्सा। सुमिरे शांत थी, कोई विरोध नहीं कर रही थी। वह बेहोश लग रही थी, हालांकि उसकी आँखों में देखने पर मियू को समझदारी की एक झलक दिखाई दी।

मियू ने सुमिरे के नग्न शरीर को पहले कभी नहीं छुआ था। उसकी त्वचा तनी हुई थी, किसी नन्हे बच्चे की तरह चिकनी। उसे उठाते हुए मियू ने पाया कि सुमिरे उसके अनुमान से कहीं अधिक भारी थी और पसीने की गंध आ रही थी। उसके शरीर से पसीना पोंछते हुए मियू ने एक बार फिर अपने दिल की धड़कन तेज़ होते हुए महसूस की। उसके मुँह में लार भर आई और उसे बार-बार निगलना पड़ा।

चांदनी में नहाती सुमिरे किसी प्राचीन चीनी मिट्टी की वस्तु की तरह चमक रही थी। उसके स्तन छोटे लेकिन सुडौल थे, जिन पर उभरे हुए निप्पल थे। उसके काले गुप्तांग के बाल पसीने से भीगे हुए थे और सुबह की ओस में घास की तरह चमक रहे थे।

उसका नंगा और बेजान शरीर उस शरीर से बिलकुल अलग था जिसे मियू ने समुद्र तट पर चिलचिलाती धूप में देखा था। उसका शरीर अभी भी लड़की जैसी मासूमियत और समय के दर्दनाक प्रवाह से अचानक खुल रही परिपक्वता का मिश्रण था।

मियू को ऐसा लग रहा था मानो वह किसी और के रहस्यों में झाँक रही हो, कोई ऐसी वर्जित चीज़ जिसे उसे नहीं देखना चाहिए। उसने सुमिरे के शरीर से पसीना पोंछते हुए उसकी नंगी त्वचा को देखने से परहेज किया, और साथ ही मन ही मन बाख की वह धुन बजाती रही जिसे उसने बचपन में याद किया था। उसने सुमिरे के माथे पर चिपके पसीने से भीगे बालों को पोंछा। सुमिरे के छोटे-छोटे कानों के अंदर भी पसीना था।

मियू ने महसूस किया कि सुमिरे की बांह चुपचाप उसके शरीर के चारों ओर लिपट गई है। सुमिरे की सांसें उसकी गर्दन को छू गईं।

“तुम सब ठीक हो?” मियू ने पूछा।

सुमिरे ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उसका हाथ थोड़ा और कसकर पकड़ लिया। उसे आधा उठाकर, मियू ने उसे उसके बिस्तर पर लिटाया। उसने सुमिरे को लिटाया और उस पर चादर ओढ़ा दी। सुमिरे वहीं लेटी रही, बिना हिले-डुले, और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

मियू कुछ देर तक सुमिरे को देखती रही, लेकिन वह हिली तक नहीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह सो गई हो। मियू रसोई में गई और कई गिलास मिनरल वाटर पिया। उसने गहरी साँसें लीं और खुद को शांत किया। उसका दिल धड़कना बंद हो गया था, हालाँकि पिछले कुछ पलों के तनाव से उसकी छाती में दर्द हो रहा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। कोई आवाज़ नहीं, यहाँ तक कि कुत्ते के भौंकने की भी नहीं। न लहरों की आवाज़, न हवा की। मियू सोच रही थी, आखिर सब कुछ इतना सन्नाटा क्यों है?

मियू बाथरूम में गई और सुमिरे के पसीने से भीगे हुए पजामे, उसे पोंछने के लिए इस्तेमाल किया गया तौलिया और दांतों के निशान वाला वॉशक्लॉथ उठाकर लॉन्ड्री बास्केट में डाल दिया। उसने अपना चेहरा धोया और आईने में अपना चेहरा देखा। द्वीप पर आने के बाद से उसने अपने बालों को रंगा नहीं था, जो अब बिल्कुल सफेद थे, जैसे नई गिरी बर्फ।

जब मियू अपने कमरे में वापस गई, तो सुमिरे की आँखें खुली हुई थीं। ऐसा लग रहा था मानो उन पर एक पतला पारदर्शी पर्दा पड़ा हो, लेकिन चेतना की एक झलक लौट

आई थी। सुमिरे वहीं लेटी हुई थी, चादर उसके कंधों तक ढकी हुई थी।
"मुझे माफ करना। कभी-कभी मेरा स्वभाव ऐसा हो जाता है," उसने भारी आवाज में कहा।
मियू बिस्तर के एक कोने पर बैठ गई, मुस्कुराई और सुमिरे के अभी भी गीले बालों को छूने के लिए हाथ बढ़ाया। "तुम्हें अच्छे से देर तक नहाना चाहिए। तुम्हें बहुत पसीना आ रहा था।"
“धन्यवाद,” सुमिरे ने कहा। “मैं बस यहीं लेटना चाहती हूँ।”
मियू ने सिर हिलाया और सुमिरे को एक साफ तौलिया दिया, फिर अलमारी से अपने साफ पजामे निकाले और सुमिरे के बगल में रख दिए। "तुम इन्हें पहन लो। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे पास दूसरा पजामा होगा, है ना?"
“क्या मैं आज रात यहीं सो सकती हूँ?” सुमिरे ने पूछा।
“ठीक है। तुम सो जाओ। मैं तुम्हारे बिस्तर पर सो जाऊंगा।”
“मेरा बिस्तर पूरी तरह भीग गया होगा,” सुमिरे ने कहा। “कंबल, सब कुछ। और मैं अकेली नहीं रहना चाहती। मुझे यहाँ अकेला मत छोड़ो। क्या तुम मेरे बगल में सोओगे? बस आज रात के लिए? मैं और बुरे सपने नहीं देखना चाहती।”
मियू ने इस बारे में सोचा और सिर हिलाया। "लेकिन पहले एक पजामा पहन लो। मुझे नहीं लगता कि मुझे किसी के नग्न अवस्था में मेरे बगल में लेटना अच्छा लगेगा—खासकर इतने छोटे बिस्तर पर।"
सुमिरे धीरे से उठी और चादर हटा दी। वह नग्न अवस्था में खड़ी हुई और मियू के पजामे को खींचने लगी। वह आगे झुकी और पहले पैंट पहनी, फिर पैंट। सारे बटन लगाने में उसे कुछ समय लग गया। उसकी उंगलियां ठीक से काम नहीं कर रही थीं। मियू ने कोई मदद नहीं की, बस देखती रही। सुमिरे ने इतने सधे हुए ढंग से पजामे के बटन लगाए कि मियू को लगा जैसे कोई धार्मिक अनुष्ठान हो रहा हो। चांदनी में उसके निपल्स अजीब तरह से सख्त दिख रहे थे।
मियू को अचानक ख्याल आया, शायद वह कुंवारी हो।
रेशमी पजामा पहनने के बाद, सुमिरे बिस्तर के दूसरी तरफ फिर से लेट गई। मियू उसके बगल में लेट गई, जहाँ पसीने की तेज़ गंध अभी भी मौजूद थी।
सुमिरे ने कहना शुरू किया, "क्या मैं थोड़ी देर के लिए आपको गले लगा सकती हूँ?"
"मुझे पकड़ कर रखो?"

"हाँ।"

जब मियू सोच रही थी कि क्या प्रतिक्रिया दे, सुमिरे ने हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया। उसकी हथेली अभी भी पसीने से भीगी हुई, गर्म और मुलायम थी। उसने अपने दोनों हाथ मियू के पीछे कर दिए। सुमिरे के स्तन मियू के पेट के ठीक ऊपर उससे सट गए। सुमिरे ने अपना गाल मियू के स्तनों के बीच दबा लिया। काफी देर तक वे उसी स्थिति में रहे। सुमिरे हल्की-हल्की कांप रही थी। मियू ने सोचा, वह रो रही होगी। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने सारे आंसू बाहर नहीं निकाल पा रही हो। मियू ने सुमिरे के कंधे पर हाथ रखकर उसे अपने करीब खींच लिया। मियू ने सोचा, वह अभी भी बच्ची है। अकेली और डरी हुई, उसे किसी की गर्माहट चाहिए। उस बिल्ली के बच्चे की तरह जो चीड़ की डाल से चिपका हुआ है।

सुमिरे ने अपना शरीर थोड़ा ऊपर उठाया। उसकी नाक की नोक मियू की गर्दन से छू गई। उनके स्तन आपस में दब गए। मियू ने घबराकर सांस ली। सुमिरे का हाथ उसकी पीठ पर फिर गया।

"मुझे तुम बहुत पसंद हो," सुमिरे ने धीमी आवाज में कहा।

“मुझे भी तुम पसंद हो,” मियू ने कहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि और क्या कहे। और यह सच था।

सुमिरे की उंगलियां मियू के पजामे के सामने के बटन खोलने लगीं। मियू ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन सुमिरे नहीं रुकी। "बस थोड़ा सा," सुमिरे ने कहा। "बस थोड़ा सा—प्लीज़।"

मियू वहाँ बिना किसी प्रतिरोध के लेटी रही। सुमिरे की उंगलियाँ धीरे-धीरे मियू के स्तनों के उभारों पर फिर रही थीं। सुमिरे की नाक मियू के गले पर बार-बार आ-जा रही थी। सुमिरे ने मियू के निप्पल को छुआ, उसे धीरे से सहलाया और दो उंगलियों के बीच पकड़ लिया। पहले तो झिझकते हुए, फिर और अधिक साहस के साथ।

मियू ने बोलना बंद कर दिया। उसने ऊपर मेरी ओर देखा, मानो कुछ खोज रही हो। उसके गाल हल्के से लाल हो गए थे।

“मुझे आपको कुछ समझाना है। बहुत समय पहले मेरे साथ एक बहुत ही अजीब घटना घटी थी, और मेरे बाल एकदम सफेद हो गए थे। रातों-रात, पूरी तरह से। तब से मैं अपने बालों को रंगती आ रही हूँ। सुमिरे को पता था कि मैं अपने बालों को रंगती हूँ, और इस द्वीप पर आने के बाद यह बहुत झंझट भरा काम हो गया, इसलिए मैंने

इसे छोड़ दिया। यहाँ मुझे कोई नहीं जानता, इसलिए कोई फर्क नहीं पड़ा। लेकिन यह जानते हुए कि आप आने वाले हैं, मैंने फिर से अपने बालों को रंग लिया। मैं नहीं चाहती थी कि आपको पहली मुलाकात में कोई अजीब सा अनुभव हो।"
उसके बाद छाई खामोशी में समय धीरे-धीरे बीतता चला गया।

मुझे कभी समलैंगिक संबंध का अनुभव नहीं हुआ, और मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझमें ऐसी प्रवृत्ति है। लेकिन अगर सुमिरे सच में यही चाहती थी, तो मैंने सोचा कि मैं उसकी इच्छा पूरी कर सकता हूँ। कम से कम मुझे इसमें कोई घिनौनापन तो नहीं लगा। कम से कम सुमिरे के साथ तो ठीक था। इसलिए जब उसने मुझे हर जगह छूना शुरू किया, या जब उसने अपनी जीभ मेरे मुँह में डाली, तो मैंने कोई विरोध नहीं किया। यह अजीब लगा, लेकिन मैंने इसकी आदत डालने की कोशिश की। मैंने उसे वही करने दिया जो वह चाहती थी। मुझे सुमिरे पसंद है, और अगर इससे उसे खुशी मिलती है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं थी, चाहे वह कुछ भी करे।

"पर मेरा शरीर और मेरा मन दो अलग-अलग चीजें हैं। मेरे मन का एक हिस्सा खुश था कि सुमिरे मुझे इतने प्यार से सहला रही थी। लेकिन मेरा मन चाहे जितना भी खुश हो, मेरा शरीर विरोध कर रहा था। मेरा शरीर उसके आगे झुकने को तैयार नहीं था। मेरा दिल और दिमाग उत्तेजित थे, लेकिन मेरा बाकी शरीर एक कठोर, सूखे पत्थर जैसा था। यह दुखद है, पर मैं कुछ नहीं कर सकती थी। बेशक सुमिरे ने यह भांप लिया। उसका शरीर लाल हो गया था, और हल्का सा नम था, लेकिन मैं कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सकी।"
मैंने उसे अपने दिल की बात बताई। मैंने कहा, 'मैं तुम्हें अस्वीकार नहीं कर रही, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती।' चौदह साल पहले जब मेरे साथ ऐसा हुआ था, तब से मैं इस दुनिया में किसी को भी शारीरिक रूप से खुद को समर्पित नहीं कर पाई हूँ। यह मेरे बस में नहीं है, इसका फैसला कहीं और होता है। मैंने उससे कहा कि अगर मैं अपनी उंगलियों या मुंह से कुछ कर सकती, तो मैं जरूर करती। लेकिन वह ऐसा नहीं चाहती थी। यह बात मुझे पहले से ही पता थी।

उसने मेरे माथे पर चुंबन किया और माफी मांगी। उसने कहा, 'बस बात ये है कि मैं तुम्हें पसंद करती हूँ। मैं बहुत समय से इस बारे में सोच रही थी, और मुझे कोशिश करनी ही पड़ी।' मैंने सुमिरे से कहा, 'मैं भी तुम्हें पसंद करता हूँ। इसलिए चिंता मत करो। मैं अब भी चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।'

“जैसे मानो बांध टूट गया हो, सुमिरे लंबे समय तक तकिए में सिर रखकर सिसकती रही। रोते-रोते मैंने उसकी नंगी पीठ को कंधे से कमर तक सहलाया, उसकी हर हड्डी को महसूस किया। मेरा भी उसके साथ रोने का मन कर रहा था, पर मैं रो नहीं सकी।”

“और तभी मुझे यह बात समझ में आई। कि हम अद्भुत यात्रा साथी थे, लेकिन अंत में अपनी-अपनी अलग-अलग कक्षाओं में अकेले धातु के पिंडों से ज़्यादा कुछ नहीं थे। दूर से देखने पर वे खूबसूरत टूटते तारों की तरह लगते हैं, लेकिन असल में वे जेलों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं, जहाँ हममें से हर कोई अकेला बंद है, कहीं नहीं जा रहा। जब हमारे इन दो उपग्रहों की कक्षाएँ कभी एक-दूसरे से टकराती थीं, तो हम साथ हो सकते थे। शायद एक-दूसरे से अपने दिल की बात भी कह सकते थे। लेकिन यह बस एक पल के लिए ही होता था। अगले ही पल हम घोर अकेलेपन में होते थे। जब तक कि हम जलकर राख न हो जाते।”

जी भर कर रोने के बाद, सुमिरे उठी, ज़मीन पर गिरे हुए पजामे उठाए और पहन लिए,” मियू ने बताया। “उसने कहा कि वह अकेले रहना चाहती है और अपने कमरे में वापस जा रही है। ‘ज़्यादा मत सोचो,’ मैंने उससे कहा। ‘कल एक नया दिन है, सब कुछ पहले जैसा ही हो जाएगा। तुम देखोगी।’ ‘शायद ऐसा ही होगा,’ सुमिरे ने कहा। वह मेरे करीब आई और अपना गाल मेरे गाल से लगा लिया। उसका गाल गीला और गर्म था। मुझे लगता है उसने मेरे कान में कुछ फुसफुसाया। लेकिन इतनी धीमी आवाज़ में कि मैं समझ नहीं पाई। मैं उससे पूछने ही वाली थी कि उसने क्या कहा, लेकिन वह पहले ही मुँह फेर चुकी थी।

सुमिरे ने नहाने के तौलिए से अपने आंसू पोंछे और कमरे से बाहर चली गई। दरवाजा बंद हो गया और मैं वापस कंबल में लिपटकर आंखें बंद कर लीं। ऐसे अनुभव के बाद, मुझे लगा कि सोना मुश्किल होगा, लेकिन हैरानी की बात है कि मैं जल्दी ही गहरी नींद में सो गई।

“अगली सुबह जब मैं सात बजे उठा, तो सुमिरे घर में कहीं नहीं थी। शायद वह जल्दी उठ गई हो—या शायद उसे दोबारा नींद ही न आई हो—और वह अकेले ही बीच पर चली गई हो। शायद वह कुछ देर अकेले रहना चाहती थी। यह अजीब था कि उसने कोई नोट तक नहीं छोड़ा, लेकिन पिछली रात की घटना को देखते हुए, मुझे लगा कि वह अभी भी काफी परेशान और उलझन में है।”

मैंने कपड़े धोए, उसके बिस्तर की चादरें सूखने के लिए टांग दीं और बरामदे में बैठकर पढ़ने लगी, उसके लौटने का इंतज़ार करती रही। पूरी सुबह बीत गई, सुमिरे नहीं आई। मैं चिंतित हो गई, इसलिए मैंने उसका कमरा देखा, हालाँकि मुझे पता था कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। मुझे डर था कि कहीं वह द्वीप छोड़कर न चली गई हो। लेकिन उसके बैग अभी भी खुले थे; उसका पासपोर्ट अभी भी उसके पर्स में था, उसका स्विमसूट और मोज़े कमरे के एक कोने में सूख रहे थे। सिक्के, नोटपैड और चाबियों का एक गुच्छा उसकी मेज पर बिखरे पड़े थे। उनमें से एक चाबी कॉटेज के सामने वाले दरवाजे की थी।

"मुझे सब कुछ अजीब लग रहा था। मतलब, जब भी हम बीच पर जाते थे, पहाड़ों पर चलते समय हम हमेशा स्विमसूट के ऊपर भारी स्नीकर्स और टी-शर्ट पहनते थे। साथ में तौलिए और मिनरल वाटर एक कैनवास बैग में रखते थे। लेकिन वह सब कुछ पीछे छोड़ आई थी—बैग, जूते और स्विमसूट। बस दो चीजें गायब थीं—एक जोड़ी सस्ती सैंडल जो उसने पास की दुकान से खरीदी थी और एक जोड़ी पतली रेशमी पजामा जो मैंने उसे उधार दी थी। अगर आप सिर्फ पास में टहलने भी जा रहे हों, तो ऐसे कपड़े पहनकर ज्यादा देर बाहर नहीं रुकेंगे, है ना?"

दोपहर में मैं उसे ढूंढने के लिए पूरे इलाके में निकल पड़ा। मैंने आस-पास कुछ चक्कर लगाए, समुद्र तट पर गया, फिर कस्बे की गलियों में इधर-उधर घूमा और आखिर में घर लौट आया। लेकिन सुमिरे कहीं नहीं मिली। सूरज डूब रहा था और रात हो गई थी। हवा तेज़ हो गई थी। पूरी रात मुझे लहरों की आवाज़ सुनाई देती रही। ज़रा सी भी आवाज़ से मेरी नींद खुल जाती थी। मैंने सामने का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया था। सुबह हो गई, लेकिन सुमिरे फिर भी नहीं मिली। उसका बिस्तर वैसे ही पड़ा था जैसे मैंने छोड़ा था। इसलिए मैं बंदरगाह के पास वाले पुलिस स्टेशन गया।

मैंने अंग्रेज़ी बोलने वाले एक पुलिसकर्मी को सब कुछ समझाया। मैंने उससे कहा, 'मेरे साथ यात्रा कर रही लड़की गायब हो गई है और दो रातों से वापस नहीं आई है।' उसने मेरी बात को गंभीरता से नहीं लिया। उसने कहा, 'तुम्हारी दोस्त वापस आ जाएगी। ऐसा अक्सर होता रहता है। यहाँ सब लोग मौज-मस्ती करते हैं। गर्मी का मौसम है, वे जवान हैं, तुम और क्या उम्मीद करते हो?' मैं अगले दिन फिर गया, और इस बार उन्होंने थोड़ा ज़्यादा ध्यान दिया। हालाँकि वे कुछ करने वाले नहीं थे। मैंने एथेंस में जापानी दूतावास को फ़ोन किया और स्थिति समझाई। शुक्र है, वहाँ का व्यक्ति काफ़ी

दयालु था। उसने पुलिस प्रमुख से ग्रीक भाषा में साफ़-साफ़ कुछ कहा, और पुलिस ने आखिरकार जाँच शुरू कर दी।

“उनके पास कोई सुराग नहीं था। पुलिस ने बंदरगाह और हमारी कुटिया के आसपास के लोगों से पूछताछ की, लेकिन किसी ने भी सुमिरे को नहीं देखा था। फेरी के कप्तान और फेरी टिकट बेचने वाले को भी पिछले कुछ दिनों में किसी जापानी युवती के नाव पर चढ़ने की कोई याद नहीं थी। सुमिरे अभी भी द्वीप पर ही होगी। वैसे भी उसके पास टिकट खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। इस छोटे से द्वीप पर पायजामा पहने घूमती हुई एक जापानी युवती लोगों की नज़र से बच नहीं सकती। पुलिस ने एक जर्मन दंपति से पूछताछ की जो उस सुबह काफी देर से समुद्र तट पर तैर रहे थे। उन्होंने भी न तो समुद्र तट पर और न ही वहाँ की सड़क पर किसी जापानी लड़की को देखा था। पुलिस ने मुझे आश्वासन दिया कि वे अपनी पूरी कोशिश करते रहेंगे, और मुझे लगता है कि उन्होंने किया भी। लेकिन समय बीतता गया और कोई सुराग नहीं मिला।”

मियू ने गहरी सांस ली और अपने हाथों से अपना आधा चेहरा ढक लिया।

“मैं बस इतना ही कर सकता था कि टोक्यो में आपको फोन करके आने के लिए कहूँ। मैं पूरी तरह से हताश हो चुका था।”

मैंने सुमिरे की कल्पना की, जो अकेली, पतले रेशमी पजामे और बीच सैंडल पहने ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों में घूम रही थी। मैंने पूछा, "पजामे का रंग क्या था?"

"रंग?" मियू ने अपने चेहरे पर संदेह का भाव लिए कहा।

"सुमिरे ने जब गायब हुई थी तब उसने जो पायजामा पहना हुआ था।"

“उनका रंग क्या था? मुझे ठीक से याद नहीं। मैंने उन्हें मिलान में खरीदा था और अभी तक पहना नहीं था। हल्का रंग था। हल्का हरा, शायद? वे बहुत हल्के थे, उनमें जेब नहीं थी।”

“मैं चाहूँगा कि आप एथेंस स्थित दूतावास को फिर से फोन करें और उनसे किसी को यहाँ भेजने का अनुरोध करें। इस पर ज़ोर दें। फिर दूतावास से सुमिरे के माता-पिता से संपर्क करने को कहें। यह उनके लिए कठिन होगा, लेकिन अब आप उनसे यह बात छिपा नहीं सकते।”

मियू ने हल्के से सिर हिलाया।

“जैसा कि आप जानते हैं, सुमिरे कभी-कभी थोड़ी सनकी हो जाती है,” मैंने कहा,

“और वो बिल्कुल अजीबोगरीब हरकतें करती है। लेकिन वो बिना कुछ कहे चार दिन के लिए गायब नहीं हो सकती। वो इतनी गैरजिम्मेदार नहीं है। वो बिना किसी ठोस वजह के गायब नहीं हो सकती। वजह क्या है, मुझे नहीं पता, लेकिन ज़रूर कोई गंभीर बात होगी। हो सकता है वो गाँव में किसी कुएँ में गिर गई हो और किसी के आने का इंतज़ार कर रही हो। हो सकता है किसी ने उसका अपहरण कर लिया हो। हमें क्या पता, उसकी हत्या करके कहीं दफना भी दिया गया हो। रात में पजामा पहने घूमती एक जवान लड़की—कुछ भी हो सकता है। खैर, हमें कोई योजना बनानी होगी। लेकिन चलो इस पर सोच-विचार कर लेते हैं। कल का दिन बहुत लंबा होने वाला है।”

“क्या तुम्हें लगता है कि शायद... सुमिरे... ने आत्महत्या कर ली?” मियू ने पूछा।

“हम इस संभावना को खारिज नहीं कर सकते। लेकिन उसने एक नोट जरूर लिखा होता। वह सब कुछ इस तरह बिखरा हुआ नहीं छोड़ती ताकि तुम उसे समेट सको। वह तुम्हें पसंद करती थी, और मुझे पता है कि वह तुम्हारी भावनाओं का ख्याल रखती।”

हाथ बांधे हुए मियू ने कुछ देर तक मेरी तरफ देखा। "क्या तुम सच में ऐसा सोचते हो?"

मैंने सिर हिलाया। "बिल्कुल। वह ऐसी ही है।"

“धन्यवाद। मैं यही सुनना चाहता था।”

मियू मुझे सुमिरे के कमरे में ले गई। सजावट से रहित, चौकोर आकार का वह कमरा मुझे एक बड़े घन की याद दिलाता था। उसमें एक छोटा लकड़ी का पलंग, एक लिखने की मेज, एक अलमारी और एक छोटी सी ड्रेसर थी। मेज के नीचे एक औसत आकार का लाल सूटकेस रखा था। सामने की खिड़की पहाड़ियों की ओर खुली थी। मेज के ऊपर एक बिल्कुल नया मैकिंटोश पावरबुक रखा था।

मैंने उसका सामान ठीक से रख दिया है ताकि तुम यहां सो सको।

अकेले रह जाने पर मुझे अचानक नींद आने लगी। लगभग आधी रात हो चुकी थी। मैंने कपड़े उतारे और कंबल ओढ़ लिया, लेकिन नींद नहीं आई। कुछ देर पहले तक मुझे याद आया कि सुमिरे इसी बिस्तर पर सो रही थी। लंबी यात्रा का रोमांच मेरे शरीर में गूंज रहा था। मुझे ऐसा भ्रम हो रहा था मानो मैं एक अंतहीन यात्रा पर हूँ।

बिस्तर पर लेटे-लेटे मैंने मियू की बताई सारी बातें दोहराईं और ज़रूरी बिंदुओं की एक मानसिक सूची बनाई। लेकिन मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। व्यवस्थित रूप से सोचना मेरे बस की बात नहीं थी। मैंने सोचा, इसे कल के लिए छोड़ देते हैं। अचानक

मेरे मन में मियू के मुंह के अंदर सुमिरे की जीभ का दृश्य आया। मैंने अपने दिमाग को समझाया, इसे भी कल के लिए छोड़ देते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, कल के आज से बेहतर होने की संभावना बहुत कम थी। मैंने तय किया कि निराशावादी विचारों से कुछ हासिल नहीं होगा और मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। जल्द ही मैं गहरी नींद में सो गया।

अध्याय 10

जब मैं उठा, तो मियू बरामदे में नाश्ते के लिए मेज लगा रही थी। साढ़े आठ बज रहे थे और नया सूरज पूरी दुनिया को रोशनी से जगमगा रहा था। मियू और मैं बरामदे में बैठ गए और नाश्ता करते हुए चमकीले समुद्र को निहारते रहे। हमने टोस्ट, अंडे और कॉफी ली। दो सफेद पक्षी ढलान से तट की ओर उड़ते हुए गए। पास में ही एक रेडियो बज रहा था, जिसमें एक उद्घोषक की आवाज़ तेज़ी से ग्रीक भाषा में समाचार पढ़ रही थी।

जेट लैग की वजह से मेरे दिमाग में एक अजीब सी सुन्नता छा गई थी। मैं वास्तविकता और जो केवल वास्तविकता प्रतीत हो रही थी, उसके बीच अंतर नहीं कर पा रहा था। मैं यहाँ एक छोटे से ग्रीक द्वीप पर था, एक खूबसूरत अधेड़ उम्र की महिला के साथ भोजन कर रहा था, जिससे मैं एक दिन पहले ही मिला था। यह महिला सुमिरे से प्यार करती थी, लेकिन उसके लिए कोई यौन इच्छा महसूस नहीं कर रही थी। सुमिरे इस महिला से प्यार करती थी और उसे चाहती थी। मैं सुमिरे से प्यार करता था और उसके लिए यौन इच्छा महसूस करता था। सुमिरे मुझे पसंद करती थी, लेकिन मुझसे प्यार नहीं करती थी और मेरे लिए कोई इच्छा भी महसूस नहीं करती थी। मैं एक ऐसी महिला के लिए यौन इच्छा महसूस करता था जिसका नाम मैं गुप्त रखूंगा। लेकिन मैं उससे प्यार नहीं करता था। यह सब इतना जटिल था, मानो किसी अस्तित्ववादी नाटक का दृश्य हो। सब कुछ वहीं आकर रुक गया, कोई विकल्प नहीं बचा था। और

सुमिरे मंच से गायब हो चुकी थी।

मियू ने मेरे खाली कॉफी कप को फिर से भर दिया। मैंने उसे धन्यवाद दिया।

“तुम्हें सुमिरे पसंद है, है ना?” मियू ने मुझसे पूछा। “मेरा मतलब है, एक महिला के तौर पर।”

मैंने टोस्ट पर मक्खन लगाते हुए हल्का सा सिर हिलाया। मक्खन ठंडा और सख्त था, और उसे ब्रेड पर फैलाने में थोड़ा समय लगा। मैंने ऊपर देखा और कहा, "बेशक, यह ऐसी चीज नहीं है जिसे आप चुन सकते हैं। यह बस हो जाता है।"

हम चुपचाप नाश्ता करते रहे। रेडियो पर समाचार समाप्त हुआ और ग्रीक संगीत बजने लगा। हवा तेज़ हो गई और बोगनविलिया के फूल हिलने लगे। अगर ध्यान से देखते तो दूर आसमान में लहरों के सफेद झाग दिखाई देते।

“मैंने इस बारे में बहुत सोच-विचार किया है, और मुझे लगता है कि मुझे तुरंत एथेंस जाना चाहिए,” मियू ने संतरा छीलते हुए कहा। “फोन पर बात करने से शायद कुछ हासिल न हो, इसलिए बेहतर होगा कि मैं सीधे दूतावास जाऊं और उनसे आमने-सामने बात करूं। हो सकता है दूतावास से कोई मेरे साथ वापस आने को तैयार हो जाए, या मैं सुमिरे के माता-पिता के एथेंस पहुंचने का इंतजार करूं और उनके साथ वापस आ जाऊं। खैर, मैं चाहती हूं कि आप जितना हो सके यहीं रहें। पुलिस संपर्क कर सकती है, और यह भी संभावना है कि सुमिरे वापस आ जाए। क्या आप मेरे लिए ऐसा करेंगे?”

मैंने जवाब दिया, "बेशक।"

मैं जांच की जानकारी लेने के लिए दोबारा पुलिस स्टेशन जाऊंगा, फिर रोड्स जाने के लिए एक नाव किराए पर लूंगा। एथेंस की आने-जाने में समय लगता है, इसलिए शायद मैं एक होटल में कमरा लेकर कुछ दिन रुकूंगा।

मेंने सिर हिलाया।

मियू ने संतरा छीलना खत्म किया और उसे नैपकिन से सावधानीपूर्वक पोंछा। "क्या तुम कभी सुमिरे के माता-पिता से मिली हो?"

मैंने कहा, मैंने ऐसा कभी नहीं किया।

मियू ने दुनिया के छोर पर बहती हवा की तरह एक आह भरी। "पता नहीं मैं उन्हें यह कैसे समझाऊंगी।"

मैं उसकी उलझन समझ सकती थी। भला जो बात समझ से परे है, उसे कैसे

समझाया जा सकता है?

मियू और मैं बंदरगाह की ओर चल पड़े। उसके पास कपड़ों का एक छोटा सा थैला था, उसने चमड़े की ऊँची एड़ी वाली जूतियाँ पहनी हुई थीं और उसके कंधे पर मिला शॉन का एक बैग था। हम पुलिस स्टेशन के पास रुके। हमने उन्हें बताया कि मैं मियू का रिश्तेदार हूँ जो संयोगवश पास से गुजर रहा था। फिर भी उन्हें कोई सुराग नहीं मिला। "लेकिन कोई बात नहीं," उन्होंने खुशी से कहा। "चिंता मत करो। अपने आस-पास देखो। यह एक शांत द्वीप है। यहाँ कुछ अपराध तो होते ही हैं - प्रेमियों के झगड़े, शराबी, राजनीतिक झगड़े। आखिर हम इंसानों से ही निपट रहे हैं, और आप कहीं भी जाएं, यही हाल होता है। लेकिन ये तो घरेलू झगड़े हैं। पिछले पंद्रह वर्षों में इस द्वीप पर एक भी विदेशी अपराध का शिकार नहीं हुआ है।"

यह बात बिल्कुल सच हो सकती है। लेकिन जब सुमिरे के लापता होने के बारे में बताने की बात आई, तो उनके पास कहने के लिए कुछ भी नहीं था।

“द्वीप के उत्तरी किनारे पर एक बड़ी चूना पत्थर की गुफा है,” पुलिसकर्मी ने अनुमान लगाते हुए कहा। “अगर वह उसमें भटक गई, तो शायद उसे बाहर निकलने का रास्ता न मिले। अंदर तो भूलभुलैया जैसी है। लेकिन वह बहुत दूर है। ऐसी लड़की इतनी दूर पैदल नहीं जा सकती।”

क्या वह डूब गई होगी? मैंने पूछा।

पुलिसकर्मियों ने सिर हिलाया। उन्होंने कहा, "यहाँ तेज़ धाराएँ नहीं हैं। और पिछले सप्ताह मौसम सुहावना रहा, समुद्र शांत था। बहुत से मछुआरे हर दिन मछली पकड़ने जाते हैं, और अगर लड़की डूब गई होती, तो उनमें से किसी एक को उसका शव मिल जाता।"

मैंने पूछा, "कुओं का क्या? क्या वो टहलते समय कहीं किसी गहरे कुएं में नहीं गिर सकती थी?"

पुलिस प्रमुख ने सिर हिलाते हुए कहा, “द्वीप पर कोई कुआँ नहीं है। यहाँ प्राकृतिक जलप्रपात बहुत हैं, इसलिए कुआँ खोदने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा, यहाँ की चट्टानें कठोर हैं और कुआँ खोदना एक बहुत बड़ा काम होगा।”

पुलिस स्टेशन से निकलने के बाद, मैंने मियू से कहा कि मैं उस बीच पर पैदल जाना चाहती हूँ जहाँ वो और सुमिरे अक्सर जाया करती थीं, अगर मुमकिन हो तो सुबह। उसने एक दुकान से द्वीप का एक साधारण नक्शा खरीदा और मुझे रास्ता दिखाया;

उसने चेतावनी दी कि एक तरफ जाने में पैंतालीस मिनट लगते हैं, इसलिए मज़बूत जूते पहनना। वह बंदरगाह गई और फ्रेंच और अंग्रेजी मिलाकर, एक छोटी टैक्सी नाव के पायलट से जल्दी से बातचीत करके उसे रोड्स ले जाने का प्रबंध कर लिया।

“काश, हमारी कहानी का सुखद अंत होता,” मियू ने जाते हुए कहा। लेकिन उसकी आँखों में कुछ और ही कहानी थी। वह जानती थी कि चीजें इतनी आसानी से नहीं घटित होतीं। और मैं भी। नाव का इंजन चालू हुआ, और उसने अपने बाएँ हाथ से अपनी टोपी को थामे रखा और दाएँ हाथ से मुझे विदा किया। जब उसकी नाव किनारे से ओझल हो गई, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर कुछ खो गया हो। मैं थोड़ी देर बंदरगाह में घूमता रहा और एक स्मृति चिन्ह की दुकान से कुछ गहरे रंग के धूप के चश्मे खरीदे। फिर मैं खड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर वापस कॉटेज में आ गया।

जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ता गया, गर्मी असहनीय होती गई। मैंने अपने स्विमसूट के ऊपर एक आधी बाजू की सूती कमीज़ पहनी, धूप का चश्मा और जॉगिंग के जूते लगाए और समुद्र तट की ओर खड़ी पहाड़ी सड़क पर चल पड़ी। मुझे जल्द ही टोपी न लाने का अफ़सोस हुआ, लेकिन मैंने आगे बढ़ने का फ़ैसला किया। चढ़ाई पर चलते-चलते मुझे प्यास लगने लगी। मैं रुकी और पानी पिया और मियू द्वारा दी गई सनस्क्रीन को अपने चेहरे और बांहों पर लगाया। रास्ता धूल से भरा हुआ था, जो हवा चलने पर उड़ती थी। कभी-कभी मुझे गधे लिए हुए ग्रामीण मिलते। वे मुझे ज़ोर से आवाज़ देते: "काली मेरा!" मैं भी उन्हें यही जवाब देती। मुझे लगा कि यही करना चाहिए।

पहाड़ की ढलान छोटे, टेढ़े-मेढ़े पेड़ों से ढकी हुई थी। बकरियां और भेड़ें ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी ढलान पर चल रही थीं, उनके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। उनके गले में बंधी घंटियों से हल्की सी झनझनाहट की आवाज़ आ रही थी। झुंड चरा रहे लोग या तो बच्चे थे या बूढ़े। जब मैं वहां से गुज़रा तो उन्होंने तिरछी नज़र से मेरी तरफ देखा और फिर किसी इशारे में अपना हाथ आधा उठा लिया। मैंने भी अभिवादन में उसी तरह हाथ उठाया। सुमिरे अकेले इस रास्ते से नहीं आ सकती थी। छिपने की कोई जगह नहीं थी, और किसी न किसी ने उसे ज़रूर देख लिया होता।

समुद्र तट सुनसान था। मैंने अपनी कमीज़ और स्विमसूट उतार दिए और नग्न अवस्था में तैरने चला गया। पानी एकदम साफ़ था और बहुत अच्छा लग रहा था। नीचे तक पत्थर साफ़ दिखाई दे रहे थे। खाड़ी के मुहाने पर एक नौका लंगर डाले खड़ी थी, पाल

समेटे हुए, और उसका ऊँचा मस्तूल एक विशाल मेट्रोनोम की तरह आगे-पीछे हिल रहा था। डेक पर कोई नहीं था। हर बार जब ज्वार उतरता, तो अनगिनत छोटे-छोटे पत्थर पीछे छूट जाते, जो बेजान आवाज़ करते। तैरने के बाद, मैं वापस समुद्र तट पर गया और नग्न अवस्था में ही अपने तौलिए पर लेट गया और ऊँचे, नीले आसमान को निहारने लगा। समुद्री पक्षी मछली की तलाश में खाड़ी के ऊपर चक्कर लगा रहे थे। आसमान बिल्कुल बादलों से रहित था। मैं वहाँ लगभग आधे घंटे तक सोता रहा, इस दौरान समुद्र तट पर कोई नहीं आया। थोड़ी देर बाद मुझ पर एक अजीब सी खामोशी छा गई। यह समुद्र तट अकेले आने वाले व्यक्ति के लिए थोड़ा ज़्यादा ही शांत था, थोड़ा ज़्यादा ही सुंदर। इसने मुझे एक खास तरह की मृत्यु की कल्पना करने पर मजबूर कर दिया। मैंने कपड़े पहने और पहाड़ी रास्ते से होते हुए वापस कुटिया की ओर चल पड़ा। गर्मी पहले से भी ज़्यादा तेज़ थी। एक पैर के बाद दूसरा पैर यंत्रवत रूप से बढ़ाते हुए, मैंने यह कल्पना करने की कोशिश की कि सुमिरे और मियू ने इस रास्ते पर साथ चलते हुए क्या-क्या बातें की होंगी।

सुमिरे शायद अपनी यौन इच्छा के बारे में सोच रही थी। ठीक वैसे ही जैसे मैं उसके साथ रहते हुए अपनी यौन इच्छा के बारे में सोचता था। मुझे उसकी भावनाओं को समझना मुश्किल नहीं था। सुमिरे ने मियू को अपने बगल में नग्न अवस्था में कल्पना की और उसे कसकर गले लगाने की तीव्र इच्छा हुई। एक उम्मीद थी, जो कई अन्य भावनाओं - उत्साह, निराशा, झिझक, भ्रम, भय - के साथ मिली हुई थी, जो उमड़ती और फिर धीरे-धीरे खत्म हो जाती। एक पल आप आशावादी होते हैं, और अगले ही पल इस बात की निश्चितता से घिर जाते हैं कि सब कुछ बिखर जाएगा। और अंत में ऐसा ही होता है।

मैं पहाड़ की चोटी तक गया, थोड़ी देर आराम किया, पानी पिया और फिर नीचे उतरने लगा। जैसे ही कुटिया की छत नज़र आई, मुझे मियू की कही बात याद आ गई कि द्वीप पर आने के बाद सुमिरे अपने कमरे में कुछ लिख रही थी। आखिर वह क्या लिख रही होगी? मियू ने इसके बारे में और कुछ नहीं कहा था, और मैंने भी इस पर ज़ोर नहीं दिया। शायद—बस शायद—सुमिरे की लिखी हुई बातों में कोई सुराग हो। मुझे पहले इस बारे में न सोचने पर बहुत अफ़सोस हो रहा था।

जब मैं कॉटेज वापस आया तो सुमिरे के कमरे में गया, उसका पावरबुक चालू किया और हार्ड ड्राइव खोली। कुछ भी उम्मीद जगाने वाला नहीं था। उनके यूरोप ट्रिप के

खर्चों की सूची, पते, एक शेड्यूल था। मियू के काम से जुड़ी सारी चीज़ें थीं। कोई निजी फाइल नहीं थी। मैंने 'हाल के दस्तावेज़' मेनू खोला—कुछ नहीं मिला। शायद वह नहीं चाहती थी कि कोई इसे पढ़े और उसने सब कुछ मिटा दिया था। इसका मतलब था कि उसने अपनी निजी फाइलें कहीं फ्लॉपी डिस्क में सेव की होंगी। यह मुमकिन नहीं था कि वह गायब होते समय डिस्क अपने साथ ले गई हो; एक तो उसके पजामे में जेबें नहीं थीं।

मैंने डेस्क की दराजों में छानबीन की। वहाँ कुछ डिस्क थीं, लेकिन वे सभी हार्ड ड्राइव पर मौजूद फाइलों या काम से संबंधित अन्य फाइलों की प्रतियां थीं। कुछ भी काम का नहीं लग रहा था। मैं डेस्क पर बैठ कर सोचने लगी। अगर मैं सुमिरे होती, तो इसे कहाँ रखती? कमरा छोटा था; कुछ भी छिपाने के लिए ज़्यादा जगह नहीं थी। सुमिरे इस बात का बहुत ध्यान रखती थी कि कौन उसकी लिखी हुई चीज़ें पढ़ सकता है।

बिल्कुल—लाल सूटकेस। कमरे में यही एक चीज थी जिसे ताला लगाया जा सकता था।

उसका नया सूटकेस इतना हल्का था कि मानो खाली ही लग रहा था; मैंने उसे हिलाया, पर कोई आवाज़ नहीं आई। हालाँकि, चार अंकों का ताला लगा हुआ था। मैंने कई संख्याओं के संयोजन आज़माए जो मुझे पता था कि सुमिरे इस्तेमाल करती होगी—उसकी जन्मतिथि, उसका पता, फ़ोन नंबर, ज़िप कोड—लेकिन कोई भी काम नहीं आया। हैरानी की बात नहीं, क्योंकि कोई भी आसानी से अनुमान लगा सकने वाला नंबर संयोजन के रूप में ज़्यादा काम का नहीं होता। मुझे ऐसा नंबर चाहिए था जो उसे याद रहे, लेकिन किसी निजी जानकारी पर आधारित न हो। मैंने इस बारे में बहुत देर तक सोचा, और फिर मुझे एक विचार आया। मैंने कुनिताची का एरिया कोड आज़माया—यानी मेरा एरिया कोड: 0-4-2-5।

ताला खट से खुल गया।

सूटकेस की अंदरूनी जेब में एक छोटा सा काला कपड़े का थैला फंसा हुआ था। मैंने ज़िप खोली तो अंदर एक छोटी हरी डायरी और एक फ्लॉपी डिस्क मिली। मैंने सबसे पहले डायरी खोली। उसमें उसकी हमेशा वाली लिखावट थी। मुझे कुछ भी खास नहीं लगा। बस उसमें उनके जाने की जगह, उनसे मिलने वाले लोगों, होटलों के नाम, पेट्रोल की कीमत, खाने के मेनू, शराब के ब्रांड और उनका स्वाद, सब कुछ लिखा था। कुल मिलाकर बस एक सूची थी। कई पन्ने खाली थे। लगता है डायरी लिखना सुमिरे

की खासियत नहीं थी।

डिस्क का कोई नाम नहीं था। लेबल पर केवल सुमिरे की विशिष्ट लिखावट में तारीख लिखी थी: अगस्त 19**। मैंने डिस्क को पॉवरबुक में डाला और उसे खोला। मेनू में दो दस्तावेज़ दिखाई दिए। दोनों का कोई नाम नहीं था। वे केवल दस्तावेज़ 1 और दस्तावेज़ 2 थे।

आँखें खोलने से पहले, मैंने धीरे-धीरे कमरे में चारों ओर देखा। सुमिरे का कोट अलमारी में टंगा हुआ था। मैंने उसके चश्मे, इतालवी शब्दकोश और पासपोर्ट देखे। मेज के अंदर उसका बॉलपॉइंट पेन और मैकेनिकल पेंसिल रखी थी। मेज के ऊपर वाली खिड़की से हल्की, ऊबड़-खाबड़ ढलान दिखाई दे रही थी। बगल वाले घर की दीवार पर एक काली बिल्ली चल रही थी। छोटा सा खाली कमरा शाम के सन्नाटे में डूबा हुआ था। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और मुझे अभी भी उस सुबह सुनसान समुद्र तट पर लहरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैंने फिर से अपनी आँखें खोलीं और इस बार बाहरी दुनिया को ध्यान से सुना। मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।

मैंने अपना पॉइंटर डॉक्यूमेंट 1 पर रखा और आइकन पर डबल-क्लिक किया।

अध्याय 11

दस्तावेज़ 1

क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जिसे गोली लगी हो और खून न निकला हो?

भाग्य मुझे एक निष्कर्ष पर ले आया है—एक तात्कालिक निष्कर्ष, ध्यान रहे (क्या कोई और तरह का निष्कर्ष भी होता है? दिलचस्प सवाल है, लेकिन इसे किसी और

समय के लिए छोड़ देते हैं)—और मैं यहाँ ग्रीस के एक द्वीप पर हूँ। एक छोटा सा द्वीप जिसका नाम मैंने हाल तक कभी सुना भी नहीं था। समय है... सुबह के चार बज चुके हैं। अभी भी अँधेरा है, ज़ाहिर है। मासूम बकरियाँ अपनी शांतिपूर्ण सामूहिक नींद में सो चुकी हैं। बाहर खेत में जैतून के पेड़ों की कतार अँधेरे से मिलने वाली ताज़ी पत्तियों को चूस रही है। और चाँद, किसी उदास पुजारी की तरह, छत के ऊपर टिका है, बंजर समुद्र की ओर अपने हाथ फैलाए हुए।

मैं चाहे कहीं भी रहूँ, दिन का यही समय मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है। वो समय जो सिर्फ़ मेरा होता है। जल्द ही भोर होने वाली है, और मैं यहाँ बैठकर लिख रही हूँ। बुद्ध की तरह, जो अपनी माँ की तरफ से पैदा हुए थे (दाएँ या बाएँ, मुझे याद नहीं), नया सूरज धीरे-धीरे ऊपर उठेगा और पहाड़ियों के किनारे से झाँकेगा। और हमेशा शांत रहने वाली मियू चुपचाप जाग जाएगी। छह बजे हम साथ मिलकर सादा नाश्ता बनाएँगे, और उसके बाद पहाड़ियों के ऊपर से अपने प्यारे से समुद्र तट पर जाएँगे। इस दिनचर्या के शुरू होने से पहले, मैं अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर थोड़ा काम निपटाना चाहती हूँ।

कुछ पत्रों को छोड़कर, मैंने बहुत समय से अपने लिए कुछ नहीं लिखा है, और मुझे पूरा भरोसा नहीं है कि मैं अपनी भावनाओं को उस तरह व्यक्त कर पाऊँगी जैसा मैं चाहती हूँ। वैसे भी, मुझमें कभी इतना आत्मविश्वास रहा ही नहीं। फिर भी, किसी न किसी तरह, मुझे हमेशा लिखने की प्रेरणा मिलती रहती है।

क्यों? दरअसल, यह बहुत सरल है। किसी बात पर सोचने के लिए, मुझे पहले उसे लिखकर रखना पड़ता है।

बचपन से ही ऐसा रहा है। जब मुझे कुछ समझ नहीं आता था, तो मैं अपने पैरों के पास बिखरे हुए शब्दों को इकट्ठा करके वाक्यों की पंक्ति में लगाता था। अगर इससे भी बात नहीं बनती थी, तो मैं उन्हें फिर से बिखेर देता था और उन्हें अलग क्रम में व्यवस्थित करता था। ऐसा कई बार करने से मैं आम लोगों की तरह चीजों के बारे में सोचने लगा था। मेरे लिए लिखना कभी मुश्किल नहीं था। दूसरे बच्चे सुंदर पत्थर या बलूत के फल इकट्ठा करते थे, और मैं लिखता था। सांस लेने जितना सहज, मैं एक के बाद एक वाक्य लिखता जाता था। और सोचता रहता था।

इसमें कोई शक नहीं कि आपको लगता होगा कि किसी नतीजे पर पहुंचना एक समय

लेने वाली प्रक्रिया है, क्योंकि जब भी मैं किसी चीज़ के बारे में सोचता था तो मुझे इन सभी चरणों से गुज़रना पड़ता था। या शायद आपको ऐसा न लगे। लेकिन असल में इसमें समय लगता था। इतना ज़्यादा कि जब मैं प्राथमिक विद्यालय में पहुँचा तो लोग मुझे मंदबुद्धि समझने लगे थे। मैं दूसरे बच्चों के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता था।
जब मैंने प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी की, तब तक मेरे अंदर का अलगाव काफी हद तक कम हो चुका था। तब तक मैंने अपने आसपास की दुनिया के साथ तालमेल बिठाने का तरीका खोज लिया था। फिर भी, जब तक मैंने कॉलेज नहीं छोड़ा और सरकारी तंत्र से सारे संबंध तोड़ नहीं लिए, तब तक यह खालीपन मेरे भीतर बना रहा —जैसे घास में छिपा कोई खामोश सांप।
मेरा अस्थायी विषय यह है: मैं रोजमर्रा के आधार पर लेखन का उपयोग यह पता लगाने के लिए करता हूं कि मैं कौन हूं।

सही?
सही है आप!

मैंने अब तक बहुत कुछ लिखा है। लगभग हर दिन। ऐसा लगता है जैसे मैं किसी विशाल चरागाह में खड़ा होकर अकेले ही घास काट रहा हूँ, और घास उतनी ही तेज़ी से उग जाती है जितनी तेज़ी से मैं उसे काट पाता हूँ। आज मैं यहाँ से काटूँगा, कल वहाँ से... जब तक मैं चरागाह का एक पूरा चक्कर लगाता हूँ, पहली जगह की घास उतनी ही लंबी हो जाती है जितनी शुरुआत में थी।
लेकिन मियू से मिलने के बाद से मैंने लिखना लगभग बंद कर दिया है। ऐसा क्यों? के ने मुझे जो कल्पना = संचार का सिद्धांत बताया, वह कुछ हद तक सही लगता है। एक स्तर पर उसमें कुछ सच्चाई तो है। लेकिन यह सब कुछ स्पष्ट नहीं करता। मुझे यहाँ अपनी सोच को सरल बनाना होगा।
सरल करो, सरल करो।

मियू से मिलने के बाद जो हुआ वो ये था कि मैंने सोचना ही छोड़ दिया। (ज़ाहिर है, मैं यहाँ सोचने की अपनी निजी परिभाषा का इस्तेमाल कर रहा हूँ।) मियू और मैं हमेशा

साथ रहते थे, दो आपस में जुड़े हुए चम्मचों की तरह, और उसके साथ मैं कहीं बह जाता था—ऐसी जगह जहाँ मैं पहुँच नहीं पाता था—और मैंने बस सोचा, चलो, जैसा चल रहा है वैसा चलने दो।
दूसरे शब्दों में कहें तो, उसके करीब आने के लिए मुझे अपने बहुत से बोझ से छुटकारा पाना पड़ा। सोचना भी बोझ लगने लगा था। शायद यही इसका कारण है। घास चाहे कितनी भी लंबी हो जाए, मुझे कोई परवाह नहीं थी। मैं पीठ के बल लेटकर आसमान की ओर देखता, उमड़ते बादलों को बहते हुए निहारता। अपना भाग्य बादलों के हवाले कर देता। घास की तीखी सुगंध और हवा की सरसराहट में खो जाता। और कुछ समय बाद मुझे इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं रही कि मैं क्या जानता हूँ और क्या नहीं।
नहीं, यह सच नहीं है। पहले दिन से ही मुझे कोई परवाह नहीं थी। मुझे यहाँ अपनी बात को थोड़ा और स्पष्ट रूप से बताना होगा।
सटीकता, सटीकता।

अब मुझे समझ आ रहा है कि लेखन में मेरा मूल नियम हमेशा से यही रहा है कि मैं चीजों के बारे में ऐसे लिखूं जैसे मुझे उनके बारे में कुछ पता ही न हो—और इसमें वे चीजें भी शामिल हैं जिनके बारे में मुझे पता था या मुझे लगता था कि मुझे पता है। अगर मैं शुरू से ही कह दूं, "ओह, मुझे यह पता है, इस पर अपना कीमती समय बर्बाद करने की कोई जरूरत नहीं है," तो मेरा लेखन कभी शुरू ही नहीं हो पाएगा। उदाहरण के लिए, अगर मैं किसी के बारे में सोचूं, "मैं उस व्यक्ति को जानता हूं, उसके बारे में सोचने में समय बर्बाद करने की कोई जरूरत नहीं है, मैंने उसे अच्छी तरह समझ लिया है," तो मेरे साथ धोखा होने का खतरा रहता है (और यह बात आप पर भी लागू होती है)। जिस भी चीज के बारे में हमें लगता है कि हमें पूरी तरह से पता है, उसके दूसरी तरफ उतना ही कुछ अनजाना भी छिपा होता है।
समझ तो हमारी गलतफहमियों का ही योग है।
बस हम दोनों के बीच की बात है, दुनिया को समझने का मेरा यही तरीका है। संक्षेप में।

जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें जो हम जानते हैं और जो हम नहीं जानते, वे जुड़वां बच्चों की तरह हैं, जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता, और जो भ्रम की स्थिति में

मौजूद हैं।
भ्रम, भ्रम।
समुद्र और उसमें प्रतिबिंबित होने वाली चीज़ों के बीच वास्तव में कौन अंतर कर सकता है? या गिरती हुई बारिश और अकेलेपन के बीच फर्क बता सकता है?
बिना किसी झंझट के, मैंने जानने और न जानने के बीच के अंतर की चिंता करना छोड़ दिया। यही मेरा शुरुआती बिंदु बन गया। शायद यह शुरुआत करने के लिए एक बुरी जगह थी—लेकिन लोगों को एक अस्थायी शुरुआती बिंदु की ज़रूरत तो होती ही है, है ना? इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है कि कैसे मैंने विषय और शैली, वस्तु और विषय, कारण और प्रभाव, मेरे हाथ के जोड़ और मेरे शरीर के बाकी हिस्सों जैसे द्वंद्वों को काले-सफेद जोड़ों के रूप में नहीं, बल्कि एक-दूसरे से अविभाज्य रूप में देखना शुरू किया। सब कुछ रसोई के फर्श पर बिखर गया था—नमक, काली मिर्च, आटा, स्टार्च। सब कुछ एक महीन गोले में मिल गया था।

मेरे हाथ के जोड़ और मेरा पूरा शरीर... कंप्यूटर के सामने बैठे-बैठे मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी पुरानी बुरी आदत, उंगलियों के जोड़ों को चटकाने, पर वापस लौट आया हूँ। सिगरेट छोड़ने के बाद यह बुरी आदत फिर से ज़ोरों से लौट आई। पहले मैं अपने दाहिने हाथ की पाँचों उंगलियों के जोड़ों को चटकाता हूँ—चटक-चटक—फिर अपने बाएं हाथ के जोड़ों को। मैं शेखी नहीं बघार रहा, लेकिन मैं अपने जोड़ों को इतनी ज़ोर से चटका सकता हूँ कि आपको लगेगा जैसे किसी की गर्दन टूट रही हो। मैं प्राथमिक विद्यालय में उंगलियों के जोड़ों को चटकाने में माहिर था। लड़कों को शर्मिंदा कर देता था।
जब मैं कॉलेज में थी, तब के ने मुझे साफ-साफ बता दिया था कि यह कोई ऐसी कला नहीं है जिस पर मुझे गर्व करना चाहिए। एक उम्र के बाद लड़की को हर जगह उंगलियां चटकाने की आदत नहीं रखनी चाहिए। खासकर दूसरों के सामने। वरना तुम 'फ्रॉम रशिया विद लव' की लोटे लेन्या जैसी बन जाओगी। अब ये बात मुझे पहले किसी ने क्यों नहीं बताई? मैंने इस आदत को छोड़ने की कोशिश की। मतलब, मुझे लोटे लेन्या पसंद तो है, लेकिन इतनी भी नहीं कि मैं उसके जैसी बनना चाहूँ। लेकिन जब मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया, तो मुझे एहसास हुआ कि जब भी मैं लिखने बैठती, अनजाने में फिर से उंगलियां चटकाने लगती। चटकने की आवाज।

मेरा नाम है बॉन्ड। जेम्स बॉन्ड।

चलिए, मैं अपनी बात पर वापस आता हूँ। समय सीमित है—इधर-उधर भटकने की गुंजाइश नहीं है। लोटे लेन्या को भूल जाइए। माफ़ कीजिए, ये उपमाएँ थोड़ी अटपटी हैं—मुझे जाना होगा। जैसा कि मैंने पहले कहा, हमारे भीतर जो हम जानते हैं और जो हम नहीं जानते, वे एक ही जगह रहते हैं। सुविधा के लिए ज़्यादातर लोग उनके बीच एक दीवार खड़ी कर देते हैं। इससे ज़िंदगी आसान हो जाती है। लेकिन मैंने उस दीवार को हटा दिया। मुझे हटाना ही पड़ा। मुझे दीवारें पसंद नहीं हैं। मैं बस ऐसा ही इंसान हूँ।

सियामी जुड़वा बच्चों की मिसाल को फिर से लें, तो ऐसा नहीं है कि वे हमेशा आपस में अच्छे से रहते हैं। वे हमेशा एक-दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते। बल्कि, अक्सर इसका उल्टा ही होता है। दायाँ हाथ यह जानने की कोशिश नहीं करता कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है—और इसका उल्टा भी सच है। भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है, हम रास्ता भटक जाते हैं—और सीधे किसी चीज़ से टकरा जाते हैं। धड़ाम।

मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि यदि लोग अपने ज्ञान और अज्ञान को शांतिपूर्वक एक साथ रखना चाहते हैं, तो उन्हें एक चतुर रणनीति अपनानी होगी। और वह रणनीति—जी हाँ, आपने सही समझा!—विचार करना है। हमें एक मजबूत आधार खोजना होगा। अन्यथा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम एक भयानक टकराव की ओर बढ़ रहे हैं।

एक प्रश्न।
तो अगर लोग किसी टक्कर (धड़ाम!) से बचना चाहते हैं, लेकिन फिर भी खेत में लेटना चाहते हैं, बादलों को बहते हुए देखना चाहते हैं, घास की सरसराहट सुनना चाहते हैं—यानी, कुछ सोचना नहीं चाहते—तो उन्हें क्या करना चाहिए? क्या यह मुश्किल लगता है? बिलकुल नहीं। तर्क के हिसाब से, यह आसान है। यह सरल है। जवाब है सपने। लगातार सपने देखते रहना। सपनों की दुनिया में खो जाना और कभी बाहर न आना। जीवन भर सपनों में जीना।

सपनों में चीजों के बीच कोई भेद करने की जरूरत नहीं होती। बिलकुल भी नहीं। वहां कोई सीमाएं नहीं होतीं। इसलिए सपनों में टकराव बहुत कम होते हैं। और अगर होते भी हैं, तो उनसे कोई नुकसान नहीं होता। हकीकत अलग है। हकीकत दर्दनाक होती है।
हकीकत, हकीकत।

बहुत पहले जब सैम पेकिनपाह की फिल्म 'द वाइल्ड बंच' का प्रीमियर हुआ था, तब प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक महिला पत्रकार ने हाथ उठाकर पूछा था: "फिल्म में इतना खून क्यों दिखाया गया है?" वह काफी गुस्से में थी। फिल्म के एक अभिनेता, अर्नेस्ट बोर्गनाइन, थोड़े हैरान दिखे और उन्होंने सवाल का जवाब देते हुए कहा, "महोदया, क्या आपने कभी किसी को गोली लगने के बाद खून बहते हुए नहीं देखा है?" यह फिल्म वियतनाम युद्ध के चरम पर रिलीज़ हुई थी।
मुझे वो पंक्ति बहुत पसंद है। यही वास्तविकता के मूल सिद्धांतों में से एक है। उन चीजों को स्वीकार करना जिन्हें समझना कठिन है, और उन्हें वैसे ही छोड़ देना। और खून बहाना। गोली चलाना और खून बहाना।
क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जिसे गोली लगी हो और खून न निकला हो?
यही मेरे लेखक के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। मैं सोचता हूँ—एक बहुत ही साधारण तरीके से—और एक ऐसे बिंदु पर पहुँच जाता हूँ जहाँ, एक ऐसे क्षेत्र में जिसे मैं नाम भी नहीं दे सकता, मैं एक सपने की कल्पना करता हूँ, एक दृष्टिहीन भ्रूण जिसे समझ कहते हैं, जो समझ से परे के सार्वभौमिक, विशाल गर्भ में तैरता रहता है। शायद यही कारण है कि मेरे उपन्यास बेतुके रूप से लंबे होते हैं और कम से कम अब तक, किसी उचित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते। उस पैमाने पर लेखन की आपूर्ति बनाए रखने के लिए आवश्यक तकनीकी और नैतिक कौशल मेरी क्षमता से परे हैं।

ज़ाहिर है, मैं यहाँ कोई उपन्यास नहीं लिख रहा हूँ। मुझे नहीं पता इसे क्या कहूँ। बस लिख रहा हूँ। मैं अपने विचारों को ज़ोर से व्यक्त कर रहा हूँ, इसलिए उन्हें सलीके से समेटने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझ पर कोई नैतिक दायित्व नहीं है। मैं बस—हम्म—सोच रहा हूँ। मैंने बहुत लंबे समय से कोई गंभीर चिंतन नहीं किया है, और शायद

आने वाले समय में भी नहीं करूँगा। लेकिन अभी, इस पल, मैं सोच रहा हूँ। और सुबह तक मैं यही करता रहूँगा। सोचता रहूँगा।

फिर भी, मेरे मन में उठने वाले पुराने गहरे संदेह दूर नहीं हो रहे हैं। क्या मैं अपना सारा समय और ऊर्जा किसी व्यर्थ काम में बर्बाद कर रहा हूँ? जैसे बाढ़ की कगार पर खड़ी जगह पर पानी की बाल्टी ढोना? क्या मुझे ये सारे व्यर्थ प्रयास छोड़कर बस हालात के साथ बह जाना चाहिए?
टक्कर? वो क्या होती है?

चलिए इसे दूसरे तरीके से समझाते हैं।
ठीक है—मैं कौन सा अलग तरीका अपनाने वाला था?
ओह, मुझे याद आ गया—यही तो बात है।
अगर मैं सिर्फ इधर-उधर की बातें ही करने वाली हूँ, तो शायद मुझे गर्म कंबल में दुबककर मियू के बारे में सोचना चाहिए और खुद से खेलना चाहिए। मेरा मतलब यही था।
मुझे मियू के नितंबों का घुमाव बेहद पसंद है। उसके काले घने बालों और बर्फ जैसे सफेद बालों का अद्भुत मेल, सुडौल कूल्हे, जो छोटी काली पैंटी में लिपटे हैं। वाह, क्या गजब है! उसकी काली पैंटी के अंदर, उसके टी-आकार के घने बाल, बिल्कुल काले।
मुझे इसके बारे में सोचना बंद करना होगा। व्यर्थ की यौन कल्पनाओं के चक्र को बंद करो (क्लिक) और लिखने पर ध्यान केंद्रित करो। भोर के इन अनमोल पलों को यूं ही बीतने नहीं दे सकता। कोई और, किसी और संदर्भ में, तय करेगा कि क्या प्रभावी है और क्या नहीं। अभी मुझे इस बात में जरा भी दिलचस्पी नहीं है कि वे क्या कहेंगे।

सही?
सही है आप!
तो—आगे बढ़ते रहो और सफलता की ओर अग्रसर रहो।

कहते हैं कि अपनी कहानियों में सपनों (चाहे वे वास्तविक सपने हों या काल्पनिक) को शामिल करना एक खतरनाक प्रयोग है। मुट्ठी भर लेखक—और मैं सबसे प्रतिभाशाली लेखकों की बात कर रहा हूँ—ही सपनों में पाए जाने वाले उस तरह के अतार्किक संश्लेषण को बखूबी रच पाते हैं। यह बात तर्कसंगत लगती है। फिर भी, मैं एक सपने के बारे में बताना चाहता हूँ, जो मैंने हाल ही में देखा था। मैं इस सपने को बस एक तथ्य के रूप में दर्ज करना चाहता हूँ जो मुझसे और मेरे जीवन से जुड़ा है। चाहे यह साहित्यिक हो या नहीं, मुझे परवाह नहीं। मैं तो बस इस भंडार का रखवाला हूँ।

मुझे कई बार एक ही तरह का सपना आया है। विवरण अलग-अलग होते हैं, यहाँ तक कि जगह भी, लेकिन सभी सपने एक ही पैटर्न पर आधारित होते हैं। और जागने पर जो दर्द होता है, वह हमेशा एक जैसा ही होता है। एक ही विषय बार-बार दोहराया जाता है, जैसे कोई ट्रेन हर रात एक ही खतरनाक मोड़ पर सीटी बजाती रहती है।

सुमिरे का सपना

(मैंने इसे तीसरे व्यक्ति के रूप में लिखा है। इस तरह यह अधिक प्रामाणिक लगता है।)

सुमिरे अपनी मां से मिलने के लिए एक लंबी घुमावदार सीढ़ी चढ़ रही है, जिनकी मृत्यु बहुत समय पहले हो चुकी थी। उसकी मां सीढ़ियों के शीर्ष पर उसका इंतजार कर रही है। वह सुमिरे को कुछ बताना चाहती है, एक ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी जिसकी सुमिरे को जीने के लिए सख्त जरूरत है। सुमिरे ने पहले कभी किसी मृत व्यक्ति से मुलाकात नहीं की है, और वह डरी हुई है। वह नहीं जानती कि उसकी मां किस तरह की इंसान है। शायद—किसी ऐसे कारण से जिसकी सुमिरे कल्पना भी नहीं कर सकती—उसकी मां उससे नफरत करती हो। लेकिन उसे उससे मिलना ही होगा। यही उसका एकमात्र मौका है।

सीढ़ियाँ अंतहीन हैं। चढ़ती जा रही हैं, पर ऊपर तक नहीं पहुँच पा रही हैं। सुमिरे हाँफते हुए तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़ रही है। समय कम होता जा रहा है। उसकी माँ हमेशा इस इमारत में नहीं रहेगी। सुमिरे के माथे पर पसीना आ रहा है। और आखिरकार सीढ़ियाँ खत्म हो जाती हैं।

सीढ़ियों के सबसे ऊपर एक चौड़ा चबूतरा है, जिसके ठीक अंत में सुमिरे के सामने एक मोटी पत्थर की दीवार है। आँखों के सामने ही एक गोल छेद है, जो वेंटिलेशन शाफ्ट जैसा दिखता है। लगभग बीस इंच व्यास का एक छोटा सा छेद। और सुमिरे की माँ, मानो पैरों के बल धकेली गई हो, उस छेद में ठूँसी हुई है। सुमिरे को एहसास होता है कि उसका समय लगभग समाप्त हो चुका है।

उस तंग जगह में, उसकी माँ उसकी ओर मुँह करके बैठी है। वह सुमिरे के चेहरे को ऐसे देखती है मानो उससे विनती कर रही हो। सुमिरे एक नज़र में ही समझ जाती है कि यह उसकी माँ है। उसे एहसास होता है कि यही वह इंसान है जिसने मुझे जीवन और शरीर दिया है। लेकिन किसी तरह यहाँ मौजूद महिला पारिवारिक फोटो एल्बम वाली माँ नहीं है। मेरी असली माँ सुंदर और जवान है। तो एल्बम वाली वह महिला असल में मेरी माँ नहीं थी, सुमिरे सोचती है। मेरे पिता ने मुझे धोखा दिया।

“माँ!” सुमिरे साहस से चिल्लाई। उसे लगा जैसे उसके भीतर की कोई दीवार पिघल रही हो। उसके मुँह से ये शब्द निकलते ही उसकी माँ उस गड्ढे में और गहराई तक खिंची चली गई, मानो दूसरी तरफ़ किसी विशाल वैक्यूम ने उसे खींच लिया हो। उसकी माँ का मुँह खुला था और वो सुमिरे को कुछ पुकार रही थी। लेकिन गड्ढे से निकलती हवा की खोखली आवाज़ ने उसके शब्दों को दबा दिया। अगले ही पल उसकी माँ गड्ढे के अँधेरे में समा गई और गायब हो गई।

सुमिरे पीछे मुड़कर देखती है, और सीढ़ियाँ गायब हो चुकी हैं। वह पत्थर की दीवारों से घिरी हुई है। जहाँ सीढ़ियाँ थीं, वहाँ एक लकड़ी का दरवाज़ा है। वह दरवाज़े की कुंडी घुमाकर उसे खोलती है, और सामने आसमान है। वह एक ऊँचे टावर की चोटी पर है। इतना ऊँचा कि नीचे देखने पर उसे चक्कर आने लगता है। आसमान में हवाई जहाज़ जैसी कई छोटी-छोटी चीज़ें मंडरा रही हैं। बांस और लकड़ी के हल्के टुकड़ों से बने ये छोटे-छोटे हवाई जहाज़, जिन्हें कोई भी बना सकता है। हर हवाई जहाज़ के पिछले हिस्से में मुट्ठी के आकार का एक छोटा सा इंजन और प्रोपेलर लगा है। सुमिरे पास से

गुज़र रहे एक पायलट को चिल्लाकर मदद के लिए बुलाती है। लेकिन कोई भी पायलट उसकी ओर ध्यान नहीं देता।

सुमिरे सोचती है, "ज़रूर इन कपड़ों की वजह से ही ऐसा हो रहा है। मुझे कोई देख नहीं सकता।" उसने एक सादा सफेद अस्पताल का गाउन पहना हुआ है। वह उसे उतार देती है, और नग्न हो जाती है—उसके नीचे कुछ भी नहीं है। वह गाउन को दरवाजे के पास ज़मीन पर फेंक देती है, और जैसे कोई आत्मा अब आज़ाद हो गई हो, वह हवा के झोंके के साथ उड़ जाती है और नज़रों से ओझल हो जाती है। वही हवा उसके शरीर को सहलाती है, उसके पैरों के बीच के बालों को हिलाती है। अचानक वह देखती है कि सारे छोटे हवाई जहाज ड्रैगनफ्लाई में बदल गए हैं। आकाश रंग-बिरंगी ड्रैगनफ्लाई से भर गया है, उनकी बड़ी-बड़ी गोल आँखें चमक रही हैं जैसे वे चारों ओर देख रही हों। उनके पंखों की भनभनाहट धीरे-धीरे तेज़ होती जाती है, जैसे रेडियो की आवाज़ बढ़ाई जा रही हो। अंत में यह एक असहनीय गर्जना बन जाती है। सुमिरे आँखें बंद करके नीचे बैठ जाती है और अपने कान बंद कर लेती है।

और वह जाग जाती है।

सुमिरे को सपने की हर एक बात याद थी। वह उसका पूरा चित्र बना सकती थी। बस एक ही चीज़ उसे याद नहीं थी, वो थी उसकी माँ का चेहरा, जो उस काले गड्ढे में समा गया था। और उसकी माँ के कहे हुए वो महत्वपूर्ण शब्द भी उस खालीपन में हमेशा के लिए खो गए थे। बिस्तर पर लेटी सुमिरे तकिए को ज़ोर से काटती रही और रोती रही।

नाई अब और गड्ढे नहीं खोदेगा।

इस सपने के बाद मैंने एक अहम फ़ैसला लिया। मेरी मेहनती कुल्हाड़ी की नोक आखिरकार ठोस चट्टान को चीरना शुरू कर देगी। धड़ाम! मैंने मियू को साफ़-साफ़ बता देने का फ़ैसला किया कि मैं क्या चाहता हूँ। मैं हमेशा ऐसे ही लटका नहीं रह

सकता। मैं उस रीढ़विहीन नाई की तरह नहीं रह सकता जो अपने पिछवाड़े में गड्ढा खोद रहा हो और किसी को भी यह न बता रहा हो कि मैं मियू से प्यार करता हूँ। अगर मैंने ऐसा किया तो धीरे-धीरे मैं मिट जाऊँगा। हर सुबह और हर शाम मुझे टुकड़ों-टुकड़ों में छीन लेगी, और देखते ही देखते मेरा जीवन पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हो जाएगा—और मैं कुछ भी नहीं रह जाऊँगा।

मामला बिलकुल स्पष्ट है।
क्रिस्टल, क्रिस्टल।
मैं मियू से प्रेम करना चाहता हूँ, और उसकी बाहों में समा जाना चाहता हूँ। मैंने पहले ही अपने लिए बहुत कुछ महत्वपूर्ण त्याग दिया है। अब मैं और कुछ नहीं त्याग सकता। अभी भी देर नहीं हुई है। मुझे मियू के साथ रहना है, उसके भीतर प्रवेश करना है। और उसे भी मेरे भीतर प्रवेश करना होगा। दो लालची, चमकते हुए साँपों की तरह।
और अगर मियू मुझे स्वीकार नहीं करती है, तो फिर क्या होगा?
जब समय आएगा तब मैं उस समस्या का समाधान करूंगा।
क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जिसे गोली लगी हो और खून न निकला हो?

खून तो बहना ही चाहिए। मैं अपनी छुरी तेज कर लूंगा, कहीं किसी कुत्ते का गला काटने के लिए तैयार रहूंगा।

सही?
सही है आप!

मैंने यहाँ जो लिखा है, वह स्वयं के लिए एक संदेश है। मैं इसे बूमरैंग की तरह हवा में उछालता हूँ। यह अँधेरे को चीरता हुआ किसी बेचारे कंगारू की छोटी सी आत्मा को निर्मम कर देता है, और अंत में मेरे पास लौट आता है।

लेकिन जो बूमरैंग वापस आता है, वह वही नहीं होता जिसे मैंने फेंका था।
बूमरैंग, बूमरैंग।

अध्याय 12

दस्तावेज़ 2

दोपहर के ढाई बज रहे हैं। बाहर भीषण धूप और भीषण गर्मी है। चट्टानें, आकाश और समुद्र जगमगा रहे हैं। इन्हें देर तक देखते रहो तो इनके बीच की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं, सब कुछ एक अव्यवस्थित दलदल में घुलमिल जाता है। चेतना प्रकाश से बचने के लिए नींद भरी छायाओं में डूब जाती है। यहाँ तक कि पक्षियों ने भी उड़ना छोड़ दिया है। लेकिन घर के अंदर सुखद ठंडक है। मियू बैठक कक्ष में बैठकर ब्रह्म्स का संगीत सुन रही है। उसने पतली पट्टियों वाली नीली गर्मियों की पोशाक पहनी है और उसके सफ़ेद बाल सादगी से पीछे बंधे हैं। मैं अपनी मेज पर बैठकर ये शब्द लिख रहा हूँ।
"क्या आपको संगीत से परेशानी होती है?" मियू मुझसे पूछती है।
मैं जवाब देता हूँ, ब्रह्म्स मुझे कभी परेशान नहीं करते।

मैं अपनी याददाश्त खंगाल रहा हूँ, कुछ दिन पहले बरगंडी के गाँव में मियू ने मुझे जो कहानी सुनाई थी, उसे दोहराने की कोशिश कर रहा हूँ। यह आसान नहीं है। उसने कहानी रुक-रुक कर सुनाई, घटनाओं का क्रम पूरी तरह गड़बड़ था। कभी-कभी मैं समझ ही नहीं पाता था कि कौन सी घटना पहले हुई और कौन सी बाद में, क्या कारण था और क्या परिणाम। लेकिन मैं उसे दोष नहीं देता। उसकी यादों में दबी क्रूर साजिश की तलवार उस पर वार कर रही थी, और जैसे-जैसे अंगूर के बाग के ऊपर

सुबह के साथ तारे फीके पड़ते गए, वैसे-वैसे कहानी सुनाते हुए उसके गालों से जीवन शक्ति भी निकल रही थी।
मियू ने कहानी तभी सुनाई जब मैंने उसे सुनने की ज़िद की। उसे बोलने के लिए मनाने के लिए मुझे हर तरह के तरीके अपनाने पड़े—कभी उसे प्रोत्साहित करना, कभी धमकाना, कभी लाड़-प्यार करना, कभी तारीफ करना, कभी उसे आगे बोलने के लिए उकसाना। हमने सुबह तक रेड वाइन पी और बातें कीं। हाथों में हाथ डाले, हम उसकी यादों के निशान ढूंढते रहे, उन्हें जोड़ते रहे, और नतीजों का विश्लेषण करते रहे। फिर भी कुछ जगहें ऐसी थीं जिन्हें मियू अपनी याददाश्त से नहीं निकाल पा रही थी। जब भी वह उनमें गहराई से जाने की कोशिश करती, वह चुपचाप उलझन में पड़ जाती और और वाइन पी लेती। ये याददाश्त के खतरनाक क्षेत्र थे। जब भी हम इन क्षेत्रों में पहुँचते, हम खोज छोड़ देते और धीरे से किसी ऊँची जगह पर चले जाते।

जब मुझे पता चला कि मियू अपने बालों को रंगती है, तो मैंने उसे यह कहानी बताने के लिए मना लिया। मियू इतनी सावधान रहती है कि उसके आस-पास के बहुत कम लोगों को ही पता है कि वह अपने बालों को रंगती है। लेकिन मैंने इस बात पर ध्यान दिया। इतने लंबे समय तक साथ यात्रा करने, हर दिन साथ बिताने से ऐसी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान जाने लगता है। या शायद मियू इसे छिपाने की कोशिश नहीं कर रही थी। अगर वह चाहती तो और भी सावधानी बरत सकती थी। शायद उसे लगा कि मुझे पता चलना ही था, या शायद वह चाहती थी कि मुझे पता चले। (हम्म—यह तो बस मेरा अनुमान है।)

मैंने उससे सीधे-सीधे पूछ लिया। मैं ऐसी ही हूँ—बात को घुमा-फिराकर नहीं कहती। मैंने पूछा, तुम्हारे कितने बाल सफेद हैं? तुम कब से बालों को रंग रही हो? उसने जवाब दिया, चौदह साल से। चौदह साल पहले मेरे सारे बाल सफेद हो गए थे, एक-एक बाल। क्या तुम बीमार थीं? नहीं, ऐसा नहीं था, मियू ने कहा। कुछ हुआ था, और मेरे सारे बाल एकदम सफेद हो गए। रातों-रात।
मैंने उससे विनती करते हुए कहा, "मैं कहानी सुनना चाहती हूँ। मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानना चाहती हूँ। तुम जानती हो कि मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगी।" लेकिन मियू ने चुपचाप सिर हिला दिया। उसने यह कहानी आज तक किसी को नहीं बताई

थी; यहाँ तक कि उसके पति को भी नहीं पता था कि क्या हुआ था। चौदह साल तक यह उसका निजी राज़ रहा था।

लेकिन अंत में हमने पूरी रात बातें कीं। मैंने उसे समझाया कि हर कहानी को सुनाने का एक समय होता है। वरना तुम हमेशा के लिए अपने अंदर छिपे रहस्य की कैदी बनकर रह जाओगी।
मियू ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो वह किसी दूर के दृश्य को निहार रही हो। उसकी आँखों में कुछ उभरा, फिर धीरे-धीरे डूब गया। उसने कहा, "मुझे कुछ भी स्पष्ट करने की ज़रूरत नहीं है। उन्हें हिसाब-किताब निपटाना है, मुझे नहीं।"

मुझे उसकी बात समझ नहीं आई।
“अगर मैं तुम्हें कहानी सुना दूँ,” मियू ने कहा, “तो हम दोनों हमेशा के लिए इसे साझा करेंगे। और मुझे नहीं पता कि यह सही होगा या नहीं। अगर मैं अभी इस राज़ को खोल दूँ, तो तुम भी फँस जाओगे। क्या तुम यही चाहते हो? क्या तुम सच में वो बात जानना चाहते हो जिसे भुलाने के लिए मैंने इतना कुछ कुर्बान किया है?”
हां, मैंने कहा। चाहे कुछ भी हो, मैं इसे आपके साथ साझा करना चाहता हूं। मैं नहीं चाहता कि आप कुछ भी छिपाएं।
मियू ने शराब का एक घूंट लिया और, स्पष्ट रूप से भ्रमित होकर, अपनी आँखें बंद कर लीं। सन्नाटा छा गया, जिसमें समय मानो थम सा गया।
लेकिन अंत में, उसने कहानी सुनाना शुरू किया। धीरे-धीरे, एक-एक करके। कहानी के कुछ अंश अपने आप ही जीवंत हो उठे, जबकि कुछ अंश तो अस्तित्व में ही नहीं आए। कुछ अपरिहार्य अंतराल और चूकें थीं, जिनमें से कुछ का अपना विशेष महत्व था। अब कथावाचक के रूप में मेरा कार्य है कि मैं इन सभी अंशों को अत्यंत सावधानीपूर्वक समेटकर एक संपूर्ण कहानी बनाऊं।

मियू और फेरिस व्हील की कहानी

एक गर्मी के मौसम में मियू फ्रांस की सीमा के पास स्विट्जरलैंड के एक छोटे से कस्बे

में अकेली रुकी। वह पच्चीस साल की थी और पेरिस में रहती थी, जहाँ वह पियानो सीख रही थी। वह अपने पिता के कहने पर कुछ व्यापारिक सौदे निपटाने के लिए इस छोटे से कस्बे में आई थी। व्यापारिक मामला सीधा-सादा था, बस दूसरे पक्ष के साथ एक बार रात का खाना खाना था और उनसे अनुबंध पर हस्ताक्षर करवाना था। मियू को वह छोटा सा कस्बा पहली ही नज़र में पसंद आ गया। वह एक झील और उसके किनारे एक मध्ययुगीन किले के साथ एक बहुत ही आरामदायक और प्यारा स्थान था। उसने सोचा कि वहाँ रहना मज़ेदार होगा, और उसने वहाँ रहने का फैसला कर लिया। इसके अलावा, पास के एक गाँव में एक संगीत समारोह हो रहा था, और अगर वह एक कार किराए पर ले लेती तो वह हर दिन उसमें शामिल हो सकती थी।

उसे सौभाग्यवश शहर के बाहरी इलाके में एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक सुंदर, साफ-सुथरी छोटी इमारत में थोड़े समय के लिए किराए पर एक सुसज्जित अपार्टमेंट मिल गया। नज़ारा शानदार था। पास ही एक ऐसी जगह थी जहाँ वह पियानो का अभ्यास कर सकती थी। किराया सस्ता नहीं था, लेकिन अगर कभी उसे पैसों की तंगी हो जाती तो वह हमेशा अपने पिता से मदद ले सकती थी।

इस तरह मियू ने कस्बे में अपना अस्थायी लेकिन शांत जीवन शुरू किया। वह संगीत समारोह में कॉन्सर्ट में जाती और आस-पड़ोस में टहलने लगती, और जल्द ही उसकी कुछ जान-पहचान हो गई। उसे एक अच्छा सा छोटा रेस्तरां और कैफे मिल गया, जहाँ वह अक्सर जाने लगी। अपने अपार्टमेंट की खिड़की से वह कस्बे के बाहर एक मनोरंजन पार्क देख सकती थी। पार्क में एक विशाल फेरिस व्हील था। रंग-बिरंगे दरवाज़ों वाले डिब्बे उस विशाल पहिये से जुड़े हुए थे, जो धीरे-धीरे आकाश में घूमते थे। एक बार जब कोई अपनी अधिकतम सीमा तक पहुँच जाता, तो वह नीचे उतरने लगता। स्वाभाविक रूप से। फेरिस व्हील कहीं नहीं जाते। गोंडोला ऊपर जाते हैं, वापस नीचे आते हैं, एक गोल चक्कर जो, किसी अजीब कारण से, अधिकांश लोगों को सुखद लगता है।

शाम के समय फेरिस व्हील अनगिनत रोशनी से जगमगा उठता था। रात को बंद होने और मनोरंजन पार्क के ठप होने के बाद भी, व्हील पूरी रात टिमटिमाता रहता था, मानो आकाश के तारों से प्रतिस्पर्धा कर रहा हो। मियू अपनी खिड़की के पास बैठकर रेडियो पर संगीत सुनती और फेरिस व्हील की ऊपर-नीचे की गति को निहारती रहती। या फिर, जब वह रुका होता, तो उसकी स्मारक जैसी शांति को निहारती रहती।

उसकी मुलाकात कस्बे में रहने वाले एक आदमी से हुई। एक आकर्षक, लगभग पचास साल का लैटिन पुरुष। वह लंबा था, उसकी नाक सुंदर थी और उसके बाल काले और सीधे थे। उसने कैफे में उससे अपना परिचय दिया। उसने पूछा, "आप कहाँ से हैं?" उसने जवाब दिया, "मैं जापान से हूँ।" और दोनों बातें करने लगे। उसका नाम फर्डिनेंडो था। वह बार्सिलोना का रहने वाला था और पाँच साल पहले फर्नीचर डिजाइन के क्षेत्र में काम करने के लिए वहाँ आया था।
वह सहज भाव से बात कर रहा था और अक्सर मज़ाक कर रहा था। उन्होंने थोड़ी देर बातचीत की, फिर अलविदा कहा। दो दिन बाद वे उसी कैफ़े में फिर मिले। उसे पता चला कि वह अविवाहित था और तलाकशुदा था। उसने बताया कि वह एक नई ज़िंदगी शुरू करने के लिए स्पेन छोड़कर आया था। मियू को उस आदमी के बारे में अच्छा नहीं लगा। उसे लगा कि वह उस पर गलत नज़र रख रहा है। उसे उसमें यौन इच्छा की झलक दिखी और वह डर गई। उसने कैफ़े में न जाने का फ़ैसला किया।
फिर भी, शहर में उसकी मुलाक़ात कई बार फर्डिनेंडो से हुई—इतनी बार कि उसे लगने लगा कि वह उसका पीछा कर रहा है। शायद यह महज़ एक भ्रम था। छोटा सा शहर था, इसलिए बार-बार एक ही व्यक्ति से मिलना कोई अजीब बात नहीं थी। हर बार जब वह उसे देखता, तो खुलकर मुस्कुराता और दोस्ताना अंदाज़ में नमस्ते कहता। लेकिन धीरे-धीरे मियू चिड़चिड़ी और बेचैन होती गई। उसे फर्डिनेंडो अपने शांतिपूर्ण जीवन के लिए खतरा लगने लगा। जैसे किसी संगीत की शुरुआत में कोई बेमेल संकेत हो, वैसे ही एक अशुभ साया उसकी सुहावनी गर्मियों पर छाने लगा।

फर्डिनेंडो तो बस एक बड़ी समस्या की झलक मात्र था। वहाँ दस दिन रहने के बाद, उसे लगने लगा कि शहर में उसका जीवन किसी बाधा से जुड़ता जा रहा है। वह बेहद सुंदर और साफ-सुथरा शहर अब संकीर्ण सोच वाला और अहंकारी लगने लगा था। लोग भले ही मिलनसार और दयालु थे, लेकिन उसे एक एशियाई होने के कारण अपने प्रति एक अदृश्य पूर्वाग्रह महसूस होने लगा। रेस्तरां में पी जाने वाली शराब का स्वाद अचानक खराब हो गया। खरीदी गई सब्जियों में कीड़े मिलने लगे। संगीत समारोह में प्रस्तुतियाँ नीरस लगने लगीं। वह अपने संगीत पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी। यहाँ तक कि उसका अपार्टमेंट, जिसे वह पहले काफी आरामदायक समझती थी, अब उसे एक बदहाल और गंदी जगह लगने लगा। हर चीज की चमक फीकी पड़ गई। एक

अशुभ छाया फैलती चली गई। और वह उससे बच नहीं सकी।
रात में फोन बजता और वो उठाती। "हैलो," वो कहती। लेकिन फोन कट जाता। ऐसा बार-बार होता रहा। उसे लगा कि ज़रूर फर्डिनेंडो ही होगा। पर उसके पास कोई सबूत नहीं था। उसे उसका नंबर कैसे पता चला होगा? फोन पुराना मॉडल था और वो उसे यूं ही अनप्लग नहीं कर सकती थी। उसे नींद नहीं आती थी और उसने नींद की गोलियां लेना शुरू कर दिया। उसकी भूख भी खत्म हो गई थी।

मुझे यहाँ से निकलना ही होगा, उसने ठान लिया। लेकिन किसी अनजान वजह से वह खुद को इस शहर से दूर नहीं कर पा रही थी। उसने रुकने के लिए कई बहाने बनाए। उसने एक महीने का किराया दे दिया था और संगीत समारोह का पास भी खरीद लिया था। और उसने पेरिस में अपना अपार्टमेंट गर्मियों के लिए किराए पर दे दिया था। वह अब यूँ ही नहीं जा सकती, उसने खुद से कहा। और वैसे भी, कुछ हुआ ही नहीं था। उसे कोई गंभीर चोट तो नहीं लगी थी, है ना? किसी ने उसके साथ बुरा बर्ताव नहीं किया था। मैं शायद ज़रूरत से ज़्यादा संवेदनशील हो रही हूँ, उसने खुद को समझाया। वहाँ रहने के लगभग दो सप्ताह बाद, एक शाम वह हमेशा की तरह पास के एक रेस्तरां में रात का खाना खाने गई। खाना खाने के बाद उसने सोचा कि कुछ समय के लिए ताज़ी हवा का आनंद लिया जाए और टहलने निकल पड़ी। विचारों में खोई हुई वह एक गली से दूसरी गली भटकती चली गई। देखते ही देखते वह मनोरंजन पार्क के प्रवेश द्वार पर पहुँच गई। वही पार्क जिसमें फेरिस व्हील था। हवा में जीवंत संगीत, कार्निवल के उद्घोषकों की आवाज़ और बच्चों की खुशी भरी चीखें गूंज रही थीं। वहाँ आने वाले ज़्यादातर लोग परिवार थे और कुछ शहर के जोड़े थे। मियू को याद आया कि उसके पिता उसे बचपन में एक बार मनोरंजन पार्क ले गए थे। उसे आज भी याद है कि घूमते हुए टीकप राइड पर बैठते समय उसके पिता के ट्वीड कोट की खुशबू कैसी थी। पूरी राइड के दौरान वह अपने पिता की आस्तीन से चिपकी रही। छोटी मियू के लिए वह खुशबू बड़ों की दूर की दुनिया का संकेत थी, सुरक्षा का प्रतीक थी। उसे अपने पिता की याद सताने लगी।

मज़े के लिए उसने एक टिकट खरीदा और पार्क के अंदर चली गई। वह जगह तरह-तरह की छोटी-छोटी दुकानों और स्टॉलों से भरी हुई थी—एक शूटिंग गैलरी, एक

सांपों का शो, एक ज्योतिषी का स्टॉल। उसके सामने एक क्रिस्टल बॉल रखी थी, और एक हृष्ट-पुष्ट महिला ज्योतिषी ने मियू को इशारा करते हुए कहा: “महोदया, कृपया यहाँ आइए। यह बहुत ज़रूरी है। आपका भाग्य बदलने वाला है।” मियू बस मुस्कुराई और आगे बढ़ गई।
मियू ने आइसक्रीम खरीदी और उसे खाने के लिए एक बेंच पर बैठ गई, और आने-जाने वाले लोगों को देखने लगी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने आसपास की भीड़-भाड़ से बहुत दूर है। एक आदमी उससे जर्मन में बात करने लगा। वह लगभग तीस साल का, छोटा कद का, सुनहरे बालों और मूंछों वाला आदमी था, ऐसा आदमी जो वर्दी में अच्छा लगता। उसने सिर हिलाया, मुस्कुराई और अपनी घड़ी की ओर इशारा किया। "मैं किसी का इंतज़ार कर रही हूँ," उसने फ्रेंच में कहा। उसकी आवाज़ थोड़ी ऊंची और दूर की सी लग रही थी। उस आदमी ने आगे कुछ नहीं कहा, शरमाते हुए मुस्कुराया, हाथ से हल्का सा इशारा किया और चला गया।

मियू खड़ी हुई और इधर-उधर घूमने लगी। कोई डार्ट्स फेंक रहा था और एक गुब्बारा फूट गया। एक भालू नाचते हुए इधर-उधर उछल-कूद कर रहा था। एक ऑर्गन "द ब्लू डेन्यूब वाल्ट्ज़" बजा रहा था। उसने ऊपर देखा और फेरिस व्हील को धीरे-धीरे हवा में घूमते हुए देखा। अचानक उसके मन में ख्याल आया, फेरिस व्हील से अपने अपार्टमेंट को देखना कितना मज़ेदार होगा, बजाय इसके कि फेरिस व्हील से अपार्टमेंट को देखा जाए। सौभाग्य से उसके कंधे के बैग में एक छोटी दूरबीन थी। पिछली बार जब वह संगीत समारोह में गई थी, तब से ये उसके बैग में थीं, जहाँ लॉन में अपनी दूर वाली सीट से स्टेज देखने में ये बहुत काम आई थीं। ये हल्की और काफी मजबूत थीं। इनसे वह अपने कमरे के अंदर तक देख पाएगी।

वह फेरिस व्हील के सामने बने बूथ पर टिकट खरीदने गई। टिकट बेचने वाले बूढ़े आदमी ने उससे कहा, "हम जल्द ही बंद करने वाले हैं, मैडम।" वह बुदबुदाते हुए नीचे देख रहा था, मानो खुद से बात कर रहा हो। उसने अपना सिर हिलाया। "आज का काम लगभग खत्म हो गया है। यह आखिरी सवारी होगी। एक चक्कर और फिर हम बंद।" उसकी ठुड्डी पर सफेद दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल थे, और उसकी मूंछें तंबाकू के धुएं से रंगी हुई थीं। उसने खांसा। उसके गाल इतने लाल थे मानो सालों से उत्तरी हवा

के झोंकों से टकराते रहे हों।
“कोई बात नहीं। एक बार ही काफी है,” मियू ने जवाब दिया। उसने टिकट खरीदा और प्लेटफार्म पर चढ़ गई। वह अकेली ही सवार होने का इंतज़ार कर रही थी, और जहाँ तक उसे दिखाई दे रहा था, छोटी-छोटी गोंडोलाएँ सब खाली थीं। खाली डिब्बे हवा में बेजान से झूल रहे थे, मानो दुनिया अपने अंत की ओर बढ़ रही हो।
वह लाल गोंडोला में चढ़ी और बेंच पर बैठ गई। बूढ़ा आदमी पास आया, दरवाज़ा बंद किया और बाहर से ताला लगा दिया। सुरक्षा के लिए ही, शायद। किसी प्राचीन जानवर के अचानक जीवित हो उठने की तरह, फेरिस व्हील खड़खड़ाया और घूमने लगा। तरह-तरह के स्टॉल और आकर्षण उसके नीचे सिमटते चले गए। जैसे-जैसे वे सिमटते गए, शहर की रोशनी उसके सामने उभरने लगी। झील उसके बाईं ओर थी, और वह देख सकती थी कि सैर-सपाटे वाली नावों की रोशनी पानी की सतह पर हल्की-हल्की प्रतिबिंबित हो रही थी। दूर पहाड़ों की ढलान पर छोटे-छोटे गांवों की रोशनी जगमगा रही थी। इस सब की सुंदरता देखकर उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

पहाड़ी की चोटी पर स्थित उसका घर नज़र आने लगा। मियू ने दूरबीन से अपना अपार्टमेंट ढूंढने की कोशिश की, लेकिन उसे ढूंढना आसान नहीं था। फेरिस व्हील लगातार घूम रहा था और उसे ऊपर ले जा रहा था। उसे जल्दी करनी होगी। उसने बेचैनी से दूरबीन को इधर-उधर घुमाया। लेकिन वहाँ एक जैसी दिखने वाली कई इमारतें थीं। वह फेरिस व्हील के सबसे ऊपर पहुँच गई और नीचे की ओर मुड़ने लगी। आखिरकार उसे वह इमारत दिख गई। बस यही! लेकिन किसी तरह उसमें उसकी याद से ज़्यादा खिड़कियाँ थीं। बहुत से लोगों ने गर्मियों की ठंडी हवा का आनंद लेने के लिए अपनी खिड़कियाँ खोल रखी थीं। उसने दूरबीन को एक खिड़की से दूसरी खिड़की पर घुमाया और आखिरकार तीसरी मंज़िल पर दाईं ओर से दूसरा अपार्टमेंट ढूंढ लिया। लेकिन तब तक वह ज़मीन के करीब पहुँच चुकी थी। दूसरी इमारतों की दीवारें बीच में आ रही थीं। यह अफ़सोस की बात थी—बस कुछ और सेकंड और वह अपने घर के अंदर देख सकती थी।

उसकी गोंडोला बहुत धीरे-धीरे ज़मीन की ओर बढ़ रही थी। उसने बाहर निकलने के

लिए दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, लेकिन वह हिला तक नहीं। ज़ाहिर है—वह बाहर से बंद था। उसने टिकट काउंटर पर बैठे बूढ़े आदमी को चारों ओर देखा, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आया। काउंटर की बत्ती पहले ही बुझ चुकी थी। वह किसी को आवाज़ देने ही वाली थी, लेकिन चिल्लाने के लिए कोई था ही नहीं। फेरिस व्हील एक बार फिर ऊपर उठने लगा। क्या गड़बड़ है, उसने सोचा। यह कैसे हो सकता है? उसने आह भरी। शायद बूढ़ा आदमी बाथरूम गया हो और समय का ध्यान न रख पाया हो। उसे एक और चक्कर लगाना होगा।
कोई बात नहीं, उसने सोचा। बूढ़े आदमी की भूलने की आदत उसे एक और मौका दे देगी। इस बार तो वह अपना अपार्टमेंट ज़रूर ढूंढ लेगी। उसने दूरबीन को मजबूती से पकड़ा और खिड़की से अपना चेहरा बाहर निकाला। पिछली बार तो उसने इलाका और जगह का अंदाज़ा लगा लिया था, इसलिए इस बार अपना कमरा ढूंढना आसान था। खिड़की खुली थी, बत्ती जल रही थी। उसे अंधेरे कमरे में वापस आना बिल्कुल पसंद नहीं था, और उसने रात के खाने के तुरंत बाद वापस आने का प्लान बनाया था।

दूर से दूरबीन से अपने कमरे को देखना उसे अपराधबोध से भर देता था, मानो वह खुद को ही देख रही हो। पर मैं वहाँ नहीं हूँ, उसने खुद को समझाया। बिलकुल नहीं। मेज पर एक फोन है। मैं उस फोन पर कॉल करना चाहती हूँ। मेज पर एक चिट्ठी भी है जो मैंने छोड़ी थी। मैं उसे यहीं से पढ़ना चाहती हूँ, मियू ने सोचा। लेकिन स्वाभाविक रूप से वह इतनी बारीकियाँ नहीं देख सकती थी।

आखिरकार उसकी कार फेरिस व्हील के शिखर को पार कर गई और नीचे उतरने लगी। थोड़ी ही दूर नीचे जाने के बाद वह अचानक रुक गई। वह कार के किनारे से जा टकराई, उसका कंधा ज़ोर से टकराया और दूरबीन लगभग ज़मीन पर गिर ही गई। फेरिस व्हील के इंजन की आवाज़ थम गई और चारों ओर सन्नाटा छा गया। जो भी खुशनुमा संगीत वह सुन रही थी, वह सब गायब हो गया। नीचे के बूथों की ज़्यादातर बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। उसने ध्यान से सुना, लेकिन उसे हवा की हल्की सी आवाज़ के अलावा कुछ नहीं सुनाई दिया। एकदम सन्नाटा। न मेले में उद्घोषकों की आवाज़, न बच्चों की खुशी की चीखें। पहले तो उसे समझ ही नहीं आया कि क्या हुआ है। और फिर उसे समझ आया। उसे अकेला छोड़ दिया गया था।

वह आधी खुली खिड़की से बाहर झुकी और फिर नीचे देखा। उसे एहसास हुआ कि वह कितनी ऊंचाई पर है। मियू ने मदद के लिए चिल्लाने की सोची, लेकिन जानती थी कि कोई उसे नहीं सुनेगा। वह बहुत ऊंचाई पर थी, उसकी आवाज़ बहुत धीमी थी।
वो बूढ़ा आदमी कहाँ चला गया होगा? ज़रूर उसने शराब पी होगी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसकी साँसें बदबूदार थीं, उसकी आवाज़ भारी थी—इसमें कोई शक नहीं। वो मुझे फेरिस व्हील पर बिठाना भूल गया और मशीनरी बंद कर दी। इस समय वो शायद किसी बार में बैठकर बीयर या जिन पी रहा होगा, और ज़्यादा नशे में धुत होकर भूल गया होगा कि उसने क्या किया था। मियू ने अपने होंठ दबा लिए। उसने सोचा, मैं शायद कल दोपहर तक यहाँ से निकल ही न पाऊँ। या शायद शाम तक? एम्यूज़मेंट पार्क कब खुलता है? उसे कुछ पता नहीं था।

मियू ने सिर्फ एक हल्का ब्लाउज और छोटी सूती स्कर्ट पहनी हुई थी, और गर्मियों का मौसम होने के बावजूद स्विट्जरलैंड की रात की हवा ठंडी थी। हवा तेज़ हो गई थी। उसने नीचे का नज़ारा देखने के लिए एक बार फिर खिड़की से बाहर झुकी। पहले से भी कम रोशनी थी। मनोरंजन पार्क के कर्मचारी दिन का काम खत्म करके घर जा चुके थे। कहीं न कहीं तो कोई गार्ड होना ही चाहिए। उसने गहरी सांस ली और पूरी ताकत से मदद के लिए चिल्लाई। उसने आवाज़ सुनी। फिर चिल्लाई। और फिर। कोई जवाब नहीं।
उसने अपने कंधे के बैग से एक छोटी नोटबुक निकाली और उस पर फ्रेंच में लिखा: “मैं मनोरंजन पार्क के फेरिस व्हील में बंद हूँ। कृपया मेरी मदद करें।” उसने नोट को खिड़की से बाहर फेंक दिया। कागज हवा में उड़ गया। हवा शहर की ओर बह रही थी, इसलिए अगर किस्मत अच्छी रही तो शायद वह वहीं जाकर गिरे। लेकिन अगर कोई उसे उठाकर पढ़ भी ले, तो क्या वह उस पर विश्वास करेगा? दूसरे पन्ने पर उसने संदेश के साथ अपना नाम और पता भी लिख दिया। इससे शायद ज्यादा विश्वास हो। लोग शायद इसे मजाक न समझें, बल्कि यह समझ जाएं कि वह गंभीर मुसीबत में है। उसने अपनी नोटबुक के आधे पन्ने हवा में उड़ा दिए।
अचानक उसे एक विचार आया, उसने अपने पर्स से दस फ्रैंक के नोट को छोड़कर बाकी सब कुछ निकाल लिया और उसमें एक नोट रख दिया: “ऊपर लगे फेरिस व्हील में एक महिला फंसी हुई है। कृपया मदद करें।” उसने पर्स खिड़की से नीचे फेंक दिया।

वह सीधे ज़मीन की ओर गिरा। हालाँकि, वह देख नहीं पाई कि वह कहाँ गिरा, और न ही उसे ज़मीन पर गिरने की आवाज़ सुनाई दी। उसने उसी तरह का नोट अपने पर्स में भी रखा और उसे भी नीचे फेंक दिया।

मियू ने अपनी कलाई घड़ी देखी। साढ़े दस बज रहे थे। उसने अपने कंधे के बैग में इधर-उधर तलाशा कि उसे और क्या मिल सकता है। थोड़ा-बहुत मेकअप का सामान, एक शीशा, उसका पासपोर्ट, धूप का चश्मा, किराए की कार और अपार्टमेंट की चाबियाँ, फल छीलने के लिए एक चाकू, तीन बिस्कुट वाला एक छोटा प्लास्टिक का पैकेट, एक फ्रेंच किताब। उसने रात का खाना खा लिया था, इसलिए उसे सुबह तक भूख नहीं लगेगी। ठंडी हवा के कारण उसे प्यास भी नहीं लगेगी। और सौभाग्य से उसे अभी शौचालय भी नहीं जाना था।

वह प्लास्टिक की बेंच पर बैठ गई और अपना सिर दीवार से टिका लिया। उसके मन में पछतावे के विचार उमड़ रहे थे। वह मनोरंजन पार्क क्यों आई थी और इस फेरिस व्हील पर क्यों बैठी थी? रेस्टोरेंट से निकलने के बाद उसे सीधे घर जाना चाहिए था। काश, वह अभी गर्म पानी से नहा रही होती और बिस्तर पर आराम से बैठकर कोई अच्छी किताब पढ़ रही होती। जैसा वह हमेशा करती थी। उसने ऐसा क्यों नहीं किया? और आखिर उन्होंने उस बूढ़े आदमी जैसे शराबी को नौकरी पर क्यों रखा?

हवा के कारण फेरिस व्हील चरमरा रहा था। उसने खिड़की बंद करने की कोशिश की ताकि हवा अंदर न आए, लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। उसने हार मान ली और ज़मीन पर बैठ गई। उसे लगा, "मुझे स्वेटर लाना चाहिए था।" अपने अपार्टमेंट से निकलते समय वह रुकी थी, सोच रही थी कि क्या उसे अपने कंधों पर कार्डिगन डाल लेना चाहिए। लेकिन गर्मी की शाम बहुत सुहावनी लग रही थी, और रेस्टोरेंट उसके घर से सिर्फ़ तीन ब्लॉक दूर था। उस समय एम्यूज़मेंट पार्क जाना और फेरिस व्हील पर चढ़ना उसके दिमाग में दूर-दूर तक नहीं था। सब कुछ गड़बड़ हो गया था।

खुद को शांत करने के लिए उसने अपनी घड़ी, पतला चांदी का कंगन और सीप के आकार के झुमके उतारकर अपने बैग में रख लिए। वह फर्श के एक कोने में सिकुड़कर बैठ गई और सुबह तक सोने की उम्मीद करने लगी। लेकिन उसे नींद नहीं आई। उसे ठंड लग रही थी और बेचैनी भी। कभी-कभार हवा का एक झोंका गोंडोला को हिला देता था। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और मन ही मन मोजार्ट की सी माइनर

सोनाटा बजाने लगी, मानो अपनी उंगलियों को एक काल्पनिक कीबोर्ड पर चला रही हो। बिना किसी खास वजह के, उसने इस रचना को याद कर लिया था जिसे वह बचपन में बजाती थी। लेकिन दूसरे भाग के बीच में ही उसका मन सुस्त पड़ने लगा और वह सो गई।

वह कितनी देर सोई, उसे पता नहीं था। ज़्यादा देर नहीं हुई होगी। वह अचानक जाग उठी और एक मिनट तक उसे समझ नहीं आया कि वह कहाँ है। धीरे-धीरे उसकी याददाश्त वापस आई। हाँ, उसने सोचा, मैं एक मनोरंजन पार्क के फेरिस व्हील के अंदर फंसी हुई हूँ। उसने अपने बैग से घड़ी निकाली; आधी रात हो चुकी थी। मियू धीरे-धीरे खड़ी हुई। इतनी तंग जगह में सोने से उसके सारे जोड़ों में दर्द हो रहा था। उसने दो-तीन बार जम्हाई ली, अंगड़ाई ली और अपनी कलाइयों को रगड़ा।
यह जानते हुए कि उसे जल्द ही नींद नहीं आएगी, उसने अपना ध्यान परेशानियों से हटाने के लिए अपने पर्स से एक किताब निकाली और वहीं से पढ़ना शुरू किया जहाँ उसने छोड़ा था। यह एक नई रहस्यमयी किताब थी जो उसने शहर की एक किताबों की दुकान से खरीदी थी। सौभाग्य से, फेरिस व्हील की बत्तियाँ रात भर जलती रहीं। कुछ पन्ने पढ़ने के बाद, उसे एहसास हुआ कि वह कहानी को समझ नहीं पा रही है। उसकी आँखें तो पंक्तियों का अनुसरण कर रही थीं, लेकिन उसका मन कहीं और ही खोया हुआ था।
मियू ने हार मान ली और किताब बंद कर दी। उसने रात के आसमान की ओर देखा। आसमान बादलों की एक पतली परत से ढका हुआ था और उसे कोई तारा दिखाई नहीं दे रहा था। चाँद की हल्की सी रोशनी दिख रही थी। रोशनी की वजह से गोंडोला की कांच की खिड़की पर उसका चेहरा साफ दिखाई दे रहा था। वह काफी देर तक अपने चेहरे को देखती रही। यह सब कब खत्म होगा? उसने खुद से पूछा। हिम्मत रखो। बाद में यह सब बस एक मजेदार कहानी बनकर रह जाएगी जो तुम लोगों को सुनाओगी। सोचो, स्विट्जरलैंड के किसी मनोरंजन पार्क में फेरिस व्हील के अंदर बंद हो जाना कैसा होता है!
लेकिन यह कोई मजेदार कहानी नहीं बनी।
असली कहानी तो यहीं से शुरू होती है।

* * *

थोड़ी देर बाद, उसने दूरबीन उठाई और अपने अपार्टमेंट की खिड़की से बाहर देखा। कुछ भी नहीं बदला था। खैर, आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं? उसने खुद से पूछा और मुस्कुरा दी।

उसने इमारत की दूसरी खिड़कियों पर नज़र डाली। आधी रात हो चुकी थी और ज़्यादातर लोग सो रहे थे। ज़्यादातर खिड़कियाँ अंधेरी थीं। हालाँकि, कुछ लोग जाग रहे थे और उनके कमरों में बत्तियाँ जल रही थीं। निचली मंज़िलों पर रहने वालों ने एहतियात के तौर पर अपने पर्दे बंद कर रखे थे। ऊपरी मंज़िलों पर रहने वालों ने परवाह नहीं की और ठंडी रात की हवा आने देने के लिए अपने पर्दे खुले छोड़ दिए थे। इन कमरों के अंदर का जीवन शांत और पूरी तरह से सबके सामने था। (कौन सोच सकता है कि कोई आधी रात को फेरिस व्हील में छिपकर दूरबीन से बाहर झाँक रहा होगा?) हालाँकि, मियू को दूसरों के निजी जीवन में झाँकने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। उसे अपने खाली कमरे में देखना कहीं ज़्यादा दिलचस्प लग रहा था।

जब उसने खिड़कियों का पूरा चक्कर लगाकर अपने अपार्टमेंट में वापसी की, तो वह चौंक गई। उसके बेडरूम में एक नग्न पुरुष था। पहले तो उसे लगा कि वह गलत अपार्टमेंट में आ गई है। उसने दूरबीन को ऊपर-नीचे, आगे-पीछे घुमाया। लेकिन कोई गलती नहीं थी; यह उसका ही कमरा था। उसका फर्नीचर, फूलदान में उसके फूल, दीवार पर टंगी उसके अपार्टमेंट की पेंटिंग। वह आदमी फर्डिनेंडो था। इसमें कोई शक नहीं था। वह उसके बिस्तर पर बिल्कुल नग्न बैठा था। उसकी छाती और पेट पर बाल थे, और उसका लंबा लिंग किसी सुस्त जानवर की तरह ढीला लटका हुआ था।

वो मेरे कमरे में क्या कर रहा होगा? मियू के माथे पर पसीने की हल्की-सी बूंदा-बांदी हो गई। वो अंदर कैसे आया? मियू को कुछ समझ नहीं आ रहा था। पहले तो उसे गुस्सा आया, फिर हैरानी हुई। तभी खिड़की में एक औरत दिखाई दी। उसने आधी बाजू की सफेद ब्लाउज और नीली सूती छोटी स्कर्ट पहनी हुई थी। एक औरत? मियू ने दूरबीन को और कसकर पकड़ा और उस दृश्य पर अपनी निगाहें गड़ा दीं।

उसने जो देखा वह स्वयं ही थी।

* * *

मियू का दिमाग सुन्न हो गया। मैं यहीं हूँ, दूरबीन से अपने कमरे को देख रही हूँ। और उस कमरे में मैं ही हूँ। मियू ने दूरबीन को बार-बार फोकस किया। लेकिन चाहे वह कितनी भी बार देखे, कमरे के अंदर वही थी। ठीक वैसे ही कपड़े पहने हुए जैसे उसने अभी पहने थे। फर्डिनेंडो ने उसे गले लगाया और बिस्तर पर ले गया। उसे चूमते हुए, उसने कमरे के अंदर मौजूद मियू के कपड़े धीरे-धीरे उतारे। उसने उसका ब्लाउज उतारा, ब्रा खोली, स्कर्ट उतारी, उसकी गर्दन के निचले हिस्से को चूमा और अपने हाथों से उसके स्तनों को सहलाया। थोड़ी देर बाद, उसने एक हाथ से उसकी पैंटी उतार दी, ठीक वैसी ही पैंटी जैसी उसने अभी पहनी हुई थी। मियू की साँसें रुक गईं। आखिर क्या हो रहा था?

इससे पहले कि उसे कुछ समझ आता, फर्डिनेंडो का लिंग खड़ा हो गया था, एकदम सख्त। उसने इतना बड़ा लिंग पहले कभी नहीं देखा था। उसने मियू का हाथ पकड़ा और उसे अपने लिंग पर रख दिया। उसने उसे सहलाया और सिर से पैर तक चाटा। उसने अपना पूरा समय लिया। उसने कोई विरोध नहीं किया। अपार्टमेंट में रहने वाली मियू ने उसे जो चाहे करने दिया, बढ़ती हुई कामुकता का भरपूर आनंद लिया। बीच-बीच में वह हाथ बढ़ाकर फर्डिनेंडो के लिंग और अंडकोष को सहलाती और उसे अपने पूरे शरीर को छूने देती।

मियू इस अजीबोगरीब दृश्य से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रही थी। उसे बेचैनी हो रही थी। उसका गला इतना सूख गया था कि वह कुछ निगल नहीं पा रही थी। उसे उल्टी आने जैसा महसूस हो रहा था। सब कुछ विकृत, अतिरंजित और भयावह था, मानो किसी मध्ययुगीन प्रतीकात्मक चित्रकला जैसा हो। मियू के मन में यही विचार आया: कि वे जानबूझकर उसे यह दृश्य दिखा रहे हैं। उन्हें पता है कि मैं देख रही हूँ। फिर भी वह अपनी आँखें हटा नहीं पा रही थी।

एक खाली जगह।

तब क्या हुआ?

मियू को कुछ याद नहीं था। उसकी याददाश्त यहीं आकर अचानक रुक गई।
मुझे याद नहीं आ रहा, मियू ने कहा। उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। उसने धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे बस इतना पता है कि यह एक भयानक अनुभव था। मैं यहीं थी, और मेरा दूसरा रूप वहाँ था। और वह आदमी—फर्डिनेंडो—वहाँ मेरे साथ तरह-तरह की हरकतें कर रहा था।"
आपका मतलब क्या है, तरह-तरह की चीजें?

मुझे कुछ याद नहीं आ रहा। तरह-तरह की बातें। जब मैं फेरिस व्हील के अंदर बंद थी, तो उसने मेरे साथ जो चाहा वो किया—मुझ पर, जो वहाँ थी। ऐसा नहीं था कि मुझे सेक्स से डर लगता था। एक समय था जब मुझे कैजुअल सेक्स बहुत पसंद था। लेकिन वहाँ जो हो रहा था वो वैसा नहीं था। सब कुछ अर्थहीन और अश्लील था, बस एक ही मकसद था—मुझे पूरी तरह से अपवित्र करना। फर्डिनेंडो ने अपनी मोटी उंगलियों और विशाल लिंग से मुझे गंदा करने के लिए हर तरकीब आजमाई—हालाँकि मुझे ऐसा नहीं लग रहा था कि मैं गंदी हो रही हूँ। और अंत में, वो फर्डिनेंडो भी नहीं रह गया था।
क्या अब वो फर्नांडो नहीं है? मैंने मियू की तरफ देखा। अगर फर्नांडो नहीं था, तो फिर कौन था?
मुझे नहीं पता। मुझे याद नहीं आ रहा। लेकिन अंत में वो फर्नांडो नहीं रहा। या शायद शुरू से ही वो फर्नांडो नहीं था।

अगले ही पल मियू अस्पताल के बिस्तर पर लेटी हुई थी, उसके नग्न शरीर पर सफेद रंग का गाउन लिपटा हुआ था। उसके सभी जोड़ों में दर्द हो रहा था। डॉक्टर ने उसे घटना के बारे में बताया। सुबह मनोरंजन पार्क के एक कर्मचारी को उसका गिरा हुआ बटुआ मिला और उसे समझ आ गया कि क्या हुआ था। उसने फेरिस व्हील को नीचे उतारा और एम्बुलेंस को बुलाया। गोंडोला के अंदर मियू बेहोश पड़ी थी, जैसे ढेर हो गई हो। वह सदमे में लग रही थी, उसकी पुतलियाँ बेजान थीं। उसके चेहरे और बांहों पर खरोंचें थीं, उसका ब्लाउज खून से सना हुआ था। उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। कोई भी यह पता नहीं लगा सका कि उसे चोटें कैसे लगीं। शुक्र है कि किसी भी चोट से कोई स्थायी निशान नहीं रह गए। पुलिस ने फेरिस व्हील चलाने वाले

बूढ़े व्यक्ति को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया, लेकिन उसे बंद होने के ठीक पहले उसे फेरिस व्हील की सवारी कराने की कोई याद नहीं थी।
अगले दिन कुछ स्थानीय पुलिसकर्मी उससे पूछताछ करने आए। उसे उनके सवालों का जवाब देने में परेशानी हो रही थी। जब उन्होंने उसके चेहरे की तुलना पासपोर्ट में लगी उसकी तस्वीर से की, तो वे भौंहें चढ़ाकर खड़े हो गए, उनके चेहरे पर अजीब भाव थे, मानो उन्होंने कुछ भयानक निगल लिया हो। हिचकिचाते हुए उन्होंने उससे पूछा: महोदया, हमें यह पूछने के लिए खेद है, लेकिन क्या आप सचमुच पच्चीस वर्ष की हैं? उसने उत्तर दिया, जी हाँ, मेरे पासपोर्ट में भी यही लिखा है। उन्हें यह पूछने की क्या ज़रूरत थी?
कुछ देर बाद, जब वह चेहरा धोने के लिए बाथरूम गई, तो उसे समझ आ गया। उसके सिर का एक-एक बाल सफेद था। बिलकुल सफेद, जैसे अभी-अभी गिरी बर्फ। पहले तो उसे लगा कि आईने में कोई और है। वह घूम गई। लेकिन बाथरूम में वह अकेली थी। उसने एक बार फिर आईने में देखा। और उसी पल उसे सच्चाई का अहसास हो गया। आईने में दिख रही सफेद बालों वाली औरत खुद वह थी। वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

और मियू गायब हो गई।
“मैं अभी भी इस तरफ, यहीं थी। लेकिन मेरा दूसरा रूप, शायद मेरा आधा हिस्सा, दूसरी तरफ चला गया था। अपने साथ मेरे काले बाल, मेरी यौन इच्छा, मेरे मासिक धर्म, मेरा ओव्यूलेशन, शायद जीने की इच्छा भी। और जो आधा हिस्सा बचा है, वही आप यहां देख रहे हैं। मुझे लंबे समय से ऐसा ही लगता रहा है—कि स्विट्जरलैंड के एक छोटे से शहर में एक फेरिस व्हील पर, किसी अनजानी वजह से, मैं हमेशा के लिए दो हिस्सों में बंट गई। मुझे नहीं पता, शायद यह किसी तरह का सौदा था। ऐसा नहीं है कि मुझसे कुछ छीन लिया गया हो, क्योंकि वह सब अभी भी दूसरी तरफ मौजूद है। बस एक दर्पण हमें दूसरी तरफ से अलग करता है। लेकिन मैं उस एक शीशे की सीमा को कभी पार नहीं कर सकती। कभी नहीं।”
मियू ने अपने नाखूनों को हल्के से चबाया।
मुझे लगता है कि 'कभी नहीं' कहना बहुत कड़ा शब्द है। शायद कभी, कहीं, हम फिर

मिलेंगे और एक हो जाएंगे। लेकिन एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल अनुत्तरित रह जाता है। आईने के किस तरफ, कौन सा मैं, असली मैं हूँ? मुझे कोई अंदाज़ा नहीं है। क्या असली मैं वो हूँ जिसने फर्डिनेंडो को थामे रखा था? या वो जिसने उससे नफरत की थी? मुझमें यह पता लगाने का आत्मविश्वास नहीं है।

* * *

गर्मी की छुट्टियां खत्म होने के बाद मियू स्कूल नहीं लौटी। उसने विदेश में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और जापान वापस आ गई। और उसने फिर कभी कीबोर्ड को हाथ नहीं लगाया। संगीत बनाने की उसकी इच्छा उससे छिन गई थी, और वह इच्छा फिर कभी नहीं लौटी। एक साल बाद उसके पिता का निधन हो गया और उसने उनकी कंपनी का कार्यभार संभाल लिया।

“पियानो न बजा पाना मेरे लिए वाकई एक बड़ा झटका था, लेकिन मैंने इस बारे में ज्यादा नहीं सोचा। मुझे हल्का-सा अंदाजा था कि देर-सवेर ऐसा होना ही था। कभी न कभी तो...” मियू मुस्कुराईं। “दुनिया में तो बहुत सारे पियानोवादक हैं। बीस विश्वस्तरीय पियानोवादक काफी हैं। किसी रिकॉर्ड स्टोर पर जाइए और ‘वाल्डस्टीन’, ‘क्रेस्लेरियाना’ वगैरह के सारे वर्जन देख लीजिए। क्लासिकल संगीत की रिकॉर्डिंग सीमित होती है, और सीडी के लिए दुकानों में जगह भी सीमित होती है। रिकॉर्डिंग इंडस्ट्री के हिसाब से तो बीस बेहतरीन पियानोवादक काफी हैं। अगर मैं उनमें से एक नहीं भी होती तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता।”
मियू ने अपनी दस उंगलियां अपने सामने फैलाईं और उन्हें बार-बार पलटती रही। मानो वह अपनी याददाश्त की पुष्टि कर रही हो।
फ्रांस में लगभग एक साल रहने के बाद मैंने एक अजीब बात देखी। पियानोवादक जिनकी तकनीक मुझसे भी बदतर थी और जो मुझसे आधी भी प्रैक्टिस नहीं करते थे, वे अपने श्रोताओं को मुझसे कहीं ज़्यादा प्रभावित कर पाते थे। अंत में वे मुझे हरा देते थे। पहले तो मुझे लगा कि यह महज़ एक गलतफ़हमी है। लेकिन ऐसा इतनी बार हुआ कि मुझे गुस्सा आने लगा। यह कितना अन्याय है! मैंने सोचा। धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, मुझे समझ आया कि मुझमें कुछ कमी थी। कुछ बेहद ज़रूरी, हालाँकि

मुझे पता नहीं था कि क्या। शायद, वह भावनात्मक गहराई जो किसी व्यक्ति को ऐसा संगीत बनाने के लिए चाहिए जो दूसरों को प्रेरित कर सके। जापान में रहते हुए मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था। जापान में मैं कभी किसी से नहीं हारा, और निश्चित रूप से मेरे पास अपने प्रदर्शन की आलोचना करने का समय भी नहीं था। लेकिन पेरिस में, इतने सारे प्रतिभाशाली पियानोवादकों से घिरे होने पर, मुझे आखिरकार यह बात समझ में आ गई। यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया—जैसे सूरज उगता है और कोहरा छंट जाता है।

मियू ने आह भरी। उसने ऊपर देखा और मुस्कुराई।

"बचपन से ही मुझे अपने निजी नियम बनाना और उन पर अमल करना अच्छा लगता था। मैं बहुत ही स्वतंत्र और बेहद गंभीर स्वभाव की लड़की थी। मेरा जन्म जापान में हुआ, मैंने जापानी स्कूलों में पढ़ाई की और जापानी दोस्तों के साथ खेलते हुए बड़ी हुई। भावनात्मक रूप से मैं पूरी तरह जापानी थी, लेकिन राष्ट्रीयता के हिसाब से मैं विदेशी थी। तकनीकी रूप से देखा जाए तो जापान हमेशा एक विदेशी देश रहेगा। मेरे माता-पिता सख्त मिजाज के नहीं थे, लेकिन एक बात जो उन्होंने मुझे बचपन से ही समझाई थी, वो ये थी कि तुम यहाँ विदेशी हो। मैंने तय किया कि जीवित रहने के लिए मुझे खुद को मजबूत बनाना होगा।"

मियू ने शांत स्वर में बोलना जारी रखा।

"मज़बूत होना अपने आप में कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि मैं मज़बूत होने का इतना आदी हो गया था कि मैंने कभी कमज़ोरों को समझने की कोशिश ही नहीं की। मैं भाग्यशाली होने का इतना आदी हो गया था कि मैंने कम भाग्यशाली लोगों को समझने की कोशिश ही नहीं की। स्वस्थ होने का इतना आदी हो गया था कि मैंने अस्वस्थ लोगों के दर्द को समझने की कोशिश ही नहीं की। जब भी मैं किसी को मुसीबत में देखता, किसी को घटनाओं से पंगु बना हुआ देखता, तो मैं यही सोचता कि यह पूरी तरह से उसकी गलती है—वह बस पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहा था। शिकायत करने वाले लोग बस आलसी थे। जीवन के प्रति मेरा नज़रिया अटल और व्यावहारिक था, लेकिन उसमें मानवीय सहानुभूति की कमी थी। और मेरे आस-पास किसी ने भी इस बात की ओर ध्यान नहीं दिलाया।"

"मैंने सत्रह साल की उम्र में अपनी वर्जिनिटी खो दी थी और कई पुरुषों के साथ संबंध

बनाए थे। मेरे कई बॉयफ्रेंड थे और अगर मेरा मन करता तो मैं वन-नाइट स्टैंड भी कर लेती थी। लेकिन मैंने कभी किसी से सच्चा प्यार नहीं किया। मेरे पास समय ही नहीं था। मैं बस एक विश्व स्तरीय पियानोवादक बनने के बारे में सोचती रहती थी और उस रास्ते से भटकना मेरे लिए नामुमकिन था। मुझमें कुछ कमी थी, लेकिन जब तक मुझे उस कमी का एहसास हुआ, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।"
उसने फिर से अपने दोनों हाथ आगे फैलाए और कुछ देर तक सोचती रही।
"इस लिहाज से, चौदह साल पहले स्विट्जरलैंड में जो कुछ हुआ, वह शायद मैंने खुद ही रचा था। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है।"

मियू की शादी उनतीस साल की उम्र में हुई। स्विट्जरलैंड में हुई उस घटना के बाद से, वह पूरी तरह से उदासीन हो गई थी और किसी के साथ भी यौन संबंध नहीं बना पाती थी। उसके अंदर कुछ हमेशा के लिए खो गया था। उसने यही बात अपने जीवनसाथी को बताई। उसने समझाया, "इसीलिए मैं किसी से शादी नहीं कर सकती।" लेकिन वह व्यक्ति मियू से प्यार करता था और भले ही यह एक निस्वार्थ रिश्ता हो, वह अपना पूरा जीवन उसके साथ बिताना चाहता था। मियू के पास उसके प्रस्ताव को ठुकराने का कोई ठोस कारण नहीं था। वह उसे बचपन से जानती थी और हमेशा से उसे पसंद करती थी। रिश्ता चाहे जैसा भी हो, वही एकमात्र व्यक्ति था जिसके साथ वह अपना जीवन बिताना चाहती थी। साथ ही, व्यावहारिक दृष्टि से भी, पारिवारिक व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए शादी करना महत्वपूर्ण था।
मियू ने आगे कहा।
"मैं और मेरे पति सिर्फ वीकेंड पर ही मिलते हैं, और आमतौर पर हमारी आपस में अच्छी बनती है। हम अच्छे दोस्तों की तरह हैं, जीवन साथी हैं जो साथ में अच्छा समय बिताते हैं। हम हर तरह की बातें करते हैं, और एक-दूसरे पर पूरा भरोसा करते हैं। उनकी सेक्स लाइफ कैसी है, यह मुझे नहीं पता, और मुझे इसकी परवाह भी नहीं है। हालांकि, हम कभी शारीरिक संबंध नहीं बनाते—कभी एक-दूसरे को छूते भी नहीं। मुझे बुरा लगता है, लेकिन मैं उन्हें छूना नहीं चाहती। बस छूना नहीं चाहती।"
बातचीत से थककर मियू ने चुपचाप अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। बाहर आसमान में उजाला हो गया था।
"मैं अतीत में भी जीवित था, और अब भी जीवित हूँ, यहाँ बैठकर आपसे बात कर रहा

हूँ। लेकिन जो आप यहाँ देख रहे हैं, वह वास्तव में मैं नहीं हूँ। यह तो बस मेरे अतीत की एक परछाई है। आप सचमुच जी रहे हैं, लेकिन मैं नहीं। यहाँ तक कि जो शब्द मैं अभी कह रहा हूँ, वे भी खोखले लग रहे हैं, जैसे कोई गूँज हो।"

बिना कुछ कहे मैंने मियू के कंधे पर हाथ रख दिया। मुझे सही शब्द नहीं मिल रहे थे, इसलिए मैंने बस उसे थाम लिया।

मुझे मियू से प्यार हो गया है। ज़ाहिर है, मुझे मियू से उतना ही प्यार है जितना कि उसके इस रूप से। लेकिन मुझे मियू के दूसरे रूप से भी उतना ही प्यार है। जैसे ही यह ख्याल मेरे मन में आया, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं खुद दो हिस्सों में बंट रही हूँ—एक तेज़ चरमराहट के साथ। मानो मियू का खुद का टूटना एक दरार बन गया हो जिसने मुझे जकड़ लिया हो। यह एहसास इतना प्रबल था कि मैं जानती थी कि इससे लड़ने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकती।

लेकिन एक सवाल अभी भी बाकी है। अगर यह पक्ष, जहां मियू है, वास्तविक दुनिया नहीं है—अगर यह पक्ष वास्तव में दूसरा पक्ष है—तो मेरा क्या होगा, जो उसके साथ एक ही समय और स्थान के तल को साझा करता है?

मैं आखिर कौन हूँ?

अध्याय 13

मैंने दोनों दस्तावेज़ दो बार पढ़े, पहले सरसरी नज़र से, फिर धीरे-धीरे, बारीकियों पर ध्यान देते हुए, उन्हें अपने मन में बिठा लिया। ये दस्तावेज़ निश्चित रूप से सुमिरे के ही थे; लेखन में उनकी अनूठी शैली झलक रही थी। फिर भी, समग्र लहजे में कुछ अलग था, जिसे मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा था। यह अधिक संयमित, अधिक दूरी वाला था। फिर भी, इसमें कोई संदेह नहीं था—दोनों दस्तावेज़ सुमिरे ने ही लिखे थे।

कुछ पल हिचकिचाने के बाद, मैंने फ्लॉपी डिस्क को अपने बैग की जेब में रख लिया। अगर सुमिरे बिना किसी घटना के वापस आ जाती, तो मैं उसे वहीं रख देता जहाँ वह

थी। समस्या यह थी कि अगर वह वापस नहीं आई तो क्या होगा। अगर कोई उसके सामान की तलाशी लेता, तो उसे डिस्क ज़रूर मिल जाती, और मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि कोई और मेरी पढ़ी हुई चीज़ को देखे।

दस्तावेज़ पढ़ने के बाद मुझे घर से निकलना पड़ा। मैंने साफ़ कमीज़ पहनी, झोपड़ी से निकला और सीढ़ियों से उतरकर शहर की ओर चल पड़ा। मैंने सौ डॉलर के ट्रैवलर चेक बदलवाए, एक कियोस्क से अंग्रेज़ी अखबार खरीदा और एक कैफ़े में छाते के नीचे बैठकर पढ़ने लगा। एक ऊंघते हुए वेटर ने मुझसे नींबू पानी और टोस्ट पर पिघला हुआ पनीर मंगवाया। उसने बड़ी आराम से छोटी पेंसिल से मेरा ऑर्डर लिखा। पसीने से भीगी कमीज़ के पीछे पसीने का एक बड़ा धब्बा बन गया था। ऐसा लग रहा था मानो वह धब्बा कोई संदेश दे रहा हो, पर मैं उसे समझ नहीं पाया।

मैंने मशीनी अंदाज़ में आधे अखबार के पन्ने पलटे, फिर बंदरगाह के दृश्य को बेसुध निगाहों से देखने लगा। एक दुबला-पतला काला कुत्ता अचानक कहीं से आया, मेरी टांगों को सूंघा, फिर दिलचस्पी खोकर धीरे-धीरे चला गया। लोग सुस्त गर्मी की दोपहर को अपनी-अपनी जगह पर बिता रहे थे। ऐसा लग रहा था कि सिर्फ़ वेटर और कुत्ता ही हिल-डुल रहे हैं, हालाँकि मुझे शक था कि वे ज़्यादा देर तक ऐसे ही बैठे रहेंगे। जिस कियोस्क से मैंने अखबार खरीदा था, वहाँ बैठा बूढ़ा आदमी छाते के नीचे टांगें फैलाकर गहरी नींद में सो रहा था। चौक में नायक की मूर्ति हमेशा की तरह भावहीन खड़ी थी, उसकी पीठ तेज़ धूप की ओर थी।

मैंने ठंडे नींबू पानी के गिलास से अपनी हथेलियों और माथे को ठंडा किया, और अपने मन में बार-बार यह सोचने लगी कि सुमिरे के गायब होने और उसके द्वारा लिखी गई बातों के बीच क्या संबंध हो सकता है।

सुमिरे ने लंबे समय से कुछ नहीं लिखा था। शादी के रिसेप्शन में मियू से पहली बार मिलने के बाद से ही लिखने की उसकी इच्छा हवा में उड़ गई थी। फिर भी, इस छोटे से द्वीप पर उसने थोड़े ही समय में वे दो रचनाएँ लिख डालीं। कुछ ही दिनों में इतना कुछ पूरा करना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। सुमिरे को अपनी मेज पर बैठकर लिखने के लिए किसी चीज़ ने ज़रूर प्रेरित किया होगा। आखिर प्रेरणा कहाँ से आई?

असल बात तो यह है कि इन दोनों रचनाओं को जोड़ने वाला विषय क्या था? मैंने ऊपर देखा, घाट पर बैठे पक्षियों को निहारा और इस बारे में कुछ सोचा।

गर्मी इतनी तेज़ थी कि जटिल मामलों के बारे में सोचना नामुमकिन था। सच कहूँ तो

मैं उलझन में था और थका हुआ भी। फिर भी, मानो किसी हारी हुई सेना के बचे-खुचे सैनिकों को इकट्ठा कर रहा हो—बिना ढोल-नगाड़ों और तुरहियों के—मैंने अपने बिखरे हुए विचारों को समेटा। मेरा ध्यान केंद्रित हुआ और मैंने चीज़ों को जोड़ना शुरू किया।

"यहाँ असल में महत्वपूर्ण बात यह नहीं है," मैंने धीरे से अपने आप से कहा, "कि दूसरों ने क्या-क्या बड़ी-बड़ी बातें सोची हैं, बल्कि वे छोटी-छोटी बातें हैं जो तुमने खुद सोची हैं।" यह मेरा वही पुराना सिद्धांत था जो मैं अपने छात्रों को सिखाता था। लेकिन क्या यह सच में सही था? कहना तो आसान है, पर अमल करना नहीं। छोटी-छोटी बातों से शुरुआत करना भी मुश्किल होता है, बड़ी तस्वीर की तो बात ही छोड़ो। या शायद विचार जितना छोटा होता है, उसे समझना उतना ही कठिन होता है? ऊपर से घर से इतनी दूर होना भी एक समस्या थी।

सुमिरे का सपना। मियू का अलगाव।

मुझे एहसास हुआ कि ये दो अलग-अलग दुनिया हैं। यही इनमें समान तत्व है।

दस्तावेज़ 1: इसमें सुमिरे के एक सपने का वर्णन है। वह अपनी मृत माँ से मिलने के लिए एक लंबी सीढ़ी चढ़ रही है। लेकिन जैसे ही वह वहाँ पहुँचती है, उसकी माँ पहले ही दूसरी दुनिया में लौट रही होती है। और सुमिरे उसे रोक नहीं पाती। अंत में, वह एक मीनार के शिखर पर खड़ी रह जाती है, जहाँ उसके चारों ओर एक अलग दुनिया की वस्तुएँ बिखरी होती हैं। सुमिरे को ऐसे कई सपने आ चुके हैं।

दस्तावेज़ 2: यह दस्तावेज़ चौदह वर्ष पूर्व मियू के विचित्र अनुभवों से संबंधित है। वह एक छोटे से स्विस शहर के मनोरंजन पार्क में रात भर फेरिस व्हील के अंदर फंसी रही, और दूरबीन से अपने कमरे को देखते हुए उसने वहाँ अपना दूसरा रूप देखा। एक हमशक्ल। और इस अनुभव ने मियू को एक व्यक्ति के रूप में पूरी तरह से नष्ट कर दिया—या कम से कम इस विनाश को मूर्त रूप दे दिया। जैसा कि मियू ने बताया, वह दो हिस्सों में बँट गई थी, और हर हिस्से के बीच एक दर्पण था। सुमिरे ने मियू को यह कहानी बताने के लिए राजी किया और इसे यथासंभव अच्छे से लिख लिया।

यह पक्ष—वह पक्ष। यही साझा सूत्र था। एक पक्ष से दूसरे पक्ष की ओर गति। सुमिरे इस विषय से आकर्षित हुई होगी और उसे इतना समय लिखकर प्रेरित होने का कारण भी यही था। उसके अपने शब्दों में कहें तो, यह सब लिखने से उसे सोचने में मदद मिली।

वेटर मेरे टोस्ट के बचे हुए टुकड़े हटाने आया और मैंने लेमोनेड का एक और गिलास

मंगवाया। मैंने उससे कहा, इसमें खूब सारी बर्फ डाल देना। जब वह गिलास लेकर आया तो मैंने एक घूंट लिया और उसी से अपना माथा ठंडा किया।

“और अगर मियू मुझे स्वीकार नहीं करती, तो फिर क्या होगा?” सुमिरे ने लिखा था।

“समय आने पर मैं उस बारे में सोचूंगी। खून तो बहाना ही पड़ेगा। मैं अपनी छुरी तेज कर लूंगी, किसी कुत्ते का गला काटने के लिए तैयार रहूंगी।”

वह क्या कहना चाह रही थी? क्या वह आत्महत्या का संकेत दे रही थी? मुझे यह बात समझ नहीं आई। उसके शब्दों में मृत्यु की कोई दुर्गंध नहीं थी। बल्कि, उनमें मुझे आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति, एक नई शुरुआत करने का संघर्ष महसूस हुआ। कुत्ते और खून महज़ रूपक हैं, जैसा कि मैंने उसे इनोगाशिरा पार्क की उस बेंच पर समझाया था। इनका अर्थ जीवनदायी जादुई शक्तियों से मिलता है। चीनी द्वारों की कहानी इस बात का रूपक थी कि कैसे एक कहानी उस जादू को समेट लेती है।

कहीं किसी कुत्ते का गला काटने के लिए तैयार।

कहीं?

मेरे विचार एक ठोस दीवार से टकरा गए। बिलकुल गतिरोध।

सुमिरे कहाँ गई होगी? क्या इस द्वीप पर कोई ऐसी जगह थी जहाँ उसे जाना पड़ा?

सुमिरे की छवि मेरे दिमाग से नहीं निकल रही थी, जो किसी दूरदराज इलाके में कुएं में गिर गई थी और अकेली मदद का इंतजार कर रही थी। घायल, अकेली, भूखी और प्यासी। इस सोच ने मुझे लगभग पागल कर दिया था।

पुलिस ने साफ कर दिया था कि द्वीप पर एक भी कुआँ नहीं है। उन्होंने कस्बे के आसपास कहीं भी किसी कुएँ के बारे में नहीं सुना था। उन्होंने कहा कि अगर होते भी, तो सबसे पहले हमें पता चलता। मुझे उनकी बात माननी पड़ी।

मैंने एक सिद्धांत पेश करने का फैसला किया।

सुमिरे दूसरी तरफ चली गई।

इससे बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। सुमिरे ने दर्पण तोड़कर दूसरी ओर की यात्रा की। वहाँ मौजूद दूसरी मियू से मिलने के लिए। अगर इस तरफ की मियू ने उसे अस्वीकार कर दिया, तो क्या यही तार्किक बात नहीं होगी?

मैंने उसकी लिखी हुई बातें याद कर लीं: “तो टकराव से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए? तर्कसंगत रूप से, यह आसान है। जवाब है सपने देखना। लगातार सपने देखते रहना। सपनों की दुनिया में प्रवेश करना और कभी बाहर न आना। वहीं जीवन

भर के लिए रहना।”

लेकिन एक सवाल अभी भी बाकी है। एक अहम सवाल। आप वहां कैसे जाएंगे?

सरल शब्दों में कहें तो, यह आसान है। हालांकि, इसे समझाना आसान नहीं है।

मैं ठीक वहीं वापस आ गया जहाँ से मैंने शुरुआत की थी।

मैंने टोक्यो के बारे में सोचा। अपने अपार्टमेंट के बारे में, उस स्कूल के बारे में जहाँ मैं पढ़ाती थी, और रसोई के उस कचरे के बारे में जिसे मैंने चुपके से स्टेशन पर कूड़ेदान में फेंक दिया था। मैं जापान से सिर्फ़ दो दिन दूर रही थी, लेकिन यह पहले से ही एक अलग दुनिया लग रही थी। नया सत्र एक हफ़्ते में शुरू होने वाला था। मैंने खुद को पैंतीस विद्यार्थियों के सामने खड़े होने की कल्पना की। इतनी दूरी से देखने पर, किसी को भी पढ़ाना—यहाँ तक कि दस साल के बच्चों को भी—बेतुका सा लगता था।

मैंने अपने धूप के चश्मे उतारे, पसीने से तर माथे को रुमाल से पोंछा और फिर से पहन लिए। और समुद्री पक्षियों को निहारने लगा।

मैंने सुमिरे के बारे में सोचा। उस समय मुझे जो ज़बरदस्त उत्तेजना हुई थी, जब वह अपने नए घर में शिफ्ट हुई थी और मैं उसके बगल में बैठा था। ऐसी ज़बरदस्त, चट्टान जैसी सख्त उत्तेजना मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। ऐसा लग रहा था जैसे मेरा पूरा शरीर फटने वाला हो। उस समय, मेरी कल्पना में—कुछ-कुछ वैसी ही सपनों की दुनिया जैसी सुमिरे ने लिखी थी—मैंने उससे प्रेम किया। और वह अनुभूति मेरे अब तक के किसी भी यौन अनुभव से कहीं ज़्यादा वास्तविक थी।

मैंने गला साफ करने के लिए थोड़ा नींबू पानी पी लिया।

मैं अपनी परिकल्पना पर लौट आया, और उसे एक कदम आगे बढ़ाया। सुमिरे को किसी तरह बाहर निकलने का रास्ता मिल गया। वह किस तरह का रास्ता था, और उसने उसे कैसे खोजा, यह मुझे पता नहीं था। इसे अभी रहने देते हैं। मान लीजिए कि यह एक तरह का दरवाजा है। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और मन में एक छवि बनाई—एक विस्तृत छवि कि वह दरवाजा कैसा दिखता होगा। बस एक साधारण दरवाजा, एक साधारण दीवार का हिस्सा। सुमिरे को यह दरवाजा मिला, उसने कुंडी घुमाई, और बाहर निकल गई—एक तरफ से दूसरी तरफ। उसने बस पतले रेशमी पजामे और ढीली चप्पलें पहनी हुई थीं।

उस दरवाजे के उस पार क्या था, यह मेरी कल्पना से परे था। दरवाजा बंद हो गया, और सुमिरे अब कभी वापस नहीं आएगी।

मैं कॉटेज लौट आया और फ्रिज में जो कुछ मिला उससे एक साधारण सा खाना बनाया। टमाटर और तुलसी का पास्ता, सलाद और एक एमस्टेल बियर। मैं बाहर बरामदे में जाकर बैठ गया, सोच में डूबा हुआ। या शायद कुछ सोच ही नहीं रहा था। किसी ने फोन नहीं किया। मियू शायद एथेंस से फोन करने की कोशिश कर रही होगी, लेकिन फोन के काम करने की उम्मीद तो की ही नहीं जा सकती थी।

पल-पल आसमान का नीला रंग और गहरा होता गया, समुद्र से एक विशाल गोलाकार चंद्रमा उगता हुआ दिखाई दिया, और कुछ तारे आकाश में चमकते हुए नज़र आए। ढलानों पर हल्की हवा बह रही थी, जिससे हिबिस्कस के फूल सरसरा रहे थे। घाट के सिरे पर स्थित बिना कर्मचारी वाला प्रकाशस्तंभ अपनी प्राचीन दिखने वाली रोशनी के साथ बार-बार टिमटिमा रहा था। लोग धीरे-धीरे ढलान से नीचे उतर रहे थे, अपने साथ गधों को ले जा रहे थे। उनकी तेज़ बातचीत पास आती गई, फिर दूर जाकर मंद पड़ गई। मैं चुपचाप इस सब को देखता रहा, यह अनोखा दृश्य मुझे बिल्कुल स्वाभाविक लग रहा था।

अंत में फोन की घंटी नहीं बजी, और सुमिरे नहीं आई। चुपचाप, धीरे-धीरे समय बीतता गया, शाम गहरी होती गई। मैंने सुमिरे के कमरे से कुछ कैसेट लिए और उन्हें लिविंग रूम के स्टीरियो पर बजाया। उनमें से एक मोजार्ट के गीतों का संग्रह था। हाथ से लिखे लेबल पर लिखा था, एलिज़ाबेथ श्वार्ज़कोफ़ और वाल्टर गिसेकिंग (p)□ मुझे शास्त्रीय संगीत के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन एक बार सुनने पर ही मुझे पता चल गया कि यह संगीत कितना मधुर है। गायन शैली थोड़ी पुरानी थी, लेकिन इसने मुझे किसी सुंदर, यादगार गद्य को पढ़ने की याद दिला दी—यह आपको सीधे बैठने और ध्यान देने के लिए बाध्य करती थी। ऐसा लग रहा था मानो कलाकार मेरे सामने ही हों, उनके कोमल स्वर कभी उभरते, कभी धीमे पड़ते, फिर उभरते। संग्रह में से एक गीत "सुमिरे" ज़रूर होगा। मैं अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया, आँखें बंद कर लीं, और इस संगीत को अपनी बिछड़ी हुई दोस्त के साथ साझा किया।

संगीत की आवाज़ से मेरी नींद खुली। दूर से आती हल्की-हल्की आवाज़। मानो कोई गुमनाम नाविक समुद्र की गहराई से लंगर खींच रहा हो, वैसे ही धीरे-धीरे उस धीमी आवाज़ ने मुझे होश में लाया। मैं बिस्तर पर बैठ गया, खुली खिड़की की तरफ झुका और ध्यान से सुनने लगा। यह पक्का संगीत ही था। मेरे बिस्तर के पास रखी घड़ी में एक बज चुका था। संगीत? रात के इस समय?

मैंने अपनी पतलून और कमीज़ पहनी, जूते पहने और बाहर चला गया। मोहल्ले की सारी बत्तियाँ बुझी हुई थीं, सड़कें सुनसान थीं। न हवा चल रही थी, न लहरों की आवाज़। बस चाँदनी धरती को नहला रही थी। मैं वहीं खड़ा होकर फिर से सुनने लगा। अजीब बात थी, संगीत पहाड़ियों की चोटी से आता हुआ प्रतीत हो रहा था। उन ऊँचे पहाड़ों पर कोई गाँव नहीं थे, बस कुछ चरवाहे और मठ थे जहाँ भिक्षु अपना एकांत जीवन व्यतीत करते थे। यह कल्पना करना मुश्किल था कि ये दोनों समूह रात के इस समय कोई उत्सव मना रहे होंगे।

बाहर संगीत ज़्यादा सुनाई दे रहा था। मैं धुन तो नहीं समझ पा रहा था, लेकिन लय से साफ था कि यह ग्रीक संगीत था। इसमें लाइव संगीत की असमान, तीखी आवाज़ थी, न कि स्पीकर से बजने वाले संगीत की।

तब तक मैं पूरी तरह जाग चुका था। गर्मी की रात की हवा सुहावनी थी, उसमें एक रहस्यमय गहराई थी। अगर मुझे सुमिरे की चिंता न होती, तो शायद मैं खुशी से झूम उठता। मैंने अपने हाथ कमर पर रखे, अंगड़ाई ली, आसमान की ओर देखा और गहरी सांस ली। रात की ठंडक मुझमें समा गई। अचानक मेरे मन में एक ख्याल आया—शायद, इसी क्षण, सुमिरे भी यही संगीत सुन रही होगी।

मैंने संगीत की दिशा में थोड़ी देर चलने का फैसला किया। मुझे पता लगाना था कि यह संगीत कहाँ से आ रहा है, इसे कौन बजा रहा है। पहाड़ी की चोटी तक जाने वाला रास्ता वही था जिससे मैं उस सुबह समुद्र तट पर गया था, इसलिए मुझे रास्ता पता था। मैंने तय किया कि मैं जहाँ तक जा सकता हूँ, जाऊँगा।

चांदनी की तेज रोशनी से सब कुछ जगमगा रहा था, जिससे चलना आसान हो गया था। चट्टानों के बीच जटिल परछाइयाँ बन रही थीं, जिससे ज़मीन पर अजीबोगरीब रंग बिखरे हुए थे। जब भी मेरे दौड़ने वाले जूतों के तलवे सड़क पर किसी कंकड़ को कुचलते, आवाज़ तेज़ हो जाती। जैसे-जैसे मैं ढलान पर ऊपर चढ़ता गया, संगीत और भी स्पष्ट होता गया। जैसा मैंने अनुमान लगाया था, यह पहाड़ी की चोटी से आ रहा था। मुझे किसी तरह के वाद्य यंत्रों की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जैसे बूज़ुकी, अकॉर्डियन और बांसुरी। शायद गिटार भी। इसके अलावा मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। न कोई गाना, न लोगों की चीखें। बस वही संगीत, एक अलग, लगभग नीरस गति से लगातार बज रहा था।

मैं पहाड़ की चोटी पर क्या हो रहा था, यह देखना चाहता था, फिर भी साथ ही मुझे

लगा कि मुझे दूरी बनाए रखनी चाहिए। एक अनियंत्रित जिज्ञासा और सहज भय के बीच संघर्ष चल रहा था। फिर भी, मुझे आगे बढ़ना ही था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं सपने में हूँ। वह सिद्धांत जो अन्य विकल्पों को संभव बनाता था, गायब था। या शायद वह विकल्प ही गायब था जिसने उस सिद्धांत को संभव बनाया था?

जहां तक मुझे पता है, कुछ दिन पहले सुमिरे भी उसी संगीत को सुनकर जागी थी, और जिज्ञासावश वह अपने पायजामे में ही ढलान पर चढ़ गई थी।

मैं रुका और पीछे मुड़कर देखा। ढलान शहर की ओर धीरे-धीरे मुड़ती हुई जा रही थी, मानो किसी विशालकाय कीड़े के पदचिह्न हों। फिर मैंने चांदनी में आसमान की ओर देखा और अपनी हथेली पर एक नज़र डाली। अचानक मुझे समझ आ गया कि यह अब मेरी हथेली नहीं है। मैं इसे समझा नहीं सकता। लेकिन एक नज़र में ही मैं समझ गया। मेरी हथेली अब मेरी हथेली नहीं थी, मेरे पैर अब मेरे पैर नहीं थे।

फीकी चांदनी में नहाया हुआ मेरा शरीर, किसी प्लास्टर की कठपुतली की तरह, अपनी सारी जीवंत गर्माहट खो चुका था। मानो किसी जादूगर ने मुझ पर जादू कर दिया हो, और मेरी क्षणभंगुर जिंदगी को मिट्टी के इस ढेर में समाहित कर दिया हो। जीवन की चिंगारी बुझ चुकी थी। मेरा असली जीवन कहीं सो गया था, और कोई बेनाम व्यक्ति उसे सूटकेस में भरकर जाने की तैयारी कर रहा था।

एक भयानक ठंड मेरे शरीर में दौड़ गई और मेरा दम घुटने लगा। मानो किसी ने मेरी कोशिकाओं को उलट-पुलट कर दिया हो, मेरे दिमाग को थामे रखने वाले धागों को तोड़ दिया हो। मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा था। मैं बस यही कर पाया कि जितनी जल्दी हो सके अपने सुकून के ठिकाने पर लौट जाऊं। मैंने एक गहरी सांस ली और चेतना के सागर में बिल्कुल गहराई तक डूब गया। भारी पानी को धकेलते हुए मैं तेजी से नीचे कूदा और वहां एक विशाल चट्टान को दोनों हाथों से पकड़ लिया। पानी ने मेरे कान के पर्दे फाड़ दिए। मैंने अपनी आंखें कसकर बंद कर लीं, सांस रोक ली, और संघर्ष करता रहा। एक बार मन बना लेने के बाद, यह इतना मुश्किल नहीं था। मैं इन सब चीजों का आदी हो चुका था—पानी का दबाव, हवा की कमी, जमा देने वाला अंधेरा, अराजकता से निकलने वाले संकेत। यह कुछ ऐसा था जिस पर मैंने बचपन में बार-बार महारत हासिल की थी।

समय उलट गया, पीछे मुड़ गया, सिमट गया, फिर से व्यवस्थित हो गया। दुनिया अनंत तक फैली हुई थी—और फिर भी परिभाषित और सीमित थी। तीक्ष्ण छवियाँ—

केवल छवियाँ ही—अंधेरे गलियारों से गुज़र रही थीं, जेलीफ़िश की तरह, भटकती आत्माओं की तरह। लेकिन मैंने खुद को उन्हें न देखने के लिए दृढ़ संकल्पित किया। अगर मैंने उन्हें ज़रा सा भी देखा, तो वे अर्थ में लिपट जाएँगी। अर्थ समय से जुड़ा हुआ था, और समय मुझे सतह पर आने के लिए मजबूर कर रहा था। मैंने अपने मन को पूरी तरह से बंद कर लिया, जुलूस के गुज़रने का इंतज़ार करते हुए।

मैं कितनी देर तक उसी अवस्था में रहा, मुझे नहीं पता। जब मैं सतह पर आया, आँखें खोलीं और एक गहरी साँस ली, तब तक संगीत बंद हो चुका था। वह रहस्यमयी प्रस्तुति समाप्त हो चुकी थी। मैंने ध्यान से सुना। मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। बिलकुल कुछ भी नहीं। न संगीत, न लोगों की आवाज़ें, न हवा की सरसराहट।

मैंने समय देखने की कोशिश की, लेकिन मैंने घड़ी नहीं पहनी हुई थी। मैंने उसे अपने बिस्तर के पास ही छोड़ दिया था।

आकाश तारों से जगमगा रहा था। या शायद यह मेरा भ्रम था? आकाश मानो बदल गया था। मेरे भीतर जो अलगाव का भाव था, वह गायब हो गया था। मैंने अंगड़ाई ली, अपनी बाहें और उंगलियां मोड़ीं। मुझे कहीं भी बेगानापन महसूस नहीं हुआ। मेरी बगलें थोड़ी नम थीं, बस इतना ही।

मैं घास से उठा और पहाड़ी पर चढ़ना जारी रखा। मैं इतनी दूर आ चुका था, तो अब चोटी तक पहुँच ही जाना चाहिए था। क्या सचमुच वहाँ संगीत था? मुझे खुद देखना था, भले ही बहुत कम सुराग ही क्यों न बचा हो। पाँच मिनट में मैं शिखर पर पहुँच गया। दक्षिण की ओर पहाड़ी ढलान से नीचे समुद्र, बंदरगाह और सोए हुए शहर की ओर जा रही थी। कुछ स्ट्रीटलाइट्स समुद्र तट की सड़क को रोशन कर रही थीं। पहाड़ का दूसरा भाग अंधेरे में डूबा हुआ था, एक भी रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी। मैंने अँधेरे में टकटकी लगाए देखा, और अंत में चाँदनी में पहाड़ियों की एक श्रृंखला दिखाई दी। उनके आगे और भी गहरा अँधेरा था। और यहाँ मेरे चारों ओर, इस बात का कोई संकेत नहीं था कि कुछ ही समय पहले एक जीवंत उत्सव हुआ था।

हालांकि उसकी गूंज मेरे दिमाग में गहराई तक बसी हुई थी, अब मुझे यकीन भी नहीं था कि मैंने संगीत सुना था। समय बीतने के साथ-साथ मेरा यकीन कम होता गया। शायद यह सब एक भ्रम था, मेरे कानों ने किसी दूसरे समय और स्थान से संकेत ग्रहण किए थे। यह बात समझ में आती थी—यह सोचना कि लोग रात के 1:00 बजे पहाड़ की चोटी पर संगीत बजाने के लिए इकट्ठा होंगे, काफी हास्यास्पद था।

शिखर के ऊपर आकाश में, खुरदुरा सा दिखने वाला चाँद भयानक रूप से पास मंडरा रहा था। पत्थर के एक कठोर गोले जैसा, जिसकी सतह समय के निर्दयी प्रवाह से घिस चुकी थी। उसकी सतह पर भयावह परछाइयाँ अंधी कैंसर कोशिकाओं की तरह थीं जो जीवन की गर्माहट की ओर अपने स्पर्शक फैला रही थीं। चाँदनी ने हर ध्वनि को विकृत कर दिया, सारे अर्थ मिटा दिए, हर मन को अराजकता में डाल दिया। इसने मियू को अपना दूसरा रूप दिखाया। इसने सुमिरे की बिल्ली को कहीं दूर ले गई। इसने सुमिरे को गायब कर दिया। और इसने मुझे यहाँ ला खड़ा किया, उस संगीत के बीच जो शायद कभी अस्तित्व में ही नहीं था। मेरे सामने अथाह अंधकार था; मेरे पीछे, फीकी रोशनी की दुनिया। मैं एक अनजान धरती पर एक पहाड़ की चोटी पर चाँदनी में नहाया खड़ा था। शायद यह सब शुरू से ही सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध था।

मैं झोपड़ी में लौटा और मियू की ब्रांडी का एक गिलास गटक लिया। मैंने सोने की कोशिश की, लेकिन नींद नहीं आई। पलक भी नहीं झपकी। जब तक पूर्वी आकाश में उजाला नहीं हुआ, मैं चाँद, गुरुत्वाकर्षण और दुनिया में हलचल के प्रभाव में जकड़ा रहा।

मैंने कल्पना की कि बिल्लियाँ एक बंद कमरे में भूख से मर रही हैं। कोमल, छोटे मांसाहारी जीव। मैं—असली मैं—मर चुका था, और वे जीवित थीं, मेरा मांस खा रही थीं, मेरा दिल चबा रही थीं, मेरा खून चूस रही थीं। अगर मैं बहुत ध्यान से सुनता, तो कहीं दूर मुझे बिल्लियों के मेरे दिमाग को चाटने की आवाज़ सुनाई देती। तीन फुर्तीली बिल्लियाँ, मेरे टूटे हुए सिर को घेरे हुए, अंदर के गूदेदार भूरे सूप को चाट रही थीं। उनकी लाल, खुरदरी जीभों के सिरे मेरे दिमाग की कोमल परतों को चाट रहे थे। और उनकी जीभों के हर चाटने के साथ, मेरा दिमाग—गर्म हवा के एक झटके की तरह—झपकाता और गायब हो जाता।

अध्याय 14

अंत में हमें कभी पता नहीं चला कि सुमिरे का क्या हुआ। जैसा कि मियू ने कहा, वह धुएं की तरह गायब हो गई।

दो दिन बाद मियू दोपहर की फेरी से जापानी दूतावास के एक अधिकारी और पर्यटन मामलों के प्रभारी एक पुलिस अधिकारी के साथ द्वीप पर वापस आईं। उन्होंने स्थानीय पुलिस से मुलाकात की और द्वीपवासियों को शामिल करते हुए एक व्यापक जांच शुरू की। पुलिस ने सूचना के लिए सार्वजनिक अपील जारी की और एक राष्ट्रीय समाचार पत्र में सुमिरे की पासपोर्ट फोटो का बड़ा संस्करण प्रकाशित किया। कई लोगों ने संपर्क किया, लेकिन कोई ठोस जानकारी नहीं मिली। हर बार मिली जानकारी किसी और के बारे में ही निकली।

सुमिरे के माता-पिता भी द्वीप पर आ गए थे। उनके आने से ठीक पहले मैं वहाँ से निकल गया। नया स्कूल सत्र शुरू होने ही वाला था, लेकिन सबसे बुरी बात यह थी कि मैं उनसे मिलने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। इसके अलावा, जापान के मीडिया को भी घटनाओं की भनक लग गई थी और उन्होंने जापानी दूतावास और स्थानीय पुलिस से संपर्क करना शुरू कर दिया था। मैंने मियू से कहा कि अब मुझे टोक्यो वापस जाना चाहिए। द्वीप पर और रुकने से सुमिरे को ढूंढने में कोई मदद नहीं मिलने वाली थी।

मियू ने सिर हिलाया। उसने कहा, "तुमने तो पहले ही बहुत कुछ कर दिया है। सच में। अगर तुम नहीं आतीं, तो मैं पूरी तरह से भटक जाती।" "चिंता मत करो। मैं सुमिरे के माता-पिता को सब कुछ समझा दूंगी। और मैं पत्रकारों को भी संभाल लूंगी। सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। शुरू से ही इस सब की कोई ज़िम्मेदारी तुम्हारी नहीं थी। ज़रूरत पड़ने पर मैं बहुत ही पेशेवर हो सकती हूं, और मैं अपना काम बखूबी कर सकती हूं।"

उसने मुझे बंदरगाह तक विदा किया। मैं दोपहर की फेरी से रोड्स जा रहा था। सुमिरे के लापता हुए ठीक दस दिन हो गए थे। जाने से ठीक पहले मियू ने मुझे गले लगाया। एक बेहद सहज आलिंगन। कुछ देर तक, उसने चुपचाप मेरी पीठ सहलाई। दोपहर की धूप तेज़ थी, लेकिन अजीब तरह से उसकी त्वचा ठंडी लग रही थी। उसका हाथ मुझे कुछ कहना चाह रहा था। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उन शब्दों को सुना। शब्द नहीं—कुछ ऐसा जो भाषा में बयां नहीं हो सकता था। हमारी खामोशी के बीच, हमारे बीच कुछ घटित हुआ।

"अपना ख्याल रखना," मियू ने कहा।

“तुम भी,” मैंने कहा। कुछ देर तक हम रस्सी के तख्ते के सामने खड़े रहे।
फेरी पर चढ़ने से ठीक पहले, मियू ने गंभीर स्वर में कहा, "मैं तुमसे एक बात ईमानदारी से जानना चाहती हूँ। क्या तुम्हें लगता है कि सुमिरे अब जीवित नहीं है?"
मैंने सिर हिलाया। “मैं इसे साबित तो नहीं कर सकता, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वह कहीं न कहीं अभी भी जीवित है। इतना समय बीत जाने के बाद भी, मुझे ऐसा महसूस नहीं होता कि वह मर चुकी है।”
मियू ने अपनी सांवली बाहों को मोड़कर मेरी तरफ देखा।
“सच कहूँ तो मुझे भी बिल्कुल ऐसा ही लगता है,” उसने कहा। “कि सुमिरे मरी नहीं है। लेकिन मुझे यह भी लगता है कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। हालाँकि मैं कुछ भी साबित नहीं कर सकती।”
मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। सन्नाटा हमारे चारों ओर हर जगह छा गया। बादल रहित आकाश में उड़ते हुए समुद्री पक्षी चहचहा रहे थे, और कैफे में हमेशा नींद में रहने वाला वेटर पेय पदार्थों की एक और ट्रे लेकर आया।
मियू ने अपने होंठ सिकोड़े और सोच में डूब गई। "क्या तुम मुझसे नफरत करते हो?" उसने अंत में पूछा।
“क्योंकि सुमिरे गायब हो गई?”
"हाँ।"
मैं तुमसे नफरत क्यों करूंगा?
“मुझे नहीं पता।” उसकी आवाज़ में लंबे समय से दबी हुई थकावट झलक रही थी। “मुझे भी ऐसा लग रहा है कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगी। इसीलिए मैंने पूछा।”
मैंने कहा, "मैं तुमसे नफरत नहीं करता।"
लेकिन आगे क्या होगा, कौन बता सकता है?
मैं ऐसी बातों पर लोगों से नफरत नहीं करता।
मियू ने अपनी टोपी उतारी, अपने बालों को सीधा किया और फिर टोपी पहन ली। उसने तिरछी नज़रों से मेरी तरफ देखा।
“शायद इसलिए क्योंकि तुम किसी से कुछ उम्मीद नहीं रखते,” उसने कहा। उसकी आँखें गहरी और निर्मल थीं, ठीक वैसे ही जैसे उस दिन की धुंधली सी छाया थी जब हम मिले थे। “मैं वैसी नहीं हूँ। मैं बस तुम्हें यह बताना चाहती हूँ कि मैं तुम्हें पसंद

करती हूँ। बहुत ज़्यादा।”

और हमने एक-दूसरे को अलविदा कहा। जहाज बंदरगाह से धीरे-धीरे पीछे की ओर बढ़ा, प्रोपेलर पानी को मथता हुआ 180 डिग्री का चक्कर लगाते हुए आगे बढ़ा; इस पूरे समय मियू घाट पर खड़ी मुझे जाती हुई देखती रही। उसने एक तंग सफेद पोशाक पहनी हुई थी और कभी-कभी हवा में उड़ती अपनी टोपी को संभालने के लिए हाथ बढ़ाती थी। उस छोटे से ग्रीक द्वीप के घाट पर खड़ी वह किसी दूसरी दुनिया की चीज़ लग रही थी, क्षणभंगुर, सुंदरता और आकर्षण से भरपूर। मैं डेक की रेलिंग से टिककर उसे काफी देर तक देखता रहा। मानो समय थम गया हो, वह दृश्य हमेशा के लिए मेरी यादों में बस गया।

लेकिन समय फिर से चलने लगा, और मियू छोटी होती चली गई, यहाँ तक कि वह एक धुंधली सी बिंदी बन गई, और अंत में झिलमिलाती हवा में पूरी तरह से समा गई। शहर दूर होता चला गया, पहाड़ों की आकृति अस्पष्ट हो गई, और अंत में द्वीप प्रकाश की धुंध में विलीन हो गया, धुंधला हो गया, और पूरी तरह से गायब हो गया। एक और द्वीप उसकी जगह लेने के लिए उभरा और उसी तरह दूर तक गायब हो गया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, जो चीजें मैंने वहाँ छोड़ी थीं, वे मानो कभी अस्तित्व में ही नहीं थीं।

शायद मुझे मियू के साथ ही रहना चाहिए था। नया स्कूल सत्र शुरू हो रहा था, तो क्या हुआ? मुझे मियू को हिम्मत देनी चाहिए थी, उसकी तलाश में हर संभव मदद करनी चाहिए थी, और अगर कुछ बुरा होता, तो मुझे उसे गले लगाना चाहिए था, उसे जितना हो सके दिलासा देना चाहिए था। मुझे लगता है कि मियू मुझे चाहती थी, और एक तरह से मैं भी उसे चाहती थी।

उसने असाधारण तीव्रता के साथ मेरे दिल पर कब्जा कर लिया था।

मुझे ये सब पहली बार तब समझ आया जब मैं डेक पर खड़ा होकर उसे दूर जाते हुए देख रहा था। एक अजीब सी अनुभूति मुझ पर छा गई, मानो हज़ारों धागे मुझे खींच रहे हों। शायद पूरी तरह से रोमांटिक प्यार तो नहीं, लेकिन कुछ ऐसा ही। घबराकर मैं डेक पर एक बेंच पर बैठ गया, अपना जिम बैग घुटनों पर रखा और जहाज़ के पीछे बन रही सफ़ेद लहरों को निहारने लगा। समुद्री चिड़ियाएँ फेरी के पीछे उड़ रही थीं, लहरों से चिपकी हुई। मुझे अब भी मियू की छोटी हथेली अपनी पीठ पर महसूस हो रही थी, मानो किसी आत्मा की नन्ही सी परछाई हो।

मैंने सीधे टोक्यो वापस जाने की योजना बनाई थी, लेकिन किसी कारणवश एक दिन

पहले की मेरी बुकिंग रद्द हो गई, और मुझे एथेंस में रात बितानी पड़ी। मैंने एयरलाइन की शटल बस ली और शहर के उस होटल में रुका जिसकी सिफारिश एयरलाइन ने की थी। प्लाका जिले के पास एक सुखद, आरामदायक होटल, जो दुर्भाग्य से एक शोरगुल भरे जर्मन टूरिस्ट ग्रुप से भरा हुआ था। करने के लिए कुछ और न होने के कारण, मैं शहर में घूमा, किसी खास के लिए नहीं बल्कि यूं ही कुछ यादगार चीजें खरीदीं, और शाम को एक्रोपोलिस की चोटी पर चला गया। मैं एक पत्थर की पटिया पर लेट गया, शाम की ठंडी हवा मुझ पर बह रही थी, और नीली रोशनी में तैरते हुए सफेद मंदिर को निहार रहा था। एक सुंदर, स्वप्निल दृश्य।

लेकिन मुझे बस एक अपूरणीय अकेलापन महसूस हो रहा था। देखते ही देखते, मेरे आस-पास की दुनिया बेरंग हो गई। उस उजाड़ पहाड़ी चोटी से, उन खाली भावनाओं के खंडहरों से, मैं अपने जीवन को भविष्य की ओर फैला हुआ देख सकता था। यह बिल्कुल वैसा ही लग रहा था जैसा मैंने बचपन में पढ़ी किसी विज्ञान कथा उपन्यास में एक वीरान ग्रह की सुनसान सतह के चित्र में देखा था। जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था। हर दिन अंतहीन सा लगता था, हवा या तो उबलती हुई गर्म होती थी या जमने वाली ठंडी। मुझे यहाँ लाने वाला अंतरिक्ष यान गायब हो चुका था, और मैं फँस गया था। मुझे खुद ही जीवित रहना होगा।

मुझे एक बार फिर एहसास हुआ कि सुमिरे मेरे लिए कितनी महत्वपूर्ण, कितनी अनमोल थी। अपने खास अंदाज़ में उसने मुझे दुनिया से जोड़े रखा था। उससे बातें करते और उसकी कहानियाँ पढ़ते हुए मेरा मन धीरे-धीरे खुल गया और मुझे ऐसी चीज़ें दिखाई देने लगीं जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं। बिना कोशिश किए ही हम करीब आ गए। जैसे कोई युवा प्रेमी एक-दूसरे के सामने अपने कपड़े उतार रहे हों, वैसे ही सुमिरे और मैंने एक-दूसरे के सामने अपने दिल खोल दिए, एक ऐसा अनुभव जो मुझे किसी और के साथ, कहीं भी कभी नहीं मिल सकता था। हमने अपने साथ बिताए पलों को संजोकर रखा, हालाँकि हमने कभी शब्दों में यह नहीं बताया कि वे कितने अनमोल थे।

बेशक, इस बात का दुख था कि हम कभी एक-दूसरे को शारीरिक रूप से प्यार नहीं कर पाए। अगर हम ऐसा कर पाते तो हम कहीं ज़्यादा खुश होते। लेकिन यह ज्वार-भाटे और ऋतुओं के बदलाव की तरह था—कुछ ऐसा जो अटल था, एक अटल नियति जिसे हम कभी बदल नहीं सकते थे। चाहे हम इसे कितनी भी चतुराई से बचा

लें, हमारी नाज़ुक दोस्ती हमेशा के लिए नहीं टिकने वाली थी। हमारा अंत निश्चित था। यह बात दर्दनाक रूप से स्पष्ट थी।

मैं सुमिरे को सबसे ज़्यादा प्यार करता था और दुनिया में सबसे ज़्यादा उसे पाना चाहता था। और मैं उन भावनाओं को यूँ ही दबा नहीं सकता था, क्योंकि उनकी जगह लेने के लिए कुछ भी नहीं था।

मैंने सपना देखा था कि एक दिन अचानक कोई बड़ा बदलाव आएगा। भले ही इसके सच होने की संभावना बहुत कम थी, लेकिन मैं सपना तो देख ही सकती थी, है ना? लेकिन मुझे पता था कि यह सपना कभी सच नहीं होगा।

जैसे ज्वार उतरता है, तटरेखा साफ हो जाती है, सुमिरे के चले जाने से मैं एक विकृत, खाली दुनिया में अकेला रह गया। एक उदास, ठंडी दुनिया जिसमें जो कुछ भी मेरे और उसके बीच था, वह फिर कभी नहीं हो पाएगा।

हम सभी के पास कुछ ऐसा खास होता है जो जीवन के किसी खास समय पर ही मिलता है। जैसे एक छोटी सी लौ। कुछ भाग्यशाली लोग उस लौ को संजोकर रखते हैं, उसे पोषित करते हैं, उसे अपने मार्ग को रोशन करने वाली मशाल की तरह थामे रखते हैं। लेकिन एक बार वह लौ बुझ जाए, तो हमेशा के लिए चली जाती है। मैंने सिर्फ सुमिरे को ही नहीं खोया था। मैंने उस अनमोल लौ को खो दिया था।

दूसरी तरफ कैसा होता होगा? सुमिरे वहीं थी, और मियू का खोया हुआ हिस्सा भी। काले बालों वाली और तीव्र यौन इच्छा वाली मियू। शायद वे दोनों वहाँ एक-दूसरे से मिलीं, एक-दूसरे से प्यार किया, एक-दूसरे की इच्छाओं को पूरा किया। "हम वो सब करते हैं जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता," सुमिरे शायद मुझसे यही कहती, लेकिन फिर भी वही बात शब्दों में बयां कर देती।

क्या मेरे लिए वहाँ कोई जगह है? क्या मैं उनके साथ रह सकती हूँ? जब वे प्रेम में मग्न होते, मैं कमरे के किसी कोने में बैठकर बाल्ज़ाक की रचनाओं का संग्रह पढ़कर अपना मनोरंजन करती। सुमिरे के नहाने के बाद, हम दोनों लंबी सैर पर जाते और तरह-तरह की बातें करते—हमेशा की तरह, सुमिरे ही ज़्यादातर बातें करती। लेकिन क्या हमारा रिश्ता हमेशा के लिए कायम रहेगा? क्या यह स्वाभाविक है? “बिल्कुल,” सुमिरे मुझसे कहती। “यह पूछने की ज़रूरत ही नहीं है। क्योंकि तुम मेरी इकलौती सच्ची दोस्त हो!”

लेकिन मुझे उस दुनिया तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं पता था। मैंने एक्रोपोलिस की

चिकनी, कठोर चट्टान को छुआ। इतिहास सतह से रिसकर अंदर समा गया था। चाहे मुझे पसंद हो या न हो, मैं समय के उस प्रवाह में फँस गया था। मैं बच नहीं सकता था। नहीं—यह पूरी तरह सच नहीं है। सच तो यह है कि मैं सचमुच बचना नहीं चाहता।

कल मैं विमान में बैठकर टोक्यो वापस जाऊँगी। गर्मियों की छुट्टियाँ लगभग खत्म हो चुकी हैं, और मुझे एक बार फिर रोज़मर्रा की भागदौड़ में लौटना होगा। वहाँ मेरे लिए एक जगह है। मेरा अपार्टमेंट, मेरी डेस्क, मेरी कक्षा, मेरे विद्यार्थी। शांत दिन मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, पढ़ने के लिए उपन्यास। कभी-कभार प्रेम प्रसंग भी।

लेकिन कल मैं एक अलग इंसान बन जाऊँगा, फिर कभी वो इंसान नहीं रहूँगा जो मैं पहले था। वैसे, जापान लौटने के बाद शायद ही किसी को पता चलेगा। बाहर से तो कुछ भी नहीं बदलेगा। लेकिन अंदर कुछ जलकर राख हो गया है। खून बहा है, और मेरे अंदर से कुछ चला गया है। सिर झुकाए, बिना कुछ कहे, वो चीज़ चली गई। दरवाज़ा खुला; दरवाज़ा बंद हुआ। रोशनी बुझ गई। आज का दिन मेरे लिए आखिरी दिन है। बिल्कुल आखिरी संध्या। जब सुबह होगी, तो मैं यहाँ नहीं रहूँगा। कोई और इस शरीर में आ जाएगा।

लोग इतने अकेले क्यों होते हैं? आखिर इस सब का क्या मतलब है? इस दुनिया में लाखों लोग हैं, सभी तड़पते हैं, दूसरों से अपनी इच्छाओं की पूर्ति की उम्मीद करते हैं, फिर भी खुद को अलग-थलग कर लेते हैं। क्यों? क्या धरती को सिर्फ इंसानी अकेलेपन को पोषित करने के लिए बनाया गया था?

मैं पत्थर की पटिया पर पीठ के बल लेट गया, आकाश की ओर देखा और पृथ्वी के चारों ओर घूमते हुए सभी मानव निर्मित उपग्रहों के बारे में सोचने लगा। क्षितिज पर अभी भी हल्की रोशनी थी और गहरे, शराब जैसे रंग के आकाश में तारे टिमटिमाने लगे थे। मैंने उनमें किसी उपग्रह की रोशनी खोजने की कोशिश की, लेकिन इतनी तेज रोशनी में नंगी आंखों से एक भी तारा दिखाई नहीं दे रहा था। बिखरे हुए तारे मानो एक ही जगह पर जमे हुए थे, हिल नहीं रहे थे। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं और स्पुतनिक के वंशजों की आवाज सुनने के लिए ध्यान से सुनने लगा, जो अभी भी पृथ्वी का चक्कर लगा रहे थे, गुरुत्वाकर्षण ही उनका इस ग्रह से एकमात्र बंधन था। अंतरिक्ष के असीम अंधकार में अकेली धातु की आत्माएं, वे मिलती हैं, एक-दूसरे को पार करती हैं और बिछड़ जाती हैं, फिर कभी नहीं मिलतीं। उनके बीच कोई शब्द नहीं

बोले जाते। कोई वादा नहीं निभाया जाता।

अध्याय 15

रविवार की दोपहर को फोन की घंटी बजी। सितंबर में नया स्कूल सत्र शुरू होने के बाद यह दूसरा रविवार था। मैं दोपहर का खाना बना रहा था और फोन उठाने से पहले मुझे गैस स्टोव बंद करना पड़ा। फोन की घंटी में एक तरह की अर्जेंसी थी—कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा। मुझे यकीन था कि मियू सुमिरे के बारे में खबर देने के लिए फोन कर रही होगी। लेकिन फोन मियू का नहीं, बल्कि मेरी गर्लफ्रेंड का था।

“कुछ हुआ है,” उसने अपनी सामान्य औपचारिकताओं को छोड़ते हुए कहा। “क्या आप अभी आ सकते हैं?”

यह किसी भयानक बात की ओर इशारा कर रहा था। क्या उसके पति को हमारे बारे में पता चल गया था? मैंने गहरी सांस ली। अगर लोगों को पता चल गया कि मैं अपनी कक्षा के किसी बच्चे की माँ के साथ सो रहा हूँ, तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊँगा। सबसे बुरा तो यह होगा कि मेरी नौकरी चली जाएगी। लेकिन साथ ही, मैंने इस बात को स्वीकार भी कर लिया था। मुझे इसके जोखिमों का पता था।

मैंने पूछा, "तुम कहाँ हो?"

“एक सुपरमार्केट में,” उसने कहा।

मैंने ताचिकावा के लिए ट्रेन पकड़ी और ढाई बजे सुपरमार्केट के पास वाले स्टेशन पर पहुँचा। दोपहर बहुत गर्म थी, गर्मी अपने चरम पर थी, लेकिन मैंने सफेद फॉर्मल शर्ट, टाई और हल्के भूरे रंग का सूट पहना हुआ था, वही कपड़े जो उसने मुझे पहनने के लिए कहा था। उसने कहा, "इस तरह तुम एक शिक्षक की तरह दिखते हो और इससे अच्छा प्रभाव पड़ेगा।" उसने मुझसे कहा था, "कभी-कभी तो तुम अभी भी कॉलेज के छात्र जैसे लगते हो।"

सुपरमार्केट के प्रवेश द्वार पर, मैंने इधर-उधर बिखरी हुई शॉपिंग कार्ट्स को इकट्ठा कर

रहे एक युवा क्लर्क से सुरक्षा कार्यालय के बारे में पूछा। उसने बताया, "यह सड़क के उस पार, एनेक्स की तीसरी मंजिल पर है।" एनेक्स एक बदसूरत सी तीन मंजिला इमारत थी, जिसमें लिफ्ट तक नहीं थी। कंक्रीट की दीवारों में पड़ी दरारें मानो कह रही हों, "अरे, हमारी चिंता मत करो, वे इसे एक दिन तो गिरा ही देंगे।" मैं संकरी, पुरानी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा, 'सुरक्षा' लिखा हुआ दरवाजा ढूंढा और हल्के से दो-तीन बार खटखटाया। एक आदमी की गहरी आवाज सुनाई दी; मैंने दरवाजा खोला और अंदर अपनी प्रेमिका और उसके बेटे को देखा। वे एक डेस्क के सामने बैठे थे, जिनके सामने वर्दी पहने एक अधेड़ उम्र का सुरक्षा गार्ड था। बस वे तीनों ही थे।

कमरा मध्यम आकार का था, न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा। खिड़की के किनारे तीन डेस्क कतार में लगे थे, और सामने वाली दीवार के साथ एक स्टील का लॉकर था। उससे सटी दीवार पर एक ड्यूटी रोस्टर और स्टील के शेल्फ पर तीन सुरक्षा गार्डों की टोपियाँ रखी थीं। कमरे के दूसरे छोर पर धुंधले शीशे के दरवाजे के पीछे एक दूसरा कमरा था, जिसका इस्तेमाल गार्ड शायद झपकी लेने के लिए करते थे। जिस कमरे में हम थे, वह लगभग पूरी तरह से सजावट से रहित था। न फूल, न तस्वीरें, यहाँ तक कि कैलेंडर भी नहीं। बस दीवार पर एक बहुत बड़ी गोल घड़ी लगी थी। एकदम वीरान कमरा, मानो दुनिया का कोई प्राचीन कोना हो जिसे समय ने भुला दिया हो। ऊपर से, उस जगह से एक अजीब सी गंध आ रही थी—सिगरेट के धुएँ, फफूंदी लगे दस्तावेजों और सालों से जमा पसीने की मिली-जुली गंध।

ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा गार्ड लगभग पचास वर्ष का एक हट्टा-कट्टा आदमी था। उसकी बांहें मजबूत थीं और सिर बड़ा था, जिस पर मोटे, सफ़ेद-काले बालों का एक गुच्छा था, जिसे उसने किसी सस्ते हेयर टॉनिक से चिपका रखा था, शायद यही वह अपनी मामूली तनख्वाह में खरीद सकता था। उसके सामने रखी ऐशट्रे सिगरेट के टुकड़ों से भरी हुई थी। जब मैं कमरे में आया, तो उसने अपने काले फ्रेम वाले चश्मे उतारे, उन्हें कपड़े से पोंछा और फिर से पहन लिए। शायद नए लोगों से मिलने का यही उसका तरीका था। चश्मा उतारने पर उसकी आंखें चांद की चट्टानों की तरह ठंडी थीं। जब उसने चश्मा वापस पहना, तो वह ठंडक गायब हो गई और उसकी जगह एक तरह की शक्तिशाली, चमकती हुई नज़र आ गई। किसी भी तरह से, यह नज़र लोगों को सहज महसूस कराने वाली नहीं थी।

कमरा बेहद गर्म था; खिड़की पूरी तरह खुली थी, लेकिन हवा का एक झोंका भी अंदर

नहीं आ रहा था। बाहर सड़क का शोर ही सुनाई दे रहा था। एक बड़ा ट्रक लाल बत्ती पर रुकते हुए ज़ोर से ब्रेक लगा रहा था, जिससे मुझे बेन वेबस्टर की टेनोर्टोन पर बाद के दिनों की याद आ गई। हम सब पसीने से तरबतर थे। मैं डेस्क के सामने गया, अपना परिचय दिया और उस आदमी को अपना बिजनेस कार्ड दे दिया। सुरक्षा गार्ड ने बिना कुछ कहे कार्ड ले लिया, होंठ सिकोड़े और कुछ देर तक उसे घूरता रहा। उसने कार्ड डेस्क पर रखा और मेरी तरफ देखा।

“शिक्षक के हिसाब से आपकी उम्र काफी कम है, है ना?” उन्होंने कहा। “आप कितने समय से पढ़ा रहे हैं?”

मैंने सोचने का नाटक किया और जवाब दिया, "तीन साल।"

“हम्म,” उसने कहा। और कुछ नहीं बोला। लेकिन उसकी चुप्पी ने बहुत कुछ कह दिया। उसने मेरा कार्ड उठाया और मेरा नाम फिर से देखा, मानो कुछ दोबारा जाँच रहा हो।

“मेरा नाम नाकामुरा है, मैं यहाँ का सुरक्षा प्रमुख हूँ,” उन्होंने अपना परिचय दिया। उन्होंने अपना कोई बिजनेस कार्ड नहीं दिया। “कृपया वहाँ से एक कुर्सी खींचकर बैठ जाइए। मुझे खेद है कि इतनी गर्मी है। एयर कंडीशनर खराब है, और रविवार को इसे ठीक करने कोई नहीं आ रहा है। वे मुझे पंखा देने की भी ज़हमत नहीं उठा रहे हैं, इसलिए मैं बैठकर यह गर्मी सहन कर रहा हूँ। अगर आप चाहें तो अपनी जैकेट उतार सकते हैं। हमें यहाँ काफी देर तक रहना पड़ सकता है, और आपको देखकर ही मुझे गर्मी लग रही है।”

मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था, एक कुर्सी खींचकर अपनी जैकेट उतार दी। पसीने से भीगी हुई कमीज मेरी त्वचा से चिपकी हुई थी।

“जानते हो, मुझे हमेशा से शिक्षकों से ईर्ष्या होती रही है,” गार्ड ने कहना शुरू किया। उसके होठों पर एक फीकी मुस्कान थी, लेकिन उसकी आँखें गहरे समुद्र के शिकारी की तरह थीं, मानो मेरी गहराई में हल्की सी हलचल को भी भांप रही हों। उसके शब्द तो विनम्र थे, पर यह सिर्फ दिखावा था। शिक्षक शब्द मेरे लिए अपमान जैसा लगा।

“गर्मियों में आपको एक महीने से ज़्यादा की छुट्टी मिलती है, रविवार या रात में काम नहीं करना पड़ता, और लोग हमेशा तोहफ़े देते रहते हैं। मेरे हिसाब से ज़िंदगी बहुत बढ़िया है। कभी-कभी मुझे लगता है कि काश मैंने और ज़्यादा पढ़ाई की होती और खुद टीचर बन गया होता। किस्मत ने खेल खेला और आज मैं एक सुपरमार्केट में

सिक्योरिटी गार्ड हूँ। शायद मैं उतना होशियार नहीं था। लेकिन मैं अपने बच्चों को टीचर बनने की सलाह देता हूँ। कोई कुछ भी कहे, टीचरों की ज़िंदगी तो बस कमाल की होती है।"

मेरी प्रेमिका ने एक साधारण नीली आधी बाजू की ड्रेस पहनी हुई थी। उसके बाल करीने से सिर के ऊपर बंधे हुए थे और उसने छोटी बालियाँ पहनी हुई थीं। ऊँची एड़ी वाली सफेद सैंडल ने उसके पहनावे को पूरा किया, और उसकी गोद में एक सफेद बैग और एक छोटा क्रीम रंग का रूमाल रखा था। ग्रीस से लौटने के बाद यह पहली बार था जब मैंने उसे देखा था। वह मेरी और गार्ड की तरफ देख रही थी, रोने से उसकी आँखें सूजी हुई थीं। यह साफ़ था कि उसने बहुत कुछ सहा था।

हमने एक-दूसरे को जल्दी से देखा और मैं उसके बेटे की ओर मुड़ गई। उसका नाम शिनिची निमुरा था, लेकिन उसके सहपाठियों ने उसे 'कैरेट' उपनाम दिया था। उसका लंबा, पतला चेहरा और बिखरे हुए घुंघराले बाल, ये नाम उस पर खूब जंचते थे। मैं भी अक्सर उसे इसी नाम से बुलाती थी। वह शांत स्वभाव का लड़का था, ज़रूरत से ज़्यादा बोलता ही नहीं था। उसके अंक अच्छे थे; वह शायद ही कभी अपना होमवर्क लाना भूलता था और सफाई में अपना हिस्सा हमेशा निभाता था। कभी कोई शरारत नहीं की। लेकिन उसमें पहल करने की कमी थी और उसने कक्षा में कभी हाथ नहीं उठाया। कैरेट के सहपाठी उसे नापसंद नहीं करते थे, लेकिन वह इतना लोकप्रिय भी नहीं था। यह बात उसकी माँ को ज़्यादा पसंद नहीं आती थी, लेकिन मेरी नज़र में वह एक अच्छा बच्चा था।

सुरक्षा गार्ड ने कहा, "मुझे लगता है कि आपने लड़के की मां से घटना के बारे में सुन लिया होगा।"

"हां, मैंने देखा है," मैंने जवाब दिया। "उसे दुकान से सामान चुराते हुए पकड़ा गया था।"

"जी हाँ," गार्ड ने कहा और अपने पैरों के पास पड़ा एक गत्ते का डिब्बा मेज पर रख दिया। उसने उसे मेरी तरफ धकेल दिया। अंदर एक जैसे छोटे स्टेपलर थे, जो अभी भी अपनी पैकेजिंग में थे। मैंने एक स्टेपलर उठाया और उसे देखा। उस पर 850 येन का प्राइस टैग लगा था।

मैंने टिप्पणी की, "आठ स्टेपलर। बस इतना ही?"

"हाँ। बस इतना ही है।"

मैंने स्टेपलर को वापस डिब्बे में रख दिया। "तो कुल मिलाकर अड़सठ सौ येन होंगे।"
“बिल्कुल सही। अड़सठ सौ येन। आप शायद सोच रहे होंगे, ‘ठीक है, उसने चोरी की है। यह अपराध तो है, लेकिन आठ स्टेपलर के लिए इतना हंगामा क्यों? वह तो बस एक स्कूली बच्चा है।’ क्या मैं सही कह रहा हूँ?”
मैंने जवाब नहीं दिया।
“ऐसा सोचना ठीक है। क्योंकि यही सच है। आठ स्टेपलर चुराने से भी कहीं ज़्यादा जघन्य अपराध होते हैं। सुरक्षा गार्ड बनने से पहले मैं पुलिसवाला था, इसलिए मुझे पता है मैं क्या कह रहा हूँ।”
बोलते समय गार्ड ने सीधे मेरी आँखों में देखा। मैंने भी उसकी आँखों में देखते हुए सावधानी बरती, ताकि मैं अवज्ञाकारी न दिखूँ।
“अगर यह उसकी पहली गलती होती, तो दुकान इतना हंगामा नहीं करती। आखिर हमारा व्यवसाय ग्राहकों से जुड़ा है, और हम इस तरह की छोटी-मोटी बातों पर ज्यादा परेशान होना पसंद नहीं करते। आम तौर पर मैं बच्चे को इस कमरे में लाता और उसे थोड़ा डराता। ज्यादा गंभीर मामलों में हम माता-पिता से संपर्क करते और उनसे बच्चे को सजा दिलवाते। हम स्कूल से संपर्क नहीं करते। यही हमारी दुकान की नीति है कि चोरी करने वाले बच्चों को चुपचाप निपटाया जाए।”
समस्या ये है कि ये पहली बार नहीं है जब इस लड़के ने चोरी की है। हमारे स्टोर में ही, हमें पता है कि उसने तीन बार चोरी की है। तीन बार! सोचिए ज़रा? और इससे भी बुरी बात ये है कि दोनों बार उसने हमें अपना नाम या अपने स्कूल का नाम बताने से इनकार कर दिया। मैं ही उसकी देखभाल करती थी, इसलिए मुझे सब याद है। हमने उससे जो भी पूछा, उसने एक शब्द भी नहीं कहा। पुलिस में हम इसे 'चुपचाप व्यवहार' कहते थे। न माफ़ी, न पछतावा, बस एक घटिया रवैया अपनाकर बात टाल देते थे। अगर इस बार भी उसने अपना नाम नहीं बताया, तो मैं उसे पुलिस के हवाले कर दूंगी, लेकिन इस पर भी उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। और कोई चारा नहीं था, इसलिए मैंने उसे अपना बस पास दिखाने के लिए मजबूर किया, और इस तरह मुझे उसका नाम पता चला।
वह कुछ देर रुका, सब कुछ समझने का इंतज़ार कर रहा था। वह अब भी मुझे टकटकी लगाए देख रहा था, और मैं भी उसकी निगाहों में खोई रही।
“एक और बात ये है कि उसने किस तरह की चीजें चुराईं। इसमें कुछ भी प्यारा नहीं

है। पहली बार उसने पंद्रह मैकेनिकल पेंसिलें चुराईं। कुल कीमत नौ हजार सात सौ पचास येन। दूसरी बार उसने आठ कंपास चुराए, जिनकी कुल कीमत आठ हजार येन थी। दूसरे शब्दों में, हर बार वो एक ही तरह की ढेर सारी चीजें चुराता है। वो खुद इनका इस्तेमाल नहीं करने वाला। वो बस मजे के लिए ऐसा कर रहा है, या फिर वो इन्हें स्कूल में अपने दोस्तों को बेचने की योजना बना रहा है।"

मैंने कैरट द्वारा दोपहर के भोजन के समय अपने दोस्तों को चोरी के स्टेपलर बेचते हुए की कल्पना करने की कोशिश की। मैं इसकी कल्पना नहीं कर सका।

मैंने कहा, "मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा। एक ही दुकान से बार-बार चोरी क्यों कर रहे हो? क्या इससे पकड़े जाने की संभावना नहीं बढ़ जाएगी और पकड़े जाने पर तुम्हारी सज़ा और भी बढ़ जाएगी? अगर तुम चोरी करके बचना चाहते हो, तो क्या तुम दूसरी दुकानों में कोशिश नहीं करोगे?"

मुझसे मत पूछो। हो सकता है वो दूसरे स्टोर से चोरी करता हो। या हो सकता है कि हमारा स्टोर ही उसका पसंदीदा हो। हो सकता है उसे मेरा चेहरा पसंद न हो। मैं तो बस एक सुपरमार्केट का मामूली सुरक्षा गार्ड हूँ, इसलिए मैं सारी बातों के बारे में नहीं सोचूँगा। मुझे इसके लिए पर्याप्त वेतन नहीं मिलता। अगर तुम सच में जानना चाहते हो, तो उससे खुद पूछ लो। मैं उसे तीन घंटे पहले यहाँ लाया था और अब तक उसने एक शब्द भी नहीं कहा। कमाल है। इसीलिए तो मैं तुम्हें भी यहाँ खींच लाया। मुझे माफ़ करना कि तुम्हें छुट्टी के दिन आना पड़ा। . . . वैसे, जब से तुम आए हो, एक बात मेरे दिमाग में घूम रही है। तुम बहुत टैन लग रहे हो। वैसे इसका कोई मतलब नहीं है, लेकिन क्या तुम गर्मियों की छुट्टियों में कहीं घूमने गए थे?

“नहीं, कोई खास जगह नहीं,” मैंने जवाब दिया।

फिर भी, वह मेरे चेहरे को ध्यान से देखता रहा, मानो मैं पहेली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हूँ।

मैंने स्टेपलर को दोबारा उठाया और उसे ध्यान से देखा। बस एक साधारण, छोटा सा स्टेपलर, जैसा कि किसी भी घर या दफ्तर में मिल जाता है। दफ्तर में मिलने वाली सबसे सस्ती चीज़ों में से एक। सुरक्षा गार्ड के होठों से सेवन स्टार सिगरेट लटक रही थी, उसने उसे बिक लाइटर से जलाया और एक तरफ मुड़कर धुएं का गुबार उड़ाया।

मैंने लड़के की ओर मुड़कर धीरे से पूछा, "स्टेपलर क्यों?"

कैरट पूरे समय ज़मीन की ओर घूर रहा था, लेकिन अब चुपचाप उसने अपना चेहरा

ऊपर उठाया और मेरी ओर देखा। पर उसने कुछ नहीं कहा। मैंने पहली बार गौर किया कि उसके चेहरे का भाव पूरी तरह बदल गया था—अजीब तरह से भावहीन, आँखें बेजान। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी खालीपन में घूर रहा हो।

"क्या किसी ने आपको धमकाकर ऐसा करने पर मजबूर किया?"

फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। यह कहना मुश्किल था कि मेरी बात उस तक पहुँच रही है या नहीं। मैंने हार मान ली। इस समय लड़के से कुछ भी पूछना व्यर्थ था। उसका दरवाजा बंद था, खिड़कियाँ भी कसकर बंद थीं।

“तो महोदय, आप क्या सुझाव देते हैं कि हम क्या करें?” गार्ड ने मुझसे पूछा। “मुझे दुकान के चक्कर लगाने, मॉनिटर चेक करने, चोरी करने वालों को पकड़ने और उन्हें इस कमरे में वापस लाने के लिए वेतन मिलता है। उसके बाद क्या होता है, यह बिल्कुल अलग बात है। खासकर जब मामला किसी बच्चे का हो तो उससे निपटना और भी मुश्किल हो जाता है। आप क्या सुझाव देते हैं कि हम क्या करें? मुझे यकीन है कि आपको इस क्षेत्र में अधिक जानकारी है। क्या हमें सारा मामला पुलिस को सौंप देना चाहिए? यह मेरे लिए निश्चित रूप से आसान होगा। इससे हमारा समय भी बर्बाद नहीं होगा, क्योंकि हम वैसे भी बस समय बर्बाद कर रहे हैं।”

दरअसल, उस समय मैं किसी और ही बात के बारे में सोच रहा था। सुपरमार्केट का यह छोटा-सा खस्ताहाल सुरक्षा कक्ष मुझे ग्रीस के एक द्वीप पर स्थित पुलिस स्टेशन की याद दिला रहा था। और यही विचार मुझे सीधे सुमिरे की ओर ले गया। और इस बात की ओर कि वह अब इस दुनिया में नहीं थी।

मुझे यह समझने में कुछ पल लगे कि वह आदमी मुझसे क्या कहना चाह रहा था।

“मैं उसके पिता को बता दूंगी,” कैरट की माँ ने एकरस स्वर में कहा, “और यह सुनिश्चित करूँगी कि मेरे बेटे को स्पष्ट रूप से पता चल जाए कि दुकान से सामान चुराना अपराध है। मैं वादा करती हूँ कि वह फिर कभी आपको परेशान नहीं करेगा।”

“दूसरे शब्दों में कहें तो आप नहीं चाहते कि यह मामला अदालत तक जाए। आपने यही बात बार-बार कही है,” सुरक्षा गार्ड ने ऊब भरे लहजे में कहा। उसने सिगरेट को ऐशट्रे पर थपथपाया और राख उसमें झाड़ दी। फिर मेरी ओर मुड़कर बोला, “लेकिन मेरी राय में तीन बार भी बहुत ज़्यादा है। किसी को तो इसे रोकना ही होगा। इस बारे में आपकी क्या राय है?”

मैंने गहरी सांस ली और अपने विचारों को वर्तमान में वापस लाया। आठ स्टेपलर और

सितंबर की एक रविवार दोपहर पर।
मैंने जवाब दिया, “जब तक मैं उससे बात नहीं कर लेती, मैं कुछ नहीं कह सकती। वह एक समझदार लड़का है और उसने पहले कभी कोई परेशानी खड़ी नहीं की। मुझे समझ नहीं आ रहा कि उसने इतनी बेवकूफी भरी हरकत क्यों की, लेकिन मैं खुद समय निकालकर इस मामले की तह तक जाऊंगी। उसने जो भी परेशानी खड़ी की है, उसके लिए मैं सच में माफी मांगती हूं।”
“हाँ, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा,” गार्ड ने चश्मा पहने हुए भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “यह लड़का—शिनिची निमुरा?—तुम्हारी कक्षा में है, है ना? तो तुम उसे हर दिन देखते हो, सही कहा ना?”
"यह सही है।"
“वह चौथी कक्षा में है, जिसका मतलब है कि वह आपकी कक्षा में एक साल और चार महीने से है। क्या मैं सही कह रही हूँ?”
“हां, यह सही है। जब वे तीसरी कक्षा में थे तब से मैं उनकी कक्षा का प्रभारी रहा हूं।”
“और आपकी कक्षा में कितने विद्यार्थी हैं?”
पैंतीस।
“ताकि आप उन सब पर नज़र रख सकें। आप कह रहे हैं कि आपको ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि यह लड़का कोई गड़बड़ करेगा। बिलकुल भी नहीं?”
"यह सही है।"
“ज़रा रुकिए—जहाँ तक हमें पता है, वो पिछले छह महीनों से चोरी कर रहा है। हमेशा अकेले। कोई उसे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर रहा है। और ये अचानक लिया गया फैसला भी नहीं है। और न ही वो पैसों के लिए ऐसा कर रहा है। उसकी माँ के अनुसार उसे अच्छा-खासा भत्ता मिलता है। वो बस चोरी करने से बचने के लिए ऐसा कर रहा है। दूसरे शब्दों में, इस लड़के को कुछ समस्याएँ हैं। और आप कह रहे हैं कि इसका ज़रा सा भी संकेत नहीं मिला?”
मैंने जवाब दिया, “मैं यहाँ एक शिक्षक के तौर पर बोल रहा हूँ, लेकिन खासकर बच्चों के मामले में, बार-बार चोरी करना कोई आपराधिक कृत्य नहीं है, बल्कि यह एक सूक्ष्म भावनात्मक असंतुलन का परिणाम है। शायद अगर मैंने थोड़ा और ध्यान दिया होता तो मुझे कुछ समझ आ जाता। मुझसे गलती हुई, यह तो पक्का है। लेकिन भावनात्मक रूप से परेशान बच्चों के मामले में हमेशा कोई बाहरी लक्षण दिखाई नहीं

देते। अगर आप चोरी को बाकी सब चीजों से अलग करके बच्चे को सज़ा देते हैं, तो मूल समस्या का समाधान नहीं होगा। जब तक आप मूल कारण का पता लगाकर उसका इलाज नहीं करते, वही समस्या बाद में किसी और रूप में सामने आ जाएगी। अक्सर बच्चे चोरी करके कोई संदेश देना चाहते हैं, इसलिए भले ही यह समस्या से निपटने का सबसे कारगर तरीका न हो, लेकिन समय निकालकर उनसे बात करना ज़रूरी है।"

गार्ड ने अपनी सिगरेट बुझाई और आधा मुँह खोलकर मुझे काफी देर तक घूरता रहा, मानो मैं कोई अजीबोगरीब दिखने वाला जानवर हूँ। मेज पर टिकी उसकी उंगलियाँ बेहद मोटी थीं, मानो दस छोटे-छोटे काले रोएँदार जीव हों। जितना ज़्यादा मैं उन्हें देखता, मुझे साँस लेने में उतनी ही ज़्यादा तकलीफ़ होती।

"क्या कॉलेज में, शिक्षाशास्त्र में, या आप इसे जो भी कहें, यही सब आपको सिखाया जाता है?"

"ज़रूरी नहीं। यह बुनियादी मनोविज्ञान है। यह आपको किसी भी किताब में मिल जाएगा।"

"यह तो किसी भी किताब में मिल जाएगा," उसने मेरी ही बात को बेमन से दोहराते हुए कहा। उसने अपना हाथ का तौलिया उठाया और अपनी मोटी गर्दन से पसीना पोंछा।

"'एक सूक्ष्म भावनात्मक असंतुलन'—इसका क्या मतलब है? जब मैं पुलिसवाला था, तो मैं हर दिन, सुबह से शाम तक, ऐसे लोगों से निपटता था जो वाकई असंतुलित थे। लेकिन इसमें कुछ भी सूक्ष्म नहीं था। दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है। ऐसे लोग तो बहुत सारे हैं। अगर मैं उन लोगों के हर एक संदेश को सुनने में समय लगाना चाहूँ, तो मुझे दस और दिमागों की ज़रूरत होगी। और तब भी काफ़ी नहीं होगा।"

उसने आह भरी और स्टेपलर का डिब्बा वापस डेस्क के नीचे रख दिया।

"ठीक है—आप बिलकुल सही हैं। बच्चों का दिल पवित्र होता है। शारीरिक दंड देना गलत है। सभी लोग बराबर हैं। आप लोगों को उनके अंकों से नहीं आंक सकते। बात करने और समाधान निकालने के लिए समय निकालें। मुझे इसमें कोई बड़ी समस्या नहीं है। लेकिन क्या आपको लगता है कि इससे दुनिया बेहतर हो जाएगी? बिलकुल नहीं। यह तो और भी बदतर हो जाएगी। लोग कैसे बराबर हो सकते हैं? मैंने तो कभी ऐसी बात सुनी ही नहीं। ज़रा सोचिए—जापान में हर दिन एक लाख लोग एक-दूसरे

को धक्का-मुक्की करते रहते हैं। ज़रा सोचिए, अगर सबको बराबर कर दिया जाए तो क्या होगा। यह तो नरक बन जाएगा।"

मीठी-मीठी बातें कहना आसान है। आँखें बंद कर लो, दिखावा करो कि तुम्हें कुछ दिख नहीं रहा, और सारा दोष दूसरों पर डाल दो। कोई हंगामा मत करो, 'ऑल्ड लैंग साइन' गाओ, बच्चों को उनकी डिग्रियाँ दे दो, और सब खुशी-खुशी रहने लगें। चोरी करना बच्चों को यही सिखाता है कि बाद में पछताओ मत। यही आसान रास्ता है, तो क्यों न करें? लेकिन इस गड़बड़ को कौन ठीक करेगा? मेरे जैसे लोग, बस वही। तुम्हें लगता है कि हम ये इसलिए करते हैं क्योंकि हमें ये पसंद है? तुम्हारे चेहरे पर तो ऐसा भाव होता है जैसे पूछ रहे हो, 'अरे, ये अड़सठ सौ येन क्या है?', लेकिन ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जिनसे उसने चोरी की है। यहाँ सौ लोग काम करते हैं, और यकीन मानो, वे एक या दो येन के अंतर को गंभीरता से लेते हैं। जब वे कैश रजिस्टर में रसीदों का हिसाब लगाते हैं और सौ येन का अंतर होता है, तो वे उसे ठीक करने के लिए ओवरटाइम करते हैं। क्या तुम्हें पता है कि यहाँ चेकआउट काउंटर पर काम करने वाली महिलाएँ प्रति घंटे कितना कमाती हैं? क्यों नहीं? अपने विद्यार्थियों को यह सिखाएं?

मैंने कुछ नहीं कहा। कैरट की माँ और लड़का दोनों चुप थे। सुरक्षा गार्ड बोलते-बोलते थक गया था और फिर से सन्नाटे में डूब गया। दूसरे कमरे में एक फोन की घंटी बजी और किसी ने पहली ही घंटी पर फोन उठा लिया।

"तो हमें क्या करना चाहिए?" उसने पूछा।

मैंने कहा, "क्यों न हम उसे छत से उल्टा लटका दें जब तक कि वह माफी न मांग ले?" मुझे यह पसंद आया! बेशक, आप जानते हैं कि हम दोनों को नौकरी से निकाल दिया जाएगा।

"तो फिर, हमारे पास एकमात्र उपाय यही है कि हम धैर्यपूर्वक समय निकालकर इस समस्या पर चर्चा करें। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ।"

दूसरे कमरे से एक व्यक्ति ने दरवाजा खटखटाया और अंदर आया। उसने पूछा, "श्री नाकामुरा, क्या आप मुझे भंडारगृह की चाबी दे सकते हैं?" श्री नाकामुरा ने अपनी मेज की दराज में काफी देर तक चाबी ढूंढी, लेकिन उन्हें नहीं मिली। उन्होंने कहा, "यह गायब है। यह अजीब बात है। मैं इसे हमेशा यहीं रखता हूँ।" दूसरे व्यक्ति ने कहा, "यह बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे इसकी तुरंत जरूरत है।" जिस तरह से वे दोनों

इस बारे में बात कर रहे थे, उससे लग रहा था कि यह बहुत महत्वपूर्ण चाबी है, जिसे शायद उस दराज में रखा ही नहीं जाना चाहिए था। उन्होंने हर दराज को छान मारा, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला।

हम तीनों बस वहीं बैठे रहे और ये सब चलता रहा। कुछ मौकों पर कैरट की माँ ने मेरी तरफ़ गिड़गिड़ाते हुए देखा। कैरट पहले की तरह ही भावहीन, बेपरवाह बैठी रही, उसकी नज़रें ज़मीन पर टिकी हुई थीं। मेरे दिमाग़ में निरर्थक, बेतरतीब विचार कौंध रहे थे। कमरा घुटन भरा था।

जिस व्यक्ति को चाबी की जरूरत थी, उसने बड़बड़ाते हुए जाने की हिम्मत हार दी।

“बस बहुत हो गया,” श्री नाकामुरा ने हमारी ओर मुड़ते हुए कहा; फिर उन्होंने भावहीन और सीधे-सादे लहजे में आगे कहा: “आने के लिए धन्यवाद। हमारा काम यहाँ समाप्त हो गया है। बाकी का काम मैं आप और लड़के की माँ पर छोड़ता हूँ। लेकिन एक बात स्पष्ट कर लें—अगर उसने ऐसा दोबारा किया, तो उसे इतनी आसानी से नहीं छोड़ा जाएगा। आशा है आप यह बात समझ गए होंगे? मैं कोई परेशानी नहीं चाहता। लेकिन मुझे अपना काम करना ही होगा।”

उसने सिर हिलाया, और मैंने भी। कैरट को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। मैं खड़ा हो गया, और वे दोनों भी कमज़ोरी से मेरे पीछे-पीछे खड़े हो गए।

“एक आखिरी बात,” सुरक्षा गार्ड ने बैठे-बैठे कहा। उसने मेरी तरफ देखा। “मुझे पता है यह कहना असभ्य होगा, लेकिन मैं कह ही देता हूँ। जब से मैंने तुम्हें देखा है, कुछ तो गड़बड़ है। तुम जवान हो, लंबे हो, तुम्हारी छवि अच्छी है, तुम्हारा रंग सांवला है, तुम समझदार हो। तुम्हारी हर बात बिल्कुल सही लगती है। मुझे यकीन है कि तुम्हारे विद्यार्थियों के माता-पिता तुम्हें बहुत पसंद करते होंगे। मैं इसे ठीक से समझा नहीं सकता, लेकिन जब से मैंने तुम्हें पहली बार देखा है, कुछ मुझे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा है। कुछ ऐसा जिसे मैं पचा नहीं पा रहा। कोई व्यक्तिगत बात नहीं है, इसलिए गुस्सा मत होना। बस, कुछ मुझे खटक रहा है। लेकिन आखिर वह क्या है जो मुझे परेशान कर रहा है, मुझे समझ नहीं आ रहा?”

मैंने कहा, "क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं आपसे कुछ निजी बात पूछूं?"

"पूछ लेना।"

अगर लोग बराबर नहीं हैं, तो आप कहाँ फिट होंगे?

श्री नाकामुरा ने सिगरेट का धुआँ एक गहरी साँस में लिया, अपना सिर हिलाया और बहुत धीरे से साँस छोड़ी, मानो किसी को कुछ करने के लिए मजबूर कर रहे हों। "मुझे नहीं पता," उन्होंने जवाब दिया। "लेकिन आप चिंता न करें। हम दोनों एक ही तल पर नहीं होंगे।"

उसने अपनी लाल टोयोटा सेलिका सुपरमार्केट की पार्किंग में खड़ी की थी। मैंने उसे उसके बेटे से दूर एक तरफ बुलाया और उससे कहा कि वह अकेले घर चली जाए। मैंने कहा, "मुझे आपके बेटे से थोड़ी देर अकेले बात करनी है। मैं उसे बाद में घर ले आऊँगी।" उसने सिर हिलाया। वह कुछ कहने ही वाली थी कि कुछ नहीं बोली, अपनी कार में बैठी, पर्स से धूप का चश्मा निकाला और इंजन स्टार्ट कर दिया।

उसके जाने के बाद मैं कैरट को पास ही दिख रही एक खुशनुमा सी छोटी सी कॉफी शॉप में ले गया। मैं एयर कंडीशनिंग में आराम से बैठा, अपने लिए एक आइस्ड टी और लड़के के लिए एक आइसक्रीम मंगवाई। मैंने अपनी कमीज़ का ऊपर वाला बटन खोला, टाई उतारी और जैकेट की जेब में रख ली। कैरट चुपचाप बैठा रहा। उसके चेहरे के भाव और आँखों का भाव वैसा ही था जैसा सुरक्षा दफ्तर में था। वह एकदम खाली-खाली सा लग रहा था, मानो कुछ देर तक ऐसे ही रहेगा। अपने छोटे-छोटे हाथों को गोद में करीने से रखे हुए, वह अपना चेहरा दूसरी तरफ़ करके ज़मीन की ओर देख रहा था। मैंने अपनी आइस्ड टी पी ली, लेकिन कैरट ने अपनी आइसक्रीम को छुआ तक नहीं। आइसक्रीम धीरे-धीरे कटोरी में पिघल रही थी, लेकिन उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ। हम दोनों आमने-सामने ऐसे बैठे थे जैसे कोई शादीशुदा जोड़ा अजीब सी खामोशी में बैठा हो। जब भी वेट्रेस हमारे टेबल पर आती, वह तनाव में दिखती।

“चीजें बस हो जाती हैं,” मैंने आखिरकार कहा। मैं चुप्पी तोड़ने की कोशिश नहीं कर रहा था। शब्द बस अपने आप मुंह से निकल आए।

कैरट ने धीरे से अपना सिर उठाया और मेरी तरफ देखा। उसने कुछ नहीं कहा। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, आह भरी और कुछ देर चुप रही।

मैंने कहा, “मैंने अभी तक किसी को नहीं बताया है, लेकिन गर्मियों की छुट्टियों में मैं ग्रीस गया था। आप जानते हैं ना कि ग्रीस कहाँ है? हमने सामाजिक अध्ययन की कक्षा में वह वीडियो देखा था, याद है? दक्षिणी यूरोप में, भूमध्य सागर के किनारे। वहाँ बहुत सारे द्वीप हैं और जैतून उगाए जाते हैं। पाँच सौ ईसा पूर्व उनकी सभ्यता का चरम था। एथेंस लोकतंत्र का जन्मस्थान था, और सुकरात ने वहीं जहर खाकर अपनी

जान दे दी थी। मैं वहीं गया था। वह एक खूबसूरत जगह है। लेकिन मैं मौज-मस्ती करने नहीं गया था। मेरा एक दोस्त एक छोटे से ग्रीक द्वीप पर लापता हो गया था, और मैं उसकी तलाश में गया था। लेकिन हमें कुछ नहीं मिला। मेरा दोस्त चुपचाप गायब हो गया। जैसे धुआँ।"

कैरेट ने अपना मुंह थोड़ा सा खोला और मेरी तरफ देखा। उसके चेहरे पर अभी भी कठोरता और निर्जीवता थी, लेकिन आशा की एक किरण दिखाई दी। मैं उस तक पहुँचने में कामयाब हो गया था।

मुझे मेरा यह दोस्त बहुत पसंद था। बहुत-बहुत ज्यादा। वह मेरे लिए दुनिया का सबसे अहम इंसान था। इसलिए मैंने खोज में मदद करने के लिए ग्रीस के लिए उड़ान भरी। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। हमें कोई सुराग नहीं मिला। अपने दोस्त को खोने के बाद, मेरे कोई दोस्त नहीं बचे। एक भी नहीं।

मैं कैरट से ज्यादा खुद से बात कर रहा था। मन ही मन सोच रहा था।

"जानते हो, इस समय मैं सबसे ज़्यादा क्या करना चाहता हूँ? किसी ऊँची जगह, जैसे कि पिरामिड, की चोटी पर चढ़ना। जितनी ऊँची जगह मुझे मिल सके। जहाँ से अनंत तक देखा जा सके। सबसे ऊपर खड़े होकर, पूरी दुनिया को देखना, सारे नज़ारे देखना, और अपनी आँखों से देखना कि दुनिया से क्या खो गया है। मुझे नहीं पता... शायद मैं सच में यह देखना ही नहीं चाहता। शायद मैं अब कुछ भी देखना ही नहीं चाहता।"

वेट्रेस आई, कैरट की पिघली हुई आइसक्रीम की प्लेट हटाई और बिल वहीं छोड़ गई।

मुझे ऐसा लगता है कि मैं बचपन से ही अकेली रही हूँ। घर पर मेरे माता-पिता और एक बड़ी बहन थी, लेकिन मेरा उनसे कोई खास रिश्ता नहीं था। मैं अपने परिवार में किसी से भी बात नहीं कर पाती थी। इसलिए मैं अक्सर सोचती थी कि मुझे गोद लिया गया है। पता नहीं क्यों, कुछ दूर के रिश्तेदारों ने मुझे मेरे परिवार को सौंप दिया था। या शायद उन्होंने मुझे किसी अनाथालय से लिया था। अब मुझे एहसास होता है कि मेरा यह विचार कितना बेवकूफी भरा था। मेरे माता-पिता ऐसे नहीं हैं जो किसी बेसहारा बच्चे को गोद लें। खैर, मैं यह बात स्वीकार नहीं कर पा रही थी कि मेरा इन लोगों से खून का रिश्ता है। यह सोचना आसान था कि वे मेरे लिए बिलकुल अजनबी हैं।

"मैंने दूर एक कस्बे की कल्पना की। वहाँ एक घर था, जहाँ मेरा असली परिवार रहता

था। एक छोटा सा साधारण घर, लेकिन गर्मजोशी भरा और आरामदायक। वहाँ हर कोई एक-दूसरे को समझता है, वे जो चाहें कहते हैं। शाम को माँ रसोई में खाना बनाने में व्यस्त रहती हैं, और चारों ओर एक मनमोहक खुशबू फैली रहती है। यही मेरी असली जगह है। मैं हमेशा अपने मन में इस जगह की तस्वीर बनाती थी, जिसमें मैं भी एक हिस्सा होती थी।"

असल जिंदगी में मेरे परिवार के पास एक कुत्ता था, और वही एक ऐसा कुत्ता था जिसके साथ मेरी अच्छी बनती थी। वह एक देसी नस्ल का कुत्ता था, लेकिन काफी समझदार था; एक बार उसे कुछ सिखा दिया तो वह कभी नहीं भूलता था। मैं उसे हर दिन सैर पर ले जाता था, और हम पार्क जाते थे; मैं बेंच पर बैठकर तरह-तरह की बातें करता था। हम एक-दूसरे को समझते थे। बचपन के वो पल मेरे सबसे खुशी के पल थे। जब मैं पांचवीं कक्षा में था, तब हमारे घर के पास एक ट्रक ने मेरे कुत्ते को टक्कर मार दी और उसकी मौत हो गई। मेरे माता-पिता ने मुझे दूसरा कुत्ता नहीं खरीदने दिया। उन्होंने मुझसे कहा कि कुत्ते बहुत शोर मचाते हैं, गंदे होते हैं और बहुत झंझट पैदा करते हैं।

मेरे कुत्ते की मौत के बाद मैं ज़्यादातर अपने कमरे में ही रहती थी, बस किताबें पढ़ती रहती थी। किताबों की दुनिया मुझे बाहर की दुनिया से कहीं ज़्यादा जीवंत लगती थी। मैं ऐसी चीज़ें देख पाती थी जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं। किताबें और संगीत मेरे सबसे अच्छे दोस्त थे। स्कूल में मेरे कुछ अच्छे दोस्त थे, लेकिन मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जिससे मैं दिल खोलकर बात कर सकूँ। हम बस हल्की-फुल्की बातें करते, साथ में फुटबॉल खेलते। जब कोई बात मुझे परेशान करती, तो मैं किसी से बात नहीं करती थी। मैं अकेले ही उस पर सोचती, किसी नतीजे पर पहुँचती और फिर अकेले ही कदम उठाती। ऐसा नहीं था कि मुझे सच में अकेलापन महसूस होता था। मैं सोचती थी कि यही तो दुनिया का नियम है। आख़िरकार, इंसान को अपने दम पर ही जीना होता है।

"लेकिन जब मैंने कॉलेज में प्रवेश किया, तो मेरी एक दोस्त बनी, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था। और मेरे सोचने का तरीका बदलने लगा। मुझे समझ में आया कि इतने लंबे समय तक अकेले सोचते रहना मुझे पीछे खींच रहा था, मुझे एक ही दृष्टिकोण तक सीमित रख रहा था। और मुझे यह महसूस होने लगा कि बिल्कुल अकेला रहना एक भयानक बात है।"

"एकदम अकेले रहना वैसा ही एहसास है जैसा बरसात की शाम को किसी बड़ी नदी

के मुहाने पर खड़े होकर पानी को समुद्र में बहते हुए देखना। क्या आपने कभी ऐसा किया है? किसी बड़ी नदी के मुहाने पर खड़े होकर पानी को समुद्र में बहते हुए देखा है?"

कैरट ने कोई जवाब नहीं दिया।

मैंने कहा, "मेरे पास है।"

कैरट ने आंखें चौड़ी करके मेरे चेहरे की ओर देखा।

“मैं सचमुच यह नहीं कह सकता कि नदी के पानी को समुद्र के पानी के साथ मिलते हुए देखना इतना अकेलापन भरा एहसास क्यों देता है। लेकिन यह सच में ऐसा ही है। आपको भी कभी इसे आजमा कर देखना चाहिए।”

मैंने अपनी जैकेट और बिल उठाया और धीरे-धीरे खड़ा हो गया। मैंने कैरट के कंधे पर हाथ रखा और वह भी खड़ा हो गया। मैंने बिल चुकाया और हम दुकान से निकल गए।

उसके घर तक पैदल जाने में करीब तीस मिनट लगे। हम साथ-साथ चले और मैंने एक शब्द भी नहीं कहा।

उसके घर के पास एक छोटी नदी थी, जिस पर कंक्रीट का पुल बना हुआ था। सचमुच, वह एक साधारण सी छोटी सी जगह थी, नदी कम और चौड़ी की गई नाली ज़्यादा लग रही थी। जब यहाँ आसपास खेती होती थी, तब इसका इस्तेमाल सिंचाई के लिए होता होगा। लेकिन अब, पानी मटमैला था, और उसमें डिटर्जेंट की हल्की सी गंध आ रही थी। नदी के तल में गर्मियों की घास उग आई थी, और पानी में एक पुरानी कॉमिक बुक खुली पड़ी थी। कैरट पुल के बीच में रुक गया, रेलिंग पर झुक गया और नीचे देखने लगा। मैं भी उसके बगल में खड़ा हो गया और नीचे देखने लगा। हम काफी देर तक ऐसे ही खड़े रहे। शायद वह घर वापस नहीं जाना चाहता था। मैं यह समझ सकता था।

कैरट ने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाला, एक चाबी निकाली और मेरी तरफ बढ़ा दी। एक साधारण सी चाबी, जिस पर एक बड़ा सा लाल टैग लगा था। टैग पर लिखा था 'स्टोरेज 3'। यह उस स्टोर रूम की चाबी थी जिसे सुरक्षा गार्ड नाकामुरा ढूंढ रहा था। कैरट शायद कुछ पल के लिए कमरे में अकेला रह गया था, उसने दराज में चाबी ढूंढी और जेब में डाल ली। इस लड़के का दिमाग मेरी कल्पना से कहीं ज्यादा रहस्यमय था। वह सच में एक अजीब बच्चा था।

मैंने चाबी उठाई और उसे अपनी हथेली में थाम लिया, और उसमें समाए अनगिनत

लोगों का भार महसूस किया। यह मुझे बेहद घिनौना, गंदा और संकीर्ण मानसिकता वाला लगा। एक पल के लिए घबराकर, मैंने चाबी नदी में गिरा दी। हल्की सी छपछपाहट हुई। नदी ज़्यादा गहरी नहीं थी, लेकिन पानी मटमैला था, और चाबी आँखों से ओझल हो गई। पुल पर साथ-साथ खड़े होकर, कैरट और मैं कुछ देर तक पानी को निहारते रहे। किसी तरह इससे मुझे खुशी का एहसास हुआ, मेरा शरीर हल्का हो गया।

मैंने उससे ज़्यादा खुद से कहा, "अब इसे वापस लेने का कोई मतलब नहीं है। मुझे यकीन है कि उनके पास कहीं न कहीं एक अतिरिक्त होगा। आखिर यह उनका कीमती भंडारगृह है।"

मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और कैरट ने धीरे से उसे अपने हाथ में ले लिया। मुझे उसकी पतली, छोटी उंगलियाँ अपने हाथों में महसूस हुईं। एक ऐसा एहसास जो मैंने कहीं महसूस किया था—कहाँ?—बहुत-बहुत समय पहले। मैंने उसका हाथ थामे रखा और हम उसके घर की ओर चल पड़े।

जब हम वहाँ पहुँचे तो उसकी माँ हमारा इंतज़ार कर रही थी। उसने एक सुंदर सफेद स्लीवलेस ब्लाउज और प्लीटेड स्कर्ट पहनी हुई थी। उसकी आँखें लाल और सूजी हुई थीं। घर आने के बाद से वह शायद पूरे समय अकेले रोती रही होगी। उसका पति शहर में एक रियल एस्टेट एजेंसी चलाता है और रविवार को या तो काम पर होता है या गोल्फ खेलने बाहर जाता है। उसने कैरट को दूसरी मंजिल पर उसके कमरे में भेज दिया और मुझे लिविंग रूम में नहीं बल्कि किचन में ले गई, जहाँ हम मेज पर बैठ गए। शायद वहाँ बात करना उसके लिए आसान था। किचन में एक बड़ा एवोकाडो-हरे रंग का फ्रिज, बीच में एक आइलैंड और पूरब की ओर एक धूप वाली खिड़की थी।

“वह पहले से थोड़ा बेहतर दिख रहा है,” उसने कमजोर आवाज में कहा। “जब मैंने उसे पहली बार उस सुरक्षा कार्यालय में देखा, तो मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूं। मैंने उसे पहले कभी इस हालत में नहीं देखा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी दूसरी ही दुनिया में खो गया हो।”

“चिंता की कोई बात नहीं है। बस थोड़ा समय दीजिए, वो ठीक हो जाएगा। फिलहाल बेहतर होगा कि आप उससे कुछ न कहें। उसे अकेला छोड़ दीजिए।”

"मेरे जाने के बाद तुम दोनों ने क्या किया?"

मैंने कहा, "हमने बात की।"

"किस बारे मेँ?"

“ज्यादा कुछ नहीं। असल में सारी बातें मैंने ही कीं। सच में कुछ खास नहीं था।”

"क्या आप कुछ ठंडा पीना चाहेंगे?"

मैंने अपना सिर हिलाया।

“मुझे समझ नहीं आ रहा कि अब उससे कैसे बात करूं,” उसने कहा। “और यह भावना दिन-ब-दिन और भी प्रबल होती जा रही है।”

“उससे बात करने के लिए खुद को मजबूर करने की कोई जरूरत नहीं है। बच्चे अपनी ही दुनिया में रहते हैं। जब वह बात करना चाहेगा, तब खुद ही करेगा।”

लेकिन वह बहुत कम बोलता है।

रसोई की मेज के पार आमने-सामने बैठे हुए हम एक-दूसरे को छूने से बच रहे थे। हमारी बातचीत तनावपूर्ण थी, वैसी ही जैसी एक शिक्षिका और एक माँ के बीच किसी समस्याग्रस्त बच्चे के बारे में हो रही हो। बोलते-बोलते वह अपने हाथों से खेल रही थी, उंगलियाँ मरोड़ रही थी, उन्हें फैला रही थी, हाथों को आपस में पकड़ रही थी। मैं उन हरकतों के बारे में सोच रही थी जो उसके हाथों ने बिस्तर पर मेरे साथ की थीं।

मैंने उससे कहा, "मैं स्कूल को इस बारे में नहीं बताऊंगी। मैं उससे अच्छे से बात करूंगी, और अगर कोई समस्या हुई तो मैं उसे सुलझा लूंगी। इसलिए चिंता मत करो। वह एक समझदार लड़का है, अच्छा लड़का है; थोड़ा समय दो, वह ठीक हो जाएगा। यह बस एक दौर है जिससे वह गुजर रहा है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि तुम शांत रहो।" मैंने धीरे-धीरे, शांत भाव से ये सब बातें बार-बार दोहराईं, ताकि वह उन्हें अच्छी तरह समझ सके। ऐसा लगा जैसे इससे उसे कुछ बेहतर महसूस हुआ हो।

उसने कहा कि वह मुझे कुनिताची में मेरे अपार्टमेंट तक वापस छोड़ देगी।

"क्या आपको लगता है कि मेरे बेटे को पता है कि क्या चल रहा है?" उसने मुझसे पूछा जब हम ट्रैफिक सिग्नल पर रुके थे। उसका मतलब ज़ाहिर तौर पर यह था कि मेरे और उसके बीच क्या चल रहा था।

मैंने सिर हिलाया। "तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?"

“जब मैं घर पर अकेली थी और आपके लौटने का इंतज़ार कर रही थी, तभी अचानक मेरे मन में यह ख्याल आया। मेरे पास इसका कोई ठोस सबूत नहीं है, बस एक एहसास है। वह बहुत सहज ज्ञान वाला व्यक्ति है, और मुझे यकीन है कि उसने यह भांप लिया है कि मेरे और मेरे पति के बीच संबंध अच्छे नहीं हैं।”

मैं चुप रहा। उसने और कुछ नहीं कहा।

उसने अपनी कार उस चौराहे के ठीक आगे पार्किंग में खड़ी की जहाँ मेरी अपार्टमेंट बिल्डिंग थी। उसने पार्किंग ब्रेक लगाया और इंजन बंद कर दिया। इंजन धीमी आवाज़ के साथ बंद हुआ, और एयर कंडीशनर की आवाज़ के बंद होने से कार में एक अजीब सी खामोशी छा गई। मैं जानता था कि वह चाहती थी कि मैं उसे उसी पल अपनी बाहों में भर लूँ। मैंने उसके ब्लाउज के नीचे उसके कोमल शरीर के बारे में सोचा, और मेरा मुँह सूख गया।

मैंने सीधे-सीधे कह दिया, "मुझे लगता है कि हमारे लिए अब और न मिलना ही बेहतर होगा।"

उसने कुछ नहीं कहा। स्टीयरिंग व्हील पर हाथ रखे, वह ऑयल गेज की ओर टकटकी लगाए देखती रही। उसके चेहरे से लगभग सारे भाव गायब हो चुके थे।

मैंने कहा, “मैंने इस बारे में बहुत सोचा है। मुझे नहीं लगता कि समस्या का हिस्सा बनना सही है। अगर मैं समस्या का हिस्सा बन जाऊं तो समाधान का हिस्सा कैसे बनूं? यही सबके लिए बेहतर है।”

" 'सब लोग'?"

"खासकर आपके बेटे के लिए।"

“आपके लिए भी?”

"हाँ बिल्कुल।"

“मेरा क्या? क्या ‘हर कोई’ में मैं भी शामिल हूँ?”

हां, मैं कहना चाहती थी। लेकिन मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। उसने अपने गहरे हरे रंग के रे-बैन चश्मे उतारे, फिर उन्हें दोबारा पहन लिया।

उन्होंने कहा, "मेरे लिए यह कहना आसान नहीं है, लेकिन अगर मैं आपसे दोबारा नहीं मिल पाऊंगी तो यह मेरे लिए बहुत मुश्किल होगा।"

“यह मेरे लिए भी मुश्किल होगा। काश हम मौजूदा स्थिति को बनाए रख पाते। लेकिन यह सही नहीं है।”

उसने गहरी सांस ली और उसे बाहर छोड़ दिया।

“सही क्या है? क्या आप मुझे बताएँगे? मुझे सच में नहीं पता कि सही क्या है। मुझे गलत का पता है। लेकिन सही क्या है?”

मेरे पास इसका कोई अच्छा जवाब नहीं था।

वह रोने ही वाली थी। या चीखने ही वाली थी। लेकिन किसी तरह उसने खुद को संभाला। उसने स्टीयरिंग व्हील को कसकर पकड़ रखा था, उसकी हथेलियों के पीछे का हिस्सा हल्का लाल हो गया था।

“जब मैं छोटी थी, तो हर तरह के लोग मुझसे बातें करते थे,” उसने कहा। “मुझे तरह-तरह की बातें बताते थे। दिलचस्प कहानियां, खूबसूरत, अनोखी कहानियां। लेकिन एक उम्र के बाद मुझसे कोई बात नहीं करता था। कोई नहीं। न मेरे पति, न मेरा बच्चा, न मेरे दोस्त... कोई नहीं। जैसे दुनिया में बात करने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। कभी-कभी मुझे लगता है जैसे मेरा शरीर अदृश्य हो रहा है, जैसे कोई मेरे आर-पार देख सकता है।”

उसने स्टीयरिंग व्हील से अपने हाथ उठाए और उन्हें अपने सामने फैला दिया।

"ऐसा नहीं है कि आप समझ पाएंगे कि मैं क्या कहना चाह रहा हूं।"

मैंने सही शब्द खोजने की कोशिश की। लेकिन कुछ नहीं मिला।

“आज के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,” उसने खुद को संभालते हुए कहा। उसकी आवाज़ लगभग पहले जैसी शांत थी। “मुझे नहीं लगता कि मैं इसे अकेले संभाल पाती। यह मेरे लिए बहुत मुश्किल था। आपका साथ होना बहुत मददगार रहा। मैं आभारी हूँ। मुझे पता है कि आप एक बेहतरीन शिक्षिका बनेंगी। आप लगभग बन ही चुकी हैं।”

क्या यह व्यंग्य था? शायद। नहीं—निश्चित रूप से था।

“अभी नहीं,” मैंने कहा। वह हल्की सी मुस्कुराई। और हमारी बातचीत यहीं समाप्त हो गई।

मैंने कार का दरवाजा खोला और बाहर कदम रखा। गर्मी की रविवार दोपहर की धूप काफी फीकी पड़ गई थी। मुझे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी और खड़े-खड़े मेरे पैर अजीब से लग रहे थे। सेलिका का इंजन गर्जना करते हुए चालू हुआ और वह हमेशा के लिए मेरे जीवन से चली गई। उसने खिड़की नीचे की और हल्का सा हाथ हिलाया, और मैंने भी जवाब में अपना हाथ उठाया।

अपार्टमेंट में वापस आकर मैंने अपनी पसीने से भीगी हुई कमीज़ उतारी और उसे वॉशिंग मशीन में डाल दिया, नहाया और शैम्पू लगाया। मैं रसोई में गया, आधा अधूरा खाना पूरा किया और खाया। उसके बाद, मैं सोफे पर वापस बैठ गया और एक किताब पढ़ने लगा जिसे मैंने अभी-अभी पढ़ना शुरू किया था। लेकिन मैं पाँच पन्ने भी

नहीं पढ़ पाया। हार मानकर मैंने किताब बंद कर दी और कुछ देर सुमिरे के बारे में सोचा। और उस स्टोर रूम की चाबी के बारे में जिसे मैंने गंदी नदी में फेंक दिया था। और मेरी प्रेमिका के हाथों के बारे में जो स्टीयरिंग व्हील को पकड़े हुए थे। यह एक लंबा दिन था, और आखिरकार यह खत्म हो गया, बस कुछ अधूरी यादें पीछे रह गईं। मैंने अच्छी तरह से देर तक नहाया था, लेकिन मेरे शरीर में अभी भी तंबाकू की बदबू थी। और मेरे हाथ में अभी भी तेज दर्द हो रहा था—जैसे मैंने किसी चीज को कुचल दिया हो।

क्या मैंने सही काम किया?

मुझे ऐसा नहीं लगा। मैंने तो सिर्फ वही किया जो मेरे लिए ज़रूरी था। इसमें बहुत बड़ा अंतर है। "हर कोई"? उसने मुझसे पूछा था। "क्या इसमें मैं भी शामिल हूँ?"

सच कहूं तो, उस समय मैं सबके बारे में नहीं सोच रहा था। मैं सिर्फ सुमिरे के बारे में सोच रहा था। न तो वहां मौजूद सभी के बारे में, न ही यहां मौजूद हम सभी के बारे में। केवल सुमिरे की बात हो रही थी, जो कहीं भी नहीं थी।

अध्याय 16

बंदरगाह पर विदाई के बाद से मियू से मेरी कोई खबर नहीं मिली थी। यह बात मुझे अजीब लगी, क्योंकि उसने वादा किया था कि सुमिरे के बारे में कोई भी खबर मिले, वह मुझसे संपर्क करेगी। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मुझे भूल गई है; वह ऐसी नहीं थी जो वादे करे और उन्हें पूरा न करे। ज़रूर कोई बात हुई होगी जिसकी वजह से उसने मुझसे संपर्क नहीं किया। मैंने उसे फोन करने का सोचा, लेकिन मुझे उसका असली नाम तक नहीं पता था। न ही उसकी कंपनी का नाम और न ही उसका पता। मियू के अनुसार, सुमिरे ने कोई ठोस सुराग नहीं छोड़ा था।

सुमिरे के फोन पर वही मैसेज था, लेकिन कुछ ही देर में फोन कट गया। मैंने उसके परिवार को फोन करने के बारे में सोचा। मुझे उनका नंबर तो नहीं पता था, लेकिन

योकोहामा येलो पेजेस में उसके पिता का डेंटल क्लिनिक ढूंढना मुश्किल नहीं होता। पर किसी तरह मैं वो कदम नहीं उठा पाई। इसके बजाय, मैं लाइब्रेरी गई और अगस्त के अखबारों को देखा। उसमें उसके बारे में एक छोटा सा लेख था, ग्रीस में घूमने गई बाईस साल की एक जापानी लड़की के लापता होने के बारे में। स्थानीय अधिकारी जांच कर रहे हैं, उसकी तलाश कर रहे हैं। लेकिन अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। बस इतना ही। ऐसा कुछ नहीं था जो मुझे पहले से पता न हो। ऐसा लग रहा था कि विदेश यात्रा करने वाले काफी लोग लापता हो जाते हैं। और वो भी उनमें से एक थी। मैंने खबरें जानने की कोशिश करना छोड़ दिया। उसके गायब होने के कारण चाहे जो भी हों, जांच चाहे जैसे भी चल रही हो, एक बात निश्चित थी। अगर सुमिरे वापस आती, तो वह मुझसे संपर्क करती। बस यही मायने रखता था।

सितंबर आया और चला गया, देखते ही देखते पतझड़ का मौसम खत्म हो गया और सर्दी आ गई। 7 नवंबर को सुमिरे का तेईसवाँ जन्मदिन था और 9 दिसंबर को मेरा पच्चीसवाँ। नया साल आया और स्कूल का सत्र समाप्त हो गया। कैरट ने फिर कोई परेशानी नहीं खड़ी की और पाँचवीं कक्षा में, एक नई क्लास में चला गया। उस दिन के बाद मैंने उससे चोरी के बारे में कभी बात नहीं की। जब भी मैं उसे देखता, मुझे एहसास होता कि इस बारे में बात करना ज़रूरी नहीं था।

अब जब उसका नया शिक्षक आ गया था, तो मेरी पूर्व प्रेमिका से मेरी मुलाक़ात कम ही होती थी। सब कुछ खत्म हो चुका था। फिर भी, कभी-कभी उसकी त्वचा की गर्माहट की यादें ताज़ा हो जातीं और मैं फ़ोन उठाने ही वाला होता। लेकिन तभी मेरे हाथ में सुपरमार्केट के स्टोर रूम की चाबी का एहसास मुझे रोक देता। उस गर्मी की दोपहर का एहसास। और मेरे हाथ में कैरट का छोटा सा हाथ।

जब भी मैं स्कूल में कैरट से मिलती, तो मुझे लगता कि वह एक अजीब बच्चा है। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उस पतले, शांत चेहरे के पीछे क्या चल रहा है। लेकिन उसकी शांत बाहरी दिखावट के नीचे कुछ तो ज़रूर चल रहा था। और अगर बात बिगड़ती, तो उसमें कार्रवाई करने की हिम्मत भी थी। मैं उसके बारे में कुछ गहरा महसूस कर सकती थी। मुझे लगा कि उसे अपने दिल की बात बताना ही सही होगा। उसके लिए भी, और मेरे लिए भी। शायद मेरे लिए ज़्यादा। यह कहना थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन तब उसने मुझे समझा और स्वीकार किया। और मुझे माफ़ भी कर दिया। कम से कम कुछ हद तक तो।

कैरट जैसे बच्चों को जवानी के उन अंतहीन दिनों में बड़े होकर किस तरह के दिन गुजारने पड़ेंगे? उनके लिए यह आसान नहीं होगा। मुश्किल समय आसान समय से कहीं ज़्यादा होंगे। अपने अनुभव से मैं उनके दर्द का रूप बता सकती थी। क्या उसे किसी से प्यार हो जाएगा? और क्या वह दूसरा व्यक्ति भी उससे प्यार करेगा? वैसे इस बारे में सोचने का कोई मतलब नहीं था। प्राथमिक विद्यालय से स्नातक होने के बाद वह चला जाएगा, और मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगी। और मुझे अपनी समस्याओं के बारे में भी सोचना था।

मैं एक रिकॉर्ड स्टोर में गया, एलिज़ाबेथ श्वार्ज़कोफ़ द्वारा गाए गए मोज़ार्ट के गीतों की एक प्रति खरीदी और उसे बार-बार सुना। मुझे गीतों की सुंदर शांति बहुत पसंद आई। अगर मैं अपनी आँखें बंद कर लेता, तो संगीत मुझे हमेशा ग्रीक द्वीप पर बिताई उस रात की याद दिला देता।

सुमिरे की कुछ बेहद जीवंत यादों के अलावा, जिनमें से एक वो तीव्र इच्छा थी जो मुझे उस दिन महसूस हुई जब मैंने उसे घर बदलने में मदद की थी, उसके अलावा मैं अपने पीछे कुछ लंबे पत्र और एक फ्लॉपी डिस्क ही छोड़ गई थी। मैंने उन पत्रों और दोनों दस्तावेजों को इतनी बार पढ़ा कि मुझे वे लगभग याद हो गए थे। हर बार जब मैं उन्हें पढ़ती, तो मुझे ऐसा लगता जैसे सुमिरे और मैं फिर से एक हो गए हों, हमारे दिल एक हो गए हों। इस एहसास ने मेरे दिल को किसी भी चीज़ से ज़्यादा सुकून दिया। जैसे आप रात में किसी विशाल मैदान में ट्रेन में सफर कर रहे हों और अचानक आपको किसी फार्महाउस की खिड़की में एक छोटी सी रोशनी दिखाई दे। पल भर में वह अंधेरे में गायब हो जाती है। लेकिन अगर आप अपनी आँखें बंद कर लें, तो वह रोशनी का बिंदु कुछ पलों के लिए, बस थोड़ी देर के लिए, आपके साथ रहता है।

आधी रात को मेरी नींद खुल जाती है और मैं बिस्तर से उठ जाता हूँ (वैसे भी मुझे नींद नहीं आने वाली), अपने सोफे पर लेट जाता हूँ और श्वार्ज़कोफ़ का संगीत सुनते हुए उस छोटे से ग्रीक द्वीप की यादों में खो जाता हूँ। मैं हर एक घटना को याद करता हूँ, चुपचाप अपनी यादों के पन्ने पलटता हूँ। वह खूबसूरत सुनसान समुद्र तट, बंदरगाह पर बना आउटडोर कैफ़े। वेटर की पसीने से भीगी कमीज़। मियू का मनमोहक चेहरा और बरामदे से भूमध्य सागर की चमक। वह बेचारा नायक जो शहर के चौक में खड़ा था और सूली पर चढ़ा दिया गया था। और वह ग्रीक संगीत जो मैंने उस रात पहाड़ की चोटी से सुना था। मैं उस जादुई चाँदनी, संगीत की अद्भुत गूँज को जीवंत रूप से फिर

से महसूस करता हूँ। उस संगीत से जागने पर मुझे जो अलगाव का एहसास हुआ था। वह निराकार, आधी रात का दर्द, मेरे शरीर की तरह, चुपचाप, बेरहमी से सूली पर चढ़ाया जा रहा था।

वहाँ लेटे-लेटे, मैं कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद करता हूँ, फिर खोलता हूँ। मैं चुपचाप साँस लेता हूँ, फिर छोड़ता हूँ। मेरे मन में एक विचार पनपने लगता है, लेकिन अंत में कुछ भी नहीं सोचता। वैसे, सोचने और न सोचने में कोई खास फर्क नहीं था। मुझे लगता है कि मैं अब एक चीज़ और दूसरी चीज़ के बीच, अस्तित्व और अस्तित्वहीनता के बीच अंतर नहीं कर पा रहा हूँ। मैं खिड़की से बाहर देखता हूँ। जब तक आसमान सफेद नहीं हो जाता, बादल तैरते रहते हैं, पक्षी चहचहाते हैं, और एक नया दिन धीरे-धीरे शुरू होता है, इस ग्रह पर रहने वाले लोगों के नींद से भरे दिमागों को जगाता है।

टोक्यो के बीचोंबीच एक बार मेरी नज़र मियू पर पड़ी। सुमिरे के गायब होने के लगभग छह महीने बाद, मार्च के मध्य में एक सुहावने रविवार का दिन था। आसमान में घने बादल छाए हुए थे और ऐसा लग रहा था कि किसी भी पल बारिश हो सकती है। हर कोई छाता लिए हुए था। मैं शहर में रहने वाले अपने कुछ रिश्तेदारों से मिलने जा रहा था और हिरोओ में मेइदी-या स्टोर के पास चौराहे पर एक ट्रैफिक लाइट पर रुका हुआ था, तभी मेरी नज़र भारी ट्रैफिक में धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई गहरे नीले रंग की जगुआर पर पड़ी। मैं टैक्सी में था और जगुआर मेरे बाईं ओर वाली लेन में थी। मैंने कार पर इसलिए ध्यान दिया क्योंकि उसकी ड्राइवर एक महिला थी जिसके बाल बेहद खूबसूरत और सफेद थे। दूर से ही उस महिला के सफेद बाल बेदाग गहरे नीले रंग की कार के सामने बहुत आकर्षक लग रहे थे। मैंने मियू को हमेशा काले बालों में ही देखा था, इसलिए मुझे इस मियू और उस मियू को समझने में थोड़ा समय लगा जिसे मैं जानता था। लेकिन यह निश्चित रूप से वही थी। वह उतनी ही खूबसूरत थी जितनी मुझे याद थी, एक दुर्लभ और अद्भुत तरीके से शालीन। उसके बेहद खूबसूरत सफेद बाल लोगों को उससे एक हाथ की दूरी पर रखते थे और उनमें एक दृढ़, लगभग पौराणिक आभा थी।

मेरे सामने खड़ी मियू वो महिला नहीं थी जिसे मैंने ग्रीक द्वीप के बंदरगाह पर अलविदा कहा था। केवल आधा साल ही बीता था, फिर भी वो बिल्कुल अलग दिख रही थी। बेशक उसके बालों का रंग बदल गया था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई।

एक खाली खोल। यही पहले शब्द थे जो मेरे मन में आए। मियू एक खाली कमरे की तरह थी, जैसे सबके चले जाने के बाद। कोई बेहद महत्वपूर्ण चीज़—वही चीज़ जिसने सुमिरे को बवंडर की तरह अपनी ओर खींच लिया था, जिसने नौका के डेक पर खड़े होकर मेरे दिल को झकझोर दिया था—मियू से हमेशा के लिए गायब हो गई थी। पीछे छोड़ गई थी जीवन नहीं, बल्कि उसकी अनुपस्थिति। किसी जीवित प्राणी की गर्माहट नहीं, बल्कि स्मृति की खामोशी। उसके शुद्ध सफेद बाल देखकर मुझे समय के साथ फीके पड़ चुके इंसानी हड्डियों के रंग की याद आ गई। कुछ पल के लिए मैं सांस भी नहीं ले पा रही थी।

मियू जिस जगुआर को चला रही थी, वह कभी मेरी टैक्सी से आगे निकल जाती, कभी पीछे रह जाती, लेकिन मियू ने ध्यान ही नहीं दिया कि मैं उसे देख रहा हूँ। मैं उसे आवाज़ नहीं दे सका। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, लेकिन अगर कहता भी तो जगुआर की खिड़कियाँ कसकर बंद थीं। मियू सीधी बैठी थी, दोनों हाथ स्टीयरिंग व्हील पर थे, उसकी नज़र सामने के दृश्य पर टिकी थी। शायद वह किसी बात पर गहराई से सोच रही थी। या हो सकता है कि वह अपनी कार के स्टीरियो पर "आर्ट ऑफ़ द फ्यूग" सुन रही हो। पूरे समय, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला और उसने पलकें भी नहीं झपकाईं। आखिरकार हरी बत्ती हुई और जगुआर अओयामा की दिशा में तेज़ी से निकल गई, मेरी टैक्सी को पीछे छोड़ते हुए, जो वहाँ दाएँ मुड़ने के लिए इंतज़ार कर रही थी।

तो इस तरह हम अपना जीवन जीते हैं। चाहे कितना भी गहरा और घातक नुकसान हो, चाहे हमसे कितनी ही महत्वपूर्ण चीज़ छीन ली गई हो—चाहे वह हमारे हाथों से कितनी ही दूर कर दी गई हो—भले ही हम पूरी तरह बदल गए हों, बस पहले जैसी बाहरी त्वचा ही बची हो, फिर भी हम चुपचाप इसी तरह अपना जीवन जीते रहते हैं। हम अपने नियत समय के अंत के और करीब पहुँचते जाते हैं, उसे पीछे छोड़ते हुए। अक्सर कुशलता से, रोज़मर्रा के अंतहीन कामों को दोहराते हुए। एक असीम खालीपन का एहसास पीछे छोड़ते हुए।

जापान लौटने के बावजूद, मियू किसी कारणवश मुझसे संपर्क नहीं कर पाई। इसके बजाय, वह चुप रही, अपनी यादों को संजोए, किसी अज्ञात, एकांत स्थान की तलाश में जहाँ वह समा जाए। यही मेरी कल्पना थी। मुझे मियू को दोष देने का मन नहीं हुआ। न ही उससे नफरत करने का।

उस पल मेरे मन में कोरिया के उत्तरी भाग में स्थित एक छोटे से पहाड़ी गाँव में मियू के पिता की कांस्य प्रतिमा की छवि उभर आई। मैं उस छोटे से गाँव के चौक, नीची इमारतों और धूल से ढकी कांस्य प्रतिमा की कल्पना कर सकता था। वहाँ हमेशा तेज़ हवा चलती है, जिससे पेड़ अजीबोगरीब आकृतियों में मुड़ जाते हैं। पता नहीं क्यों, लेकिन वह कांस्य प्रतिमा और मियू, अपनी जगुआर कार के स्टीयरिंग व्हील पर हाथ रखे, मेरे मन में एक हो गए।

शायद, किसी दूर स्थान पर, सब कुछ चुपचाप खो गया है। या कम से कम कोई ऐसी शांत जगह तो है जहाँ सब कुछ एक ही आकृति में विलीन होकर गायब हो सकता है। और जैसे-जैसे हम अपना जीवन जीते हैं, हम हर चीज़ से जुड़े पतले धागों को अपनी ओर खींचते हुए, खोई हुई चीज़ों को खोजते हैं। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और जितनी हो सके उतनी सुंदर खोई हुई चीज़ों को याद करने की कोशिश की। उन्हें करीब लाते हुए, उन्हें थामे हुए। यह जानते हुए कि उनका जीवन क्षणभंगुर है।

मैं सपने देखता हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि सपने देखना ही एकमात्र सही बात है। सपने देखना, सपनों की दुनिया में जीना—जैसा कि सुमिरे ने कहा था। लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहता। जागृति हमेशा मुझे वापस ले आती है।

मैं सुबह 3:00 बजे जागता हूँ, लाइट जलाता हूँ, उठकर बैठ जाता हूँ और अपने बिस्तर के पास रखे फोन को देखता हूँ। मैं कल्पना करता हूँ कि सुमिरे एक फोन बूथ में सिगरेट जलाकर मेरा नंबर ढूंढने के लिए बटन दबा रही है। उसके बाल बिखरे हुए हैं; उसने एक आदमी की हेरिंगबोन जैकेट पहनी है जो उसके साइज से कई साइज बड़ी है और मोजे भी बेमेल हैं। वह धुएँ से थोड़ा घुट रही है और उसके चेहरे पर शिकन है। उसे सारे नंबर सही से दबाने में काफी समय लगता है। उसका दिमाग उन बातों से भरा है जो वह मुझे बताना चाहती है। कौन जाने, वह शायद सुबह तक बोलती रहे? जैसे, प्रतीकों और संकेतों के बीच के अंतर के बारे में। मेरा फोन किसी भी मिनट बजने वाला लगता है। लेकिन वह बजता नहीं है। मैं लेट जाता हूँ और खामोश फोन को देखता रहता हूँ।

लेकिन एक बार सच में घंटी बजी। मेरे ठीक सामने, सचमुच घंटी बजी। जिससे वास्तविक दुनिया का वातावरण कांप उठा। मैंने रिसीवर उठाया।

"नमस्ते?"

“हे, मैं वापस आ गई हूँ,” सुमिरे ने बड़ी सहजता से कहा। बिल्कुल स्वाभाविक। “यह

आसान नहीं था, लेकिन किसी तरह मैंने इसे कर दिखाया। जैसे होमर की ओडिसी का पचास शब्दों का सारांश।"

"यह तो अच्छी बात है," मैंने कहा। मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा था। उसकी आवाज़ सुन पाना। यह सब सच में हो रहा था।

" 'यह अच्छा है'?" सुमिरे ने कहा, और मुझे लगभग उसकी भौंहें चढ़ी हुई सुनाई दे रही थीं। "इसका क्या मतलब है? मैं बहुत मुश्किलों से गुज़री हूँ, तुम्हें पता है। मैंने लाखों बाधाओं का सामना किया है, अगर मैं उन सबको बताने की कोशिश करूँ तो कभी खत्म नहीं कर पाऊँगी—यह सब वापस आने के लिए, और तुम बस इतना ही कह सकती हो? मुझे लगता है मैं रोने वाली हूँ। अगर मेरा वापस आना अच्छा नहीं है, तो फिर मेरा क्या होगा? यह अच्छा है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा! इस तरह की दिल को छू लेने वाली, हास्यपूर्ण बातें अपनी कक्षा के बच्चों के लिए बचा कर रखो—जब वे आखिरकार गुणा करना सीख जाएँगे!"

"अभी आप कहाँ हैं?"

मैं कहाँ हूँ? आपको क्या लगता है मैं कहाँ हूँ? हमारे पुराने भरोसेमंद टेलीफोन बूथ में। यह छोटा सा खस्ताहाल चौकोर टेलीफोन बूथ, जिसके अंदर फर्जी लोन कंपनियों और एस्कॉर्ट सेवाओं के विज्ञापन चिपके हुए हैं। आसमान में फफूंदी लगा आधा चाँद लटका है; फर्श सिगरेट के टुकड़ों से भरा पड़ा है। जहाँ तक नज़र जाती है, कुछ भी ऐसा नहीं जो दिल को सुकून दे। एक साधारण, पूरी तरह से सांकेतिक टेलीफोन बूथ। तो, यह कहाँ है? मुझे ठीक से पता नहीं। सब कुछ बहुत सांकेतिक है—और आप मुझे जानते हैं, है ना? मुझे आधे समय पता ही नहीं होता कि मैं कहाँ हूँ। मैं सही से रास्ता नहीं बता सकती। टैक्सी ड्राइवर हमेशा मुझ पर चिल्लाते हैं: अरे मैडम, आप कहाँ जाना चाहती हैं? मुझे लगता है मैं ज़्यादा दूर नहीं हूँ। शायद आस-पास ही हूँ।

मैं तुम्हें लेने आऊंगा।

मुझे अच्छा लगेगा। मैं पता लगा लेता हूँ कि मैं कहाँ हूँ और आपको वापस कॉल करूँगा। वैसे भी मेरे पास खुले पैसे खत्म हो रहे हैं। थोड़ी देर इंतज़ार कर लीजिए, ठीक है?

मैंने कहा, "मैं सचमुच तुमसे मिलना चाहता था।"

"और मैं भी तुम्हें देखना चाहती थी," उसने कहा। "जब मैं तुम्हें देख नहीं पाई, तब मुझे यह एहसास हुआ। यह इतना स्पष्ट था मानो अचानक सारे ग्रह मेरे लिए एक

सीधी रेखा में आ गए हों। मुझे तुम्हारी बहुत ज़रूरत है। तुम मेरा हिस्सा हो; मैं तुम्हारा हिस्सा हूँ। तुम्हें पता है, कहीं न कहीं—मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है कहाँ—मुझे लगता है मैंने किसी का गला काट दिया है। अपनी छुरी तेज़ करते हुए, मेरा दिल पत्थर का हो गया है। प्रतीकात्मक रूप से, जैसे चीन में कोई द्वार बनाया जाता है। क्या तुम समझ रहे हो मैं क्या कह रही हूँ?"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"तो फिर आकर मुझे ले जाओ।"

अचानक फोन कट जाता है। रिसीवर को पकड़े हुए, मैं उसे काफी देर तक देखती रहती हूँ। मानो फोन खुद कोई महत्वपूर्ण संदेश हो, उसकी आकृति और रंग में कोई छिपा हुआ अर्थ हो। दोबारा सोचकर, मैं फोन रख देती हूँ। मैं बिस्तर पर बैठ जाती हूँ और फोन के दोबारा बजने का इंतजार करती हूँ। मैं दीवार से टेक लगाकर बैठ जाती हूँ, मेरी नज़र सामने के एक बिंदु पर टिकी होती है, और मैं धीरे-धीरे, बिना आवाज़ के सांस लेती हूँ। एक पल से दूसरे पल को जोड़ने वाले हर जोड़ को महसूस करती हूँ। फोन नहीं बजता। चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। लेकिन मुझे कोई जल्दी नहीं है। भागदौड़ की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं तैयार हूँ। मैं कहीं भी जा सकती हूँ।

सही?

सही है आप!

मैं बिस्तर से उठता हूँ। मैं पुराने, फीके पड़ चुके पर्दे को हटाता हूँ और खिड़की खोलता हूँ। मैं अपना सिर बाहर निकालता हूँ और आकाश की ओर देखता हूँ। सचमुच, आकाश में फफूंदी के रंग का आधा चाँद लटका हुआ है। अच्छा। हम दोनों एक ही चाँद को देख रहे हैं, एक ही दुनिया में। हम वास्तविकता से एक ही रेखा से जुड़े हुए हैं। मुझे बस चुपचाप उसे अपनी ओर खींचना है।

मैंने अपनी उंगलियाँ फैलाईं और दोनों हथेलियों को ध्यान से देखा, खून के धब्बे ढूँढ़ने की कोशिश की। कोई धब्बा नहीं था। खून की कोई गंध नहीं, कोई अकड़न नहीं। खून शायद चुपचाप ही अंदर समा गया होगा।

भूमिगत: टोक्यो गैस हमला और जापानी मानसिकता (गैर-काल्पनिक)
नॉर्वे की लकड़ी
सीमा के दक्षिण में, सूर्य के पश्चिम में
विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल
नाचो नाचो नाचो
हाथी गायब हो जाता है
कठोर रहस्यमयी वंडरलैंड और दुनिया का अंत
एक जंगली भेड़ का पीछा

sjeet